जनवरी-मार्च 2018
ISSN: 2321-0443

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

Digital India
Power To Empower

ज्ञान गरिमा सिंधु

अंक : 57

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन 2018 के उपलक्ष्य में

पर्यटन विशेषांक

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार
Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
Government of India

ISSN: 2321-0443

ज्ञान गरिमा सिंधु

(त्रैमासिक पत्रिका)

पर्यटन विशेषांक

अंक-57

जनवरी-मार्च 2018

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार
2018

COMMISSION FOR SCIENTIFIC AND TECHNICAL TERMINOLOGY
MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
(DEPARTMENT OF HIGHER EDUCATION)
GOVERNMENT OF INDIA
2018

© **भारत सरकार, 2018**

ISSN: 2321-0443

प्रकाशक:

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग),
भारत सरकार, पश्चिमी खंड.7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110 066

विक्रय हेतु पत्र व्यवहार का पता:

बिक्री एकक,
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
नई दिल्ली-110 066
दूरभाष - (011) 26105211
फैक्स - (011) 26102882

बिक्री स्थान:

प्रकाशन नियंत्रक,
प्रकाशन विभाग,
भारत सरकार,
सिविल लाइन्स,
दिल्ली - 110 054

सदस्यता शुल्क:

	रुपए		**रुपए**
व्यक्तियों/संस्थाओं के लिए प्रति अंक	` 14.00	विद्यार्थियों के लिए प्रति अंक	` 8.00
वार्षिक चंदा	` 50.00	वार्षिक चंदा	` 30.00
पाँच वर्ष	` 250.00	पाँच वर्ष	` 150.00
दस वर्ष	` 500.00	दस वर्ष	` 300.00
बीस वर्ष	` 1000.000	बीस वर्ष	` 600.000

नोटः पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक मंडल की इनसे सहमति अनिवार्य नहीं है।

परामर्श एवं संपादन समिति

प्रधान संपादक

प्रोफेसर अवनीश कुमार, अध्यक्ष

संपादक

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, सहायक निदेशक

श्री विजय राज सिंह शेखावत, स. वैज्ञानिक अधिकारी (गणित)

परामर्शदाता

प्रो. देवेश निगम
पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान,
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ.प्र.

संपादन समिति

श्री सी.पी. पैन्यूली,
भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान,
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ.प्र.

डॉ. भगवती प्रसाद निदारिया
पूर्व उप-निदेशक (भाषा)
केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली

श्री उमेश कुमार
सहायक प्राध्यापक
भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ.प्र.

डॉ. पुष्पेंद्र कुमार शर्मा
पूर्व उपमहाप्रबंधक, राजभाषा
एन बी सी सी (इंडिया) सी पी एस, लिमिटेड,
नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

	अध्यक्ष की कलम से			v
	संपादकीय			vi
क्र सं.	**विषय**		**लेखक**	**पृ. सं.**
1.	पर्यटन विकास का परिदृश्य	पर्यटन उद्योग में कंप्यूटर और सूचना संचार का योगदान	प्रो. अवनीश कुमार डॉ धर्मेंद्र कुमार कंचन	01
2.		पर्यटन संवर्धन में विज्ञापनों का महत्व	उमेश कुमार	08
3.		पर्यटन विकास के लिए फेसबुक की उपयोगिता	अरुण कुमार पाटिलकर उमेश कुमार	14
4.		पर्यटन उद्योग और मीडिया	सी.पी. पैन्यूली	20
5.		पर्यटन के विकास में पुस्तकालय की भूमिका	डॉ. शालिनी व्यास	25
6.	पर्यटन की दिशाएँ	बुंदेलखंड में पर्यटन के नए आयाम	आर्कि. आञ्जनेय शर्मा आर्कि. निशांत उपाध्याय प्रो. पी. एस. चानी प्रो. देवेश निगम	33
7.		दिल्ली के विश्व विरासत स्थलों का पर्यटन पर प्रभाव	उज्ज्वल अंकुर	44
8.		राजस्थान में पर्यटन प्रोत्साहन योजनाएँ	अजित सिंह विजय राज सिंह शेखावत	49
9.		पर्यटन संवर्धन में कला का महत्व	दिलीप कुमार	53
10.		पूर्वोत्तर पर्यटन : स्वर्ग अनन्वेषित का भारत अतुल्य	डॉ. शरद कुमार कुलश्रेष्ठ	59
11.		अवधी खाना उत्तर प्रदेश के पर्यटन का ख़जाना: संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ	महेंद्र सिंह	64
12.		आहु तियों के ज्योतिपुंज: अंडमान और निकोबार	राकेश रेणु	71
13.	पर्यटन अनुप्रयुक्तियाँ	पर्यटन क्षेत्र में कौशल विकास	प्रो. निमित चौधरी	79
14.		भारत में वन पारिस्थितिकी पर्यटन एवं वन संरक्षण	प्रो. देवेश निगम डॉ. विनय कुमार नरूला	85
15.		पारि-पर्यटन : एक विवेचन	प्रो. बी. आर. बामनिया डॉ.धर्मेन्द्र कुमार	89
16.		पर्यटन में आवासीय सुविधाएँ	गिरीश नंदानी	93
17.		आध्यात्मिक पर्यटन से ग्रामीण विकास में मीडिया का योगदान	राघवेंद्र दीक्षित	102
18.		भारतीय सांस्कृतिक पर्यटन की शिक्षा	डॉ. राजेश कुमार व्यास	109
19.		पूर्व सैनिकों की पर्यटन में संभाव्य भूमिका	प्रो. मोनिका प्रकाश डॉ. शैलजा शर्मा	112
20.		मूलभूत पर्यटन शब्दावली		117
21.		ग्राहक फार्म		160
22.		प्रकाशन विभाग के बिक्री केंद्र		162
23.		आयोग का बिक्री केंद्र		163

अध्यक्ष की कलम से

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग विभिन्न वैज्ञानिक, तकनीकी एवं मानविकी आदि से संबद्ध क्षेत्रों में तैयार की गई शब्दावली का समुचित उपयोग सुनिश्चित करने तथा उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 'ज्ञान गरिमा सिंधु' पत्रिका का प्रकाशन करता है। आयोग द्वारा इस पत्रिका के समय-समय पर कुछ विशेष विषयों पर विशेषांकों का प्रकाशन किया गया है। इसी शृंखला में 'पर्यटन विशेषांक' अपने पाठकों व लेखकों को सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। ज्ञान गरिमा सिंधु' का जनवरी-मार्च 2018 का अंक पर्यटन तथा अन्य संबद्ध क्षेत्रों से जुड़े विषयों पर केंद्रित है।

पत्र-पत्रिकाएँ न केवल संस्था विशेष के ज्ञान के वैशिष्ट्य की परिचायक होती हैं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अलग-अलग क्षेत्रों में हो रहे महत्त्वपूर्ण अनुसंधानों व शोध कार्यों का एक समेकित व जनोपयोगी सार्थक मंच भी होती हैं। यद्यपि अन्य वैज्ञानिक पत्रिकाओं के समानांतर ही 'ज्ञान गरिमा सिंधु' का उद्देश्य भी मूल रूप में हिंदी में मानविकी विषयक लेखन को प्रचारित-प्रसारित करना है, जिसका कार्यान्वयन व अनुपालन पत्रिका अपने प्रत्येक अंक में करती ही रही है। ऐसे विशेषांकों के कारण एक ही विषय पर वैविध्यपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करने से पाठकों को संबंधित क्षेत्रों में हो रहे नवीनतम अनुसंधानों एवं शोध-कार्यों की अद्यतन सूचनाएँ एक ही स्थान पर उनकी भाषा में उपलब्ध हो जाती हैं। पत्रिका का यह अंक कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण व संग्रहणीय हैं। देश भर से पर्यटन विषय के विभिन्न प्राध्यापकों/लेखकों द्वारा अत्यल्प सूचना पर अपने-अपने विषयों के महत्वपूर्ण आलेख तैयार किए है।

इस विशेषांक में आलेखों के साथ-साथ पाठकों के ज्ञानवर्धन-हेतु पर्यटन विषय की महत्वपूर्ण व उपयोगी शब्दावली को भी प्रकाशित किया गया है, ताकि पाठक व लेखक भविष्य में अपने द्वारा किए जा रहे वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखन में मानक शब्दावली का प्रयोग कर राष्ट्रीय स्तर पर शब्द-पर्यायों की एकरूपता सुनिश्चित करने में सहयोग प्रदान कर सकें। इसी के साथ आयोग द्वारा तैयार मूलभूत पर्यटन शब्दावली के लगभग 1000 शब्दों को परिशिष्ट के रूप में भी इसमें सम्मिलित किया गया है।

मैं इस अवसर पर देश के प्रतिनिधि विश्वविद्यालयों, तकनीकी, वैज्ञानिक एवं अन्य संस्थाओं के वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से अपेक्षा करता हूँ, कि वे आयोग के विशेषज्ञ, विद्वानों के सहयोग से तैयार की गई प्रामाणिक व मानक शब्दावली का अधिक से अधिक प्रयोग कर अपना सार्थक सहयोग प्रदान करें।

इस कार्य को पूर्ण रूप से संपादित कर प्रकाशन योग्य तैयार करने का उत्तरदायित्व डॉ. धर्मेन्द्र कुमार व श्री विजय राज सिंह शेखावत द्वारा निभाया गया। है। मैं इस पत्रिका के परामर्श एवं संपादन समिति के प्रत्येक विशेषज्ञ, संपादक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, सह-संपादक श्री विजय राज सिंह शेखावत, प्रकाशन एकक प्रभारी श्री शिव कुमार चौधरी के प्रति धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। मैं इस विशेषांक के लेखकों को भी साधुवाद देता हूँ।

सुधी पाठकों के अमूल्य सुझावों व सहयोग की प्रतीक्षा रहेगी।

(प्रोफेसर अवनीश कुमार)

अध्यक्ष

संपादकीय

अनादि काल से विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मनुष्य के जीवन में पर्यटन महत्वपूर्ण रहा है। अध्ययन-अध्यापन से जुड़कर तो इस विषय की उपयोगिता निरंतर बढ़ती चली जा रही है। हिंदी माध्यम से पर्यटन विषयक शब्दावली और आलेखों की उपलब्धता को बढ़ावा देने की दिशा में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की पत्रिका 'ज्ञान गरिमा सिंधु' के इस 57वें अंक को पर्यटन विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने की योजना बनाते समय इस विषय के महत्व, समसामयिकता तथा उपयोगिता को ध्यान में रखा गया है।

प्रस्तुत विशेषांक में पर्यटन के तीन पक्षों पर आधारित लेख हैं। पहले खंड 'पर्यटन विकास का परिदृश्य' संबंधी आलेखों में पर्यटन की एक विषय शौक और उद्योग के रूप में विकसित होते दर्शाया गया है। पर्यटन की दिशाएँ' नामक दूसरे खंड में स्थल विशेष के पर्यटन का महत्व और जानकारियाँ समाहित की गई हैं। और तीसरे खंड पर्यटन अनुप्रयुक्तियों में पर्यटन से जुड़े ज्ञान-विज्ञान के अन्य विषयों की अवस्थिति है।

हम इस पर्यटन विशेषांक की विशेषज्ञ एवं संपादन समिति के सभी सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय निकालकर इसके संपादन एवं प्रकाशन में अपना सहयोग प्रदान किया है।

हम आयोग के अध्यक्ष महोदय के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने पर्यटन विषय पर विशेषांक के प्रकाशन हेतु प्रेरित किया। हम बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी के पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान के प्रोफेसर देवेश निगम तथा संचार एवं पत्रकारिता विभाग के श्री सी. पी. पैन्यूली और श्री उमेश कुमार के साथ-साथ संपादन में सहयोग करने वाले हिंदी विशेषज्ञों तथा आलेख तैयार कर भिजवाने वाले सभी लेखकों के प्रति भी आभार प्रकट करते हैं। आज सभी के मार्गदर्शन, सामग्री-संकलन आदि के कारण विशेषांक गरिमापूर्ण बन पाया।

इस पर्यटन विशेषांक के अंत में आयोग की ओर से विषय विशेषज्ञों की सहायता से तैयार पर्यटन विषयक मूलभूत शब्दावली के लगभग 1000 शब्द भी दिए गए हैं। प्रयोक्ताओं से अनुरोध है कि वे इस शब्दावली के संबंध में आयोग को अपने मंतव्य से अवगत कराएँ और इसके व्यापक उपयोग तथा प्रचार-प्रसार में सहयोग करें। आशा है, पर्यटन-प्रेमी पाठकों, छात्रों और अध्येताओं के लिए यह विशेषांक उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक रहेगा।

(विजय राज सिंह शेखावत)
स. वैज्ञानिक अधिकारी

(डॉ. धर्मेन्द्र कुमार)
सहायक निदेशक

पर्यटन उद्योग में कंप्यूटर और सूचना संचार का योगदान

प्रो.अवनीश कुमार[1]
डॉ धर्मेंद्र कुमार कंचन[2]

परिचय

जब से मानव ने धरती पर जन्म लिया है तभी से उसका विकास आरंभ हुआ जो आज तक लगातार जारी है। विकास की इस कड़ी में कंप्यूटर का आविष्कार एक महान योगदान है। आज के समय में कंप्यूटर हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। आज कंप्यूटर लगभग प्रत्येक कार्य में मानव के सहायक के रूप में कार्य कर रहा है जिसे नकारा नहीं जा सकता है। स्कूल, कॉलेज, बैंक, रेलवे, अस्पताल, एवं सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थान कंप्यूटर के अधीन हो चुके हैं। इसके साथ ही इंटरनेट के आविष्कार एवं विकास ने कंप्यूटर की शक्ति को अत्यधिक गति प्रदान की है, जिसके कारण सूचना संचार क्रांति का आवाहन हो चुका है। इंटरनेट की ऑनलाइन सुविधा का उपयोग नेट बैंकिंग, ऑनलाइन बुकिंग, ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन फॉर्म, इनकम टेक्स रिटर्न, जीएसटी रिटर्न आदि में हो रहा है। भारत सरकार ने बहुत से कार्यों के लिए इंटरनेट का उपयोग अनिवार्य बना दिया। वैज्ञानिक अनुसंधान, व्यापार, उद्योग, पर्यावरण मौसम विज्ञान, अंतरिक्ष अभियान, संचार, यातायात, चिकित्सा, मनोरंजन आदि सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर और इंटरनेट से कार्य करना आसान और लाभदायक हो गया है। कंप्यूटर से जटिल से जटिल समस्याओं को सुलझाया जा सकता है और बहुत-से असंभव कार्यों को संभव बनाया जा सकता है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए तो कंप्यूटर अत्यंत आवश्यक है क्योंकि कंप्यूटर राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी एक ऐसा साधन है जिसके जरिए किसी भी देश में मानवीय और आर्थिक स्थितियों को सुधारा जा सकता है। आज सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व इतना बढ़ गया है कि यह किसी देश की अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित कर सकता है। जब सूचना प्रौद्योगिकी के कारण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है तो इसका कुछ प्रभाव मानव जीवन पर भी पड़ता है और उसके स्तर में वृद्धि होती है। कंप्यूटर संचार तथा सूचना सामग्री के समाहार से एक ओर जहाँ अनेक अवसर पैदा हो जाते हैं, वहीं दूसरी ओर कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। सूचना प्रौद्योगिकी सामाजिक राजनीतिक क्रांति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है। इस क्रांति से आर्थिक एवं सामाजिक बदलाव की नई संभावनाओं के द्वार खुलते हैं जो विकसित तथा विकासशील दोनों ही वर्ग के राष्ट्र हेतु लाभकारी हैं।

अपने देश भारत में भी भारत सरकार द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी के विकास हेतु जो नीति अपनाई गई है, उसका प्रमुख उद्देश्य उचित वातावरण का निर्माण करके देश में सॉफ्टवेयर का विकास तथा हार्डवेयर विनिर्माण, दोनों को ही प्रोत्साहित करना है। इस संबंध में समय-समय पर विभिन्न उपाय किए जा रहे हैं जिनसे संपदा के सर्जन तथा आर्थिक विकास में संगति बनी रहे। देश में ही रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध हों। आज के युग में पर्यटन एक उद्योग का रूप ले चुका है अतः पर्यटन के व्यवसाय में भी कंप्यूटर की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता है। कंप्यूटर पर्यटन के क्षेत्र में भी विभिन्न सेवाएँ प्रदान कर रहा है जिससे पर्यटन उद्योग को बहुत लाभ हुआ है तथा पर्यटन उद्योग में भी कंप्यूटर का उपयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है।

[1] अध्यक्ष, सीएसटीटी, नई दिल्ली.

[2] सहायक आचार्य, गणितीय एवं कंप्यूटर विज्ञान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झाँसी.

पर्यटन का महत्व तथा उद्देश्य

पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो अपने सामान्य वातावरण से यात्रा करके बाहर के स्थानों में रहने जाते हैं। यह दौरा मनोरंजन, व्यापार व अन्य उद्देश्यों से किया जाता है। पर्यटन दुनिया भर में एक आरामपूर्ण गतिविधि के रूप में लोकप्रिय हो गया है। विश्व क़े कई उद्योग तो सिर्फ पर्यटन क़े कारण ही फल-फूल रहे हैं।

वैश्विक स्तर पर प्राप्त आँकड़ों क़े अनुसार 2007 में, 810 मिलियन से अधिक अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के आवागमन के साथ, 2006 की तुलना में 6.6% की वृद्धि दर्ज की गई। 2007 में अंतरराष्ट्रीय पर्यटक प्राप्तियाँ 856 अरब डॉलर थीं। विश्व अर्थव्यवस्था में अनिश्चितताओं के बावजूद, 2008 के पहले चार महीनों में आगमन में 5% की वृद्धि हुई, यह 2007 में समान अवधि में हुई वृद्धि के लगभग समान थी।

विश्व के कई देशों जैसे मिश्र (इजिप्ट), थाईलैंड, सिंगापुर, मलेशिया और कई द्वीप राष्ट्रों जैसे फिजी, श्रीलंका आदि के लिए पर्यटन बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये देश अपने पर्यटन, माल और सेवाओं के व्यापार से बहुत अधिक मात्रा में धन प्राप्त करते हैं। इन देशों क़े सेवा उद्योग में रोजगार के अवसर पर्यटन से जुड़े हैं। इन सेवा उद्योगों में परिवहन सेवाएँ जैसे - क्रूज, पोत और टैक्सियाँ, निवास स्थान जैसे होटल, मनोरंजन स्थल और अन्य आतिथ्य उद्योग सेवाएँ आदि शामिल हैं।

हमारे देश भारत में भी पर्यटन का अत्यधिक विकास हुआ है। हमारे देश का मूलमंत्र है- 'अतिथि देवो भव:' तथा भारतीय प्राच्य ग्रंथों में स्पष्ट रूप से मानव के विकास, सुख और शांति की संतुष्टि व ज्ञान के लिए पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है। हमारे देश के ऋषि-मुनियों ने भी पर्यटन को महत्व दिया है। प्राचीन गुरुओं, ऋषियों आदि ने पर्यटन के महत्व को जाना और कहा कि पर्यटन के बिना मानव अंधकार प्रेमी होकर रह जाएगा। पाश्चात्य संत आगस्तिन ने तो यहाँ तक कह दिया कि बिना विश्व दर्शन ज्ञान अधूरा है। अंग्रेजी में एक वाक्य है– यात्रा सीखना है और सीखना यात्रा है। (लर्न टू ट्रेवल, ट्रेवल टू लर्न) जो इस बात को दर्शाता है कि पर्यटन के बिना ज्ञान संभव नहीं है ।

पर्यटन की परिभाषा

हुंज़िकेर और कर्फ ने सन् 1941 में पर्यटन को इस प्रकार से परिभाषित किया– "पर्यटन, गैर निवासियों की यात्रा और उनके ठहरने से उत्पन संबंध और क्रियाओं का योग है। ये लोग यहाँ स्थायी रूप से निवास नहीं करते और न ही आजीविका के लिए आते हैं। सन् 1976 में, इंग्लैंड की पर्यटन सोसायटी ने इसे इस प्रकार से परिभाषित किया - "पर्यटन लोगों का किसी बाहरी स्थान पर अस्थायी और अल्पकालिक गमन है, प्रत्येक गंतव्य स्थान में ठहरने के दौरान पर्यटक सामान्यतया यहाँ रहते हैं और काम करते हैं। इसमें सभी उद्देश्यों के लिए गमन शामिल है।" सन् 1981 में, इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ़ साईंटिफिक एक्सपर्ट्स इन टूरिज्म ने पर्यटन को घर के वातावरण के बाहर चयनित विशिष्ट गतिविधि के रूप में परिभाषित किया।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन् 1994 में पर्यटन आँकड़ों के अनुसार इसे तीन रूपों में वर्गीकृत किया - **घरेलू पर्यटन**, जिसमें किसी देश के निवासियों की केवल उनके ही देश के अंदर यात्रा शामिल है, **अप्रवासी (इनबाउंड) पर्यटन** जिसमें गैर निवासियों की किसी देश में यात्रा शामिल है; और **विदेशी (आउटबाउंड) पर्यटन,** जिसमें निवासियों की दूसरे देश में यात्रा शामिल है।

पर्यटन उद्योग में सूचना संचार प्रौद्योगिकीकी आवश्यकता

यात्रा और पर्यटन न केवल दुनिया में एक उद्योग के रूप मे विकसित हो गया है बल्कि यह लगातार हर साल बढ़ता जा रहा है। 1990 और 2000 के बीच दुनिया भर में पर्यटकों की संख्या प्रति वर्ष 4-3 प्रतिशत की औसत दर से बढ़ी है। विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद के मुताबिक यात्रा और पर्यटन उद्योग, दुनिया भर की जीडीपी का लगभग 11% का प्रतिनिधित्व करता हैं।

विश्व का पर्यटन परिदृश्य बदल रहा है तथा विश्व में सूचना संचार प्रौद्योगिकी का समावेश हो चुका है। इंटरनेट ने विश्व को एक वैश्विक गाँव में बदल दिया है। इसके माध्यम से सारे विश्व को माउस की क्लिक के द्वारा खोजा जा सकता है। इंटरनेट के द्वारा कोई भी पर्यटक कहीं से भी किसी भी पर्यटन स्थल की समस्त सूचनाओं को प्राप्त कर सकता है। ये सूचनाएँ सिर्फ लिखित में न होकर चित्रों तथा वीडियो के माध्यम से भी प्राप्त की जा सकती हैं। इंटरनेट के माध्यम से वह देश या स्थान जहाँ पर्यटक जाना चाहता है, उस स्थान की समस्त जानकारी प्राप्त कर सकता है। चाहे वहाँ का इतिहास हो, जलवायु हो या सामाजिक अथवा राजनीतिक परिदृश्य, इंटरनेट समस्त सूचनाओं का भंडार है। सूचना संचार क्रांति का अत्यधिक प्रचार-प्रसार होने के कारण पर्यटकों को भ्रमण पर जाना आसान हो गया है।

आजकल हर कोई लैपटॉप और स्मार्टफोन का उपयोग करता है। यह उपकरण नेटवर्क द्वारा इंटरनेट से जुड़े होने के कारण यात्रा में भी पर्यटकों या यात्रियों के लिए सहायक सिद्ध होते हैं या निर्देशक की तरह कार्य करते हैं। इंटरनेट द्वारा उपलब्ध समस्त जानकारियाँ और पर्यटकों को रेल, हवाई जहाज, टैक्सी या बस आदि की टिकट के आरक्षण करने में सुगमता, किसी शहर के होटल या अतिथिगृह में अग्रिम आरक्षण करने में आसानी सिर्फ इंटरनेट एवं सूचना संचार प्रौद्योगिकी द्वारा ही संभव हुई है।

पर्यटन मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। पिछले कुछ दशकों में तकनीकी क्रांति के परिणाम स्वरूप सामाजिक परिवेश में बड़ी तेजी से बदलाव हुए हैं तथा पर्यटन व्यवसाय भी इससे अछूता नहीं है। सूचना तकनीकी का प्रभाव पर्यटन उद्योग पर साफ देखा जा सकता है। पर्यटन वर्तमान में एक बड़ा आकार ले चुका है तथा संसार का प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी रूप में पर्यटन से जुड़ा हुआ है। पर्यटन में रुचि रखने वाला हर व्यक्ति, हर उस स्थान की सूचना प्राप्त करना चाहता है जहाँ वह भ्रमण पर जाना चाहता है। इन सूचनाओं को निम्न प्रकार से क्रमबद्ध किया जा सकता है।

- पर्यटन स्थल की भौगोलिक स्थिति, परिदृश्य तथा जलवायु।
- पर्यटन संबंधित आवश्यक सूचनाएँ।
- आवास, रेस्तरां, और शॉपिंग संबंधित सुविधाएँ।
- हवाई मार्ग, रेलवे और सड़क के माध्यम से परिवहन के अनुसूचित माध्यमों की उपलब्धता।
- स्थानीय, सामाजिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाज, संस्कृति और अन्य विशिष्ट सुविधाएँ।
- विभिन्न स्थानीय गतिविधियों एवं मनोरंजन से संबंधित सुविधाएँ।
- यात्रा के मौसम और समय से संबंधित सूचनाएँ।
- सुविधाओं की गुणवत्ता और विनिमय दर सहित उनके मानक मूल्य।

वैसे तो उक्त सूचनाओं की जरूरत पर्यटकों के लिए अति आवश्यक है, परंतु उपरोक्त विभिन्न सेवा प्रदाता व्यक्ति एवं संस्थाएं भी सूचना-भंडारण और उनका उपयोग करके पर्यटकों को सहायता प्रदान कर, आर्थिक रूप से लाभान्वित होते हैं।

पर्यटन में सहायक सेवा प्रदाता जैसे - यात्रा अभिकर्ता (ट्रेवल-एजेंट), पर्यटन संचालक (टूर-ऑपरेटर) तथा विभिन्न आरक्षण प्रणालियाँ भी उपरोक्त सूचनाओं को एकत्रित रखती हैं जिससे वे अपने पर्यटन व्यवसाय को सुचारु रूप से चला सकेँ तथा यात्रियों को समुचित सूचनाएँ एवं सुविधाएँ त्वरित गति से प्रदान कर सेवाओं की गुणवत्ता बनाए रख सकते हैं; अपने पर्यटन व्यवसाय का विस्तार कर सकते हैं।

पर्यटन उद्योग के प्रमुख घटक एवं सूचना प्रौद्योगिकी में संबंध

पर्यटन उद्योग के तीन प्रमुख घटक हैं, जो इस प्रकार परिभाषित किए जा सकते है :

- परिवहन क्षेत्र
- आवास क्षेत्र
- आकर्षण क्षेत्र

परिवहन क्षेत्र

यात्रा पर जाने के लिए परिवहन अति आवश्यक है। विश्व के समस्त पर्यटन प्रधान देशों जैसे थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, मिश्र, श्रीलंका एवं ऑस्ट्रेलिया सहित भारत में परिवहन के क्षेत्र में कंप्यूटर अनुप्रयोगों का समुचित इस्तेमाल हो रहा है । परिवहन से जुड़ी सेवाएँ जैसे रेलवे, किराये पर कार, बस/कोच रेंटल, तथा हवाई टिकट आरक्षण आदि सेवाएँ कंप्यूटरीकृत हैं तथा इंटरनेट के माध्यम से पर्यटक स्वत: ही इन्हें आरक्षित करा सकते हैं। टिकट आरक्षण से संबंधित समस्त जानकारी स्मार्टफोन में लघु संदेश सेवा (एस एम एस) के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। अलग से टिकट लेने अथवा मुद्रित करने की भी जरूरत नहीं होती है। इस तरह की व्यवस्था काफी सुविधाजनक होती है। यात्रा के दौरान कभी भी ऑनलाइन टिकट बुक किए जा सकते हैं। इस तरह की सेवाएँ सिर्फ कंप्यूटर सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा ही संभव हैं।

1. कार रेंटल एवं ऑनलाइन बुकिंग सुविधाएँ

आरामदायक यात्रा के लिए कार एक प्रमुख परिवहन साधन है। छोटी या कम दूरी की यात्रा के लिए पर्यटक अधिकतर कार या टैक्सी का प्रयोग करते हैं। किराए पर टैक्सी अथवा कार देने का व्यापार पर्यटन व्यवसाय का एक जरूरी अंग है। भारतवर्ष सहित विश्व के कई देशों में यह व्यवस्था पूरी तरह से कंप्यूटरीकृत है। टैक्सी अथवा कार की बुकिंग ट्रैवल एजेंट द्वारा या यात्री द्वारा खुद भी, ऑनलाइन इंटरनेट के माध्यम से की जा सकती है। भारत में इस व्यवसाय की प्रमुख कंपनियाँ ओला तथा उबेर हैं। इंटरनेट के माध्यम से कंप्यूटर पर अथवा स्मार्टफोन पर ऐप के द्वारा कार, टैक्सी की बुकिंग की जा सकती है। किराए का भुगतान भी ऑनलाइन वेबसाइट या ऐप के माध्यम से किया जा सकता है। ऑनलाइन भुगतान के लिए डेबिट या क्रेडिट अथवा नेट बैंकिंग का उपयोग सर्वोत्तम है।

2. रेलयात्रा एवं कंप्यूटरीकृत आरक्षण सेवाएँ

रेलयात्रा, यात्रियों एवं पर्यटकों का बहुत लोकप्रिय एवं सबसे पसंदीदा साधन है। भारतवर्ष सहित विश्व के लगभग सभी देशों में ये सेवा कंप्यूटरीकृत है। कम बजट वाले पर्यटक अधिकतर रेल यात्रा को प्रमुखता देते हैं। भारतवर्ष ने रेलवे की समस्त सेवाओं को कंप्यूटर एवं इंटरनेट के माध्यम से जोड़ दिया है। रेलवे का सॉफ्टवेयर पैकेज क्रिस संस्था सेंटर फॉर रेलवे

इन्फॉर्मेशन सिस्टम द्वारा रेलवे के लिए डिज़ाइन और विकसित किया गया है। इस सॉफ्टवेयर पैकेज का आईआरसीटीसी द्वारा इसके ऑनलाइन संस्करण का प्रयोग एवं रखरखाव किया जाता है। इस संस्करण के द्वारा कोई भी यात्री घर बैठे या कहीं से भी अग्रिम आरक्षण करा सकता है। इस पैकेज पर यात्री ट्रेन की स्थिति, आरक्षण की स्थिति, सीटों की उपलब्धता आदि आसानी से पता कर सकते हैं। अब व्यक्ति यात्रा की तारीख से पहले अच्छी तरह टिकट बुक कर सकते हैं एवं यात्रा का आनंद उठा सकते हैं।

इसके साथ ही रेलवे ने रेल यात्रियों/पर्यटकों के लिए एक नया मोबाइल ऐप - 'रेल सारथी' विकसित किया है। इस ऐप को भारतीय रेलवे ने तैयार किया है। इस ऐप से रेल यात्रियों की सभी जरूरतें पूरी हो सकती हैं। इस एप्लीकेशन में टिकट बुकिंग, इन्क्वायरी से लेकर फ्लाइट बुकिंग और खाना ऑर्डर करने तक की सेवाएँ मिलेंगी। इसके साथ ही यात्रियों के पास यदि कोई सुझाव या शिकायत है तो उसे भी इस एप्लीकेशन के जरिए दिया जा सकता है। इस एप्लीकेशन की मदद से रेल टिकट के साथसाथ फ्लाइट टिकट-, टैक्सी बुकिंग, होटल बुकिंग भी की जा सकती है। इसके साथ ही कई निजी कंपनियों ने भी अपनी वेबसाइट तथा मोबाइल एप्लीकेशन बनाए हैं, जिनका लाभ भली-भाँति उठाया जा सकता है।

3. हवाई यात्रा एवं कंप्यूटरीकृत आरक्षण सेवाएँ

रेलवे की भाँति विमान सेवाओं मे भी कंप्यूटर, इंटरनेट संचार सूचना प्रौद्योगिकी का भरपूर उपयोग हो रहा है। विमान यात्रा के क्षेत्र में हवाई कंपनियों एयरलाइन्स ने कंप्यूटरीकरण का अधिकतम प्रयोग किया है तथा सूचना प्रौद्योगिकी इस क्षेत्र में सर्वाधिक विकसित है। कंप्यूटर आरक्षण प्रणाली (सीआरएस) का व्यापक रूप से सभी एयरलाइन्स में टिकट बुक करने के लिए उपयोग किया जाता है। कंप्यूटर आरक्षण प्रणाली अधिभोग की उच्च दर पैदा करने में मदद करती है तथा यह हवाई कंपनी को वितरण एवं विपणन के क्षेत्र में एक बेहतर अवसर प्रदान करती है। आजकल विश्व स्तर पर हवाई यात्रा की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, साथ ही भारतवर्ष में भी हवाई यात्रा के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है जिसका कारण कई कम लागत वाली हवाई कंपनियाँ हैं। हवाई कंपनियाँ ये कम कीमत पर हवाई यात्रा सेवा प्रदान कर रही हैं। हवाई यात्रा सेवाओं की गुणवत्ता बनाए रखने में संचार सूचना प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान हैं। हवाई जहाज के संचालन में काम आने वाला एयरक्राफ्ट नेविगेशन सिस्टम पूर्णतया कंप्यूटरीकृत एवं संचार सूचना प्रौद्योगिकी से लैस है। यह प्रणाली हवाई जहाज के सुरक्षित संचालन एवं पर्यटकों की सुरक्षा हेतु अति आवश्यक है।

आवास क्षेत्र

लगभग 3 दशक पहले जब पर्यटन उद्योग में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रवेश नहीं हुआ था तब पर्यटन उद्योग की संरचना का मतलब था, आवास क्षेत्र में व्यवसायों की कमी, क्योंकि यात्रियों और उपभोक्ताओं की पहुँच सीधे आवास क्षेत्र सेवा प्रदाता या होटल व्यवसायों तक नहीं थी। परंतु सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार ने इस कमी को दूर कर दिया है। आज लगभग प्रत्येक होटल, अतिथि गृह व्यवसायी ने अपनी सेवाओं को पूर्णतया कंप्यूटरीकृत एवं इंटरनेट से लैस कर लिया है। ये सेवाएँ आज ऑनलाइन वेबसाइटों के माध्यम से पर्यटकों की पहुँच में हैं। अब यात्री अपनी यात्रा से पूर्व ही ऑनलाइन आरक्षण की पुष्टि करा सकते हैं। आवासीय आरक्षण सुविधाएँ, कंप्यूटर एवं स्मार्टफोन के माध्यम से हर जगह उपलब्ध हैं। आज भारत सहित विश्व के लगभग प्रत्येक देश में इस तरह की सेवाओं का अत्यधिक प्रचलन होने के कारण पर्यटक मानसिक संतुष्टि अनुभव करते हैं जो कि पर्यटकों के लिए अति आवश्यक है। भारत में आवास क्षेत्र में कई ऐसी कंपनियाँ हैं जो ऑनलाइन होटल के कमरे आदि बुकिंग करने में सहायक हैं। उदाहरण के लिए – ओयो रूम, गोइबिबो, त्रिवागो, बुकिंगबड्डी, यात्राडॉटकॉम, मेकमायट्रिपडॉटकॉम इत्यादि। इन ऑनलाइन वेबसाइटों पर किसी भी प्रकार का अग्रिम आरक्षण कराया जा सकता है।

आकर्षण क्षेत्र

आकर्षण क्षेत्र पर विचार करने से पहले एक प्रश्न का उत्तर नितांत आवश्यक है। "हम पर्यटन पर क्यों जाते हैं?" इस प्रश्न के विभिन्न उत्तर हो सकते है। इनमें से एक उत्तर यह भी है कि, "विश्व एवं इसकी समस्त धरोहरें मानव को आकर्षित करती हैं।" यह मनुष्य का स्वाभाविक गुण है कि जो चीज़ उसे आकर्षित करती है, वह उसे पाने या देखने की लालसा रखता है तथा इसकी पूर्ति के लिए प्रयास करता है। पर्यटन भी इसी आकर्षण क्षेत्र से जुड़ी एक प्रक्रिया का परिणाम है। आकर्षण क्षेत्र के मामले में मानव निर्मित और प्राकृतिक दोनों प्रकार के स्थान आते हैं।

संसार में ऐसे कई स्थान हैं जिनके प्रति मनुष्य में स्वाभाविक आकर्षण होता है, जैसे आगरा का ताजमहल। यह पर्यटकों को अपनी ओर सदियों से आकर्षित करता चला आया है। ऐसे ही विश्व के अनेक स्थान हैं, जैसे अमेरिका का नियाग्रा प्रपात, पीसा की झुकी हुई मीनार, चीन की दीवार, गोवा के समुद्र तट, कश्मीर की वादियाँ एवं जल प्रपात, अनेकानेक ऐसे स्थान हैं जिनके बारे में पर्यटक जानना चाहते हैं और यहाँ की यात्रा करना चाहते हैं। इसके लिए विश्व के अनेक देशों की सरकारों ने ऑनलाइन वेबसाइटें बना रखी हैं। कुछ निजी पर्यटन व्यवसायियों ने भी इस तरह की वेबसाइट बनाई हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करने वाले स्थानों के बारे में संपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करती हैं तथा ऑनलाइन टैक्सी, कमरे आदि की बुकिंग अथवा आरक्षण कराने में मदद करती हैं।

वैश्विक वितरण प्रणाली एवं पर्यटन उद्योग

ट्रैवल एजेंटों, ऑनलाइन आरक्षण स्थलों और बड़े निगमों द्वारा एयरलाइंस सीटें, होटल के कमरे, किराये की कारों और अन्य यात्रा से संबंधित वस्तुओं को आरक्षित करने के लिए एक विश्वव्यापी कंप्यूटरीकृत आरक्षण नेटवर्क बनाया गया है जिसे जीडीएस कहते है। प्रमुख वैश्विक वितरण प्रणाली (जीडीएस) अमेडस, गैलीलियो, सब्रे, तथा वर्ल्डस्पैन हैं। वैश्विक वितरण प्रणाली एक ऐसी कंपनी द्वारा संचालित नेटवर्क है, जो ट्रैवल सेवा प्रदाताओं (मुख्य रूप से हवाई कंपनियों, होटल और कार किराए पर लेने वाली कंपनियों) तथा ट्रैवल एजेंसियों के बीच स्वचालित लेनदेन को सक्षम बनाता है। ट्रैवल एजेंसियों को परंपरागत रूप से उपभोक्ताओं के लिए यात्रा से संबंधित सेवाएँ प्रदान करने के लिए तथा सेवाओं, उत्पादों और दरों के लिए जीडीएस प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

इंटरनेट से पहले जब कंप्यूटर अस्तित्व में आए तब इनका प्रयोग मूलतः डेटाबेस एप्लीकेशन तक सीमित था। डेटाबेस एप्लीकेशन के कार्य सिर्फ डाटा का भंडारण, डाटा संवर्धन तथा कुछ रिपोर्ट उत्पन्न करना मात्र था। पहले कंप्यूटर नेटवर्क और उसके बाद इंटरनेट के आविष्कार से कंप्यूटर के क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन देखने को मिला। इंटरनेट का आविष्कार क्रांतिकारी साबित हुआ और इसने सारे विश्व को एक सूत्र में पिरो दिया। पर्यटन उद्योग भी इससे अछूता ना रहा। आज पर्यटन उद्योग के लिए समस्त जरूरी प्रक्रियाएं इंटरनेट पर उपलब्ध हैं जो इंटरनेट के द्वारा ही संचालित होती हैं। पर्यटन तथा होटल व्यवसाय आज पूरी तरह से इंटरनेट एवं तकनीकी संचार सूचना पर आधारित है। तकनीकी संचार सूचना की बदौलत आज पर्यटन उद्योग में दिन प्रति दिन तरक्की कर रहा है। हर सूचना इंटरनेट पर उपलब्ध होने के कारण पर्यटकों को भी पर्यटन संबंधित अवकाश की तैयारी करने में आसानी होती है। इसी कारण पर्यटकों की संख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि दर्ज की जा रही है। भविष्य में भी तकनीकी संचार सूचना में और अधिक परिवर्तन देखने को मिलेगा। जो क्षेत्र अभी तकनीकी संचार सूचना और इंटरनेट प्रौद्योगिकी से नहीं जुड़े हैं, उनको भी तकनीकी से जोड़ने के प्रयास किए जाएंगे। तकनीकी संचार सूचना का प्रयोग लागत को कम करने तथा यात्रा की गुणवत्ता में सुधार करने में प्रयुक्त होगा।

संदर्भ

- आनंद, विजय कुमार (2010), 'सूचना प्रौद्योगिकी' विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

- मेकोंन्न जी और एग्ज़ाभेर, 'इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी: इट्स युसेस इन टूरिज्म इंडस्ट्री' कैटरिंग एंड टूरिज्म ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट
- जर्नल ऑफ़ इनफार्मेशन, टेक्नोलॉजी एंड टूरिज्म, कॉग्निजेंट प्रकाशन
- शंकर ,दीप्ती, 'आईसीट और पर्यटन: चुनौतियाँ और अवसर' भारतीय तकनीकी संस्थान, गुवाहाटी
- रविंद्रन, जी, 'टूरिज्म एंड इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी', पर्यटन विभाग, भारत सरकार

- ट्रेवल तकनीकी- https://en.wikipedia.org/wiki/Travel_technology

- पर्यटन में इंटरनेट तकनीकी - https://www.researchgate.net/publication/308887766_

- ग्लोबल डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम- https://en.wikipedia.org/wiki/Global_distribution_system

पर्यटन संवर्धन में विज्ञापनों का महत्व

उमेश कुमार

"सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ
जिंदगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहाँ"

पर्यटन हमेशा से किसी समाज के लिए सामाजिक आयोजन रहा है। यह प्रत्येक मनुष्य की प्राकृतिक अभिलाषा से अभिप्रेत होता है| यह लोगों में नए अनुभव, कार्य, शिक्षा, ज्ञान और मनोरंजन के लिए होता है। एक - दूसरे की संस्कृति और मूल्यों को समझने के लिए तथा अन्य सामाजिक, धार्मिक और व्यावसायिक हितों की पूर्ति के लिए पर्यटन का विकास हुआ है। वैसे पर्यटन के अनेक आयाम हैं। पर्यटक सांस्कृतिक दूत की भूमिका निभाने के साथ - साथ राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में भी महती योगदान देता है।

भारत के संदर्भ में पर्यटन की बात करें तो जर्मन विद्वान मैक्समूलर की एक उक्ति याद आती है, "अगर मुझसे पूछा जाए कि इस आसमान के नीचे मानव ने कहाँ पर अपने सबसे खूबसूरत उपहार को पूरी तरह संवारा है तो मैं भारत की ओर इशारा करूंगा।" यही है भारत की वैभवपूर्ण विरासत। क्योंकि भारत में, पर्यटन उद्योग का विशेष स्थान हैं| चूंकि इसमें न केवल उच्च दर पर विकास करने की क्षमता है अपितु यह अपने अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष संबंधों और अंतर क्षेत्रीय सहक्रियाशीलताओं के माध्यम से कृषि, बागवानी, हस्तशिल्प, परिवहन, निर्माण आदि के साथ अन्य आर्थिक क्षेत्रकों को भी अभिप्रेरित करता है। अर्थात यह देश में दूसरे उद्योगों को बल प्रदान करता है और अंतरराष्ट्रीय ऋण चुकाने में सहायता करने के लिए पर्याप्त धन का अर्जन करता है। देश के लिए यह विदेशी मुद्रा का बड़ा अर्जक है। भारत में पर्यटन कई नजरिए से महत्त्वपूर्ण है। एक तरफ सरकार देश में पर्यटन को बढ़ावा देना चाहती है। इससे विदेशी मुद्रा बढ़ेगी। साथ में पर्यटन के कारोबार में रोजगार की भी बहुत संभावनाएँ हैं।

सकल घरेलू उत्पाद और पर्यटन विज्ञापन अभियान पर किया गया व्यय

देश	पर्यटन विज्ञापन पर किया गया व्यय (कुल विज्ञापन व्यय का प्रतिशत)	सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन का हिस्सा (आंकड़े प्रतिशत में)
सेयचेल्स	22.4	21
मालटा	11.4	14
मारीशस	16.4	11
बारडोस	16.1	10.9
यूएसए	5.2	2.7

भारत और पर्यटन विज्ञापन अभियान

भारत सरकार की योजना है कि 2016 में देश में आने वाले पर्यटकों की संख्या में बारह फीसद की बढ़ोतरी की जाए। टीवी चैनलों और पत्र - पत्रिकाओं में प्रसारित और प्रकाशित होने वाला एक नारा 'अतिथि देवो भव' जरूर याद होगा।

सहायक प्राध्यापक, भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

इसके जरिए यह संदेश देने की कोशिश की जाती है कि भारत आने वाले पर्यटक हमारे अतिथि हैं। उनके मान - सम्मान की सुरक्षा करना हमारा दायित्व है। वैसे भी इस देश में अतिथि को सम्मान देने की पुरानी परंपरा रही है| भारत में पर्यटन एक उद्योग का रूप ले रहा है। देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इसका 6.5 फीसद योगदान है। पर्यटन उद्योग से करीब चार करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिला हुआ है। परोक्ष रूप से भी इस व्यवसाय से काफी लोग जुड़े हुए हैं। इनकी रोजी - रोटी का जरिया विदेशी सैलानी ही हैं। पिछले तीन वर्षों के आँकड़ें बताते हैं कि 2015 में करीब सवा लाख पर्यटक कम आए। 2014 में 2013 की तुलना में दस फीसद सैलानी अधिक आए थे। अक्तूबर 2015 तक भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों में सबसे ज्यादा हिस्सा 15.22 फीसद बांग्लादेशी पर्यटकों का रहा। 12.99 फीसद के साथ अमेरिका दूसरे स्थान पर रहा है। वहीं ब्रिटेन से 11.31, श्रीलंका से 3.69, जर्मनी से 3.62, कनाडा से 3.58, आस्ट्रेलिया से 3.37, मलेशिया से 3.03, फ्रांस से 3.01, नेपाल से 2.67, चीन से 2.55, जापान से 2.42, रूस से 2.03, सिंगापुर से 1.65 और पाकिस्तान से 1.59 फीसद पर्यटक भारत आए। जनवरी से अक्तूबर 2015 के दौरान पर्यटन उद्योग से करीब 101,348 करोड़ रुपये की कमाई हुई।

विश्व स्तर पर पर्यटकों को भारत के प्रति आकर्षित करने के लिए भारत सरकार भी प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों का विज्ञापन करती है। भारत सरकार के पर्यटन विभाग ने वित्तीय वर्ष 2012-13 में 182.83 करोड़ रुपये, 2013-14 में 195.29 करोड़ रुपये, 2014-15 में 166.35 करोड़ रुपये तथा वित्तीय वर्ष 2015-16 में 5 अगस्त 2015 तक 24.99 करोड़ रुपये विज्ञापन पर व्यय किया था।

विज्ञापन क्षेत्र और विज्ञापन व्यय (वित्तीय वर्ष 2015 के आँकड़ों पर आधारित)

उत्पाद श्रेणी	व्यय	वृद्धि प्रतिशत	2014-15	विकास में योगदान	
	रुपये करोड़ में	प्रतिशत		रुपये करोड़ में	प्रतिशत
एफएमसीजी	12364	28	20	2050	31
ई कॉमर्स	4231	10	23	793	12
ऑटो	4105	9	28	899	14
दूरसंचार	3307	8	34	848	13
शिक्षा	1940	4	16	269	4
यात्रा और पर्यटन	1432	3	47	458	7

उत्पाद के आधार पर विज्ञापनों पर किए गए व्यय तथा वृद्धि पर नजर डालें तो पता चलता है कि वित्तीय वर्ष 2014-15 में यात्रा एवं पर्यटन के विज्ञापनों की विकास दर सबसे अधिक 47 प्रतिशत रही है जबकि इस वित्तीय वर्ष में कुल विज्ञापन पर व्यय वृद्धि महज 18 प्रतिशत रही है। दूसरे स्थान पर दूरसंचार तथा तीसरे स्थान पर ऑटो क्षेत्र है।

मीडिया के आधार पर भारत में पर्यटन विज्ञापन पर व्यय

क्रमांक	मीडिया	व्यय (करोड़ में)
1.	मुद्रण माध्यम	323
2.	विद्युत माध्यम	261
3.	आभासी माध्यम	66

अतुल्य भारत

भारत वि के पाँच शीर्ष पर्यटक देशों में से एक है। इसलिए भारतीय पर्यटन विभाग ने सितंबर 2002 में 'अतुल्य भारत' नाम से एक नया अभियान शुरू किया था। सरकार और एक्सपीरियेंस इंडिया सोसायटी ने शुरुआती चरण में पहले तीन माह का खर्च वहन किया था। इस अभियान के अंतर्गत हिमालय, वन्य जीव, योग और आयुर्वेद पर अंतरराष्ट्रीय समूह का ध्यान खींचा गया। देश के पर्यटन क्षेत्र के लिए इस अभियान से संभावनाओं के नए द्वार खुल गए। देश की पर्यटन क्षमता को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने वाला यह अपनी तरह का पहला प्रयास था। एक तरह से यह भारत सरकार का पर्यटन को बढ़ावा देने का पहला विज्ञापन अभियान था। इसके तहत विदेशों में रहने वाले भारतीयों को आकर्षित करने का प्रयास किया गया था। मीडिया के प्रत्येक उपकरण का उपयोग इस विज्ञापन अभियान के लिए किया गया था। पर्यटन के क्षेत्र का विकास इसके पूर्व राज्य सरकारों के अधीन हुआ करता था। इस अभियान के बाद पर्यटन में केंद्र का योगदान भी बढ़ता जा रहा है। यहाँ दो राज्यों के पर्यटन संबंधी विज्ञापनों के प्रभाव पर चर्चा अपेक्षित है।

मध्यप्रदेश पर्यटन और विज्ञापन

मध्य प्रदेश में सामाजिक और आर्थिक हालातों पर आलोचना/समालोचना की जा सकती है लेकिन इस राज्य से जुड़ी एक चीज़ ऐसी है जिसे देखकर मुँह से हर बार वाह ही निकलता है। ये है मध्य प्रदेश पर्यटन के विज्ञापन जिसमें हर बार कुछ न कुछ नया और अनोखा देखने को मिलता है। कभी छाया से तो कभी रंगों के साथ कलाकारी दिखाते मध्य प्रदेश पर्यटन के विज्ञापन ध्यान खींचने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

इसी कड़ी में राज्य पर्यटन का एक और नया कमर्शियल रिलीज़ हुआ है जिसमें इस बार खिलौनों का इस्तेमाल किया गया है। इस विज्ञापन के बोल हैं **"एमपी में दिल हुआ बच्चे – सा"** और बिना किसी तामझाम के, खिलौनों के ज़रिए राज्य के पर्यटन की खास बातें इतनी खूबसूरती से पेश की गई हैं कि इसके खत्म होते ही बच्चों की तरह तालियाँ बजाने का मन कर जाए।

इस विज्ञापन का कॉन्सेप्ट ओगिल्वी इंडिया का है और इसे हंगरी फिल्म्स ने शूट किया है। गौरतलब है कि पाँच साल पहले मध्यप्रदेश पर्यटन का **"एमपी अजब है"** कमर्शियल भी काफी पसंद किया गया था और उसने विज्ञापन जगत में कई पुरस्कार भी बटोरे थे।

गुजरात पर्यटन और विज्ञापन

गुजरात में पर्यटन को सुनियोजित ढंग से बढ़ावा देने के लिए सरकार ने जोर-शोर से प्रचार अभियान की शुरुआत 2009 में की। इस विज्ञापन अभियान के लिए सदी के महानायक अमिताभ बच्चन को ब्रांड अंबेसडर बनाया गया था। अमिताभ बच्चन पर फिल्माए **"गुजरात बिना नवरात्र कहाँ", "खुशबू गुजरात की"** तथा **"कुछ दिन तो गुजारो गुजरात में"** विज्ञापन अभियान बहुत सफल सिद्ध हुए थे। इसी के परिणाम हैं कि 2002-03 की अवधि में गुजरात आने वाले पर्यटकों की संख्या 61.65 से 2011-12 में 2.23 करोड़ हो गई थी। 2013 के आँकड़ों के अनुसार पिछले दो सालों में ही पर्यटकों की संख्या में लगभग 54 लाख की वृद्धि हुई है। यही कारण है कि गुजरात में पर्यटन को विकास का इंजन तक घोषित कर दिया गया है।

विश्व और पर्यटन विज्ञापन अभियान

विजिट इंग्लैंड - संयुक्त राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विजिट इंग्लैंड **'ग्रेट कैंपेन'** के नाम से विज्ञापन अभियान की शुरुआत की गई थी। इस अभियान के लिए 127 मिलियन यूरो की व्यवस्था की गई थी तथा यह अभियान चार वर्षों के लिए था। इसका उद्देश्य चार वर्षों में 4.6 लाख अतिरिक्त पर्यटकों को आकर्षित करना था। इस अभियान के लिए सोशल मीडिया के साथ ही साथ बिलबोर्ड, टेलीविजन, सिनेमा, यातायात विज्ञापन (पेरिस मैट्रो) तथा नई दिल्ली और मुंबई

में 100 टैक्सियों का उपयोग किया गया था। विज्ञापन में यूनियन जैक (इंग्लैंड का झंडा) के साथ ब्रिटेन के ऐतिहासिक तथा पर्यटक स्थलों की तस्वीरों का प्रयोग किया गया था। इस अभियान का लक्षित समूह वि के सात देशों के 14 शहरों - बीजिंग, बर्लिन, लास एंजिल्स, मेलबर्न, मुंबई, नई दिल्ली, न्यूयार्क, पेरिस, रियो डी जानेरो, साओ पाउलो, संघाई, सिडनी, टोक्यो और टोरोंटो में आने वाले 90 लाख पर्यटक थे।

विजिट स्कॉटलैंड - स्कॉटलैंड में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए दो विज्ञापन अभियान- **'क्रिएटिव स्कॉटलैंड'** और **'डिस्कवर स्कॉटलैंड'** नाम से 2012 में शुरू किए गए थे। वर्ष 2012 में **'क्रिएटिव स्कॉटलैंड'** विज्ञापन अभियान पर 6.5 मिलियन यूरो तथा **'डिस्कवर स्कॉटलैंड'** पर 7.5 लाख मिलियन यूरो खर्च किया गया। **'क्रिएटिव स्कॉटलैंड'** विज्ञापन का उद्देश्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा स्कॉटलैंड की रचनात्मकता के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करना था। इसके लिए टेलीविजन और मुद्रण माध्यम का प्रयोग करते हुए विज्ञापन के द्वारा लोगों को स्कॉटलैंड की संस्कृति से परिचित कराना था जिससे अधिक से अधिक पर्यटक उस क्षेत्र में आएँ। **'डिस्कवर स्कॉटलैंड'** के विज्ञापनों के लिए डिज्नी फिल्मों की सहायता ली गई थी। डिज्नी फिल्म द्वारा निर्मित **'डिस्कवर स्कॉटलैंड'** विज्ञापन को 72 देशों में प्रदर्शित किया गया था।

पर्यटन आयरलैंड : 'एस्केप ऑफ़ मैडनेस'- इस विज्ञापन अभियान के लिए 500,000 यूरो की व्यवस्था की गई थी। इस कैंपेन का उद्देश्य ओलंपिक खेलों के दौरान आयरलैंड की यात्रा के लिए लंदनवासियों को प्रोत्साहित करना था। एस्केप मैडनेस नामक विज्ञापन अभियान का लक्ष्य आयरलैंड में खेलों के दौरान शहर में यात्रा करने की परेशानी से बचने और लंदन के लिए आदर्श गंतव्य बनाना था। इस अभियान के लिए 200 अलग-अलग ट्यूब स्टेशनों में बड़े विज्ञापन दिखाए गए जिसमें आयरलैंड के बड़े-बड़े स्थानों को दिखाया गया था। इसके अलावा इस अभियान के समर्थन में आयरलैंड में सोशल मीडिया चैनलों का भी उपयोग किया गया। इसके नवीनतम चरण में पर्यटन आयरलैंड ने आयरलैंड के दर्शकों को प्रोत्साहित करने के लिए ब्राइड्समेड्स और क्रिस ओश्ड्यूड की आवाज में एक छोटी - सी फिल्म बनाई गई। इस अभियान का लक्षित श्रोता मुख्य रूप से लंदन में रहने वाले लोग और खेलों के लिए लंदन आने वाले लोगों की आकर्षित करना था।

विजिट फ्रांस : 'फ्रांस, आओ और खेलो' - इस 10 वर्षीय पर्यटन विज्ञापन अभियान के लिए 600,000 ब्रिटिश पाउंड खर्च किया गया था। **'फ्रांस, आओ और खेलो'** अभियान उन लोगों को आकर्षित करने के लिए किया गया जो लंदन ओलंपिक के लिए फ्रांस के रास्ते लंदन जा रहे थे। यह दस साल के बहु-मिलियन यूरो **'गंतव्य फ्रांस'** पर्यटन विज्ञापन अभियान के हिस्से के रूप में आता है, जो फ्रांस को शीर्ष यात्रा गंतव्य के रूप में मानता है। इस अभियान को सभी सोशल मीडिया और चैनलों के माध्यम से प्रचारित किया गया और इसे अपनी वेबसाइट डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यूडॉटगोटूफ्रांसडॉटकॉम के द्वारा भी प्रसारित किया गया। इस परियोजना में 23 विभिन्न अभियान छवियाँ भी शामिल हैं जो ओलंपिक-थीम वाले नारे पर आधारित थीं। इन विज्ञापनों को शहर भर में प्रमुख स्थानों और साथ ही सोशल मीडिया साइट्स, ट्रेन और बसों के द्वारा प्रसारित/प्रकाशित किया गया। हालांकि, यह अभियान बाद में आलोचना का शिकार भी हुआ क्योंकि इस अभियान के लिए जिन समुद्री तटों का उपयोग किया गया था वे फ्रांसीसी तटों के न होकर दक्षिण अफ्रीका और फ्लोरिडा के समुद्री तटों के थे। इस पर्यटन विज्ञापन अभियान का लक्षित समूह ओलंपिक के लिए लंदन की यात्रा करने वाले अंतरराष्ट्रीय पर्यटक तथा ओलंपिक के दौरान लंदन में होने वाली भीड़ से बचने के लिए इच्छुक लंदन वासी थे।

ब्रांड अमरीका - डिस्कवर अमेरिका **'सपनों का देश'** एकीकृत वैश्विक ब्रांड अमरीका पर्यटन विज्ञापन अभियान संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए 200 मिलियन डालर का विपणन अभियान दुनिया भर से आने वाले यात्रियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया था। ब्रांड यूएसए का लक्ष्य पर्यटन क्षेत्र में अमेरिकियों के लिए हजारों नई नौकरियों का सृजन करना था। यह अभियान जेडब्ल्यूटी संचार एजेंसी के साथ साझेदारी में तैयार किया गया था। यह पर्यटन विज्ञापन अभियान मार्च 2012 में शुरू किया गया और 60, 20 और 15 मिनट के विज्ञापनों के माध्यम से विश्वव्यापी टेलीविजन के मिश्रण का उपयोग करके प्रचार किया गया। इन विज्ञापनों में जॉनी कैश की बेटी रोसेन कैश को दिखाया गया है। इसके साथ ही साथ

इस अभियान में डिजिटल मीडिया, मोबाइल, बिलबोर्ड और मुद्रण माध्यमों को भी शामिल किया गया था। साथ ही देश के विशिष्ट फेसबुक और ट्विटर पृष्ठों के माध्यम से एक मजबूत ऑनलाइन मीडिया द्वारा लक्षित प्रचार का प्रदर्शन किया गया। इसके साथ ही पर्यटन योजना के लिए डिस्कवरअमेरिकाडॉटकॉम के नाम से एक वेबसाइट की शुरुआत की गई जिसका उद्देश्य अमरीका के बारे में पर्यटकों को सूचना उपलब्ध कराना था। इस पर्यटन विज्ञापन अभियान का लक्षित समूह वैश्विक स्तर पर पर्यटकों को अमरीका के लिए आकर्षित करना था। इसके लिए तीन चरणों में विज्ञापन किया गया। सबसे पहले एक मई को यूनाइटेड किंगडम, जापान और कनाड़ा में 12.3 मिलियन अमरीकी डॉलर के साथ विज्ञापन अभियान शुरू किया गया। दूसरे चरण में ब्राजील और दक्षिण कोरिया तथा तीसरे चरण में चीन, मैक्सिको और शेष यूरोपीय संघ के राज्यों में इस अभियान को प्रसारित किया गया। दीर्घकालीन चले इस पर्यटन विज्ञापन अभियान से अमेरिकी ट्रैवल एसोसिएशन को उम्मीद है कि विज्ञापन पर खर्च किए गए प्रत्येक डॉलर के लिए आगंतुक - खर्च में 20:1 का रिटर्न हासिल करने में सक्षम होगा।

कनाडा पर्यटन आयोग – **'कनाडा कीप ऑन एक्सप्लोरिंग'** इस पर्यटन विज्ञापन अभियान के लिए कनाडा के पर्यटन आयोग को कनाडा की आर्थिक कार्य योजना संगठन से तीन साल के लिए 48 मिलियन से अधिक की धनराशि प्रदान की गई थी। कनाड़ा पर्यटन विज्ञापन अभियान के लिए दो स्तरों पर प्रयास किया गया। प्रथम स्तर पर देश के भीतर विज्ञापन अभियान चलाकर तथा दूसरे स्तर पर अंतरराष्ट्रीय प्राथमिकता वाले देशों में विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और ब्राजील, कनाडा के भीतर एक विज्ञापन कार्यक्रम में संलग्न होने और अमेरिका, चीन, भारत और ब्राजील में इस अभियान को आयोजित किया गया। 2009-10 के **'देश को जानें'** अभियान ने कनाडा के लोगों के लिए कनाडा के भीतर यात्रा करने और वे देश के बारे में जो नहीं जानते हैं उससे परिचित कराने का था। इसका उद्देश्य देश के अंदर पर्यटन को बढ़ावा देने का था। इसके लिए ग्रीष्मकालीन विशेष अभियान अमेरिका के मुख्य शहरों विशेषकर न्यूयार्क और शिकागो में संचालित किया गया। **'कनाडा को हेलो कहो' (से हेलो टू कनाडा)** पर्यटन विज्ञापन अभियान की शुरुआत चीन की राजधानी बीजिंग में की गई। इसके तहत कनाड़ा पर्यटन आयोग ने बीजिंग के मुख्य समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में विज्ञापन प्रकाशित कराया जिसमें कनाड़ा की जीवनशैली तथा तथा वहाँ के प्रमुख स्थलों के बारे में जिक्र किया गया था। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के साथ ही साथ इस अभियान के लिए सोशल मीडिया, वीडियो शेयरिंग साइट्स, खोज इंजन, लघु ब्लाग साइट्स आदि का भी उपयोग किया गया। इसी अभियान के अंतर्गत **'लेइंग द फाउंडेशन'** शीर्षक के तहत पर्यटन विज्ञापन अभियान संचालित किया गया। इस अभियान में स्वदेशी के साथ ही साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर के पर्यटकों को आकर्षित करने का लक्ष्य रखा गया था। इसमें स्थानीय पर्यटन के विकास के लिए अधिकांश धनराशि खर्च की गई। अमेरिका में इस अभियान के अंतर्गत लगभग 82 मिलियन डालर खर्च किया गया। प्रधान मंत्री को उम्मीद थी कि 2013 तक चीन पर्यटन के लिए कनाडा का तीसरा सबसे बड़ा विदेशी बाजार होगा तथा 2015 तक पर्यटन के राजस्व में 300 मिलियन डॉलर की एक अतिरिक्त राशि का उत्पादन हो सकेगा।

संदर्भ

- अतुल्य भारत http://incredibleindiacampaign.com/campaign2009.html
- *Webdeveloper (2003-10-16). "The 'Incredible India' Campaign: Marketing India to the World | Marketing Case Studies | Business Marketing Management Cases | Case Study".* www.icmrindia.org/casestudies/catalogue/Marketing/MKTG122.htm
- Rong, W. and Z. Mu, 2013. Research on the tourism effect and marketing strategy of convention and exposition industry, a case study of Shenzhen city of China. Journal of Service Science and Management 6: 151-159.
- Moradkhani, M., 2014. Trend of tourism in Iran with emphesise of Zorastian places. Dissertation. Tehran: Islamic Azad University , Science and Research Branch
- http://eprints.qut.edu.au/82032/1/IJGG-2014-3(10)-124-134.pdf
- http://eprints.qut.edu.au/82032/1/IJGG-2014-3(10)-124-134.pdf
- http://www.archwoodside.com/wp-content/uploads/2015/09/Woodside-tourism-advertising-metrics-ACTHR-4.pdf
- http://industry.visitcalifornia.com/media/uploads/files/editor/Research/CTTC_CanadaSpring2007_AdEffect.pdf
- http://epubs.surrey.ac.uk/753845/1/destination%20advertising%20impact%20-%20final.pdf

पर्यटन विकास के लिए फेसबुक की उपयोगिता

अरुण कुमार पाटिलकर[1]

उमेश कुमार[2]

फेसबुक सोशल नेटवर्किंग का एक सशक्त माध्यम माना जाता है। फेसबुक की शुरुआत मार्क जुकरबर्ग की थी। इसका उद्देश्य विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययन कर रहे छात्रों के शारीरिक आकर्षण का चित्रों के माध्यम से अंदाजा लगाना था। इसके तहत छात्र अपने छायाचि को 'हू इज हॉट' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित करते थे तथा उन पर आए 'लाइक्स', 'हिट्स', 'कमेंट्स', और 'शेयर' के आधार पर उनकी हॉटनेस निर्धारित की जाती थी। फेसबुक के प्रयोग में वर्तमान में बहुत परिवर्तन आ चुका है। आज फेसबुक का प्रयोग आभासी दुनिया में सामाजिक संबंधों के निर्माण के लिए किया जाता है। उपयोगकर्ता अपने भूले-बिसरे या दूर के दोस्तों से जुड़ने के लिए भी इसका उपयोग करते हैं।

मध्य प्रदेश के पर्यटन विभाग ने फेसबुक की महत्ता को समझते हुए 29 नवंबर 2010 को अपना खाता (एकाउंट) खोला था। तब से लेकर अभी तक वह लोगों से जुड़ने के लिए इसका प्रयोग बखूबी कर रहा है। वर्तमान में मध्यप्रदेश के पर्यटन विभाग के फेसबुक पेज को लगभग तीस हजार लोगों ने पसंद किया है। पर्यटन विभाग के इस फेसबुक पेज पर पर्यटन के स्थानों के छायाचित्रों के साथ ही साथ मध्य प्रदेश की संस्कृति एवं कला से संबंधित छायाचित्रों को भी प्रकाशित किया गया है। इस फेसबुक पेज से 16679 लोग जुड़े हुए हैं जो छायाचित्रों को समय - समय पर प्रकाशित करते रहते हैं। इस फेसबुक पेज के संदर्भ में 2076 लोगों ने जुड़ने की इच्छा जताई है। फेसबुक के इस पेज पर 2013 में लगभग 500 छायाचित्र अपलोड किए गए।

शोध का उद्देश्य

- मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग के फेसबुक पेज पर उपलब्ध छायाचित्रों के प्रकारों तथा स्थानों का अध्ययन।
- छायाचित्रों पर लोगों द्वारा किए गए कमेंट्स (टिप्पणियों) का अध्ययन।
- छायाचित्रों को लाइक्स (पसंद) और 'शेयर' (साझा) करने की प्रवृत्ति का अध्ययन।

शोध प्रविधि

इस शोध हेतु मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग के फेसबुक पेज पर वर्ष जनवरी 2013 से सितंबर 2013 तक अपलोड किए गए छायाचित्रों का अध्ययन किया गया है। शोध में छायाचित्रों पर किए गए कमेंट्स, लाइक्स और शेयर करने की प्रवृत्ति का अध्ययन किया गया है।

शोध की प्रासांगिकता

फेसबुक का प्रभाव आए दिन समाज में परिलक्षित होता रहता है। किसी भी तनाव की स्थिति में सरकार की चिंता का पहला विषय सोशल नेटवर्किंग साइटें खासकर फेसबुक होता है। सोशल नेटवर्किंग साइटें दो-धारी तलवार की तरह होती हैं। यदि इसका प्रयोग सही तरीके से किया जाता है तो यह लोगों से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम बन जाता है तथा गलत तरीके से करने पर सामाजिक विघटन का कारण भी बन जाता है। जैसा कि मुजफ्फरनगर दंगों के समय में देखने को मिला था। सरकारी विभाग इनका उपयोग जनसंपर्क के रूप में तथा लोगों से जुड़ने के लिए करते हैं। यहाँ पर कोई द्वारपाल नहीं

[1] अतिथि व्याख्याता, कर्मवीर विद्यापीठ, खंडवा, मध्य प्रदेश

[2] सहायक प्राध्यापक, भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश

होता है| अतः सामग्रियों का प्रकाशन आसानी से किया जा सकता है। इस शोध की प्रासंगिकता यह है कि फेसबुक का उपयोग मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग किस प्रकार से कर रहा है तथा यह उसके लिए कितना लाभदायी सिद्ध हो रहा है।

साहित्य समीक्षा

साफ्टवेयर एंड इन्फार्मेशन इंडस्ट्री एसोसिएशन द्वारा 2003 में किए गए एक अध्ययन में पाया गया है कि 77 प्रतिशत लोगों ने माना है कि वेब आधारित सुविधाएँ भविष्य में संगठन की सफलताओं के लिए आवश्यक होंगी । केंट एवं टेलर ने सोशल नेटवर्किंग एवं अन्य वेबसाइटों को पाँच मापदंडों के आधार पर उसके महत्व को रेखांकित किया है। (1) संचार के दोनों छोर पर मुक्त प्रवाह के लिए चैटरूम या मैसेज आदि की व्यवस्था, (2) सभी लक्षित लोगों के लिए उपयोगी सूचना का प्रबंधन, (3) प्रतिपुष्टि के लिए चैटरूम, मैसेज आदि की व्यवस्था, (4) उपयोग करने में सहजता (5) आने वाले संदेशों को रखने के लिए आवश्यक लिंक शामिल करना। फार्चून ने 1998 में 500 कंपनियों का अध्ययन किया और पाया कि 'जब बात संगठनात्मक आत्म-संतुष्टि की आती है तो वेब पृष्ठों पर कई आकर्षक विशिष्टताएँ देखी गई हैं। वे उन दर्शकों/श्रोता के लिए उपयोगी प्रतीत होती हैं, जो उन अपेक्षाकृत निष्क्रिय लोगों की तुलना में, जिन तक पारंपरिक जन संचार साधनों द्वारा पहुंचा जाता है, इस लिहाज से अधिक सक्रिय होते हैं कि सूचना को किस प्रकार खोजते हैं और प्रोसेस करते हैं। वेब संगठन को ऐसा संदेश तैयार करने का अवसर प्रदान करता है जिसे प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया के निगरानीकर्ता के आदेशों का पालन नहीं करना पड़ता है। फेसबुक अपने डोमेन में ग्रुपिंग का दुतरफा सममितीय निदर्श (सिमेट्रिकल मॉडल) है और हैबरमास (1962) के खुले पारदर्शी और निष्क्रिय आदर्श वक्तव्य लगते हैं।

आँकड़ों का विश्लेषण

पर्यटन क्षेत्र के आधार पर चित्रों का प्रकाशन

चित्रों की कुल संख्या- 503

पर्यटन क्षेत्र	चित्रों की संख्या	प्रतिशत
प्राकृतिक पर्यटन	231	45.92
ऐतिहासिक पर्यटन	121	24.06
आध्यात्मिक पर्यटन	109	21.67
अन्य	42	8.35

मध्यप्रदेश का पर्यटन क्षेत्र बहुत विस्तृत है। इसमें प्राकृतिक स्थान, ऐतिहासिक स्थान, आध्यात्मिक स्थान प्रमुख पर्यटन के केंद्र हैं। मध्यप्रदेश के पर्यटन विभाग ने अपने फेसबुक पेज पर जुलाई 2013 में कुल 503 चित्रों का प्रकाशन किया था जिसमें से प्राकृतिक पर्यटन स्थानों के 45.92 प्रतिशत चित्र, ऐतिहासिक पर्यटन स्थानों के 24.06 प्रतिशत, आध्यात्मिक पर्यटन स्थानों के 21.67 प्रतिशत चित्र तथा अन्य स्थानों के 8.35 प्रतिशत चित्र हैं।

स्थान के आधार पर चित्रों का प्रकाशन

विषय	स्थान	संख्या	प्रतिशत
प्राकृतिक (कुल 231)	कान्हा राष्ट्रीय उद्यान	34	14.73
	बांधवगढ़	37	16.03
	पन्ना राष्ट्रीय उद्यान	39	16.84
	भेड़ाघाट	49	21.22
	जल प्रपात	53	22.94
	अन्य	19	8.24
ऐतिहासिक (कुल 121)	पंचमढी का धूपगढ़	29	23.97
	कालिंजर	10	8.26
	ग्वालियर का किला	19	15.70
	भीमबेटका	14	11.57
	खजुराहो	31	25.62
	अन्य	18	14.88
आध्यात्मिक पर्यटन (कुल 109)	ओंकारेश्वर	24	22.09
	उज्जैन	27	24.77
	अमरकंटक	11	10.09
	साँची का स्तूप	17	15.57
	चित्रकूट	13	11.93
	अन्य	17	15.56
अन्य (कुल 42)	ग्रामीण पर्यटन	13	30.95
	महोत्सव	11	26.19
	समारोह	14	33.33
	अन्य	4	9.52

स्थान के आधार पर चित्रों का विश्लेषण करने पर पाया गया कि प्राकृतिक स्थानों की श्रेणी में, जल प्रपातों के चित्रों का प्रकाशन, सबसे अधिक 22.94 प्रतिशत किया गया है। इसके बाद 21.22 प्रतिशत भेड़ाघाट तथा 16.84 प्रतिशत पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के चित्रों का प्रकाशन किया गया है। ऐतिहासिक स्थानों की श्रेणी में सबसे अधिक 25.62 प्रतिशत चित्रों का प्रकाशन खजुराहो का किया गया है। साथ ही साथ 23.97 प्रतिशत चित्रों का प्रकाशन पंचमढ़ी तथा 15.70 प्रतिशत ग्वालियर के किले के चित्रों का प्रकाशन किया गया है। आध्यात्मिक स्थानों की श्रेणी में सबसे अधिक 24.77 प्रतिशत चित्रों का प्रकाशन उज्जैन का किया गया है तथा 22.09 प्रतिशत ओंकारेश्वर और 15.57 प्रतिशत साँची के स्तूपों के चित्रों का प्रकाशन किया गया है। अन्य स्थानों की श्रेणी में ग्रामीण पर्यटन के 30.95 प्रतिशत चित्रों का प्रकाशन, समारोह के 33.33 प्रतिशत चित्रों का तथा महोत्सव के 26.19 प्रतिशत चित्रों का प्रकाशन किया गया है।

चित्रों को पसंद, टिप्पणी और शेयर करने की प्रवृत्ति

विषय	स्थान	संख्या	पसंद	मध्यमान	टिप्पणी	मध्यमान	शेयर	मध्यमान
प्राकृतिक	कान्हा राष्ट्रीय उद्यान	34	5119	150.56	1117	32.85	534	15.71
	बांधवगढ़	37	6758	182.65	2312	62.49	645	17.43
	पन्ना राष्ट्रीय उद्यान	39	3423	87.77	1323	33.92	938	24.05
	भेड़ाघाट	49	8463	172.71	1823	37.20	342	6.98
	नर्मदा जल प्रपात	53	4832	91.17	984	18.57	324	6.11
	अन्य	19	8746	460.31	232	12.21	432	22.74
ऐतिहासिक	पंचमढी का धूपगढ़	29	5343	184.24	2123	73.21	234	8.07
	कालिंजर	10	2122	212.20	1016	101.60	384	38.40
	ग्वालियर का किला	19	3847	202.47	1323	69.63	321	16.89
	भीमबेटका	14	8764	626	5263	375.93	562	40.14
	खजुराहो	31	4328	139.61	3467	111.84	343	11.06
	अन्य	18	2132	118.44	1807	100.38	289	16.06
आध्यात्मिक	ओंकारेश्वर	24	4232	176.33	2342	97.58	324	13.5
	उज्जैन	27	5792	214.52	4323	160.11	423	15.67
	अमरकंटक	11	1232	112	341	31	203	18.45
	साँची का स्तूप	17	3221	189.47	1109	65.24	308	18.12
	चित्रकूट	13	3017	232.08	2143	164.85	321	24.69
	अन्य	17	3487	205.12	2005	117.94	342	20.12
अन्य	ग्रामीण पर्यटन	13	1107	85.15	543	41.77	22	1.69
	महोत्सव	11	1009	91.73	672	61.09	56	5.09
	समारोह	14	2342	167.29	1019	72.79	31	2.21
	अन्य	4	231	57.75	79	19.75	12	3

फेसबुक पर चित्रों को उपयोगकर्ताओं द्वारा, पसंद (लाइक), टिप्पणी (कमेंट) और शेयर किया जाता है। यह उपयोगकर्ता की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह किसे लाइक, कमेंट या शेयर करे। जो चित्र उपयोगकर्ता को आकर्षित करता है उपयोगकर्ता उसे पसंद करता है तथा उस पर अपना विचार व्यक्त करता है। इससे यह पता चलता है कि किसी चित्र को कितने लोगों ने देखा है तथा उसकी गुणवत्ता क्या है। मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा फेसबुक पेज पर शोध समय में कुल 503 चित्रों का प्रकाशन किया गया था जिस पर उपयोगकर्ताओं ने अपनी अलग-अलग राय व्यक्त की है। प्रकाशित चित्रों में प्राकृतिक श्रेणी के चित्रों में सबसे अधिक 8463 लोगों ने भेड़ाघाट के चित्रों को पसंद किया है जिसका मध्यमान 172.71 है।

इसके साथ ही कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के चित्रों को 5119 लोगों ने पसंद किया है जिसका मध्यमान 150.56 है। सबसे ज्यादा 2312 टिप्पणियाँ बांधवगढ़ के चित्रों पर की गई हैं जिसका मध्यमान 62.49 है तथा शेयर करने में सबसे अधिक 938 शेयर (जिसका मध्यमान 24.05 है) पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के चित्र का किया गया है।

ऐतिहासिक श्रेणी के चित्रों में सबसे अधिक भीमबेटका के चित्रों को पसंद किया गया है जिसका मध्यमान 626 है तथा भीमबेटका के चित्रों पर सबसे अधिक 5263 टिप्पणियाँ भी की गई हैं। इसका मध्यमान 375.93 है तथा भीमबेटका के चित्रों को सबसे अधिक शेयर भी किया गया है। इसके बाद पंचमढ़ी के चित्रों को सबसे अधिक पसंद किया गया है साथ ही साथ कालिंजर और ग्वालियर के चित्रों को भी क्रमशः 2122 तथा 2847 लोगों ने पसंद किया है, जिनका मध्यमान क्रमशः 212.20 तथा 202.47 है।

आध्यात्मिक पर्यटन श्रेणी के चित्रों में सबसे अधिक 5792 लोगों ने, उज्जैन के चित्रों को पसंद किया था। इसका औसत 214.52 रहा है। इसके साथ ही साथ चित्रकूट के चित्रों को 3017 लोगों ने पसंद किया है जिसका औसत 232.08 है तथा सबसे अधिक 2143 टिप्पणियाँ चित्रकूट के चित्रों पर की गई हैं तथा चित्रकूट के ही चित्रों को सबसे अधिक शेयर भी किया गया है।

चित्रों की विषयवस्तु

विषयवस्तु	संख्या	प्रतिशत
प्रकृति	237	47.12
पशु/पक्षी	167	33.20
व्यजंन (भोजन)	23	4.57
विज्ञापन	27	5.37
समारोह	32	6.36
अन्य	17	3.38

विषय वस्तु के आधार पर चित्रों का विश्लेषण करने पर यह पता चलता है कि सबसे अधिक 47.12 प्रतिशत चित्र प्रकृति से संबंधित हैं। पशुओं जिनमें शेर, हिरण, बाघ तथा पक्षी जिनमें मोर, चिड़ियों आदि शामिल हैं। इनके चित्रों का प्रकाशन 33.20 प्रतिशत और मध्य प्रदेश के व्यंजनों का प्रकाशन 4.57 प्रतिशत किया गया है। मध्य प्रदेश के पर्यटन विभाग के फेसबुक पृष्ठ पर कार्यक्रमों के विज्ञापनों के चित्रों का प्रकाशन 5.37 प्रतिशत, समारोहों का 6.36 प्रतिशत तथा अन्य विषयों के चित्रों का 3.38 प्रतिशत प्रकाशन किया गया है।

निष्कर्ष

- पर्यटन विभाग के फेसबुक पृष्ठ पर प्राकृतिक पर्यटन स्थानों की सबसे अधिक तस्वीरें अपलोड की गई हैं।
- उपयोगकर्ताओं ने राष्ट्रीय पशु की तस्वीर सबसे अधिक अपलोड की हैं।
- प्राकृतिक पर्यटन स्थलों को फेसबुक का उपयोग करने वालों ने सबसे अधिक पसंद किया है। इसके बाद ऐतिहासिक पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन स्थलों को पसंद किया गया है।
- ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र में लोगों ने मेलों के चित्रों को अधिक पसंद किया है।
- मध्य प्रदेश शासन प्रतिवर्ष पर्यटन के क्षेत्र में अनेक कार्यक्रम आयोजित करवाता रहा है जिसे बहुत से पर्यटकों द्वारा पसंद किया गया है।

संदर्भ

- फेसबुक रिडिज़ाइनिंग एंड हिटिंग 800 मिलियन यूजर्स, एलए टाइम्स, सितंबर 2011
- वाय. अमीचाई हैंबरगर और जी विनटज्की 'सोशल नेटवर्क यूज एंड परसनालिटी, कंप्यूटर इन ह्यूमन बिहेवियर'।
- प्रतियोगिता दर्पण अक्तूबर 2013
- फेसबुक साइट
- दैनिक भास्कर
- रोजगार और निर्माण

पर्यटन उद्योग और मीडिया

सी.पी. पैन्यूली

विश्व के विभिन्न देशों में मनोरंजन और शिक्षा हेतु यात्रा के प्रमाण काफी पुरातन समय से उपलब्ध रहे हैं । मिस्र आदि देशों में एक विशिष्ट एवं आरामदायक जीवन शैली, मनोरंजन और अनुभव की खोज में आने वाली यात्राओं के प्रमाण मिलते हैं । प्राचीन लेखन से स्पष्ट है कि दुनिया के विभिन्न देशों से लोग प्राचीन मिस्र की संस्कृति के प्रसिद्ध स्मारकों और अवशेषों को देखने आते थे। भारत के प्राचीन ग्रंथों में भी विभिन्न राजाओं के अन्य स्थानों पर भ्रमण के प्रमाण मिलते हैं। ये यात्राएँ विभिन्न कारणों से की जाती थीं।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में सामूहिक यात्राओं का दौर प्रारंभ हुआ। विशेष रूप से यूरोप में, जहाँ अल्प समय के लिए अंतरराष्ट्रीय यात्रा करना आम बात है । पर्यटकों के पास बजट और स्वाद की एक विस्तृत शृंखला होती है| उनके लिए कई तरह के रिसॉर्ट और होटल विकसित किए गए हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग साधारण समुद्र तट पसंद करते हैं, जबकि दूसरों को विशेष, रिसॉर्ट, परिवार-आधारित या विशिष्ट बाजार लक्षित गंतव्य होटल चाहिए।

प्रौद्योगिकी और परिवहन के बुनियादी ढांचे में विकास, जैसे जंबो जेट्स, कम लागत वाली एयरलाइनों और हवाई अड्डों ने पर्यटन को अधिक सुगम बना दिया है। वर्तमान समय सूचना एवं संचार तकनीकी का है अगर यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी| आज के दौर में कोई भी व्यक्ति किसी भी स्थल के भ्रमण पर निकलने से पहले यह जान लेता है कि जिस क्षेत्र में वह भ्रमण हेतु जाने का इच्छुक है, उस क्षेत्र विशेष में कौन-कौन से स्थल पर्यटन के हिसाब से उपयुक्त हैं तथा उन स्थानों पर उसके निवास तथा भ्रमण हेतु अन्य क्या-क्या सुविधाएँ उपलब्ध हो सकती हैं। स्वाभाविक है कि इसके लिए नई सूचना तकनीकी (एनएमटी) का उपयोग किया जाता है। दूरसंचार के क्षेत्र में हो रही प्रगति के कारण आजकल पर्यटन का बाजार इंटरनेट आधारित हो गया है। पर्यटक इंटरनेट पर ही अपने होटल एवं यात्रा के साधन यथा विमान, रेल एवं टैक्सी आदि की बुकिंग करा लेते है। वर्तमान में पर्यटक अपने इच्छित स्थान पर पर्यटन की सुविधाओं की बुकिंग करा सकता है। कुछ साइटों ने अब पर्यटन पैकेजिंग की पेशकश शुरू कर दी है, जिसमें ग्राहक द्वारा अनुरोध किए जाने वाला एक पूरा पैकेज इच्छित सुविधाओं के साथ उपलब्ध करवा दिया जाता है।

पर्यटन किसी भी देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। विश्व के कई देशों की संपूर्ण अर्थव्यवस्था पर्यटन पर ही निर्भर करती है। किसी भी देश को पर्यटन से होन वाले प्रमुख लाभ इस प्रकार से हैं -

1. **आर्थिक प्रगति -** पर्यटन उद्योग विदेशी मुद्रा भंडार का समर्थन करता है। इससे हमारे देश को विदेशी मुद्रा का लाभ मिलता है| वैश्विक मंदी के बावजूद , भारतीय पर्यटन 2010 में 6.9 प्रतिशत बढ़कर लगभग 42 अरब डॉलर हो गया।

2. **आय का स्रोत** - पर्यटन सार्वजनिक और निजी आय का एक सतत स्रोत है। सरकार विभिन्न प्रकार के कर लगाती है, जिसे सरकारी राजस्व कहा जाता है| इन करों के माध्यम से उत्पन्न आय सार्वजनिक आय है| स्थानीय कलाकृतियों, हस्तशिल्प वस्तुओं आदि से एक विक्रेता द्वारा अर्जित लाभ को निजी आय कहते हैं। पर्यटन रोजगार पैदा करने में भी मदद करता है इसने विशेष रूप से होटल उद्योग, आतिथ्य उद्योग, सेवा क्षेत्र, मनोरंजन तथा परिवहन उद्योग में रोजगार की शुरुआत की है ।

सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, भास्कर जनसंचार एवं पत्रकारिता संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झाँसी -2824128 (उत्तर प्रदेश)

3. **विदेशी मुद्रा का स्रोत -** पर्यटन उद्योग दुनिया के प्रभावशाली उद्योगों में से एक है। फ्रांस, अमेरिका, मिश्र, इंग्लैंड, जापान, दक्षिणी अफ्रीका, नेपाल, मालदीव, मारीशस, टर्की, इटली, स्पेन, मोरक्को आदि देश प्रमुख पर्यटक स्थलों की श्रेणी में आते हैं। पर्यटन उद्योग को नेपाल तथा कई अन्य छोटे देशों में; जहाँ पर जीवन यापन के अन्य संसाधनों के अभाव में; अपनी मुख्य आय के मुख्य स्रोत के रूप में लिया जा रहा है।

किसी देश में भ्रमण करने वाले विदेशी पर्यटक उस देश की आय के प्रमुख स्रोत होते हैं। विश्व के प्रमुख दस देशों में 2016 में आने वाले पर्यटकों की संख्या नीचे दी जा रही है-

क्रम	देश	देशी - विदेशी पर्यटक (मिलियन में)
1.	फ्रांस	86.2
2.	संयुक्त राज्य अमेरिका	84.0
3.	स्पेन	75.6
4.	चीन	59.3
5.	इटली	52.5
6.	इंग्लैंड	35.8
7.	जर्मनी	35.6
8.	मेक्सिको	35.0
9.	थाईलैंड	32.6
10.	टर्की	32.0

विदेशी पर्यटक देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, क्योकि विदेशी पर्यटकों से प्राप्त होने वाली आय उस देश की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख भाग होती है। इन तथ्यों को निम्न तालिका के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है।

वर्ष	आय (मिलियन डालर में)
2011	16,564
2012	17,737
2013	18,445
2014	20,236
2015	21,071
2016	22,923

4. **सार्वजनिक और निजी आय के स्रोत -** पर्यटन उद्योग में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के सरकारी कर , बिक्री कर, सेवा कर आदि आय का स्रोत हैं। ये सरकारी राजस्व के रूप में जाने जाते हैं । वह जनता की आय है और हस्तकला, कला आदि ऐसी चीजें जो पर्यटकों को आकर्षित करती हैं और जिनके विक्रय पर निर्माता - विक्रेता कुछ लाभ देते हैं जिसे निजी आय कहा जाता है।

विश्व में प्रमुख पर्यटक स्थलों से प्राप्त आय के मामले में लंदन सबसे ऊपर है।

क्रम	शहर	आय (बिलियन डालर में)
1.	लंदन	20.2
2.	न्यूयार्क	17.3
3.	पेरिस	16.6
4.	सियोल	15.2
5.	सिंगापुर	14.6
6.	बारसिलोना	13.8
7.	बैंकाक	12.3
8.	कुआलालंपुर	12.0
9.	दुबई	11.6
10.	इस्तांबुल	9.3

5. **रोजगार के अवसर** - पर्यटन उद्योग रोजगार के अवसर पैदा करता है| यह अकुशल, अर्द्ध कुशल और कुशल श्रमशक्ति को रोजगार प्रदान करता है। गाइड, लोड मैन आदि पर्यटन उद्योग के आवश्यक अंग हैं।

6. **अधोसंरचना का विकास** - क्या आपने कभी गौर किया है कि जब किसी स्थल को पर्यटन स्थल घोषित किया जाए तो स्थिति कैसे बदल जाती है? दरअसल, पर्यटन सहायता और बांध, सड़क, कनेक्टिविटी, हवाई अड्डे के सुधार और किसी भी अन्य गतिविधि के लिए सुविधाएँ जुटाकर बुनियादी ढांचे के विकास को प्रोत्साहित करता है जिससे पर्यटक को एक बेहतर अनुभव मिले ।

7. **सामाजिक प्रगति** - पर्यटन सामाजिक प्रगति को प्रोत्साहित करता है क्योंकि पर्यटक नए स्थानों पर जाने के दौरान एक - दूसरे के लिए सम्मान, सहिष्णुता और प्यार दिखाना सीखते हैं।

8. **सांस्कृतिक विरासत** - पर्यटन हमारे देश की सुंदरता, कला, इतिहास, विरासत और संस्कृति को समझाने में मदद करता है। किसी भी देश का दौरा करने वाले अलग-अलग लोग सुंदर सांस्कृतिक अवधारणाओं को साथ ले जाते हैं और दुनिया के अन्य स्थानों पर जाकर अन्य लोगों के लिए उन अवधारणाओं को प्रचारित करते हैं । इसी तरह, स्थानीय कौशल, भाषाओं और कलाओं को व्यापक स्वीकृति मिलती है ।

9. **राष्ट्र का प्रचार-** किसी देश में आए पर्यटक उस देश की संस्कृति, रहन-सहन तथा प्रगति को विश्व के अन्य देशों तक पहुँचाते हैं| इस प्रकार पर्यटन किसी भी देश के लिए वि भर में प्रचार का एक साधन बन जाता है।

भारत में भी पर्यटन एक प्रमुख उद्योग का रूप ले चुका है। विश्व के अन्य देशों के सापेक्ष प्रकृति द्वारा प्रदत्त हमारी विविधता के अंतर्गत मालदीव जैसे प्राचीन समुद्र तट, मारीशस, मिस्र या ग्रीस जैसे प्राचीन विरासत - स्थलों, कांगो या अमेजॅन जैसे वर्षावन, जांबिया या कनाडा, केन्या या दक्षिण अफ्रीका जैसे वन्यजीव, स्विट्जरलैंड, स्वीडन तथा अन्य यूरोपीय

देशों जैसी प्राकृतिक सुंदरता, वि के विभिन्न देशों के समकक्ष प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, जीवन के विभिन्न रंगों से रंगे देश के विभिन्न भागों के त्योहार हमारे देश को एक अद्वितीय पर्यटन स्थल बना देते हैं।

पर्यटन विकास और मीडिया

लोकतंत्र के चार स्तंभ माने जाते हैं, विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और पत्रकारिता। स्वाभाविक ही मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। समाज में मीडिया की भूमिका संवाद वाहक की होती है। वह समाज के विभिन्न वर्गों, सत्ता केंद्रों, व्यक्तियों और संस्थाओं के बीच पुल का कार्य करता है। आधुनिक युग में मीडिया का सामान्य अर्थ समाचार-पत्र, पत्रिकाओं, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट आदि से लिया जाता है। किसी भी देश की उन्नति व प्रगति में मीडिया का बहुत बड़ा योगदान होता है। कहा जा सकता है कि मीडिया समाज का निर्माण व पुनर्निर्माण करता है, तो यह गलत नहीं होगा। इतिहास में ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े हैं जब मीडिया की शक्ति को पहचानते हुए लोगों ने उसका उपयोग लोक परिवर्तन के भरोसेमंद हथियार के रूप में किया है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों की दासता से सिसकते भारतीयों में देश-भक्ति व उत्साह भरने में मीडिया का बड़ा योगदान था।

मीडिया का जन-जागरण में भी बहुत योगदान है। बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने का अभियान हो या एड्स के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य, मीडिया ने अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह से निभाई है। लोगों को वोट डालने के लिए प्रेरित करना, बाल मजदूरी पर रोक लगाने के लिए प्रयास करना, धूम्रपान के खतरों से अवगत कराना जैसे अनेक कार्यों में मीडिया की सराहनीय भूमिका रही है। मीडिया समय-समय पर नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक भी करता रहता है।

तकनीकी विकास के इस युग में संचार माध्यमों का त्वरित गति से विकास हुआ है । साथ ही विभिन्न जन माध्यमों की पहुँच जन सामान्य तक हो गई है। आज देश में रेडियो, टेलीविजन तथा इंटरनेट सुविधाओं का जाल बिछा हुआ है, यहाँ तक कि इंटरनेट जैसी सुविधा जो कभी जन सामान्य के लिए उपलब्ध नहीं थी। मात्र संपन्न वर्ग तक ही सीमित थी| आज उस सुविधा का उपयोग भारत में निम्नतम आर्थिक स्थिति वाला व्यक्ति भी कर रहा है।

विश्व के तमाम प्रगतिशील विचारों वाले देशों में मीडिया की महती भूमिका से कोई इंकार नहीं कर सकता। मीडिया में जनमत बनाने की अद्‌भुत शक्ति होती है। नीति निर्धारण में जनता की राय जानने में और नीति - निर्धारकों तक जनता की बात पहुँचाने में समाचार पत्र एक सेतु की तरह काम करते हैं।

यह एक सर्वमान्य सत्य है कि पर्यटन आज एक उद्योग के रूप में स्थापित हो चुका है तथा विश्व के किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में प्रमुख भूमिका रखता है। यही कारण है कि आज हर देश का यह प्रयास होता है कि उस देश में बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक भ्रमण करने आएँ ताकि देश की आय बढ़ सके तथा उस देश की संस्कृति और पर्यटक स्थलों के बारे में विश्व भर में प्रचार हो सके।

जन माध्यमों में समाचारपत्र पर्यटन के प्रति जागरूकता का प्रचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते है, परंतु वे मात्र अंतरदेशीय पर्यटन के लिए ही कारगर साबित हो सकते हैं। टेलीविजन का प्रसार तथा पहुँच आज रेडियो और समाचारपत्रों से काफी अधिक है, इस कारण किसी भी विज्ञापनदाता तथा सूचना प्रदाता की प्राथमिकता आज टेलीविजन पर ही विज्ञापन देना है। टेलीविजन का प्रसार आज वि के सभी देशों में है, अतः टेलीविजन के द्वारा हम अपने देश के पर्यटक स्थलों तथा इन स्थानों पर उपलब्ध सुविधाओं की सूचना को विश्वभर के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए दे सकते हैं ।

इंटरनेट तथा सोशल मीडिया आज विश्वभर में अपनी पैठ बना चुका है। आज का युग अगर इन्टरेनट युग कहा जाए तो शायद गलत नहीं होगा। भारत ही नहीं वरन विश्वभर में इंटरनेट के यूजर लगातार बढ़ते ही जा रहे है। अतः आजकल किसी अन्य संचार माध्यम की अपेक्षा इंटरनेट तथा सोशल मीडिया ही संचार का प्रमुख साधन बन गया है।

भारत में, यात्रा पर मीडिया विशेषज्ञ, आकर्षक, लोकप्रिय और ब्रांडेड समाचार पत्रों को मुख्य रूप से भारतीय मेट्रो शहरों से प्रकाशित किया जाता है और इलेक्ट्रानिक मीडिया हमेशा पर्यटक रुचि, पर्यटक स्थलों के बारे में ग्राहकों को सूचना प्रदान करते हैं।

पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के द्वारा देश में राजस्व लाने के लिए होटल, ट्रैवल एजेंसियों, टूर आपरेटर, एयरलाइंस और विभिन्न सरकारी एजेंसियों के साथ मीडिया उद्योग काम करता है। भारतीय पर्यटक स्थलों के बारे में विदेशियों के लिए जागरूकता बहुत कम है। उदाहरण के लिए चेन्नई में दुनिया का दूसरा सबसे लंबा समुद्र तट है। यह जानकारी मीडिया के सहयोग के बिना दुनिया के लिए उपलब्ध नहीं हो पाएगी। यहाँ तक कि सामाजिक नेटवर्किंग साइट जैसे चेहरे की पुस्तक और ट्विटर भी पर्यटन को बढ़ावा दे रहे हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि मीडिया के सहयेाग से भारत के पर्यटक स्थलों के बारे में अधिक से अधिक प्रचार - प्रसार किया जाए तथा विश्वभर के देशों के पर्यटक भारत भ्रमण को आएँ और देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके।

संदर्भ

- मंजू पांडेय] पर्यटन प्रबंधन और मीडिया] हिंदी बुक सेंटर] नई दिल्ली 2013
- Benxiang Zeng, Social Media in Tourism, Zeng, J Tourism Hospital 2013, 2:1, (http://dx.doi.org/ 10.4172/2167-0269.1000e125).
- S. Praveen Kumar, Role of Media in the Promotion of Tourism Industry in India, Global Review of Research in Tourism, Hospitality and Leisure Management, 2014 Vol: 1 Issue 3, (ISSN: 2311-3189)
- tourism.gov.in/sites/default/files/Other/TOP%2015%20COUNTRIES.xlsx. "India Tourism Statistics at a Glance 2015"] Check |url= value (help). tourism.gov.in. Ministry of Tourism. Retrieved 22 July 2017.
- Mc Combs, M & Shaw, D. (1972). The agenda setting function of mass media. Public Opinion Quarterly, 36: 176-187.
- Ndolo, I.S. (2006). Mass media systems and society. Enugu, Nigeria: Rhyce Kerex. Nwodu, L.C. (2010). Mass media and society in Nworgu, K.O. (Ed.). Mass communication theory and practice. Owerri, Imo State: Ebenezer Productions.

पर्यटन के विकास में पुस्तकालय की भूमिका झाँसी जिले के परिप्रेक्ष्य में

डा. शालिनी व्यास

प्रचलित परिवेश में पर्यटन एक समृद्ध एवं सुदृढ़ व्यवसाय के रूप में स्थापित हो चुका है। पर्यटन का क्षेत्र ऐसे रूप में उभरकर आया है जिसमें भविष्य के साथ निरंतर वृद्धि की संभावना है। यह क्षेत्र निरंतर विकास के साथ किसी भी देश की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने में सहायक है। पर्यटन के क्षेत्र में वृद्धि के साथ यह समाज में रोजगार भी उत्पन्न करता है| अतः यह बेरोजगारी खत्म करने में भी अपनी भूमिका निभाता है। पर्यटन का क्षेत्र एक बहु आयामी क्षेत्र है| इसके द्वारा समाज के कई विषयों एवं आयामों को प्रस्तुत किया जाता है। पर्यटन के द्वारा किसी भी स्थान की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पौराणिक विरासत को विशिष्ट रूप से, पर्यटकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है| इससे एक ओर तो ऐसे स्थल; जो ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिपूर्ण है; परंतु समय के साथ एवं शासन की उपेक्षा के कारण अपनी पहचान खो रहे होते है; उस क्षेत्र में पर्यटन के विकास से वे स्थल पुनर्जीवित हो जाते है एवं पर्यटन के विकास से ही उस स्थान की पहचान का नवीनीकरण भी होता है जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर के पर्यटकों के मध्य भी ये स्थल अपनी विशिष्टता के कारण छाप छोड़ते है।

पर्यटन सूचना केंद्र के रूप में पुस्तकालय की भूमिका

पुस्तकालय की धारणा भंडार गृह से सूचना केंद्रों में परिवर्तित हो चुकी है। देश के किसी भी आयाम का विकास पूर्णतः सूचना तंत्र पर आधारित होता है। पुस्तकालय, सूचना तंत्र के रूप में सूचना की उपलब्धता, व्यवस्था, पुनर्प्राप्ति, संप्रेषण एवं इसमें प्रौद्योगिकी के समावेश से त्वरित संचालन का कार्य सुगम करता है। पर्यटन का व्यवसाय पूर्णतः सूचना तंत्र पर आधारित होता है| अतः पुस्तकालय अथवा सूचना केंद्रों की उपयोगिता को पर्यटन क्षेत्र के विकास में नकारा नहीं जा सकता है| निस्संदेह सूचना संप्रेषण एवं प्रौद्योगिकी के द्वारा पुस्तकालय ई-सेवाएँ प्रारंभ करते हुए पर्यटन के क्षेत्र को बढ़ाने में अपना योगदान दे सकते है।

पर्यटन किसी व्यक्ति विशेष के लिए आनंद, रोमांच एवं खुशी प्राप्त करने का एक साधन होता है| ऐसे में वे व्यक्ति जो भ्रमण में रुचि रखते हैं, अपने निवास स्थल से विभिन्न सूचना संचार माध्यमों के द्वारा अपनी रुचि के अनुसार पर्यटन स्थलों के विषय में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। वर्तमान में अंतरजाल (इंटरनेट) से अधिक सुदृढ़ भूमिका त्वरित सूचना संप्रेषण में और किसी भी माध्यम की नहीं है।

इस स्थिति में पुस्तकालय अपने वेब स्थल, ई-मेल एवं आभासी संदर्भ सेवा को पर्यटन के दृष्टिकोण से विकसित कर प्रामाणिक एवं विश्वसनीय सूचनाएँ उपलब्ध करा सकते है। ई-सेवाओं द्वारा पर्यटकों को उनके निवास स्थल पर ही पर्यटन संबंधी सभी सूचनाएँ उपलब्ध होने से, पर्यटकों को भ्रमण हेतु योजना बनाने में सहायता मिलती है।

सूचीकार, केंद्रीय पुस्तकालय, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)

पुस्तकालय किसी भी देश की प्राचीनतम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित एवं व्यवस्थित रखता है| अतः पुस्तकालय किसी भी स्थल की पृष्ठभूमि को प्रामाणिकता के साथ दर्शाने का सर्वोत्तम साधन होता है| पुस्तकालय एवं पर्यटन में यह समानता होती है कि ये दोनों ही बहुविषयक एवं बहुआयामी होते हैं अर्थात पुस्तकालय एक समाज के कई पहलु से संबंधित संसाधनों का संकलन संग्रहीत रखता है जबकि पर्यटन उन सभी पहलु का प्रस्तोता होता है।

भारत देश अपनी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नता के लिए विश्वविख्यात है। भारत देश का प्रत्येक हिस्सा ऐतिहासिक एवं विशिष्ट सांस्कृतिक एकता से ओत-प्रोत है| अतः भारत में पर्यटन की संभावनाएँ अत्यधिक हैं। ऐसे पर्यटक जो इतिहास एवं संस्कृति में रुचि रखते हैं, उनके लिए भारत देश भ्रमण हेतु सदैव आर्कषण का केंद्र रहा है। भारत का राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता में स्थित है एवं संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत आता है। राष्ट्रीय स्तर का यह पुस्तकालय सार्वजनिक पुस्तकालय के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन सूचना केंद्र की भांति भी कार्य कर सकता है। राष्ट्रीय पुस्तकालय में देश के सभी स्थलों से संबंधित उचित साहित्य एवं संसाधन उपलब्ध होते है| पुस्तकालय व्यवसायी सूचना संसाधनों के प्रकार एवं स्वरूपों के जानकार भी होते हैं| अतः पर्यटकों की सूचना आवश्यकता को प्रभावी ढंग से संतुष्ट करने में सहायक होते हैं| साथ ही पर्यटकों में साहित्य के माध्यम से उन स्थानों के भ्रमण हेतु जिज्ञासा भी उत्पन्न होती है| अतः यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि पुस्तकालय पर्यटन के क्षेत्र में उत्प्रेरक की भांति कार्य कर सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के महत्व को न नकारते हुए, राष्ट्रीय पुस्तकालय के वेब-स्थल को पर्यटन के दृष्टिकोण से भी विकसित किया जा सकता है| इसका लिंक, पर्यटन मंत्रालय के वेब - स्थल पर पर्यटक सूचना केंद्र के रूप में भी उपलब्ध कराया जा सकता है। सूचना का प्रभावी ढंग से प्रस्तुतीकरण एवं बाजारीकरण पर्यटन को बढावा देने के लिए आवश्यक है। यह भ्रमण हेतु आर्कषण भी उत्पन्न करता है। यह कार्य पुस्तकालय द्वारा प्रामाणिकता एवं निपुणता के साथ किया जा सकता है। प्रादेशिक स्तर पर भी केंद्रीय प्रादेशिक पुस्तकालयों में उस प्रदेश के समस्त दर्शनीय स्थलों के संकलन के साथ-साथ वेब-स्थल पर भी भ्रमणीय स्थलों को चित्र एवं विवरण के साथ दर्शाया जाना चाहिए। केंद्रीय प्रादेशिक पुस्तकालयों को भी प्रदेशों के पर्यटन विभाग के वेब-स्थल पर पर्यटन सूचना केंद्र के रूप में दर्शाया जाना चाहिए। पर्यटन स्थलों के विवरण के साथ-साथ सभी स्तर के पुस्तकालयों को कुछ प्रकाशन भी पर्यटन के दृष्टिकोण से प्रकाशित किए जाने चाहिए। पर्यटकों को किसी भी दर्शनीय स्थल की हवाई अडडा, रेलवे स्टेशन से दूरी, गंतव्य स्थल हेतु यातायात साधन, किराया, आवास, पंजीकृत निर्देशक का विवरण शुल्क सहित, गंतव्य स्थल हेतु कुल समय, भ्रमण का समय, टिकट राशि, दर्शनीय स्थल के समीप उपलब्ध सुविधाएँ विशेषतः पर्यटकों हेतु, उस स्थान की विशिष्ट वस्तुएँ एवं बाजार के विषय में अन्य जानकारी सहित मार्गदर्शिका, पर्यटन विभाग की सहायता से प्रकाशित की जानी चाहिए। इन सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं को पुस्तकालय ई-सेवा के द्वारा अपने वेब - स्थलों पर भी दर्शा सकते है। कुछ प्रदेशों द्वारा पर्यटन को विकसित करने के उद्देश्य से प्रादेशिक पर्यटन वेब - स्थल पर पुस्तकालयों के लिंक प्रदान किए गए हैं जिनमें गुजरात एवं गोवा प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त भारत में ऐसे कई पुस्तकालय हैं जहाँ देश की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत से जुड़े बहुमूल्य एवं दुर्लभ संकलन हैं तथा उनमें पर्यटन व्यवसाय को विकसित करने हेतु सामर्थ्य है परंतु शासन की अनदेखी के कारण वहाँ पर्यटन विकसित नहीं हो सका।

पुस्तकालय में पर्यटन को विकसित करने का सामर्थ्य होते हुए भी इसकी भूमिका इसलिए भी सुनिश्चित नहीं हो सकी क्योंकि शासन ने योजनाबद्ध, व्यवस्थित एवं सुनियोजित ढंग से इस दिशा में कार्य नहीं किया और न ही पुस्तकालयों द्वारा पर्यटकों को उपयोगकर्ता के रूप में लक्ष्य बनाया गया। पुस्तकालय की भूमिका पर्यटन व्यवसाय में सुनिश्चित करने हेतु शासन एवं स्थानीय स्तर पर सामंजस्य स्थापित करते हुए कार्य करने की आवश्यकता है।

झाँसी जिले में पर्यटन

झाँसी जिला, बुंदेलखंड की हृदय स्थली है। झाँसी जिला महारानी लक्ष्मीबाई के शौर्य एवं कौशल के कारण विश्व स्तर पर विख्यात है, परंतु पर्यटन की दृष्टि से अब तक शून्य है। बुंदेलखंड के क्षेत्र में 13 जिले सम्मिलित हैं । इनमें 7 जिले उत्तर प्रदेश एवं 6 जिले मध्य प्रदेश के अंतर्गत आते हैं। संपूर्ण बुंदेलखंड क्षेत्र ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। इसका इतिहास प्राचीनतम है| परंतु बुंदेलखंड के जो जिले उत्तर प्रदेश के अंतर्गत आते है वे शासन एवं स्थानीय स्तर पर उपेक्षा का शिकार हुए हैं। झाँसी जिला इनमें से ही एक है। इनकी तुलना में जो जिले मध्य प्रदेश के अंतर्गत आते हैं, वहाँ दर्शनीय स्थल कम होते हुए भी पर्यटन का व्यवसाय विकसित है। झाँसी भारतीय रेलवे का एक बड़ा जंक्शन है। यहाँ वर्ष भर विदेशी पर्यटक आते भी हैं परंतु 18 किमी दूर मध्य प्रदेश के ओरछा (टीकमगढ़ जिले के अंतर्गत भ्रमणीय स्थल) एवं 175 किमी. दूर खजुराहो की ओर प्रस्थान पर जाते हैं। उत्तर प्रदेश सरकार एवं स्थानीय स्तर पर शासन की अनदेखी एवं नीरसता के कारण झाँसी जिले में पर्यटन की असीम संभावनाएँ होते हुए भी यहाँ पर्यटन विकसित नहीं हो सका। यह अत्यंत दुःखद है कि झाँसी पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होते हुए भी विदेशी पर्यटकों को रोकने में असमर्थ रहा है। पुरातत्व विभाग की अनदेखी के कारण झाँसी जिले के अंदर कई ऐतिहासिक स्थल अब लुप्त हो चुके हैं । इनका इतिहास अब सिर्फ प्रप में ही शेष रह गया है। महाराजा गंगाधर राव के पिता सूबेदार शिवराव भाऊ ने झाँसी रियासत की सुरक्षा की दृष्टि से झाँसी नगर के चारों ओर परकोटे का निर्माण कराया था जिससे दुश्मन सीधे झाँसी में प्रवेश न कर सकें । इस परकोटे में 10 विशाल दरवाजे एवं 4 बड़ी खिड़कियाँ बनवाई गई थीं जिनसे झाँसी रियासत के चारों ओर सुरक्षा की दृष्टि से नजर रखी जा सके। परंतु रख-रखाव के अभाव, स्थानीय लोगों के अतिक्रमण एवं शासन की अनदेखी के कारण इनमें से कुछ दरवाजे एवं खिड़की ही शेष रह गए हैं जिन पर मोटी लकड़ी के दरवाजे और बड़ी कीलें भी लगी हुई है। दूसरा ऐतिहासिक स्थल मेजर एफ0 डब्ल्यू पिंकने सी.वी., प्रथम कमिश्नर ऑफ झाँसी जिनकी मृत्यु 30 जुलाई, 1862 को हुई थी, का स्तंभ रूपी स्मारक लगभग लुप्त हो चुका है । ऐसे अन्य और भी स्थल हैं जिनका इतिहास सिर्फ पृष्ठों तक ही सीमित रह गया है। ऐसे कई ऐतिहासिक स्थल जिनमें मुख्यतः कुआँ, तालाब, बावड़ी और ऐतिहासिक इमारतें भी हैं जो वर्तमान में स्थित तो हैं परंतु स्थानीय स्तर पर उदासीनता के कारण अपनी ऐतिहासिक पहचान खो रहे है एवं लुप्त हो रहे हैं ।

पर्यटन हेतु झाँसी जिले के ऐतिहासिक स्थल

झाँसी का किला- 1613 ई0 में ओरछा नरेश वीर सिंह जूदेव द्वारा बंगरा पहाड़ी पर 49 एकड़ क्षेत्रफल में निर्मित। इस किले में 22 बुर्ज हैं एवं दो तरफ खाई है। यह किला 400 वर्ष पुराना है। किले के अंदर दर्शनीय स्थलों के नाम इस प्रकार हैं **-**

(1.) नाट्यशाला, (2.) गणेश मंदिर, (3.) भवानी शंकर तोप, (4.) काल कोठरी, (5.) फाँसी स्तम्भ, (6.) शिव मंदिर, (7.) पंच महल, (8.) बारादरी, (9.) कड़क बिजली तोप, (10.) गुलाम गौस खां की समाधि, (11.) किले में रानी का आमोद उद्यान, (12.) किले का गनपत द्वार (जहां से रानी ने अंतिम बार प्रस्थान किया) और (13.) गजरा बाई का मकबरा ।

2. किले के समीप भवन

रानी महल (नगर हवेली) - महाराजा रघुनाथ राव (द्वितीय) द्वारा निर्मित कराया गया। अंग्रेजों द्वारा किले से निकाले जाने पर रानी लक्ष्मीबाई ने इसी नगर हवेली में निवास किया। इस हवेली में ही उनके मुख से यह शब्द निकले "मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी"। वर्तमान में यह संग्रहालय में तब्दील है।

महाराजा गंगाधर राव की छतरी - यह समाधि स्थल झाँसी किले से 1.5 किमी दूर स्थित है महारानी लक्ष्मीबाई ने महाराजा गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात उनकी याद में यह स्मारक बनवाया था।

मेमोरियल सिमिट्री - युद्ध स्थल पर मारे गए अंग्रेज सिपाहियों की स्मृति में निर्मित अष्टकोणीय स्मारक।

अंग्रेजों की छावनी - स्टार फोर्ट - 1820 ई0 में अंग्रेजों द्वारा निर्मित। अंग्रेजों द्वारा इसका उपयोग कोषागार एवं बंदीगृह के रूप में भी किया गया। झाँसी की जनता द्वारा अंग्रेजों को खदेड़े जाने पर उन्होंने इसी फोर्ट में शरण ली। वर्तमान में यह भारतीय सेना के अधिकृत इलाके में है।

झाँसी राजकीय संग्रहालय - यह संग्रहालय, झाँसी किले के समीप स्थित है एवं झाँसी के साथ- साथ संपूर्ण बुंदेलखंड की झलक प्रस्तुत करता है। यहाँ चंदेल काल से लेकर मराठा काल तक की मूर्तियाँ, वस्त्र, हथियारों एवं चि को देखा जा सकता हैं।

झाँसी का परकोटा - कुछ दरवाजे एवं खिडकियाँ अब भी शेष हैं जिन पर मोटी लकड़ी के दरवाजे भी लगे हैं। पुरातत्व विभाग द्वारा इनकी मरम्मत एवं रख-रखाव करते हुए धरोहर को सुरक्षित किया जा सकता है।

समथर किला - यह समथर रियासत का हिस्सा है और इसके अंदर एक भव्य मंदिर भी है।

3. मंदिर

गणेश मंदिर - यह पानी वाली धर्मशाला के समीप स्थित है। इस मंदिर में महाराजा गंगाधर राव एवं वीरांगना लक्ष्मीबाई का विवाह संपन्न हुआ था।

महालक्ष्मी मंदिर - यह मंदिर लक्ष्मी दरवाजे के समीप स्थित है। 18वीं शताब्दी में निर्मित इस मंदिर में लक्ष्मी माता विराजमान हैं जो राज परिवार की कुल देवी के रूप में पूजी जाती थीं।

लहर की माता का मंदिर - यह प्राचीनतम मंदिर चंदेल राजा द्वारा बनवाया गया।

कैमासन माता का मंदिर - यह मंदिर भी चंदेल राजा द्वारा बनवाया गया। यह स्थानीय स्तर पर लोगों की अटूट आस्था का स्थल है।

मुरली मनोहर का मंदिर - यह कृष्ण जी का प्राचीनतम मंदिर है। इस मंदिर में महारानी लक्ष्मीबाई के पिता मोरोपंत तांबे निवास करते थे। महारानी इस मंदिर में अक्सर आती थीं।

पचकुइयाँ का मंदिर - यह मंदिर 18वीं सदी से सुविख्यात है। यह मंदिर खंडेराव दरवाजे के समीप परकोटे के अंदर स्थित है। ऐसा माना जाता है कि झाँसी नगरवासियों को पानी की पूर्ति हेतु यहाँ पाँच कुएँ खोदे गए । मीठा पानी निकलने पर यहाँ देवी माँ की स्थापना की गई और इस स्थान का नाम पचकुइयाँ पड़ा। यह मंदिर स्थानीय स्तर पर आज भी आस्था का विशेष केंद्र है।

नवग्रहों का मंदिर - माधव राव भिंडे के बाग में स्थित है। यहाँ शिव और नवग्रहों की प्राचीनतम मूर्तियां हैं ।

करगुवाँ जी - यह जैन धर्म का लगभग 200 वर्ष पुराना तीर्थ स्थल है । यहाँ भगवान पार्श्वनाथ जी स्थापित हैं। यह तीर्थस्थल झाँसी, कानपुर मार्ग पर करगुवाँ जी गाँव में स्थित है।

सेन्ट जूड श्राइन – संपूर्ण दक्षिण एशिया में संत जूड का यह पहला तीर्थ है। संत जूड ईसा मसीह के 12 शिष्यों में से एक थे। यह चर्च कैथोलिक संप्रदाय का पहला तीर्थ है।

जलाशय एवं बावड़ी - हातियाँ ताल, लक्ष्मी तालाब एवं पानी वाली धर्मशाला ही वर्तमान में मुख्य रूप से शेष बची हैं । नारायन बाग में कुछ बावड़ियाँ हैं । इन सभी का प्राचीनतम इतिहास है। स्थानीय शासन द्वारा इनके रख-रखाव पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

चौपड़ा - नाना भाऊ का चौपड़ा, श्याम का चौपड़ा, फूटा चौपड़ा एवं नकटा चौपड़ा (यहाँ झाँसी नगर के अपराधियों को नाक काटकर नगर से बहिष्कृत किया जाता था)|

नारायन बाग - यह बाग गुसाइयों द्वारा बनवाया गया। इस बाग में बावड़ी, कुआँ, चौपड़ा तथा शिव जी का प्राचीनतम मंदिर भी है।

बरूआसागर का किला, तालाब एवं झरना प्राचीनतम इतिहास के साथ दर्शनीय है। बरूआसागर को बुंदेलखंड का शिमला भी कहा जाता था।

4. महोत्सव एवं मेला

झाँसी महोत्सव तथा राष्ट्रीय शिल्प मेला - इस महोत्सव का आयोजन भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय एवं पर्यटन मंत्रालय मिलकर करते है। इस महोत्सव के शुभारंभ पर विशाल शोभा यात्रा '**बुंदेली लोक रागिनी**' निकाली जाती है।

मऊरानीपुर का जल विहार महोत्सव – चंदेल कालीन समय में श्री कृष्ण का विहंगम विग्रह है। इन्हें लठाटोर महाराज के नाम से भी जाना जाता है। मेले का मुख्य आर्कषण लठाटोर महाराज की झाँकी होती है| मेले में नगर निगम द्वारा 110 विमान निकाले जाते हैं|

बरूआसागर का अक्षय तृतीय का मेला, रक्षा बंधन का मेला एवं संक्रांति का मेला।

गुरसरांय तहसील के अंतर्गत **बावनवीर का मेला** प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाता है जिसका ऐतिहासिक आधार है।

पर्यटन सूचना केंद्र के रूप में झाँसी जिला पुस्तकालय की भूमिका

- झाँसी जिला ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। अतः जिला पुस्तकालय का भवन ऐतिहासि+क एवं कलात्मकता को दर्शाता होना चाहिए जिससे विदेशी पर्यटकों के आगमन के उद्देश्य में संबद्धता स्थापित हो सके और साथ ही यह विदेशी पर्यटकों को अधिक आकर्षित करे।
- जिला पुस्तकालय के उपयोगकर्ता स्थानीय लोग होते हैं| वर्तमान में इस पुस्तकालय का उद्देश्य इन्हीं उपयोगकर्ताओं को संतुष्ट करना है। पर्यटन की दृष्टि से विदेशी पर्यटकों को भी उपयोगकर्ता के रूप में लक्ष्य निर्धारित करते हुए सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं ।
- विदेशी पर्यटकों का पुस्तकालय में आगमन का उद्देश्य स्थानीय निवासियों से भिन्न होगा अतः विदेशी पर्यटकों हेतु, जिला पुस्तकालय में अलग से व्यवस्था की जानी चाहिए ।
- जिला पुस्तकालय में झाँसी नगर की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पौराणिक विरासत से संबंधित उचित संग्रह, समस्त प्रकार की सूचनाएँ उपलब्ध और व्यवस्थित होने चाहिए। झाँसी जिले में समस्त तहसीलों में आयोजित होने वाले महोत्सवों आयोजनों एवं मेलों का विवरण संबंधी साहित्य उपलब्ध होना चाहिए।
- विदेशी पर्यटकों को स्थलों के भ्रमण हेतु आकर्षित करने के लिए ऐतिहासिक स्थलों और संस्कृति का प्रदर्शन चित्रात्मक एवं चल चित्रात्मक रूप से विवरण के साथ किया जाना चाहिए। जिससे पर्यटकों में भ्रमण हेतु जिज्ञासा उत्पन्न हो।
- बुंदेलखंड की पृष्ठभूमि एवं संस्कृति के विषय में विस्तार से स्थानीय लेखकों द्वारा साहित्य लिखा गया है जो हिंदी एवं बुंदेलखंडी भाषा में उपलब्ध है| इस साहित्य की उपलब्धता अंतरराष्ट्रीय भाषा में भी सुनिश्चित की जानी चाहिए ।
- जिला पुस्तकालय, पर्यटन विभाग एवं पुरातत्व विभाग की सहायता से कुछ प्रकाशन भी कर सकता है जिससे पुस्तकालय की भूमिका, पर्यटन विकास एवं सांस्कृतिक विरासत को सहेजने एवं प्रस्तोता के रूप में देना सुनिश्चित हो सके। जैसे
    - पुस्तकालय, ऐतिहासिक स्थलों की पृष्ठभूमि एवं सांस्कृतिक विवरण के संक्षिप्त प्रकाशन, सूचना संग्रह जो झाँसी जिले के समस्त दर्शनीय स्थलों को समेकित करते हुए, प्रकाशित कर सकता है।
    - जिला पुस्तकालय, दर्शनीय स्थलों के अतिरिक्त, जिले के अंदर आवास संबंधी सूचना, यातायात साधन, गंतव्य स्थान हेतु दूरी, यातायात में लगने वाला समय, स्थल के भ्रमण का समय एवं उस स्थान पर विदेशी पर्यटकों हेतु अन्य सुविधाएँ, पंजीकृत निर्देशक आदि की सूचनाएँ प्रदान करते हुए एक पर्यटन सूचना केंद्र की भांति भूमिका निभा सकता है।
    - जिला पुस्तकालय में विदेशी पर्यटकों को सेवाएँ प्रदान करने हेतु अलग से पुस्तकालय अधिकारी नियुक्त किया जाना चाहिए। पुस्तकालय अधिकारी संचार कौशल में निपुण होना चाहिए। जिससे पर्यटकों को स्थलों के भ्रमण हेतु सूचना उपलब्ध कराने के साथ जिज्ञासा उत्पन्न कर सके।
    - जिला पुस्तकालय को अपना वेब-साइट विकसित करना चाहिए। झाँसी जिले की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हुए चित्रात्मक विवरण एवं पुस्तकालय में संकलित संग्रह की सूचना भी वेब-साइट पर उपलब्ध करानी चाहिए।
    - जिला पुस्तकालय के वेबसाइट पर विदेशी पर्यटकों हेतु ऐसी समस्त सूचनाएँ उपलब्ध होनी चाहिए जो एक पर्यटक, पर्यटन सूचना केंद्र से अपेक्षा रखता है।
    - जिला पुस्तकालय द्वारा पर्यटकों को स्थानीय बाजार, वहाँ की प्रसिद्ध वस्तुओं एवं कलाकृति संबंधी सूचना प्रदान करने हेतु भी अलग से सूचना स्रोत प्रदान करना चाहिए।

5. सुझाव

- पुस्तकालय की किसी भी स्तर पर भूमिका चाहे, वह राष्ट्रीय, प्रादेशिक अथवा स्थानीय स्तर पर सुनिश्चित की जाए यह तभी संभव है जब केंद्रीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर शासन में योजनाबद्ध तरीके से सामंजस्य के साथ क्रियान्वयन हो।
- भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय को राष्ट्रीय पर्यटन केंद्र के रूप में भी स्थापित करते हुए इसकी वेब-साइट पर भी प्रदेश के केंद्रीय पुस्तकालय एवं ऐसे सभी जिले जहाँ पर्यटन विकसित किया जा सकता है, के जिला पुस्तकालयों को पर्यटन सूचना केंद्र के रूप में संबद्ध (वेब-साइट का लिंक प्रदान करके) किया जाए। इसके लिए सभी जिला पुस्तकालयों को अपना वेब-साइट प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है। वर्तमान में झाँसी जिला पुस्तकालय के संबंध में इंटरनेट पर न किसी प्रकार की सूचना उपलब्ध है और न ही अभी तक वेब-साइट को विकसित गया है । वर्तमान में बिना सूचना प्रौद्योगिकी के समावेश के पर्यटन के लाभ की अपेक्षा करना हास्यास्पद होगा।
- राजा राम मोहन राय फाउंडेनशन (जो संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत आता है एवं देश के सभी सार्वजानिक पुस्तकालयों के विकास के लिए पूर्णतः उत्तरदायी है) के साथ पर्यटन मंत्रालय एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा सामंजस्य से यह कार्य किया जा सकता है।
- सरकार द्वारा अलग से पर्यटन सूचना केंद्रों की स्थापना की जाती है जो राष्ट्रीय, प्रादेशिक और स्थानीय स्तर पर स्थापित होती है | यदि पुस्तकालयों को ही पर्यटन सूचना केंद्र के रूप में विकसित कर दिया जाए तो सरकार पर अलग से पर्यटन सूचना केंद्र का व्यय भार एवं निगरानी का कार्य कम हो जाएगा। दूसरी ओर पुस्तकालय और इसके संसाधनों का भी अधिक उपयोग होगा| पुस्तकालय की सेवा में विस्तार के साथ पुस्तकालय के उद्देश्य की पूर्ति होगी एवं सरकार द्वारा भी पुस्तकालय के विकास पर और अधिक ध्यान दिया जाएगा। वर्तमान में झाँसी जिला पुस्तकालय में अपेक्षित विकास नहीं हुआ है।

6. पुस्तकालय, पर्यटन विकास के दृष्टिकोण से निम्न स्वरूप में कार्य कर सकते है -

- **सांस्कृतिक विरासत के सूचना केंद्र के रूप में -** पुस्तकालय वह स्थल है जहाँ सभी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत का संकलन होता है तथा संबंधित साहित्य आवश्यकतानुसार प्रस्तुत करके अपनी सेवाएँ प्रदान करता है।
- **पर्यटन सूचना केंद्र के रूप में -** पुस्तकालय को पूर्णतः पर्यटन सूचना केंद्र के रूप में विकसित किए जाने की सामर्थ्य है। यह विदेशी पर्यटकों को यातायात साधन, भ्रमण का समय, पंजीकृत निर्देशक, ठहरने हेतु उचित व्यवस्था, स्थानीय बाजारों एवं वस्तु की संपूर्ण जानकारी अधिक विश्वसनीयता के साथ प्रस्तुत कर सकता है।
- **रामपुर रज़ा पुस्तकालय -** ऐसे सार्वजनिक पुस्तकालय; जो स्थान के साथ-साथ स्वयं ही ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिपूर्ण होते हैं तथा इनमें दुर्लभ संकलन हैं; पर्यटन विकास की असीम संभावना रखते हैं | उनको उजागर करना अत्यंत आवश्यक है। इनमें से एक उत्तर प्रदेश के रामपुर में स्थित रामपुर रज़ा पुस्तकालय है जहाँ अपेक्षित पर्यटन विकसित नहीं है।
- **पुस्तकालय पर्यटन उत्प्रेरक बनें -** जिला पुस्तकालय को स्थानीय स्तर पर होने वाले महोत्सवों आयोजनों एवं मेलों के प्रति भी विदेशी पर्यटकों में जिज्ञासा उत्पन्न करनी चाहिए। पर्यटकों के आर्कषण से ऐसे बहुत से आयोजन जो समय के साथ खत्म हो रहे हैं पुनः जीवंत होंगे। अतः अंत में यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि पुस्तकालय पर्यटन विकास में पर्यटन सूचना केंद्र से बेहतर कार्य कर सकते हैं| पुस्तकालय पर्यटन के क्षेत्र में उत्प्रेरक की भांति कार्य करने की सामर्थ्य रखते हैं।

संदर्भ

- त्रिपाठी, डॉ. काशी प्रसाद (1954), '*बुंदेलखंड का बृहद इतिहास*' इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र प्रकाशन|
- मदनी, अब्दुल कय्यूम 'बुंदेलखंड का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास (831-1947ई0)'
- शेख, शमीम, '*मैं झाँसी हूँ:1857 से अब तक*'
- बुंदेलखंड में मेला, यात्रा और उत्सव - अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', संपादक
- दैनिक जागरण समाचार पत्र, विशेष संस्करण - 'ऐतिहासिक है बुंदेलखंड', झाँसी प्रकाशन|

बुंदेलखंड में पर्यटन के नए आयाम
राजनगर/खजुराहो के अठारहवीं शताब्दी के लुप्त बाग़, उनका समय निर्धारण एवं पर्यटन हेतु महत्व

आर्कि. आञ्जनेय शर्मा[1]
आर्कि. निशांत उपाध्याय[2]
प्रो. पी. एस. चानी[3]
प्रो. देवेश निगम[4]

सारांश

विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल खजुराहो बुंदेलखंड के छतरपुर जिले में स्थित हैं। खजुराहो क्षेत्रीय, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों में समान रूप से लोकप्रिय हैं। खजुराहो आने वाले ज्यादातर पर्यटक खजुराहो के आसपास स्थित धरोहरों से अनभिज्ञ हैं, अतः वे सिर्फ खजुराहो स्थित मंदिरों के दर्शन करके वापस लौट जाते हैं। खजुराहो से मात्र 3 किलोमीटर दूर अवस्थित राजनगर एक ऐसी ही अप्रचलित जगह है। राजनगर बुंदेली राजाओं के समय महत्वपूर्ण राजनैतिक केंद्र था। राजनगर में स्थित कई बुंदेली धरोहरें देख-रेख के अभाव में विलुप्ति की कगार पर हैं। इन्हीं धरोहरों में से एक हैं – यहाँ स्थित बुंदेली बाग़। राजनगर में संप्रति 15 से अधिक बुंदेली बाग़ हैं जो कि पर्यटन हेतु अत्यंत उपयुक्त हैं। इन सभी बागों का भू-विन्यास एवं वास्तुशैली एक सामान है। इन बागों के मुख्य अवयव हैं - 1. मजबूत प्रस्तर से बनी चारदीवार, 2. शिवमंदिर, 3. कुआँ, 4. बावली, 5. कोठी, 6. मृतकों की याद में बने सुसज्जित चबूतरे, तथा 7.आम के पुराने वृक्ष। सभी बागों में ये अवयव उपस्थित थे, किंतु समय के साथ इनमें से कुछ अत्यंत जर्जर हो गए हैं अथवा लुप्त हो गए हैं। इन बागों की विशेषता यह है कि ये बाग़ सिर्फ मनोरंजन एवं विहार हेतु नहीं बनाए गए थे अपितु इन बागों में कृषि भी होती थी। बुंदेलखंड जैसे अल्पवृष्टि क्षेत्र में ये बाग़ उन्नत जल प्रबंधन का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

सन 2004 में 'इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (इंटैक), बेल्जियम' ने इन बाग़ों के संरक्षण हेतु 'खजुराहो के लुप्तबाग़' परियोजना की शुरुआत की है। इस परियोजना के द्वारा न सिर्फ इन बागों में स्थित वास्तु-संरचनाओं को बचाने का लक्ष्य है, बल्कि परंपरागत खेती एवं जैविक कृषि को भी प्रोत्साहन देने की योजना है। वर्तमान में इंटैक दो बागों के संरक्षण में कार्यरत है।

[1] सहायक आचार्य,वास्तुकला विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी एवं शोधरत्, वास्तुकला एवं नियोजन विभाग आई.आई.टी. रुड़की

[2] शोधरत्, के. यू. ल्युवेन, बेल्जियम

[3] विभागाध्यक्ष, वास्तुकला एवं नियोजन विभाग, आई.आई.टी. रुड़की

[4] आचार्य,पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

प्रस्तुत शोधपत्र इन बागों में स्थित अवयवों के बारे में वर्णन करता है तथा कुछ प्रश्नों का विश्लेषण करता है कि ये बाग़ कब बने, क्यों बने, किसने बनवाए, आदि। इस विश्लेषण के पश्चात ही हम इन बागों की वर्तमान समय में उपयोगिता समझ सकते हैं। साथ ही पर्यटन हेतु इन बागों के महत्व पर भी विवेचना की गई है। क्षेत्र में पर्यटन के विकास हेतु आवश्यक है कि खजुराहो स्थित धरोहरों के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय धरोहरें भी संरक्षित हो। पर्यटकों के मध्य इन धरोहरों का प्रचार नितांत आवश्यक है।

क्षेत्र-परिचय

बुंदेलखंड क्षेत्र मध्य भारत में स्थित है। बुंदेलखंड क्षेत्र का निर्धारण यहाँ की विशिष्ट संस्कृति एवं भाषा के आधार पर किया गया है। इसके अंतर्गत उत्तर-प्रदेश के सात जिले तथा मध्य-प्रदेश के छह जिले समाहित हैं। बुंदेलखंड क्षेत्र के छतरपुर जिले में खजुराहो के पास ही राजनगर नामक कस्बा स्थित है। (मानचित्र देखें)

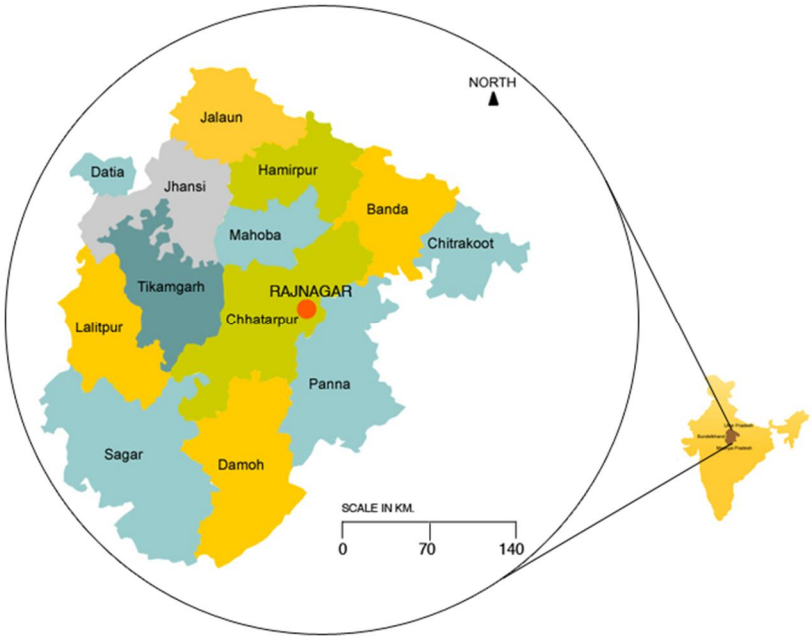

चित्र 1 : बुंदेलखंड का मानचित्र, जिसमें राजनगर भी दर्शाया गया है
(स्रोत : www.bundelkhand ।nfo.org. ।n)

एक विस्तृत भूदृश्य, कई अवयवों से मिलकर बनता है। ये सभी अवयव अनेकानेक ऐतिहासिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप बनते हैं। ये ऐतिहासिक गतिविधियाँ संबंधित स्थान पर प्रचलित सामाजिक मान्यताओं एवं परंपराओं की वजह से घटित होती हैं। अतः एक भूदृश्य निर्जीव न होकर मनुष्य एवं प्रकृति के परस्पर संबंध का सजीव चित्रण होता है। इस परिभाषा को समझने के लिए हमें 'सान्स्क्रतिक भूदृश्य' (कल्चरल लैंडस्केप) की अवधारणा को समझना होगा। यूरोपीय लैंडस्केप कन्वेंशन, 2000 में 'कल्चरल लैंडस्केप' को इस तरह परिभाषित किया गया है- "एक ऐसा क्षेत्र, जिसकी संरचना प्राकृतिक कारणों एवं मनुष्यों के कार्यकलाप अथवा दोनों के परस्पर संबंधों का परिणाम हो।"

एक भूदृश्य के समग्र रूप में संरक्षण हेतु यह अवधारणा महत्वपूर्ण है। राजनगर के बुंदेली कृषि-उद्यान भी एक ऐसे ही भूदृश्य का उदाहरण हैं जो कि बुंदेलखंड के शुष्क एवं असमतल जमीन में मनुष्य तथा प्रकृति के घनिष्ठ संबंधों के परिणामस्वरूप बने थे। इस तरह के बाग़ पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र में फैले हुए हैं तथा बुंदेली राज्यों के इतिहास को समझने की महत्वपूर्ण कड़ी हैं।

शोध प्रक्रिया

इन बागों के बनने के कारणों के बारे में जानने के लिए हमें इन बागों से जुड़े सभी पक्षों की विवेचना करनी होगी। यह शोधपत्र तीन सूत्रों से प्राप्त जानकारियों पर आधारित हैं- 1. बागों से जुडी सामाजिक मान्यताएँ एवं जनमानस में प्रचलित किस्से/ कहानियाँ, 2. पुरालेख, पुरातन यात्रा वृत्तांत तथा पुरातत्व संबंधी दस्तावेज, पत्र, लिखित प्रमाण या प्रलेख आदि, 3. बागों की वास्तुकला का विस्तृत विश्लेषण।

1. जनमानस में अंकित 'मौखिक इतिहास' एवं किस्से/कहानियाँ

दिसंबर 2014 से जून 2017 की समयावधि में कई बार राजनगर जाकर वहाँ के निवासियों से व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा इन बागों तथा संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में जानकारी एकत्रित की गई है। जिन व्यक्तियों को साक्षात्कार हेतु चुना गया उनमें मुख्यतया, इन बागों के वर्तमान मालिक (जिसमें राजनगर के विधायक नाती राज उर्फ़ कुँवर विक्रम सिंह भी शामिल थे), बागों के पास रहने वाले लोग तथा राजनगर में रहने वाले कुछ वरिष्ठ नागरिक शामिल हैं।

इस तरह मिलकर कुल 249 घरों में साक्षात्कार किए गए, जो कि राजनगर के कुल घरों की संख्या का 10 प्रतिशत है। इन साक्षात्कारों से प्राप्त जानकारियाँ काफी हद तक एक-दूसरे से मिलतीं हैं जिनकी सहायता से इन बागों के संबंध में निष्कर्ष निकाले गए हैं। साक्षात्कार हेतु पूछे गए प्रश्न मुख्यतया राजनगर में इस तरह के बागों के बनने के ऐतिहासिक कारणों से संबंधित थे, जैसे कि ये बाग़ कब बने, किसने बनाए, क्यों बनाए गए आदि। इस शोध में 'मात्रात्मक' तथा 'गुणात्मक' दोनों तरह के विषयों का समावेश है। अतः यह शोध दोनों विषयों का मिश्रित रूप है तथा इस परिकल्पना पर आधारित है कि 'हालाँकि इस विषय में विभिन्न लोगों के मत भिन्न हैं, किंतु इन बागों के इतिहास के बारे में कुछ निश्चित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।'

साक्षात्कार हेतु तैयार किए गए प्रश्नों में कुछ प्रश्न 'हाँ/नहीं' प्रकार के तथा कुछ प्रश्न विस्तृत उत्तर देने योग्य थे। प्रश्नों की विषयवस्तु काफी विस्तृत थी जिसमें निवासियों की सामाजिक - आर्थिक स्थिति, राजनगर ग्राम की ऐतिहासिक स्थिति, बागों के इतिहास के बारे में उनकी जानकारी, पर्यटन की संभावनाओं के बारे में नागरिकों के विचार, जैविक कृषि के प्रति जागरूकता एवं सामाजिक/सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा त्योहारों से संबंधित प्रश्नों का संकलन था। प्रत्येक व्यक्ति के पास सुनाने के लिए कई अनुभव एवं वृत्तांत होते हैं, अतः विस्तृत उत्तरों द्वारा अधिकतम जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है। 'हाँ/नहीं' जैसे निश्चित उत्तरों द्वारा 'मात्रात्मक' विवरणों जैसे की कब, क्यों, किसने, जैसे प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की कोशिश की गई है। इन सभी साक्षात्कारों के द्वारा बुंदेलखंड की तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक व ऐतिहासिक परिस्थितियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ एकत्रित की गईं।

चूँकि इन साक्षात्कारों में विभिन्न सामाजिक वर्गों का प्रतिनिधित्व था, अतः लोगों के द्वारा बताए गए इतिहास द्वारा अलग-अलग उम्र के लोगों, उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा एवं जातिगत आधार पर सामाजिक संबंधों को समझने में आसानी हुई। वर्षभर मनाए जाने वाले कई उत्सवों के दौरान भी बागों में रहने का प्रयास किया गया, जिससे कि उत्सवों के मनाने में इन बागों की सामाजिक उपयोगिता का पता चल सके। इस प्रकार किसी उत्सव को मनाने के समय तथा अलग-अलग व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा अथवा जाति के आधार पर सहभागिता को समझने में मदद मिली। इस तरीके से उत्सव के दौरान पेड़ों जैसे आँवला, पीपल आदि के विशेष महत्व को भी समझा गया। बुंदेली सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से

इंटैक बेल्जियम ने रानीबाग में मार्च 2017 में एक सामाजिक भोज एवं भजन कार्यक्रम भी आयोजित किया। इस कार्यक्रम के दौरान लोगों ने बागों से जुडी यादें भी साझा कीं।

2. दस्तावेज संबंधी शोधकार्य

राजनगर के बागों व भूदृश्य से संबंधित दस्तावेज काफी कम हैं, तथापि कुछ सूत्रों से दस्तावेज प्राप्त किए गए हैं। इन दस्तावेजों को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है - 1. व्यक्तिगत संग्रह; यथा वसीयत, पुराने चित्र, पत्र, किताबें, अख़बार, पुरानी पत्रिकाएँ तथा विभिन्न क्षेत्रीय पत्रिकाएँ, 2. संस्थागत संग्रह; यथा पुराने गजेटियर, सरकारी योजनाओं संबंधी दस्तावेज, राजनगर तहसील से प्राप्त खसरा अभिलेख, पुरानी किताबें, पत्र, मानचित्र व पत्रिकाएँ आदि।

3. बागों की वस्तुकला के अध्ययन की प्रक्रिया

बागों में बनीं संरचनाओं की वास्तुकला के तुलनात्मक अध्ययन हेतु लेखक ने 13 बागों के कंप्यूटर आधारित चित्र बनाए। दिसंबर 2014 से अप्रैल 2017 तक कई यात्राओं के दौरान विभिन्न अवयवों का माप लेकर उनके नक़्शे बनाने का काम पूरा किया गया। कुछ मानचित्र इंटैक बेल्जियम के संग्रहीत दस्तावेजों से प्राप्त हुए। इस कार्य हेतु वास्तुकला विद्यार्थियों की दो कार्यशालाएँ भी आयोजित कीं गईं, जोकि इंटैक बेल्जियम के सहयोग से लेखकों के मार्गदर्शन में संपन्न हुईं। विद्यार्थियों ने कंप्यूटर की सहायता से बागों में उपस्थित अवयवों यथा मंदिर, कोठी, कुएँ आदि को मापा तथा उनके वास्तुकलात्मक रेखाचित्र तैयार किए। बागों का मुक्त-हस्त चित्रण भी किया गया। दो बागों - रानीबाग़ एवं तिवारी बाग़ के त्रिविमीय (3-डी) चित्र तैयार किए गए। बागों का विस्तृत छायाचित्रांकन भी किया गया। ये फोटोग्राफी विभिन्न मौसमों में की गई जिससे कि भूदृश्य में होने वाले परिवर्तन को देखा जा सके।

राजनगर के शाही बुन्देली बाग़ (कृषि-उद्यान)

छतरपुर राज्य के समय में राजनगर एक महत्वपूर्ण राजनैतिक केंद्र था। छतरपुर राज्य (स्थापित 1785 ई.),पन्ना राज्य (स्थापित 1707 ई.) को काटकर बनाया गया था। आज के मध्य प्रदेश राज्य के छतरपुर जिले में स्थित राजनगरग्राम, खजुराहो से मात्र 3 किमी. की दूरी पर है। राजनगर का अर्थ ही है- राजाओं का नगर। इस आशय से राजनगर में कई महत्वपूर्ण इमारतें बनवाई ग । जिनमें से कई आज भी देखी जा सकती हैं। राजनगर के बाग़ भी इन्हीं धरोहरों में से एक है। ये बाग़ मुख्यतया कृषि उद्यान है। इन सभी बागों में एक जैसे अवयव विद्यमान हैं, जैसे कि 1. सभी उद्यान एक सुरक्षित चारदीवारी से घिरे हुए हैं, 2. इन सभी में एक शिव मंदिर है, 3. एक कोठी है, 4. बागों के मालिकों की याद में बनाए गए चबूतरे हैं, 5. बावली हैं, 6. कुएँ हैं, 7. सिंचाई हेतु पक्की नालियाँ हैं तथा इनका क्षेत्रफल 3-9 एकड़ के मध्य है। ये बाग़ एक सूक्ष्म पारिस्थितिकी का हिस्सा हैं तथा तेजी से हो रहे शहरीकरण से इनके अस्तित्व को खतरा है।

राजनगर में स्थित छह बागों को सन् 1998 में इंटैक ने खोजा था तथा एक जैसी वास्तुकला के कारण इन्हें सूचीबद्ध किया था। ऐतिहासिक महत्व के इन बागों में पर्यटन की महती संभावनाएँ हैं, किंतु देख-रेख एवं जन जागरूकता के अभाव में ये विनष्ट हो रहे हैं। 1998 की रिपोर्ट के साथ 'खजुराहो धरोहर प्रक्षेत्र में स्थित धरोहरों की एक सूची भी प्रकाशित हुई थी, जिसमें 11 बागों के नाम थे। सन् 2004 में, इंटैक बेल्जियम संयोजक डॉ. गेर्त रोबेरेट्स ने 5 बाग़ और खोजे। इस प्रकार कुल बागों की संख्या 16 हुई, जिनमें से कुछ बागों का मूल स्वरूप परिवर्तित हो गया है।

चित्र 2 : रानी बाग़ स्थित कोठी व मंदिर (छायाचित्र : लेखक)

बागों की वास्तुकला का विश्लेषण

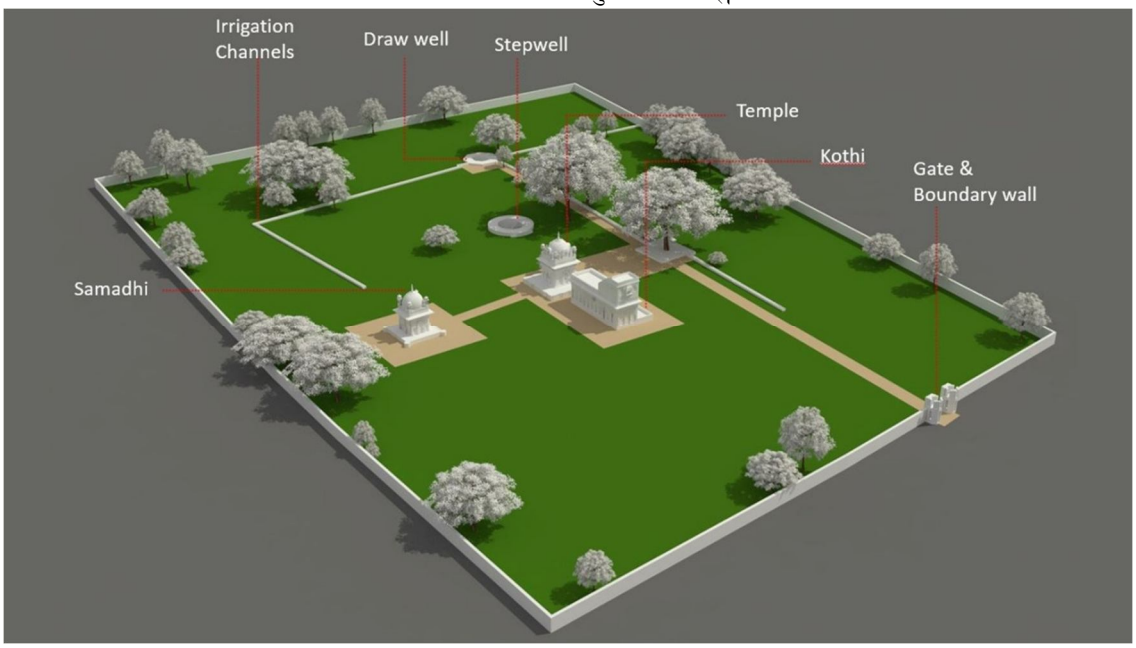

चित्र 3 : रानी बाग़ का त्रिविमीय (3-डी) चित्रण जिसमें बागों में उपस्थित अवयवों को दिखाया गया है (स्रोत : लेखक)

बागों की वास्तुकला के विश्लेषण का उद्देश्य बागों के मूल भू-विन्यास के बारे में पता लगाना तथा बागों के बनने के समय का निर्धारण करना है । इस विश्लेषण के द्वारा राजनगर की तत्कालीन ऐतिहासिक परिस्थितियों को भी जानने का प्रयत्न किया गया है । क्षेत्र भ्रमण के दौरान छतरपुर, पन्ना, टीकमगढ़ एवं राजगढ़ आदि निकट स्थित बुंदेली गाँवों में भी इस तरह के बाग़ खोजे गए । यह जानना अत्यंत रोचक है कि कुछ बागों के तो नाम भी राजनगर के समान थे । शहरीकरण एवं नए विकास की वजह से इनमें से कुछ बागों में अवस्थित संरचनाएँ टूट ग हैं । इसके बावजूद कुछ बाग़ अभी भी पूरी तरह से ठीक हैं, तथा संरक्षित किए जा सकते हैं । बागों की संरचनाओं के बारे में आगे कुछ वर्णन किया गया है ।

प्रत्येक बाग़ में एक कोठी बनी हुई है। सभी कोठियों का भूविन्यास आयताकार है। आयत की लंबी भुजा के मध्य में कोठी में प्रवेश हेतु दरवाजा है। कोठी के आगे की तरफ दालान भी बना है। आयत की छोटी भुजा की तरफ सीढ़ियाँ बनी हैं, जो कोठी की छत पर ले जातीं हैं। कोठी की छत पर सीढ़ियों के ऊपर एक छोटा कमरा भी बना है, जहाँ से बागों की खूबसूरती का लुत्फ़ उठाया जा सकता है।

सभी बागों में एक वर्गाकार मंदिर है। मंदिर में केवल एक ही कक्ष है, जो कि गर्भगृह का स्वरूप प्रदान करता है। कुछ मंदिरों में दो कक्ष भी बने हुए हैं - गर्भगृह तथा मंडप। सभी मंदिर शिव मंदिर हैं, जहाँ वेदी पर शिवलिंग स्थापित है। मंदिरों के 'शिखर' पंचायतन प्रकार के हैं अर्थात एक शिखर मध्य में तथा चार शिखर चार कोनों पर बने हुए हैं।

इन बागों में एक अथवा अधिक कुएं बने हुए हैं। कुएँ वृत्ताकार, वर्गाकार अथवा अष्टभुजाकार हैं। जिन कुओं में अंदर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, उन्हें बावड़ी अथवा बेहर कहा जाता है। कुछ बावड़ियाँ अत्यंत सुंदर हैं तथा पर्यटन हेतु उपयोगी हैं। सिंचाई की व्यवस्था हेतु बागों में पक्की नालियाँ (जिन्हें 'मिलाई' कहा जाता है) बनी हैं, जो कुएँ से पानी को बाग़ के कोने-कोने में पहुँचाती थीं। ये नालियाँ इस प्रकार बनाई ग ताकि पानी ऊँचाई से नीचे की तरफ गुरुत्वाकर्षण द्वारा बहकर बागों में पहुँच जाता है। इन नालियों के साथ-साथ करीब 2 फीट चौड़ा रास्ता भी बना है जिससे कि सिंचाई व्यवस्था की देख-रेख की जा सकती थी।

वर्गाकार, अष्टभुजाकार एवं षटभुजाकार चबूतरे भी कमोबेश हर बाग़ में बने हैं। इनमें से कुछ चबूतरे भव्य हैं - यथा रानी बाग़ में रानी की स्मृति में मंदिर की संरचना के समान ही भव्य निर्माण है। चबूतरों का निर्माण व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा को दर्शाते हैं।

आम के पेड़ सभी बागों में उपस्थित हैं। कुछ बागों यथा 'दऊवन के बाग़' में पहले कई आम के पेड़ थे, जो कृषि हेतु काट दिए गए। कुछ बागों में 200 साल से भी पुराने आम के पेड़ हैं।

चित्र 4 : तिवारी बाग़ की कोठी से लिया गया छायाचित्र जिसमें मंदिर, कुएं, बावड़ी, एवं क्यारियां दिखाई दे रहीं हैं (स्रोत : लेखक)

मौखिक कहानियों एवं वृत्तांतों की उपयोगिता

'मूर्त धरोहरें' हमेशा से इतिहासकारों एवं पुरातत्वविदों के मध्य चर्चा का विषय रही हैं, जबकि 'अमूर्त धरोहरें' इस चर्चा में पीछे छूट जाती हैं। जनमानस में अंकित 'अमूर्त धरोहरें' भी संस्कृति का हिस्सा हैं। यूनेस्को ने 'अमूर्त धरोहरों' को विशेष रूप से श्रेणीबद्ध किया है तथा इसके अंतर्गत भाषा, कला, सामाजिक रीतियाँ, प्रथाएँ तथा त्योहारों को सम्मिलित किया गया है। जनमानस में सुदीर्घ काल से अंकित कहानियाँ एवं वृत्तांत किसी समाज को समझने में उपयोगी होते हैं, क्योंकि ये सजीव व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होते हैं न कि निर्जीव वस्तुओं के इतिहास पर। मौखिक इतिहास एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में कहानियों अथवा मौखिक संवादों द्वारा स्थानांतरित होता रहता है, लिखित संदर्भों की न्यूनता को 'मौखिक इतिहास' द्वारा संतुलित किया जा सकता है। जब लिखित इतिहास उपलब्ध भी हो, तब भी 'मौखिक इतिहास' की

उपयोगिता कम नहीं होती । लिखित व मौखिक जानकारियों से पता लगाया जा सकता है कि सामाजिक मान्यताएँ, ऐतिहासिक तथ्यों के अनुरूप हैं, भिन्न हैं अथवा उनका ही विस्तार हैं ।

'मौखिक इतिहास' कई रूपों में मौजूद होता है यथा ऐतिहासिक सत्य, सामूहिक किस्से, व्यक्तिगत प्रथाएँ, पुरानी रीतियों संबंधी कथाएँ, मुहावरे, किस्से, कहानियाँ आदि । किसी भी समाज को पूर्णता से समझने के लिए समाज में अंतर्निहित सांस्कृतिक मान्यताओं एवं परंपरागत विश्वासों को समझना अत्यावश्यक है और 'मौखिक इतिहास' इसका सुगम साधन है । भारतीय परंपराएँ समय के प्रभाव से परे हैं और हमें इनकी उपयोगिता समझनी चाहिए ।

राजनगर के विषय में दस्तावेज न्यूनता में उपलब्ध हैं । अतः बागों की उपयोगिता, सांस्कृतिक महत्व, इतिहास, समयानुसार बागों में हुए परिवर्तन आदि को समझने में 'मौखिक इतिहास' अत्यंत महत्वपूर्ण है । ये बाग़ कब बने, क्यों बने, किसने बनवाए आदि प्रश्नों के उत्तर मौखिक इतिहास से सुगमता से मिल जाते हैं। मौखिक इतिहास को जानने के लिए लेखक द्वारा राजनगर में 249 घरों में प्रश्नोत्तर द्वारा विस्तृत सर्वेक्षण किए गए । इन सर्वेक्षणों के परिणामों को बाद में दस्तावेजों से मिलाया गया तथा निष्कर्ष निकाले गए ।

इन सर्वेक्षणों से पता चलता है कि राजनगर के बाग़ मुख्यतया कृषि उद्यान हैं न कि सिर्फ मनोरंजन हेतु बनाए गए बाग़ । राजनगर के बाग़ लगभग 200 वर्ष पुराने हैं । जब कभी राजा अपने राज्य का भ्रमण करते थे, तो इन बागों में रुका करते थे । इस कारण बागों में बनी कोठियों में टेंट, बर्तन व दैनिक उपयोग की वस्तुएँ संग्रहित होती थीं। राजा प्रतिदिन प्रातःकाल मंदिर जाकर पूजा किया करते थे, अतः इन बागों में मंदिर बनाए गए । बावड़ी/बेहर के पानी का उपयोग नहाने व कपड़े धोने में किया जाता था, जबकि कुएँ का पानी मंदिर में शिवलिंग पर अर्पित करने हेतु प्रयुक्त होता था ।

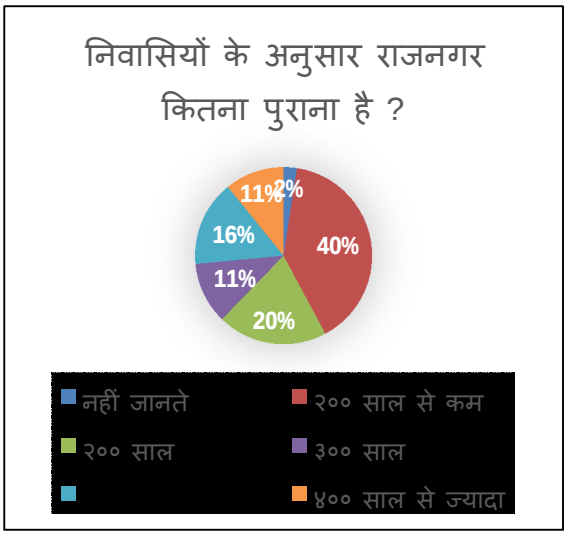

चित्र 5 : राज नगर के सर्वेक्षण के परिणाम (कितना पुराना है राजनगर)

बावड़ियाँ तथा कुएँ बुंदेलखंड जैसे सूखाग्रस्त क्षेत्र में वरदान की तरह थे, तथा बावड़ियाँ आदि बनवाना पुण्य का कार्य समझा जाता था । इससे राजा का यश भी बढ़ता था । राजपरिवार में नए राजकुमार के जन्म के वक़्त भी बाग बनवाने का प्रचलन था । कई किसानों ने बताया कि उनके पूर्वज भी इन्हीं बागों में काम करते थे । इस वजह से अनायास ही उन्हें बागों की फसलों आदि के बारे में पता है । जैसे कि किस तरह की फसल यहाँ होती है, कैसे सिंचाई होती है, कुएँ से पानी कैसे निकाला जाता था आदि । कुछ बागों में जहाँ पर अब मिलाई टूट भी गई है, किसानों ने अपने बचपन की यादों से मिलाई की पुरानी जगह बता दी –

"बचपन में हम इतइ खेलत ते दिन दिन भर, अब तो सब वीरानों हो गओ "

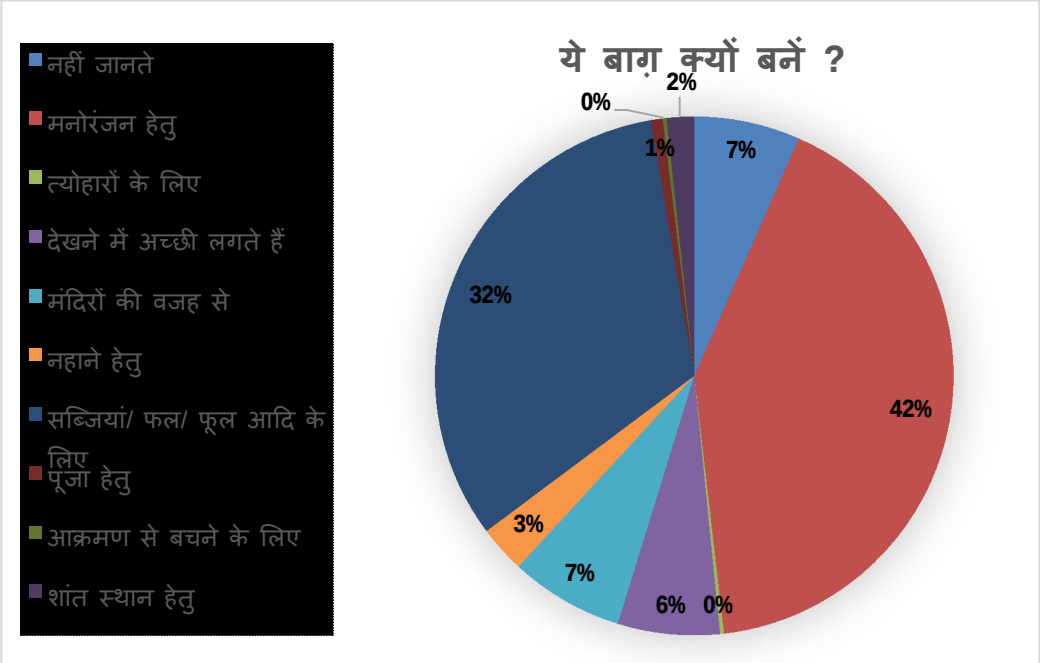

चित्र 6 : सर्वेक्षण के परिणाम : बागों के उपयोग के बारे में

विषय को विस्तार से समझने के लिए उस संस्कृति से जुड़े लोगों की राय (एमिक अप्रोच) के अलावा उस संस्कृति पर बाहरी लोगों की राय भी आवश्यक है। (एटिक अप्रोच) इस हेतु छतरपुर (म.प्र.), टीकमगढ़ (म.प्र.), नौगाँव (म.प्र.), झाँसी (उ.प्र.), ललितपुर (उ.प्र.), चित्रकूट (उ.प्र.), दिल्ली में मौजूद विद्वतजनों एवं इतिहासकारों से जानकारियाँ एकत्रित की गईं। इंटैक बेल्जियम के संयोजक डॉ. गेर्त रोबेरेट्स से भी जानकारियाँ एकत्रित की गईं। इस दौरान एक रोचक दृष्टांत भी घटित हुआ। जगम्मनपुर (जालौन), उ.प्र. भी एक बुंदेली राज्य हुआ करता था। लेखक साक्षात्कार हेतु इस राज्य की वंशज श्रीमती कल्पना चौहान से मिलने गए। यद्यपि लेखक कभी भी जगम्मनपुर नहीं गए थे, किंतु लेखकों ने, अपने शोध के आधार पर श्रीमती कल्पना चौहान को जगम्मनपुर के बागों के संभावित नाम तथा संभावित भूविन्यास के बारे में बता दिया, जो कि सही था। इस पर श्रीमती चौहान अत्यंत आश्चर्य चकित हुईं। इस वृत्तांत से पता चलता है कि वस्तुतः बुंदेलखंड में कई बुंदेली बाग़ हैं जिनकी संरचना एक जैसी हैं।

दस्तावेज संबंधी शोधकार्य एवं उपलब्ध साहित्य की समीक्षा

छतरपुर के विद्वतजनों, बागों के वर्तमान मालिकों, बागों में काम कर रहे किसानों, तथा धनुषधारी मंदिर के पुजारी आदि से व्यक्तिगत दस्तावेज एवं पुरालेख प्राप्त किए गए। वार्षिक पत्रिका 'बुंदेली बसंत' (छतरपुर से प्रकाशित, 1999-2016 तक), 'राष्ट्र गौरव' (छतरपुर से प्रकशित, 1993 अंक) एवं 'धर्मयुग' पत्रिका आदि से भी जानकारियाँ प्राप्त हुई। संस्थाओं जैसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, महाराजा छत्रसाल परास्नातक विद्यालय स्थित पुस्तकालय, झाँसी स्थित सरकारी पुस्तकालय, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय स्थित पुस्तकालय तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण खजुराहो एवं भोपाल से भी दस्तावेज प्राप्त किए गए।

सन् 1907 में सी.ई. लुआर्ड द्वारा प्रकाशित छतरपुर गज़ेटियर में राजनगर ग्राम के 200 वर्ष पुराने होने का प्रमाण मिलता है। इसी गज़ेटियर में दो बागों (नजर बाग़ व राम बाग़), चार मंदिरों (राधा माधव जी, बिहारी जी, गौरी शंकर व देवीजी) का भी उल्लेख है। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में जर्नल ए. कनिंघम खजुराहो आए थे, पर उन्होंने राजनगर के बारे में कोई वर्णन नहीं किया। कैप्टन डब्लू. आर. पोग्सन ने भी राजनगर का जिक्र नहीं किया, जब कि उन्होंने छतरपुर के बारे में काफी कुछ लिखा है। छतरपुर से प्राप्त दस्तावेज न्यून हैं। इसकी एक वजह यह बताई गई कि भारत की आज़ादी के समय रियासतों ने कई पुराने दस्तावेज नष्ट कर दिए थे। व्यक्तिगत दस्तावेजों द्वारा राजनगर में स्थित कई स्थानों के पुराने नामों का संदर्भ मिलता है – जैसे धनुषधारी मंदिर का नाम 'हनुमान जी की बगीची' था (धनुषधारी मंदिर से प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार)। यद्यपि दस्तावेजों द्वारा जो भी जानकारियाँ प्राप्त हुई हैं, वे बहुत थोड़ी हैं, किंतु इन जानकारियों को मौखिक इतिहास से मिलाकर हमें इन बागों के बनने के बारे में जानकारी हो सकी।

अन्य साहित्यिक दस्तावेज खंगालने पर भी कम जानकारियाँ ही हासिल हो पाईं। 'बुंदेलखंड पेंटिंग्स' नामक पुस्तक में लिखा है कि धनुषधारी मंदिर कुँवर सोने शाह ने बनवाया था। कुँवर सोने शाह ने सन् 1785 में छतरपुर राज्य स्थापित किया था, जिससे हम ये कह सकते हैं कि ये बाग़ भी इसी समय बने होंगे क्योंकि इन बागों में भी 'धनुषधारी मंदिर' की वास्तुकला के समान ही मंदिर बने हुए हैं। छतरपुर के राजाओं के जीवन से संबधित जानकारियाँ सीमित हैं, जिस कारण राजनगर के विकास में विभिन्न राजाओं के कार्यों को जानना मुश्किल है।

बागों के बनने के समय का निर्धारण

तीनों सूत्रों (वास्तुकला के विश्लेषण, दस्तावेज संबंधी प्रमाण एवं साक्षात्कार द्वारा प्राप्त मौखिक इतिहास) से प्राप्त जानकारियों के विश्लेषण से पता चलता है कि राजनगर के बाग़ 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध 19 सदी के पूर्वार्द्ध में बने थे। लुआर्ड गज़ेटियर में लिखा है कि राजा सोने शाह (सन् 1785-1816) तथा राजा प्रताप सिंह (सन् 1816-1854) के समय राज्य में स्थायित्व एवं शांति थी। इससे हम अनुमान कर सकते हैं कि ये दोनों राजा युद्धों से इतर नई संरचनाएँ बनाने पर ध्यान दे पाए होंगे। राजा प्रताप सिंह जी के बाद राज्य में ब्रिटिश सरकार का हस्तक्षेप बढ़ गया था, जिससे उनके वंशजों को अपने राज्य की रक्षा पर विशेष ध्यान देना पड़ा होगा और राज्यों का ध्यान निर्माण कार्यों की तरफ कम रहा होगा।

मौखिक इतिहास के अनुसार भी राजा सोने शाह व राजा प्रताप सिंह ने ही ज्यादातर बागों का निर्माण करवाया था। बाद में स्व. राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कुछ नए बाग़ बनवाए एवं पुराने बागों का रूपांतरण किया जैसे कि राम बाग़ एवं रानी बाग़। राजा प्रताप सिंह ने खजुराहो में पश्चिमी मंदिर समूह के सामने स्थित अपना मकबरा भी बनवाया था। राजा प्रताप सिंह के बारे में यह किस्सा भी प्रचलित है कि "राज्य में सूखा पड़ने पर राजा नया निर्माण करवाने लगते थे, ताकि काम के एवज में किसानों को पैसा दिया जा सके।"

ये सभी बाग़ छतरपुर के राज परिवार द्वारा बनाए गए थे, और बाद में राजदरबार से निकट संबद्ध लोगों को स्थानांतरित कर दिए गए थे अथवा ईनाम के तौर पर दे दिए गए थे। इस तरह का संपत्ति स्थानांतरण हमेशा ख़ुशी से अथवा दया के कारण नहीं होता था, बल्कि और भी कई कारण थे। आज़ादी के समय भारत गणराज्य में शामिल होने वाले राजाओं की जमीनें सरकारी कब्जे में जा रही थीं। अतः कुछ राजाओं ने जमीनें सरकार को देने की बजाय अपने वफादार लोगों को देना उचित समझा। इस वजह से ही आज कई बाग़ व्यक्तिगत लोगों के अधिकार में हैं।

अनंत काल से, भारत में कई प्रकार की परंपरागत कृषि विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से कई समय के साथ ख़त्म हो ग हैं। राजाओं के समय में, राजनगर के बाग़ उन्नत कृषि फसलों के लिए जाने जाते थे। चूँकि बुंदेलखंड क्षेत्र पहले जंगलों से घिरा हुआ था, अतः यहाँ कृषि का विकास वनों के साथ ही हुआ। ब्रिटिश सरकार में उद्योगों का विकास होने पर बड़ी संख्या में पेड़ काटे गए। इन पेड़ों को फिर से कभी नहीं लगाया गया। पेड़ों के कटने तथा जनसंख्या के निरंतर बढ़ने से कृषि की परंपरागत विधियों में परिवर्तन आया और आज बुंदेलखंड 'सूखाग्रस्त' है। कृषि तकनीक में बदलाव तथा भूजल के अत्यधिक दोहन से क्षेत्र का जलस्तर काफी नीचे चला गया है।

निष्कर्ष

राजनगर, खजुराहो के एकदम निकट अवस्थित है । खजुराहो विश्व प्रसि पर्यटन स्थल है तथा प्रतिवर्ष कई अंतरराष्ट्रीय पर्यटक यहाँ आते हैं । चूँकि इन पर्यटकों को खजुराहो के अलावा आस पास की धरोहरों के बारे में जानकारी नहीं होती है, अतः पर्यटक सिर्फ खजुराहो देखकर चले जाते हैं । यदि इन पर्यटकों को राजनगर के उद्यानों के बारे में भी बताया जाए तो, राजनगर में भी पर्यटन संबंधी विकास हो सकता है । इससे राजनगर के लोगों को नए रोजगार मिलेंगे तथा क्षेत्र का विकास खजुराहो पर केंद्रित न होकर समग्र रूप से होगा । पर्यटन की दृष्टि से बागों में कई प्रकार की संभावनाएँ हैं

धार्मिक पर्यटन - बागों में मंदिरों की मौजूदगी के कारण क्षेत्रीय लोगों के लिए धार्मिक पर्यटन हेतु विकास किया जा सकता है । इंटैक बेल्जियम द्वारा रानी बाग़ में नई शिव-मूर्ति स्थापित की गई है । स्थापना के बाद से बाग़ में आस-पास की स्त्रियों का आना-जाना बढ़ गया है, तथा विभिन्न सामाजिक उत्सवों के दौरान लोग बागों में प्रवास करते हैं । इंटैक द्वारा आयोजित 'भजन-संध्या' तथा सामाजिक भोज के दौरान भी सामाजिक प्रतिभागिता देखते ही बनती है । यदि अन्य बागों में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हों, तो देशी एवं विदेशी पर्यटक निश्चित रूप से आकर्षित होंगे ।

कृषि पर्यटन - इंटैक द्वारा इन बागों में जैविक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है । चूँकि जैविक खेती के प्रति लोग जागरूक हो रहे हैं तथा जैविक खेती से उपजे हुए उत्पाद लोकप्रिय हैं । अतः बागों में उपस्थित कोठियों में लोग रहकर जैविक उत्पादों का उपभोग कर सकते हैं । इस प्रकार राजनगर में किसानों को रोजगार मिलेगा तथा पर्यटन में भी बढ़त होगी ।

रोमांचक पर्यटन - शहरों में रहने वाले पर्यटक प्रकृति के करीब समय गुजारना चाहते हैं । यदि इन बागों में उन्हें प्रकृति के करीब रहने का मौका मिले तो निश्चित रूप से लोग इसके लिए लालायित होंगे । शहरों में रहने वाली एक बड़ी आबादी अनाजों एवं फलों के उत्पादन से अनभिज्ञ होती है, अतः इन बागों में रहकर वे कृषि उत्पादन को भी समझ पाएंगे । इंटैक की परियोजना के दौरान कई पर्यटकों ने इन बागों में रहने में रुचि दिखाई, अतः अब इन बागों में उपस्थित संरचनाओं जैसे कि कोठी आदि के वैकल्पिक उपयोग पर ध्यान दिया जा रहा है ।

उपरिलिखित साधनों द्वारा बागों के संरक्षण के लिए धन भी जुटाया जा सकता है, तथा पारंपरिक खेती की विधियों एवं बुंदेली संस्कृति को लोगों तक पहुँचाया जा सकता है । इस प्रकार जुटाए गए धन का उपयोग बागों में काम कर रहे कृषकों एवं मजदूरों की आय हेतु किया जा सकता है । इस व्यवस्था से बागों का संरक्षण भी हो जाएगा एवं वर्तमान समय के अनुसार उनका वैकल्पिक उपयोग भी हो जाएगा ।

संदर्भ

- अव्रामी, ई., मेसन, आ., एंड देलाटोर्रे, ऍ. (2000). *वैल्यूज एंड हेरिटेज कन्जर्वेसन.*
- इको - हॉक, आ. स. (2000). एन्शिएन्ट हिस्ट्री इन द न्यू वर्ल्ड: इंटीग्रेटिंग ओरल ट्रेडिशंस एंड द अर्किओलोजिकल रेकोर्ड इन डीप टाइम. *अमेरिकन एंटीक्विटी* (pp. 267-290).
- ऍफ़. रगल्स, ड., एंड सिलवरमैन, ए. (2009). इनटैन्जिबल हेरिटेज एम्बाडीड. *स्प्रिंगर.*
- ऐस्मान, ज., एंड कैप्लिका, ज. (1995). कलेक्टिव मेमोरी एंड कल्चरल आइडेंटिटी. *न्यू जर्मन क्रिटिक, 65 (कल्चरल हिस्ट्री/ कल्चरल स्टडीज)*, पृष्ठ . 125-133
- *ओरल हिस्ट्री अस्सोसिऐशन.* (n.d.).पढ़ा गया-दिसंबर 16, 2017, from http://www.oralh ।story.org/about/pr ।nc ।ples-and-pract ।ces/
- कनिंघम, ए. (1880). *रिपोर्ट्स ऑफ़ टूर्स इन बुंदेलखंड एंड मालवा 1874-75 एंड 1876-77 (वो.X).*कलकत्ता: अर्किओलोजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया .
- कोठारी, स. (1985). *रिसर्च मेथडोलोजी- मेथड्स एंड टेक्निक्स.* नई दिल्ली : विलेई स्टर्न लिमिटेड .

- ग्रोट, ऍं. ए.,एंड वांग, ड. (2013). *आर्किटेक्चरल रिसर्च मेथड्स* .जॉन विले एंड संस.
- चौहान, क. (2017 , जनवरी 12). रॉयल दिसेन्देंट एंड ओनर ऑफ़ फोर्ट ऑफ़ जगम्मनपुर, जालौन . (न. उपाध्याय, साक्षात्कार कर्ता)
- चौहान, क. (2017, जुलाई 28). बुंदेली राज परिवार. (आ. शर्मा, साक्षात्कार कर्ता)
- टीम, द. ख. (1998). *कंसर्वेशन एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट स्ट्रेटजी फॉर द खजुराहो हेरिटेजरीजन,* नई दिल्ली .
- नाथ, आ. (1989). *हिस्टोरिओग्रफिकल स्टडी ऑफ़ इंडो मुस्लिम आर्किटेक्चर* .जयपुर : द हिस्टोरिकल रिसर्च डॉक्यूमेंटेशन .
- पोग्सन, ड. आ. (1828). *अ हिस्ट्री ऑफ़ बुंदेलाज* .एशियाटिक लिथोग्रफिक कंपनी .
- फिन्नेगन, आ. (2003). *ओरल ट्रेडिशंस एंड द वर्बल आर्ट्स: अ गाइड टू रिसर्च प्रैक्टिसेज* .पढ़ा गया अप्रैल 11, 2017, from रौटलेज: https://books.google.co. ।n/books
- बाबूजी, प. य. (2015, जून 28). द इन्हैबिटैन्ट्स ऑफ़ राजनगर . (आ. शर्मा, साक्षात्कार कर्ता)
- भगवत, प. ब. (1993). गार्डन्स ऑफ़ इंडिया, हिस्टोरिक गार्डन एंड साइट्स.
- यादव, प. (2015, जून 27). राजनगर के निवासी. (आ. शर्मा, साक्षात्कार कर्ता)
- यूनेस्को. (2017, अप्रैल 26). *टेक्स्ट ऑफ़ द कन्वेंशन फॉर द सेफगार्डिंग ऑफ़ द इन्टैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज.* पढ़ा गया यूनेस्को : http://www.unesco.org/culture/ ।ch/en/convent ।on
- यूरोप, क. ऑ. (2000). *यूरोपियन लैंडस्केप कन्वेंशन* .रिपोर्ट एंड कन्वेंशन .
- लुआर्ड, स. (1907). *सेन्ट्रल इंडिया स्टेट गज़ेटियर सीरीज, वो. V । ए.*
- लूकस, आ. (2015). *रिसर्च मेथड्स फॉर आर्किटेक्चर* .लन्दन : लौरेंस किंग पब्लिशिंग लिमिटेड .
- वन्सिना, ज. ए. (1985). *ओरल ट्रेडिशंस एज हिस्ट्री* .पढ़ा गयाअप्रैल 8, 2017, from https://books.google.co. ।n
- शिवा, व. (2000). *ऐनइकोलोजिकल हिस्ट्री ऑफ़ फ़ूड एंड फार्मिंग इन इंडिया.* नई दिल्ली: रिसर्च फ़ौंडेशन फॉर साइंस, टेक्नोलोजी एंड एकोलोजी/ नवदान्या .
- सिंह, र. भ. (2006 , जनवरी 27). लास्ट रूलिंग महाराजा/ किंग ऑफ़ छतरपुर (1921-2006). (ग. र. बब्बर, साक्षात्कार कर्ता)
- सिंह, व. (2016, फ़रवरी 22). डिसेन्देंट ऑफ़ राजनगर रॉयल फॅमिली. (ए. शर्मा, एंड न. उपाध्याय, साक्षात्कार कर्ता)
- सिक्का, स. (1998). *इन्वेंटरी ऑफ़ कल्चरल कंपोनेंट्स ऑफ़ द वर्ल्ड हेरिटेज जोन खजुराहो .* नई दिल्ली : इंटैक, नई दिल्ली: डाईरेक्टोरेट ऑफ़ आर्कियोलोजी, आर्काइव्स एंड म्यूजियम्स, मध्य प्रदेश सरकार .

दिल्ली के विश्व विरासत स्थलों का पर्यटन पर प्रभाव

उज्ज्वल अंकुर

भारत में पर्यटन सबसे बड़ा सेवा उद्योग है| इसका राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 6.23% और भारत के कुल रोज़गार में 8.78% योगदान है। भारत में वार्षिक तौर पर 5 लाख विदेशी पर्यटकों का आगमन और 562 लाख घरेलू पर्यटकों द्वारा भ्रमण परिलक्षित होता है। 2008 में भारत के पर्यटन उद्योग ने लगभग 100 करोड़ अमेरिकी डालर जनित किया और 2018 तक 9.4 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर के साथ, इसके 275.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर बिलियन तक बढ़ने की उम्मीद है। भारत में पर्यटन के विकास और उसे बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय नामित अभिकरण है और **'अतुल्य भारत'** अभियान की देख - रेख करता है।

विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद के अनुसार भारत सर्वाधिक 10 वर्षीय विकास क्षमता के साथ, 2009-2018 में पर्यटन का आकर्षण केंद्र बन जाएगा। यात्रा एवं पर्यटन प्रतिस्पर्धा रिपोर्ट 2007 ने भारत में पर्यटन को प्रतियोगी क़ीमतों के संदर्भ में 6वां तथा सुरक्षा व निरापदता की दृष्टि से 39वां दर्जा दिया है। होटल के कमरों की कमी के रूप में, लघु और मध्यमावधि रुकावट के बावजूद, 2007 से 2017 तक पर्यटन राजस्व में 42 प्रतिशत उछाल की उम्मीद है।

भारत में 36 (28 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और 1 मिश्रित) विश्व विरासत स्थल हैं जो अगस्त 2017 तक संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। ये 1972 में स्थापित यूनेस्को विश्व विरासत सम्मेलन में वर्णित सांस्कृतिक या प्राकृतिक विरासत के महत्व के स्थान हैं। 17 अक्तूबर 1972 से 21 नवंबर 1972 तक यूनेस्को आमसभा के बाद, 17 नवंबर 1972 को विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित सम्मेलन आयोजित किया गया। 1983 में आयोजित विश्व धरोहर सत्र की सातवीं सूची में, भारत के पहले दो स्थान (आगरा किला और अजंता गुफाएँ), वर्णित हुए। पहचान के लिए भारत द्वारा प्रस्तुत की गई अतिरिक्त स्थानों की एक अस्थायी सूची में 44 साइटें शामिल हैं। भारत में सांस्कृतिक स्थलों को पत्थर पर उनके शानदार शिल्प कौशल से चिह्नित किया जाता है। भारत के अधिकांश मंदिर, जो इस सूची में लिखे गए हैं, पत्थर से किसी भी आधुनिक उपकरण (मोर्टार) के बिना बनाए गए हैं और उन पर मूर्तिकला उकेरी गई हैं। तीन नई साइटें - नालंदा, बिहार में 'नालंदा महावीर (नालंदा विश्वविद्यालय) का पुरातत्वीय स्थल', चंडीगढ़ में 'कैपिटल बिल्डिंग कॉम्प्लेक्स, द आर्किटेक्चरल वर्क ऑफ ले कॉर्ब्युएर' और 'खांगचेन्दोंगगा नेशनल पार्क, सिक्किम' को जुलाई में सूची में जोड़ा गया है। 2016-2017 में अहमदाबाद के ऐतिहासिक शहर को भारत में यूनेस्को का विश्व विरासत स्थल बनाने के लिए सूची में जोड़ा गया था।

दिल्ली राज्य के पर्यटन विभाग द्वारा पहचाने जाने वाले 47 महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर घरेलू पर्यटकों और उसी दिन आकर लौट जाने वाले आगंतुकों द्वारा लगभग 216.37 लाख भ्रमण किए जाते हैं । इसके अलावा, विदेशी पर्यटकों और उसी दिन आगंतुकों आकर लौटने वाले में इन गंतव्यों में कुल 18.17 लाख लोग होते हैं| पर्यटन यातायात दिल्ली में मौसमी रुझान का पालन करते हुए जनवरी में घरेलू आगंतुकों द्वारा अधिकतम 30 लाख से अधिक यात्राओं को देखता है। जुलाई - सितंबर की अवधि में कुल दौरे में गिरावट आती है। विदेशी पर्यटकों की यात्रा जनवरी में सर्वाधिक, लेकिन जून में निम्न हो

सहायक प्रोफेसर, सत्यम फैशन इंस्टिट्यूट, नोएडा

जाती है। घरेलू पर्यटकों की कुल संख्या और उसी दिन आगंतुकों का अनुमान 131.16 लाख है। विदेशी पर्यटकों और उसी दिन आगंतुकों की संख्या लगभग 8.59 लाख है।

भारत की राजधानी दिल्ली अपने दीर्घकालीन अस्तित्व एवं प्रतिष्ठा के लिए विश्व विख्यात है। दिल्ली अपने उतार – चढ़ाव वाले अतीत के साथ स्मृति चिह्नों और अवशेषों के लिए भी जानी जाती है। मान्यता है की पृथ्वीराज चौहान को हराकर सन 1191 में मुस्लिम शासक दिल्ली में आए। उनकी विजय ने यहाँ की जीवन शैली और संस्कृति के स्वदेशी रूप पर एक कारगर और निश्चित प्रभाव छोड़ा, जिसने कला की अन्य अभिव्यक्तियों के बीच वास्तुकला की एक नई शैली को जन्म दिया। इस शैली ने इस्लाम के अनुरूप धार्मिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं का खासा ध्यान भी रखा। कुछ विद्वानों का मानना है कि भारतवासियों को वास्तविक मेहराब की जानकारी थी पर बहुमत यह है कि मुसलमान शासक अपने साथ वास्तविक मेहराब के निर्माण का सिद्धांत लेकर आए। अगर यह मान भी लिया जाए की स्वदेशियों को इसकी जानकारी होगी फिर भी ये तो प्रमाणित है कि इसके प्रचलन का श्रेय मुसलमान शासकों को ही जाता है। इस सफल वास्तुकला के उपयोग ने समतल सरदलों या टोड़ेदार छतों की जगह मेहराबों या मेहराबी छतों को तथा शिखरों की जगह गुंबदों को दे दी।

गोलाकार ड्रम और छज्जे भी इस्लामी वास्तुकला के अभिन्न अंग बन गए। छज्जों पर शानदार नक्काशी युक्त आरोही लटकन भी दिखाई देने लगे। छतरियाँ, ऊँची मीनारें और अर्ध - गुंबदीय दो प्रवेश द्वार, भारतीय - इस्लामी वास्तुकला के अन्य कुछ विशिष्ट लक्षण हैं।

हिंदू और मुसलमानों की पूजन विधि की भिन्नता ने मंदिर और मस्जिद के भूतल संयोजन में अंतर होना अनिवार्य कर दिया। गर्भगृह और मंडप की उपस्थिति किसी भी मंदिर को संपूर्णता प्रदान करने के लिए काफी है पर इस्लामी इबादत के तौर – तरीके, सामूहिक उपस्थिति ने एक विशाल सहन की आवश्यकता बताई। मस्जिदों में मूलतः पश्चिमी छोर पर एक बड़ा इबादत हॉल (लीदान) होता है। इस इबादतगाह की पिछली दीवार के बीच में एक आला होता है जिसे मेहराब कहते हैं और यह क़िबला (प्रार्थना की दिशा) का संकेत देता है। उसकी दायीं ओर एक प्रवचन मंच होता है जहाँ से इमाम इबादत का नेतृत्व करते हैं। बहुत महत्वपूर्ण लक्षणों में से एक मीनार, जो प्रारंभ में मुअज्जिन के लिए ग़ाज़ना में विश्वास रखने वालों को बुलाने के लिए होती थी, वह बाद में वास्तु विशेष का एक अंग बन गई। एक गलियारा या उपखंड का एक बड़ा कमरा या कोई भी अन्य भाग उन महिलाओं के लिए होता था जो पर्दा करती थीं। मस्जिद का मुख्य द्वार पूर्व की ओर होता था । सामान्यतः मस्जिद में एक तालाब की व्यवस्था हाथ - पैर धोने के लिए होती है।

मकबरों की संरचना भी इस्लामी वास्तुकला को एक नया आयाम देती है। इसके आवश्यक तत्वों में गुंबदनुमा कक्ष, जिसे हुजरा भी कहा जाता है, उसके बीच में जरीह कहलाने वाला एक स्मारक, पश्चिमी दीवार में मेहराब और वास्तविक कब्र का एक भूमिगत कक्ष शामिल है। बड़े मकबरों में अलग से एक मस्जिद होती है तथा बाद के मकबरों में सुनियोजित बाग़ भी देखे गए हैं। शवगृह का प्रवेश द्वार सामान्यतः दक्षिण की ओर होता है।

सजावट, इस्लामी वास्तुकला का मूल तत्व है। विषय - वस्तु या मूलभाव में हिंदू प्रचलनों से विपरीत इनमे उष्णकटिबंधीय देश के मानवीय और पाशविक रूपों को स्पष्टता के साथ तथा वनस्पति जीवन की विशेषताओं और प्रचुरता के साथ चित्रित किया गया है।

अभिव्यक्ति की बोधगम्यता और सरलता, सामग्री का किफायती रूप से इस्तेमाल तथा उनकी क्रमबद्ध व्यवस्था इस्लामी कला की अपनी विशेषता है जो हिंदू कला के उल्लास, प्रचुरता और अतिश्योक्ति के बिलकुल विपरीत है। इस्लामी इमारतों में पत्थरों पर नक्काशी का काम गहराई में किया गया है। टाइलों पर मीनाकारी इस्लामी इमारतों की खूबसूरती निखारती है। भारतीय - इस्लामी इमारतों में चूने का प्रयोग व्यापक रूप से किया गया है। इसे न केवल मसाले की चिनाई

के काम में लाया जाता था बल्कि पलस्तर और उत्कीर्ण अलंकरण तथा दग्ध मीनाकारी के काम के लिए इसका आधार भी तैयार किया जाता था।

दिल्ली की तीन इमारतों को विश्व धरोहर की संज्ञा प्राप्त है जो यहाँ के फूलते - फलते पर्यटन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

क़ुतुब मीनार समूह

लाल और पाण्डु रंग के बलुआ पठार से निर्मित क़ुतुब मीनार भारत में सबसे ऊँची मीनार है। ऊँचाई में 72.5 मीटर इस मीनार का व्यास भूतल पर 14 मीटर है जबकि ऊपर यह घटते हुए मात्र 2.75 मीटर रह जाती है।

सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक ने सन 1199 में इस मीनार की बुनियाद रखी तथा इबादत के लिए पुकारने हेतु मुअज़्ज़िन के प्रयोग के लिए इसकी पहली मंज़िल का निर्माण करवाया। तदनंतर, सुलतान के उत्तराधिकारी एवं दामाद शम्सुद्दीन इल्तुतमिश (1211 - 1236 ई०) ने इसमें तीन मंज़िलें और बनवाईं। हर मंज़िल के चारों और जंगले से घिरा हुआ बरामदा है। बरामदे के नीचे दीवारगीर सुंदर तराशें लटकन के अभिप्रायों से उत्कीर्णित हैं जो पहली मंज़िल में सर्वाधिक सुस्पष्ट हैं।

मीनार के विभिन्न स्थानों पर अंकित अरबी तथा नगरी अभिलेख एओम चिह्न इसके निर्माण के संबंध में काफी महत्वपूर्ण सूचना देते हैं| फ़िरोज़शाह तुगलक (1351-1388 ई०) तथा सिकंदर लोदी (1489-1517 ई०) द्वारा मीनार का जीर्णोद्धार करवाया गया । मेजर आर. स्मिथ ने भी 1829 में इसका पुनः जीर्णोद्धार करवाया।

कुतुबुद्दीन ऐबक ने सन 1198 में मीनार के उत्तर-पूर्व में कुव्वतुल - इस्लाम मस्जिद का निर्माण करवाया। यह दिल्ली के सुल्तानों द्वारा निर्मित प्राचीनतम मस्जिद है। इसके स्तंभ मुक्त गलियारों में आयताकार चौक है। मस्जिद के मुख्य दरवाज़े पर लगे अभिलेख के अनुसार कुतुबुद्दीन ने इसे 27 हिंदू और जैन मंदिरों के नक्काशीदार अवशेषों से निर्मित किया। बाद में इसमें एक विशाल महराबदार पर्दा लगाया गया था तथा शम्सुद्दीन इल्तुतमिश और अलाउद्दीन खिलजी ने इस मस्जिद का आगे विस्तार किया। मस्जिद के चौक में एक लौह स्तंभ खड़ा है। इस लौह स्तंभ पर चौथी शताब्दी की ब्राह्मी लिपि में संस्कृत का एक अभिलेख उत्कीर्णित है। इस अभिलेख के अनुसार इस स्तंभ की रचना चंद्र नामक एक शक्तिशाली राजा की स्मृति में विष्णुध्वज के रूप में की गई थी। इसके अलंकृत शीर्ष पर एक गहरे छिद्र की उपस्थिति संकेत करती है कि संभवतया इस पर गरुड़ की मूर्ति लगी होगी।

इल्तुतमिश (1211- 1236 ई०) के मकबरे का निर्माण 1235 में हुआ। यह लाल बलुआ पत्थर का बना हुआ एक वर्गाकार कक्ष है जिसके दरवाज़ों तथा अंदर की दीवारों पर खुशनवीस लेख एवं सारसेनिक परंपरा के ज्यामितीय अलंकरण और बेलबूटों की नक्काशी का बाहुल्य है। इनमें से कुछ अभिप्राय जैसे चक्र, पुष्प इत्यादि निस्संदेह प्राचीन भारतीय अलंकरणों से लिए गए हैं।

कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद के दक्षिण में अलाई दरवाज़ा है। इस पर उत्कीर्ण अभिलेखों के अनुसार इसका निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने सन 1311 में किया। यह उन प्राचीनतम इमारतों में से एक है जिसका निर्माण और साज - सज्जा इस्लामी स्थापत्य के अनुरूप की गई है। इसी दौरान अलाउद्दीन खिलजी ने कुतुबमीनार से दुगुनी ऊँची मीनार के निर्माण का कार्य प्रारंभ किया जो 25 फ़ीट से ज्यादा ऊँची नहीं बन पाई। क़ुतुब मीनार के उत्तर में अलाई मीनार आज भी विद्यमान है। समय - समय पर क़ुतुब मीनार के आस - पास और भी भवन बनते गए जिनमें मस्जिद, मदरसा, मकबरे, क़ब्रें व कुछ अन्य अवशेष हैं।

दिल्ली की पर्यटन दृष्टि से क़ुतुब समूह बहुत महत्वपूर्ण है। अन्य प्राचीन और ऐतिहासिक इमारतों से भिन्न क़ुतुब में प्रवेश की समय सीमा सूर्योदय से सूर्यास्त तक है। धार्मिक परंपराओं को सम्मान देते हुए क़ुतुब मीनार में शुक्रवार को प्रवेश निःशुल्क है।

हुमायूँ का मकबरा

चारबाग शैली पर निर्मित मकबरों का यह प्रथम प्रामाणिक नमूना है। ऊँचे महराबों तथा दुहैरा - गुंबद से युक्त इस इमारत का निर्माण हुमायूँ की बेग़म हमीदा बानू (हाजी बेगम) ने 1569 में 15 लाख रुपये की लागत से करवाया था।

अनगढ़े पठारों की ऊँची चारदीवारी से घिरे इस बाग़ में प्रवेश हेतु दो मंज़िले विशाल दरवाज़े हैं, एक पश्चिम में तथा दूसरा दक्षिण में। पूर्वी दीवार के मध्य में एक बारादरी तथा उत्तरी दीवार में हमाम का निर्माण किया गया है। विशाल मकबरा एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है। चबूतरों के चारों ओर महराबदार प्रकोष्ठों की श्रृंखला है। अष्टकोणीय मध्य प्रकोष्ठ कब्र है तथा विकरणों पर निर्मित अष्टकोणीय लघु प्रकोष्ट पार्श्ववर्ती महराबदार तथा जालियों से युक्त प्रकोष्ठों से घिरे हैं। प्रत्येक पार्श्व महराबें हैं जिनमें मध्यवर्ती सबसे ऊँची है। इसी योजना की पुनरावृत्ति दूसरी मंज़िल पर भी देखने को मिलती है। छत पर स्थिर संगमरमर से बना दुहैरा - गुंबद (42.5 मी.) स्तंभयुक्त छतरियों से घिरा है।

यहाँ मुग़ल राजवंश से संबंधित व्यक्तियों की कब्रें हैं। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857 ई.) के दौरान बहादुर शाह ज़फर ने तीन शहज़ादों सहित इस मकबरे में शरण ली थी। इस मकबरे के दक्षिण -पश्चिम में एक ऊँचे चबूतरे पर 'नाई का मकबरा' स्थित है जिस पर पहुँचने के लिए दक्षिण दिशा से सात सीढ़ियाँ हैं। यह एक कक्षीय वर्गाकार इमारत दुहैरा - गुंबद से युक्त है।

लाल क़िला

लाल क़िला, दिल्ली के ऐतिहासिक, क़िलेबंद, पुरानी दिल्ली के इलाके में स्थित, लाल रेत - पत्थर से निर्मित इस किले को पाँचवें मुग़ल बादशाह शाहजहाँ ने बनवाया था। इस किले को 'लाल किला', इसकी दीवारों के लाल रंग के कारण कहा जाता है। इस ऐतिहासिक किले को वर्ष 2007 में युनेस्को द्वारा एक विश्व विरासत स्थल के रूप में चयनित किया गया।

लाल किला एवं शाहजहाँनाबाद का शहर, मुगल बादशाह शाहजहाँ द्वारा 1639 में बनवाया गया था। लाल किले का अभिन्यास फिर से किया गया, जिससे इसे सलीमगढ़ किले के संग एकीकृत किया जा सके। यह किला एवं महल शाहजहाँनाबाद की मध्यकालीन नगरी का महत्वपूर्ण केंद्रबिंदु रहा है। लाल किले की योजना, व्यवस्था एवं सौंदर्य मुगल सृजनात्मकता का शिरोबिंदु है, जो कि शाहजहाँ के काल में अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँची। इस किले के निर्माण के बाद कई विकास कार्य स्वयं शाहजहाँ द्वारा किए गए। विकास के कई बड़े पहलू औरंगज़ेब एवं अंतिम मुगल शासकों द्वारा किए गए। संपूर्ण विन्यास में कई मूलभूत बदलाव ब्रिटिश काल में 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद किए गए थे। ब्रिटिश काल में यह किला मुख्यतः छावनी के रूप में प्रयोग किया गया था। बल्कि स्वतंत्रता के बाद भी इसके कई महत्वपूर्ण भाग सेना के नियंत्रण में 2003 तक रहे।

लाल किला मुगल बादशाह शाहजहाँ की नई राजधानी, शाहजहाँनाबाद का महल था। यह दिल्ली शहर की सातवीं मुस्लिम नगरी थी। उसने अपनी राजधानी को आगरा से दिल्ली बदला, अपने शासन की प्रतिष्ठा बढ़ाने हेतु, साथ ही अपनी नये-नये निर्माण कराने की महत्वकाँक्षा को नए मौके देने हेतु भी। इसमें उसकी मुख्य रुचि भी थी।

यह किला भी ताजमहल और आगरे के क़िले की भांति यमुना नदी के किनारे पर स्थित है। यमुना नदी का जल इस किले को घेरकर खाई को भरता था| इसके पूर्वोत्तर ओर की दीवार एक पुराने किले से लगी थी, जिसे सलीमगढ़ का किला भी कहते हैं। सलीमगढ़ का किला इस्लाम शाह सूरी ने 1546 में बनवाया था। लालकिले का निर्माण 1638 में आरंभ होकर 1648 में पूर्ण हुआ। पर कुछ मतों के अनुसार इसे लाल कोट का एक पुरातन किला एवं नगरी बताते हैं, जिसे शाहजहाँ ने कब्ज़ा करके यह किला बनवाया था। बारहवीं सदी के अंतिम दौर में लाल कोट राजा पृथ्वीराज चौहान की राजधानी थी।

11 मार्च 1783 को, सिखों ने लाल किले में प्रवेश कर दीवान – ए - आम पर कब्ज़ा कर लिया। नगर को मुगल वज़ीरों ने अपने सिख साथियों का समर्पित कर दिया। यह कार्य करोर सिंहिया मिस्ल के सरदार बघेल सिंह धालीवाल के कमान में हुआ।

लाल किले में उच्च स्तर की कला एवं विभूषक कार्य दृष्टव्य है। यहाँ की कलाकृतियाँ फारसी, यूरोपीय एवं भारतीय कला का संश्लेषण हैं, जिसका परिणाम विशिष्ट एवं अनुपम शाहजहानी शैली में था। यह शैली रंग, अभिव्यंजना एवं रूप में उत्कृष्ट है। लाल किला दिल्ली की एक महत्वपूर्ण इमारत समूह है, जो भारतीय इतिहास एवं उसकी कलाओं को अपने में समेटे हुए है। इसका महत्व समय की सीमाओं से बढ़कर है। यह वास्तुकला संबंधी प्रतिभा एवं शक्ति का प्रतीक है। सन 1913 में इसके राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित होने से पूर्व उसकी उत्तरकालीनता को संरक्षित एवं परिरक्षित करने हेतु प्रयास हुए थे। इसकी दीवारें, तराशकर बेहद चिकनी की गईं हैं। ये दीवारें दो मुख्य द्वारों पर खुली हैं – दिल्ली दरवाज़ा एवं लाहौर दरवाज़ा। लाहौर दरवाजा इसका मुख्य प्रवेशद्वार है। इसके अंदर एक लंबा बाजार है, चट्टा चौक, जिसकी दीवारें दुकानों की सीध में कतारबद्ध हैं। इसके बाद एक बड़ा खुला स्थान है, जहाँ यह लंबी उत्तर - दक्षिण सड़क को काटती है। यही सड़क पहले किले को सैनिक एवं नागरिक महलों के भागों में बाँटती थी। इस सड़क का दक्षिणी छोर दिल्ली गेट पर है।

1947 में भारत के आजाद होने पर ब्रिटिश सरकार ने यह परिसर भारतीय सेना के हवाले कर दिया था| तब से यहाँ सेना का कार्यालय बना हुआ था। 22 दिसंबर 2003 को भारतीय सेना ने 56 साल पुराने अपने कार्यालय को हटाकर लाल किला खाली किया और एक समारोह में पर्यटन विभाग को सौंप दिया।

भारत की राजधानी दिल्ली के ये तीन विश्व विरासत स्थल, विश्व मानचित्र पर भारत को और इसके पर्यटन को नया और सम्मानित स्थान देते हैं। इनकी सुरक्षा और स्वच्छता की जिम्मेदारी सरकार के साथ-साथ पर्यटकों की भी बनती है। अगर दिल्ली पर्यटन विभाग द्वारा इन स्थलों पर जानकार निर्देशक, अतिथि गृह, यातायात के आधुनिक साधन, पर्यटकों तथा उनके सामने की सुरक्षा इत्यादि की व्यवस्था और भी संयोजित और सुसज्जित हो जाए तो दिल्ली के ये स्मारक विश्व में भारत के अतुल्य इतिहास ,कला और संस्कृति की छठा और भी बेहतर ढंग से बिखेर सकेंगे।

संदर्भ

- शर्मा, वाई डी, '*दिल्ली और उसका अंचल',* भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली
- भारत में पर्यटन - https://hi.wikipedia.org/wiki/ दिनांक 13/08/2017
- भारत में विश्व विरासत की सूची https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_World_Heritage_Sites_in_India दिनांक 13/08/2017
- http://tourism.gov.in/sites/default/files/Other/Delhi_0.pdf
- भारत के विश्वदाय स्मारक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
- https://hi.wikipedia.org/wiki/लाल_क़िला

राजस्थान में पर्यटन प्रोत्साहन योजनाएँ

अजित सिंह[1]

विजय राज सिंह शेखावत[2]

राजस्थान राज्य ने समय के साथ भारतीय पर्यटन के अनेक रूपों को परिभाषित किया है। इसकी जीवंत परंपराएँ और सांस्कृतिक प्रतीक भारत के आदर्श और छवि के लगभग समान हैं। आजादी के कई दशकों से, राजस्थान ने अपनी प्राकृतिक संपदा, सांस्कृतिक विरासत और दर्शनीय परिदृश्य के आधार पर भारतीय पर्यटन में अग्रणी होने का गौरव प्राप्त किया है ।

हालांकि, विभिन्न कारणों से, अन्य राज्यों ने हाल के वर्षों में पर्यटन की अपेक्षाकृत कम संभावनाएँ होते हुए भी पर्यटकों के आगमन में राजस्थान को पीछे छोड़ दिया । इस स्थिति को राज्य की माननीय मुख्यमंत्री ने सारगर्भित करते हुए कहा कि "एक संग्रहालय 'पेरिस के लौवर(Louvre)' की तुलना में भारत को कम पर्यटक मिलते हैं और राजस्थान को एक स्मारक 'कंबोडिया में अंगकोर वाट(Angkor Wat)' की तुलना में कम पर्यटक मिलते हैं"।

राज्य सरकार ने वर्ष 2015 में एक बहु-आयामी विपणन रणनीति का फैसला किया, ताकि राजस्थान पर्यटकों के पसंदीदा स्थान के रूप में अपना दर्जा वापस प्राप्त कर ले । इस मार्केटिंग रणनीति के तहत एक सुविचारित मल्टी मीडिया अभियान था, जो विशिष्ट बाजार क्षेत्रों और हितधारकों को लक्षित करेगा। आपूर्ति हेतु, सरकार ने पर्यटन स्थलों के निर्माण एवं पर्यटन सर्किट के विकास, आवागमन में सुधार, सफाई और सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया। इन सभी बाजार रणनीतियों का अंत उत्पाद इस प्रकार था- एक बहु-परत, बहु-निदर्श, बहु-कथा और बहु-करोड़ वैश्विक मीडिया अभियान, जिसे प्रेरणादायक लघु प्रचार फिल्में, प्रिंट, आउटडोर और डिजिटल रचनात्मकता से चलाया गया । इसे नए सूत्रवाक्य (tagline) के साथ एक नए लोगो (Logo) द्वारा और अधिक रोमांचक और नवीन बनाया गया, जिसका लक्ष्य वर्तमान मनोरंजन-प्रेमी पर्यटकों को लक्षित करना था ।राज्य के नए सूत्रवाक्य (tagline) 'जाने क्या दिख जाए- आपने इसे पूरा नहीं देखा है' के जरिए अनुमान लगाया जा सकता है कि राज्य पर्यटन, राज्य भर में स्थलों की विविधता को प्रदर्शित करने की कोशिश कर रहा है ।

एक विश्व-प्रसिद्ध रचनात्मक एजेंसी, ओगिलवी और माथेर (Ogilvy and Mather), इन प्रचार फिल्मों और रचनाओं (creatives) का निर्माण करने के लिए लगी हुई थी । इस एजेंसी को एक आधुनिक और रचनात्मक रूप में राजस्थान पर्यटन की वेबसाइट को और राजस्थान पर्यटन को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म देने का कार्य भी सौंपा गया था । ये रचनाएँ (creatives) सभी प्रमुख मीडिया वाहनों जैसे टीवी, प्रिंट, डिजिटल, आउटडोअर, एयरपोर्ट, कैब, बसें, एफएम रेडियो, मल्टीप्लेक्स इत्यादि के माध्यम से व्यापक स्तर पर दर्शकों को दिखाई गईं । जनवरी 2016 में नए लोगो (Logo) और प्रमोशनल फिल्मों के शुभारंभ के बाद से, 100 करोड़ से अधिक लोगों ने इस अभियान को किसी न किसी रूप में देखा है।

[1] उपनिदेशक-, राजस्थान पर्यटन विभाग, जयपुर, राजस्थान

[2] सहायक वैज्ञानिक अधिकारी, वै त श आयोग, नई दिल्ली

मीडिया अभियान- एक नज़र में

मीडिया अभियान	निष्पादन स्थिति और अवधि	मूल्य(करोड़ रुपये में)
पहला अभियान	15.01.16 से 31.03.16	34
दूसरा अभियान	4.12.16 से 28.2.17 व अप्रैल 2017 से मई 2017	61
तीसरा अभियान	25 मई 2017 से शुरू (प्रगति में)	25
चौथा अभियान	सितंबर 2017 में शुरू होना है	25

पेशेवर मीडिया एजेंसियों को प्रभावी मीडिया प्रसार साधनों का सुझाव देने के लिए पर्यटन विभाग के साथ सूचीबद्ध किया गया है। विपणन रणनीति, डिजिटल मीडिया सामर्थ्य उपयोग के लिए केंद्रित है। सामाजिक मीडिया और वेबसाइट पर प्रभावी जनसंपर्क के साथ ब्लॉग, पोस्ट, ट्वीट्स और महत्वपूर्ण मेलों और त्योहारों की लाइव स्ट्रीमिंग, इस रणनीति का अभिन्न अंग है । विभाग, राजस्थान के नए पहलुओं के बारे में लिखने के लिए लोकप्रिय ब्लॉगर्स और प्रभावकों (Influencer) को भी प्रोत्साहित कर रहा है।

घरेलू और विदेशी यात्रा और प्रचार गतिविधियों में प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विभाग ने यात्रा-व्यापार को सक्रिय रूप से शामिल किया है ताकि व्यापार प्रतिनिधियों को इन गतिविधियों में सदस्यों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए, नेतृत्व करने हेतु नियत किया जा सके । विभाग ने यात्रा और पर्यटन मेले (टीटीएफ), इंडिया इंटरनेशनल ट्रैवल मार्ट (आईआईटीएम), इंडिया इंटरनेशनल ट्रैवल एंड टूरिज़्म (आईआईटीटी), दक्षिण एशिया ट्रैवल एंड टूरिज्म एक्सचेंज (एसएटीटीई), इंडियन एसोसिएशन ऑफ टूर ऑपरेटर्स (आईएटीओ) इत्यादि बहुप्रतीक्षित यात्रा-मार्ट में भाग लिया और प्रशंसा प्राप्त की । अप्रैल, 2017 में जयपुर में ग्रेट इंडिया ट्रैवल बाज़ार (जीआईटीबी) के नौवें संस्करण का आयोजन किया गया, जिसमें करीब पचास देशों के 270 से अधिक विदेशी क्रेताओं द्वारा मेजबानी की गई । इस दौरान 10,000 से अधिक बी टू बी (Business to Business) बैठकें भी आयोजित की गईं । राज्य सरकार ने व्यापार सदस्यों के लिए विदेशी यात्रा मार्ट के लिए भागीदारी शुल्क (50,000/- रु) में काफी कमी की है । विभाग ने वर्ष 2017-18 में भागीदारी के लिए यात्रा-व्यापार से परामर्श करके पाँच विदेशी यात्रा-मार्ट शॉर्टलिस्ट की हैं, इसमें टॉप रीसा पेरिस, आईटीबी सिंगापुर, डब्ल्यूटीएम लंदन, फितूर मैड्रिड और आईटीबी बर्लिन शामिल हैं ।

इसके अलावा, राजस्थान पर्यटन का प्रचार अन्य विदेशी आयोजनों, जैसे माउंटेन इकोस साहित्य उत्सव- थिम्फू में भाग लेने के द्वारा सुनिश्चित किया गया और जयपुर साहित्य महोत्सव जैसे प्रतिष्ठित आयोजन के साथ साझेदारी से बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आकर्षित हुए हैं। इन सभी प्रयासों के परिणाम 2016 में दिखना शुरू हुए हैं, जो पर्यटकों के आगमन में 17.3% वृद्धि से प्रमाणित होते हैं । यह प्रवृत्ति (Trend) 2017 के शुरुआती महीनों में भी जारी रही है । इसी तरह राज्य के तीन प्रमुख हवाई अड्डों, जयपुर, जोधपुर और उदयपुर ने वर्ष 2016 में सबसे अधिक यात्री-आगमन दर्ज किया है।

प्रमुख हवाई अड्डों पर यात्री-आवागमन

(लाख में)

हवाई अड्डा	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
जयपुर	19.88	22.01	29.04	38.05
उदयपुर	4.42	4.57	7.10	10.82
जोधपुर	3.41	2.61	3.19	3.62

पर्यटन पर उप-समूह की सिफारिशों के महत्वपूर्ण प्रभाव में जयपुर से उदयपुर, जोधपुर और बीकानेर तक एयर कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए पीपीपी (PPP) मोड पर समझौता-ज्ञापन (MOU) पर हस्ताक्षर करना शामिल है। संचालन में उड़ानों की संख्या पिछले साल की संख्या 38 से बढ़कर 56 हो गई है।

विषय विशेषज्ञों के साथ लगातार परामर्श और राजस्थान के यात्रा-व्यवसाय के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ यहाँ यह उल्लेखनीय है कि, इन सभी प्रयासों और नवोन्मेषों को सीएमएसी (CMAC) सदस्यों की सलाह से तैयार किया गया है । सभी प्रमुख पहल और नीतिगत निर्णयों को हितधारकों से परामर्श लेने के बाद लिया जाता है ताकि इन निर्णयों को सहभागितापूर्ण और समावेशी बनाया जा सके । पर्यटन क्षेत्र में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए, राज्य सरकार ने वर्ष 2015 में नई पर्यटन इकाई नीति शुरू की है। निवेशकों को उनकी परियोजनाओं के लिए अपेक्षित अनुमोदनों को प्राप्त करने में सहायता करने के लिए राजस्थान रिसर्जेंट 2015 के दौरान, 221 एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए, जिनमें कुल निवेश 10,442 करोड़ शामिल है तथा जिसमें अनुमानित रूप से 40,905 व्यक्तियों के लिए रोजगार सृजन हुआ। इन एमओयू के कार्यान्वयन का विभिन्न स्तरों पर सख्ती से पालन किया जा रहा है ताकि उन्हें परिचालन पर्यटन इकाइयों में परिवर्तित किया जा सके। यात्रा-व्यापार विभाग के साथ विचार-विमर्श के परिणामस्वरूप विभिन्न निवेशक अनुकूल पहल हुई हैं। राज्य सरकार ने जून 2016 में, विरासत संपत्तियों के प्रमाण पत्र देने और राज्य में विरासत होटल संचालित करने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। इस योजना के अंतर्गत रूपांतरण शुल्क और बार (Bar) लाइसेंस शुल्क से संबंधी कुछ लाभ उपलब्ध कराए हैं। अब तक, लगभग 23 ऐसे प्रमाणपत्र जारी किए गए हैं।

राज्य में फिल्म शूटिंग को प्रोत्साहन देने के लिए, 'फिल्म शूटिंग विनियम' को जून 2016 में आवेदन शुल्क और सभी प्रकार की सुरक्षा जमाओं में छूट देकर, संशोधित किया गया है। फिल्म शूटिंग अनुमतियां अब एक समयबद्ध तरीके से जारी की जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप राजस्थान में अधिक संख्या में फिल्में बनाई जा रही हैं। संशोधन के बाद से, 25 से अधिक फिल्म शूटिंग अनुमतियां विभाग द्वारा जारी की गई हैं। राजस्थान में मनाए जाने वाले मेले और उत्सव अपनी सांस्कृतिक विरासत के जीवंत प्रतीक हैं, जो राजस्थान में बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। विभाग द्वारा आयोजित मौजूदा मेलों और उत्सवों को तर्कसंगत बनाया गया है और अब पर्यटकों के लिए मूल्य संवर्धन द्वारा इन उत्सवों में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है । राजस्थान का स्थापना दिवस वर्ष 2017 में पूरे राज्य में मनाया गया । वृहत स्तर पर यह दिवस जयपुर में चार दिवसीय 'राजस्थान महोत्सव' (27-30 मार्च 2017) के भव्य समापन समारोह के दौरान भूटान की राजमाता महामहिम आसी दोरजी वांगमो वांगचुक तथा राजस्थान की मुख्यमंत्री की उपस्थिति में विधानसभा में एक शानदार लेजर शो प्रदर्शन द्वारा मनाया गया ।

एक अभिनव उपाय के रूप में, एक अलग राजस्व मॉडल के साथ निजी कंपनियों के लिए सार्वजनिक-निजी साझेदारी मोड पर कुछ उत्सवों को पांच साल तक आउटसोर्स किया गया । झील महोत्सव उदयपुर, विश्व संगीत समारोह

उदयपुर, फोटो महोत्सव जयपुर, भक्ति उत्सव पुष्कर जैसे नए त्यौहार और अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए शुरू किए गए । अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान योजना के तहत, विदेशों में 'भारतीय मिशन' के सौजन्य से राजस्थान पर्यटन ने ब्राजील (अप्रैल 2017) और रूस (मई 2017) में राजस्थान पर्यटन को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों का आयोजन किया । जिसमें राज्य के सांस्कृतिक मंडल ने लोककथाओं और कारीगरों ने राजस्थान के हस्तशिल्प को प्रदर्शित किया। एक भारत-फ्रांसीसी आयोजन , बोन्जोर इंडिया (Bonjour India) , नवंबर, 2018 में आमेर शहर में प्रस्तावित है ।

पर्यटन क्षेत्र में अवसंरचना विकास कार्यों के लिए, 70.66 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान, वर्ष 2017-18 की राज्य योजना के तहत किया गया है । प्रसाद (PRASAD) योजना के तहत पुष्कर-अजमेर विकास परियोजना और स्वदेश दर्शन (SWADESH DARSHAN) योजना के अंतर्गत सांभर परियोजना, कृष्णा सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट, विरासत सर्किट नामक पांच परियोजनाओं को 389.34 करोड़ . लागत की मंजूरी पर्यटन मंत्रालय से मिल गई है । बाराँ में फूड क्राफ्ट इंस्टीट्यूट की स्थापना और झालावाड़, सवाई-माधोपुर और धोलपुर में होटल प्रबंधन संस्थानों के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा अनुमोदन किया गया है। आमेर किला, हवा महल, जंतर मंतर और अल्बर्ट हॉल में मुफ्त वाई-फाई सेवाएँ शुरू की गई हैं। रात के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 10 बजे तक आमेर किला, विद्याधर गार्डन और अल्बर्ट हॉल खोल दिया गया है । राज्य के 18 संग्रहालयों में नवीनीकरण का काम पूरे जोरों पर है। रवींद्र मंच और जवाहर कला केंद्र, सांस्कृतिक शाम/कार्यक्रमों के लिए अब अपने नए अवतार में उपलब्ध हैं।

नागरिक प्रबंधन, पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र में नीति निर्देशक और विशेष के प्रबंधकीय कौशल विकास के लिए, 6 अक्टूबर 2016 को राजस्थान पर्यटन और सिंगापुर निगम इंटरप्राइज के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए । इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दो दौर पहले ही हो चुके हैं और तीसरा दौर सितंबर 2017 में निर्धारित किया गया है । राज्य पर्यटन विभाग एक नई पर्यटन नीति पर भी काम कर रहा है जिसका उद्देश्य, सक्रिय विपणन रणनीति, कौशल विकास और हितधारकों की सुविधा के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण रखने का है।

पर्यटन संर्वधन में कला की भूमिका
(ओरछा के विशेष संदर्भ में)

दिलीप कुमार

बुंदेलखंड उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के कुछ जनपदों को मिलाकर माना गया एक राज्य है, इसमें सतना, पन्ना, झाँसी, दतिया, जालौन, हमीरपुर, बाँदा, चित्रकूट, महोबा, टीकमगढ़, ललितपुर, सागर, दमोह शामिल हैं। बुंदेलखंड हर काल में प्रासंगिक रहा है तथा इसकी विशेषताओं का गुणगान किया गया है।

विंध्य घाटियन चारों बेतवा, धसान वौं
चंबल औ कयान वारौं नाम हैं बुंदेलखंड ।
कालिंजर, सोनागिर, ओरछा, उन्नाव तीर्थ
राम रमै चित्रकूट, धान है बुंदेलखंड ।
साकौ है चंदेलन को, सूरमां बुंदेलन कौ
कला खजुराहो की ललाम है बुंदेलखंड।
देवभूमि, दुर्गभूमि, रण की वरण भूमि
'इंद्र' कवि भूमि अभिराम हैं बुंदेलखंड।।

बुंदेलखंड को ईसा से 400 वर्ष पूर्व 'वत्सा' कहा जाता था तथा मध्य युग में इसे 'जैजाकभुक्ति' या 'जैजाभुक्ति' के नाम से संबोधित करते थे। इसके बाद इसे बुंदेलखंड के नाम से पुकारा जाने लगा। यह माना जाता है कि बुंदेलखंड शब्द ईस्वी सन् 1335-1340 के बीच उस समय अस्तित्व में आया जब चंदेल के पराभवों के बाद बुंदेला सरदार इस क्षेत्र में आए। बुंदेलखंड अत्यंत प्राचीन क्षेत्र है तथा इसके संबंध में पुराने ग्रंथों में विशद उल्लेख हैं। रामायण काल में चित्रकूट की प्रसिद्धि शिखर पर थी। इसे चित्रकूट देश कहा जाता था तथा भविष्यपुराण में इसे पद्मावती कहा गया है। इस क्षेत्र के आरंभिक इतिहास पर यदि दृष्टिपात किया जाए तो यह सरस्वती नदी के किनारे शासन करने वाले कोशल शासकों के समय से ज्ञात होता है। उनका समय बुद्ध से पूर्व का समय है।

बुंदेलखंड में वन्य संस्कृति से समन्वित एक परिष्कृत लोक संस्कृति के दर्शन होते हैं जिसके उदाहरण भरहुत की कला में देखे जा सकते हैं। लगभग 600 वर्षों के नागों तथा वाकाटकों के काल में बुंदेली लोक संस्कृति ने नया परिष्कार पाया। वाकाटक काल में समुद्रगुप्त ने ऐरण और उसके आसपास के भू-भाग पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार गुप्तवंश का प्रभाव भी इस क्षेत्र पर रहा है। गुप्त वंश के बाद राजा हर्षवर्धन ने (ईस्वी सन् 606-47) यहाँ शासन किया। उसी के काल में प्रसिद्ध चीनी यात्री व्हेनसांग ने बुंदेलखंड की यात्रा की। हर्ष की मृत्यु के बाद कन्नौज के प्रतिहारों, त्रिपुरी के कल्चुरियों, मालवा के परमारों तथा मान्य के राष्ट्रकूटों ने यहाँ शासन किया। इनके बाद का काल चंदेलों का काल है जिनके विश्वप्रसिद्ध शिल्पांकन के उदाहरण खजुराहो के मंदिर हैं।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि प्रतिहार, विष्णु, शिव, आदित्य और देवी के भक्त थे जबकि परमार, कलचरी और राष्ट्रकूट शिव के उपासक थे। इसलिए धार्मिक दृष्टि से इन सभी देवी-देवताओं के पूजे जाने की परंपरा बुंदेलखंड में विद्यमान रही। चंदेलों के बाद आए बुंदेलों के संबंध में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्णतः सिद्ध नहीं है लेकिन 16वीं सदी से इस क्षेत्र का क्रमबद्ध इतिहास मिलता है। इसके अनुसार गढ़कुंढार के शासक मलखानसिंह के पुत्र रुद्रप्रताप (ईस्वी सन् 1501-1531) ने गढ़कुंढार से लगभग 50 कि.मी. आगे बढ़कर ओरछा राज्य की स्थापना की थी।

शोधार्थी, राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर मध्य प्रदेश

ISSN 2321-0443

स्थापत्य कला

शीश महल (काँच की हवेली)

शीश महल, ओरछा नगर का सबसे सुंदर व आकर्षक महल है। शीश महल यानी जो शीशों से जुड़ा हो| जहाँगीर महल की बायीं ओर सटी हुई यह इमारत देखने से ही पता चलता है कि यही शीश महल है। यह इमारत देखने में दुर्गनुमा हवेली लगती है। कभी-कभी तो इस महल को ही पर्यटक किला समझ लेते हैं। शीश महल में बड़े-बड़े कांच लगे हैं। इस भव्य इमारत का निर्माण बुंदेला राजा उद्दैत सिंह के शासनकाल विक्रम संवत 1690 के लगभग माना जाता है। इसमें टीकमगढ़ से जब महाराज ओरछा आया करते थे तो इसमें दरबार लगाते थे| इसके भीतर एक बहुत बड़ा हॉल है इसे दरबार हॉल कहते हैं। केवल आठ खंभों पर आधारित यह हॉल अठखंभा के नाम से जाना जाता है। अब यह संपूर्ण भवन मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग के अधीन है। इसके ऊपरी हिस्से से देखें तो झाँसी का दृश्य दिखता है। इसके बाएँ किनारों में एक प्रकाश स्तंभ था जो प्रकाशित होने पर झाँसी के किले से स्पष्ट दिखाई देता था। इस महल के ऊपर खड़े होकर संपूर्ण ओरछा का दर्शन किया जा सकता है। वर्तमान में इस महल ने एक शानदार होटल का स्वरूप ले लिया है। आजकल यहाँ देशी व विदेशी पर्यटकों का मेला लगा रहता है। कुछ अन्य इतिहासकार इस महल का जनक महाराजा उद्दैत सिंह के पुत्र कुँवर अमर सिंह जू बुंदेला को मानते हैं। यहाँ से ओरछा राजवंश के बुंदेला राजमहल की तरफ चलें तो शीश महल के ठीक सामने विशाल इमारत दिखाई देती है, जोकि बुंदेला राजमहल है।

बुंदेला राजमहल

इतिहासकार बताते हैं कि बुंदेला राज महल के निर्माण की नींव बुंदेला राज शासक महाराजा रूद्रप्रताप जी के द्वारा सन् 1531 में रखी गई थी लेकिन इनकी असामयिक मृत्यु के पश्चात् इस महल का निर्माण कार्य इनके ज्येष्ठ पुत्र कुँवर भारतीचंद्र ने अथक परिश्रम के बाद नौ वर्षों में पूर्ण करवाया। इस महल की संपूर्ण रचना 1539 में पूर्ण कर, इस महल के कुछ अपूर्ण भाग जैसे- दीवानेआम, दीवानेखास तथा चित्रकारी उसे महाराज मधुकरशाह ने (1541 से 1592) पूर्ण करवाया। चौकोर बना हुआ यह संपूर्ण महल बेतवा नदी की दो धाराओं के बीच नदी के बीच टापू पर बना हुआ है। चारों ओर खिड़कियाँ और छतरी इसकी शोभा को आज भी बढ़ा रहे हैं| द्वार से प्रवेश करते ही यहाँ दरबार हॉल है। ये विशाल आँगन बहुत खूबसूरत हैं। इसके ऊपर का खंड रानियों का निवास स्थान था। इस महल से बाहर की ओर एक खिड़की खुलती है, जिससे चतुर्भुज मंदिर के राधाकृष्ण भगवान के स्पष्ट दर्शन होते हैं। कहते हैं रानियाँ इसी खिड़की से भगवान के स्पष्ट दर्शन किया करती थीं| भीतर जो तहखाना-सा लगता है, इसके चित्रों की ओर देखें तो अभिसारिकाओं के चित्र दिखेंगे | अभिसारिका नायिकाओं के हाथ से बने चित्र और कहीं नहीं दिखाई देते हैं | यहाँ महाराज और रानी का शयनागार था। चित्रों की सूक्ष्मता पर ध्यान दें तो बहुत ही बारीकी के साथ एक-एक भाव को उभारा गया है। इसमें पौराणिक चित्र हैं। ये बुंदेली शैली के स्पष्ट प्रमाण हैं। अधिकांश चित्रों की विषय-वस्तु में रामायण पुराणों के आधार पर विष्णु भगवान के दस अवतारों को दर्शाया गया है। सभी चित्र प्राकृतिक रंगों से सजाए गए हैं। इन्हें देखकर लगता है कि इन चित्रों को अभी हाल ही में किसी अच्छे चित्रकार ने बनाया है। वैसे तो पुराणों में विष्णु भगवान के चौबीस अवतार माने जाते हैं परंतु यहाँ पर विष्णु भगवान के दशावतारों का प्रमुख रूप से चित्रांकन किया गया है|

पहले समय में आज से करीब पचास वर्ष पूर्व यह महल वीरान सा लगता था। इस महल की देखभाल करने वाला यहाँ कोई नहीं था। राज्य सरकार ने इसे शिक्षा विभाग के सुपुर्द कर दिया था, जिसमें बेसिक प्रशिक्षण स्कूल खुला था। इसी भवन में सन् 1959 से लेकर 1967 तक अध्यापकगण बैठकर शिक्षा के गुण सीखा करते थे। कुछ समय बाद यह महल पुरातत्व विभाग को दे दिया गया। वर्तमान में इस महल को देखने के लिए देशी और विदेशी पर्यटकों का मेला लगा रहता है।

जहाँगीर महल

ओरछा नगर के आलीशान भवनों में जहाँगीर महल का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है । इस महल का निर्माण, महाराजा मधुकरशाह के तृतीय पुत्र वीरसिंह देव (जिन्हें वीरसिंह देव प्रथम भी कहा जाता है) के शासनकाल (1605 से 1627) में हुआ था । बुंदेली शिल्पकला से युक्त इस महल को महाराजा वीरसिंह ने अपने खास मित्र सम्राट जहाँगीर बादशाह के सम्मान में बनवाया था । शिल्पकला से युक्त इस महल में कुल 236 कमरे हैं । यह दो मंजिला इमारत है । करीब सौ कमरे तल घर में हैं तथा 136 कमरे ऊपर के हिस्से में हैं । यह संपूर्ण महल वर्गाकार विन्यास में है । इस महल के प्रवेश द्वार, पश्चिम मुखी तथा निकास द्वार पूर्व मुखी हैं । सच यह है कि इस महल के प्रवेश द्वार के दोनों तरफ एक-एक विशाल हाथी (फूलमाला एवं घंटा लिए हुए) दिखाया गया है । जहाँगीर महल के कुछ कक्षों में सुंदर चित्र बनाए गए हैं, जिसमें कृष्ण और गोपियों की लीला में महाराज को बांसुरी बजाते हुए दिखाया गया है तथा अन्य कमरों में महाराजा वीरसिंह देव के चित्रों को भी लगाया गया है ।

यह संपूर्ण भवन जालीदार खिड़कियों एवं कलशों से मंडित है । इस महल का आँगन काफी बड़ा है जिसमें बुंदेली शिल्पकला की कुछ हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी मौजूद हैं । इस महल के प्रवेश द्वार के ललाट बिंब पर गणेश जी की लघु प्रतिमा ऋद्धि और सिद्धि पूजक देवियों के साथ-साथ विद्या की देवी सरस्वती जी को भी दर्शाया गया है । जहाँगीर महल की छत के ऊपर खड़े होकर ओरछा नगरी की पूज्य सलिला माँ वेशवंती गंगा के विहंगम दृश्य को देखकर प्रकृति की सुंदरता का पूरा-पूरा आनंद उठाया जा सकता है तथा इस महल के समीप बनी हुई राजा-महाराजाओं की छोटी-छोटी हवेलियों और गढ़ियों का भी दर्शन किया जा सकता है। इसी महल से खड़े होकर ओरछा नगर के महशूर महल राय प्रवीण महल का भी दर्शन किया जा सकता है ।

राय प्रवीण महल

शीश महल के पीछे तथा जहाँगीर महल की उत्तर दिशा में स्थित राय प्रवीण महल इमारत का निर्माण महाराजा मधुकर शाह के पुत्र कुँवर इंद्रजीत सिंह देव ने अपनी प्रियतमा अपूर्व सुंदरी राय प्रवीण के लिए करवाया था । इस महल को देखकर किसी शायर ने कहा था । यह अनमोल महल वक्त के गाल पर लुढ़ता एक अनमोल आँसू है जो अपनी प्रेम कहानी को स्वयं बयाँ कर रहा है । राय प्रवीण को एक कुशल नर्तकी के साथ-साथ कवयित्री,संगीतकार,कुशल घुड़सवार तथा वीणा वादिका भी माना जाता है । राय प्रवीण का सौंदर्य अपूर्व था, जिसे देखकर चाँद भी शरमा जाए ।

अन्य इतिहासकारों ने राय प्रवीण की तुलना रानी रूपमति एवं मृगनयनी से की है । इसके सौंदर्य,रूप और गुणों की चर्चा ओरछा नगर से निकलकर आगरा के सम्राट अकबर तक जा पहुँची| उसकी प्रशंसा सुनकर अकबर ने उसे जबरदस्ती आगरा दरबार में बुला लिया था परंतु राय प्रवीण एक विदुषी नारी थी । उसने अपने वाक् चातुर्य का परिचय जब अकबर के दरबार में दिया तो अकबर भी उसकी कविता सुनकर दंग रह गया था । उसने अकबर से प्रार्थना की तथा पूछा कि हुजूरे आलम मुझे ओरछा से जबरदस्ती क्यों बुलाया गया है ।

वह बादशाह अकबर से अपनी कविता के माध्यम से पूछ रही थी कि आपने मुझे जबरदस्ती बुलवा तो लिया है लेकिन आप पहले यह तो बताइए कि जूठी पत्तल चाटने वाले तो भिखारी,कौआ और कुत्ते होते हैं । आप इनमें से कौन है, जो मुझे इस तरह बुलाया गया है । अकबर उसकी तर्कपूर्ण बात सुनकर दंग रह गया और उसने राय प्रवीण को उपहार देकर सम्मान सहित आगरा से ओरछा वापिस भेज दिया था । उसके आगमन की खुशी में महाराजा इंद्रजीत ने इस महल का निर्माण 1608 के लगभग करवाकर राय प्रवीण को भेँ टकिया था । इस महल की ऊपरी मंजिल में राय प्रवीण के कुछ भित्ती चित्र अंकित हैं, जिसमें उसे कहीं घुड़सवारी करते तो कहीं नृत्य करते हुए दर्शाया गया है ।

इस महल के सामने एक सुंदर बगीचा भी लगाया गया था । कहते हैं कि यहीं पर बैठकर महाराजा इंद्रजीत को प्रसन्न करने के लिए राय प्रवीण वीणा बजाकर गायन करती थी । उसकी सुंदर आवाज से संपूर्ण महल में सन्नाटा छा जाता था। यह महल आज भी राय प्रवीण एवं उसकी प्रेम कहानी की याद दिलाता है ।

तीन दासी महल

किला परिसर के अंदर ओरछा राज्य में महलनुमा कोठी बेतवा नदी के तट पर स्थित है। ओरछा इतिहास में बुंदेला राजवंश के संपूर्ण राजाओं के पास अनेक दास-दासियों, बुद्धिमानों का जमघट-सा लगा रहता था। ये सब राज सिंहासन के महत्वपूर्ण अंग माने जाते थे। राजा, महाराजा, रानियाँ अपने महत्वपूर्ण कार्यों का संपादन इन्हीं की देखरेख में पूर्ण करवाती थीं। ओरछा नरेश महाराज मधुकरशाह की प्रिय रानी कुँवर गनेशी की कुछ खास सेविकाएँ थी जो राजमहल की इन आलीशान कोठियों में राजसी वैभव का जीवन व्यतीत कर रही थीं। ये तीन प्रमुख दासियाँ इसी कोठीनुमा महल में रहती थीं। इसी वजह से ओरछा नगर के लोग इसे तीन दासी महल के नाम से पुकारते हैं। ये खंडहर हो रहे महल आज भी ऐश्वर्य तथा राजसी वैभव की कहानी बयां कर रहे हैं।

सुंदर महल

लक्ष्मी मंदिर के बायीं ओर स्थित भवन का नाम सुंदर महल है। इसे देखकर प्रश्न उठता है कि क्या ओरछा का यह सबसे सुंदर महल है। इस महल का निर्माण महाराज वीर सिंह महाराज ने विक्रम सम्वत् 1665 में करवाया था। जैसा इसका नाम सुंदर महल है, अतीत काल में यह इमारत बहुत सुंदर रही होगी, तभी इसका नाम सुंदर महल पड़ा होगा। इस दो मंजिला इमारत के बारे में हमारे पूर्वज बताया करते हैं कि महाराज वीर सिंह देव मुगलों के भय के कारण अज्ञात वास काट रहे थे तभी उन्होंने इस महल को पहाड़ी के ऊपर सुरक्षा चौकी की दृष्टि से बनवाया था ताकि इस महल में रहकर शत्रु से सुरक्षा की जा सके। इस महल के ऊपर खड़े होकर उत्तर पूर्व और दक्षिण दिशा की शत्रुओं की गुप्त गतिविधियों पर नजर रखी जा सके। शायद यही इस भवन के निर्माण का मकसद था| कुछ अन्य इतिहासकारों का मानना है कि महाराजा वीरसिंह देव यहाँ पर एक सुंदर दुर्ग बनवाना चाहते थे उसका शिलान्यास भी कर दिया था, बाद में उसको अधूरा छोड़ दिया गया। एकांत में होने के कारण अक्सर इस महल को राजा-महाराजाओं के यहाँ आने वाली सुंदरियों के लिए खोल दिया जाता था, क्योंकि राजा-महाराजा नाचने गाने वाली सुंदरियों के बड़े शौकीन हुआ करते थे। बाहर से आने वाली सुंदरियों को यहीं पर ठहराया जाता था। इसीलिए यहाँ के लोग इसे सुंदर महल कहते हैं। कुछ पूर्व इतिहासकारों का मानना है कि सुंदर महल का नामकरण आगरा सम्राट जहाँगीर ने किया था, जब महाराज वीर सिंह के आमंत्रण को पाकर जहाँगीर अपने कुछ खास सिपहसालारों के साथ ओरछा आया तथा बहुत समय तक जहाँगीर महल में रुका रहा था।

एक दिन उसने महाराज वीर सिंह से कहा कि महाराज बुंदेला मुझे खुदा की इबादत करने के लिए कोई एकांत में अच्छी-सी जगह बताइए, जहाँ मैं बैठकर खुदा को याद कर सकूँ।

महाराज वृष सिंह देव ने यहीं पर एक महल बनवाकर जहाँगीर को दिखाया| जहाँगीर बादशाह बोला, वाह बुंदेल आपका यह महल तो वास्तविक रूप से बहुत सुंदर है। बस इसी वजह से बुंदेला राजवंश के लोग इसे सुंदर महल कहकर पुकारने लगे। कालांतर में यह टूटकर बिखर रहा है | देखने में यह सुंदर कम फूटा महल ज्यादा लगता है। वर्तमान में मुस्लिम धर्म के अनुयायी यहाँ आकर अक्सर फूलों को चढ़ाकर फातिया पढ़ते हैं। यह स्थान सचमुच सुंदर है| खंडहर बता रहे हैं कि कभी इमारत बुलंद थी। यहाँ से पीछे की तरफ पैदल चलने पर एक पक्का रोड़ काफी दूर तक गया है। दरवाजे को सैयर दरवाजा कहते हैं। इसके मुख्य दरवाजे से छारद्वारी हनुमान मंदिर की तरफ मार्ग जाता है। सामने की तरफ ही ऊँची-ऊँची लाल पताका वाला मंदिर है| इसी को छारद्वारी हनुमान मंदिर कहते हैं।

ओरछा के मंदिर

ओरछा धीश रामराजा सरकार का "रामराजा मंदिर" :

ओरछा राम नगरी में पधारे सभी श्रद्धालु भक्तजनों की आस्था का केंद्र मुख्य रूप से राम मंदिर को ही माना जाता है। यह मंदिर ओरछा नगरी के मध्य में तथा मुख्य बाजार के पास स्थित है। इस मंदिर के सामने ऊँचे शिखर वाला चतुर्भुज मंदिर एवं मंदिर के बगल में सावन भादों के ऊँचे-ऊँचे दो खंभे हैं। चौक बाजार के सामने ही मुख्य स्वागत द्वार के रूप में मछली भवन का दरवाजा है। मछली भवन को ही ओरछा का स्वागत द्वार माना जाता है। इस द्वार के बाड़े में एक कथा प्रचलित है कि बेतवा नदी की मछलियाँ इस दरवाजे के समीप आ जाती थीं इसलिए इस मुख्य भवन को मछली दरवाजा

कहा जाता है। इस दरवाजे पर दो सुंदर मछलियों का चित्रांकन भी था। जो शायद शुभ्रता की प्रतीक थीं। इस मंदिर के आगे सामने एक विशाल प्रांगण है। सामने ही सुंदर बावड़ी है जो अत्यंत प्राचीन है। इस पर एक सुंदर फव्वारा लगा है जो कभी-कभी ही चलता है| आगे मुख्य भवन है| यही रामराजा सरकार का निज निवास है। पूर्व समय में यह महल ओरछा की महारानी कुंवर गनेशी जी का निज निवास था। इस मंदिर के अंदर राजवंश का परिवार निवास करता था। इस मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार राजसी परंपरा के अनुसार बनाया गया है। प्रवेश द्वार के सामने मंगलमूर्ति गणेश भगवान का श्री विग्रह मौजूद है। यह विशाल भवन तीन मंजिला इमारत है। नीचे के संपूर्ण तल में अनेकानेक मंदिर हैं। ऊपरी मंजिल पर दोनों तरफ सीढ़ियों से जाया जा सकता है। ऊपरी तल में बड़े-बड़े बरामदे तथा आंगन चारों तरफ मौजूद हैं। ऊपर के कमरों को गुंबदनुमा बनाया गया है। इसी वजह से यह दूर से ही मंदिर की तरह दिखाई देता है। पहले समय में राज परिवार ऊपरी मंजिल पर ही निवास करता था। नीचे के आँगन में समय-समय पर रामलीला तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन होता है तथा यात्रीगण इस आँगन में ठहरकर भोजन प्रसाद बनाया करते थे किंतु वर्तमान में मंदिर की सुरक्षा की वजह से अब यात्रीगण इस मंदिर में नहीं रुक सकते| इस मंदिर के बंद होने एवं खुलने का समय निश्चित है। इस मंदिर की जगमगाहट आकर्षक एवं भव्यपूर्ण है। रामराजा सरकार का दरबार जिस गर्भगृह में स्थित है, वह पूर्व में रसोई घर में है जहाँ महाराज मधुकर शाह व रानी जी ने कनक सिंहासन काशी नगरी से मंगवाकर रामराजा जी को विराजमान कराया। यह सिंहासन पूर्णतया सोने एवं चांदी से निर्मित है। इस सिंहासन पर ही पहली सबसे ऊँची सीढ़ी पर रामराजा सरकार पदमासन मुद्रा में विराजमान हैं। शेष सभी देवता प्रभु की सेवा में खड़े है ।यानी दक्षिण में छोटे सरकार लखन लाल जी तथा बायीं ओर किशोरी जी, यानी सीता जी विराजित हैं। लक्ष्मण जी के बगल में वानरराज सुग्रीव तथा सामने भगवान राम जी की चरण पादुका रखी है, तीसरी सीढ़ी पर राम भक्त हनुमान जी विराजमान हैं तथा नीचे की सीढ़ी पर परमभक्त भालुराज जामवंत जी विराजमान है। चौथी सीढ़ी पर भगवान राम, कृष्ण, सीता, राधा के छोटे-छोटे विग्रह तथा शालिगराम जी के छोटे-छोटे विग्रह मौजूद हैं। इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि साक्षात् विराजमान श्री 1008 रामराजा सरकार का श्री विग्रह पूर्णतया चौकी पर विराजमान है। भगवान श्री रामराजा सरकार का संपूर्ण दर्शन करने पर प्रभु के दाहिने चरण का स्पष्ट दर्शन सभी भक्तगणों को प्राप्त होता है। इस मंदिर की शायद यही सबसे प्रमुख विशेषता है।

भारत भूमि के अधिकांश मंदिरों की मूर्ति प्रायः खड़ी अवस्था में पाई जाती हैं। इसका शास्त्रों में यह कारण बताया जाता है कि अगर भगवान का कोई भक्त प्रभु को संकट पड़ने पर बुलाए या पुकारे तो प्रभु को उठने में कहीं विलंब न हो जाए। इसी वजह से प्रभु सदा शंख, चक्र, गदा, पदम, हाथों में लिए खड़े रहते हैं। पर यहाँ इस मंदिर में पूर्णतया बैठे हुए हैं।

लक्ष्मी नारायण मंदिर

ओरछा रियासत का यह मंदिर केशव भवन से 100 गज की दूरी पर पहाड़ी के ऊपर पश्चिम दिशा में बना है। धन की देवी लक्ष्मी का यह मंदिर दूर से ही दिखाई देता है। सनातन धर्म में लक्ष्मी देवी को सुख समृद्धि एवं प्रसन्नता का प्रतीक माना जाता है। इस मंदिर के निर्माण के पीछे भी एक कहानी छुपी हुई है। इस भव्य मंदिर का निर्माण, महाराजा वीर सिंह जी बुंदेला ने विक्रम सम्वत 1661 से 1684 तक में था। पहाड़ी के ऊपर बना यह मंदिर लगता है। त्रिभुज के शीर्ष कोण पर आकर स्थित हो गया है। मंदिर के चारों ओर बरामदे अति गौरवमय हैं। ये महाभारत के युद्ध के दृश्यों से युक्त हैं और रामायण की कथा से चित्र उद्धृत हैं। कृष्ण भगवान की लीलाएँ भी चित्रित हैं। इतिहासकार कहते हैं कि यह चित्रकारी राजा बुंदेला पृथ्वीराज सिंह ने सन् 1793 में करवाई थी। मंदिर का स्थापत्य पारंपरिक हिंदू मंदिरों से पूर्णतया भिन्न है। इस मंदिर का प्रवेश द्वार पूर्वाभिमुखी है। यह दो मंजिला है तथा इसका शिखर तीन मंजिला है। इसकी छत बुंदेली शैली में पालकीनुमा है। इस मंदिर में राम जन्म से लेकर रावण युद्ध का चित्रांकन किसी चित्रकार द्वारा किया गया है।

हरदौल समाधि स्थल

ओरछा नगर के पास लक्ष्मी मंदिर के समीप आपको बड़े-बड़े लाल झंडों से युक्त एक छोटा-सा स्थान दिखाई देता है। यही कुँवर हरदौल जी की समाधि स्थल का मंदिर है जो बुंदेला चंपतराव ने कुँवर हरदौल के महाप्रयाण के बाद बनवाया था। वर्तमान समय में इस पवित्र चबूतरे पर कुँवर लाला बुंदेला जी की एक छोटी-सी प्रतिमा स्थापित कर दी गई है तथा कुँवर

हरदौल की ढाल, तलवार और खड़ाऊँ भी रखी गई है। पास में एक सुंदर पलंग मौजूद है। पलंग के पास सुंदर फूलों की सेज सदा बिछी रहती है। पास में ही कुँवर हरदौल के प्यारे 901 बुंदेला साथियों की समाधि भी बनी हुई है।

यहाँ और भी कई रमणीय स्थल जैसे- पाताली हनुमान मंदिर, राधिका रमण मंदिर, पंचमुखी महादेव मंदिर, चंदन कटोरा, ऊँट घर, हाथी घर, बारूद खाना, हमाम खाना, प्राचीन गौशाला, दाऊजी की कोठी, दरोगी की कोठी, श्यामदौला की कोठी इत्यादि स्थल हैं।

ओरछा के संरक्षण के उपाय

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग पुरातात्विक धरोहरों की सुरक्षा एवं उनके संरक्षण हेतु व्यापक स्तर पर कार्य कर रहा है, किंतु देश की पुरातत्व विषयक सर्वोच्च संस्था का भी मानना है कि भारत की अधिकांश पुरातात्विक धरोहरों की उपेक्षा हो रही है और संरक्षित नहीं है। वस्तुतः इस संस्था का उत्तरदायित्व केवल उन्हीं इमारतों तक सीमित है जो उनके मापदंडों को पूरा करती हैं। उनके द्वारा जारी मार्गदर्शी तथा नियमों में केवल उन्हीं इमारतों को पुरातात्विक धरोहर के रूप में मान्यता प्रदान की जा सकती है, जो सौ से अधिक वर्ष पुरानी हैं किंतु उनके रख-रखाव के लिए कोई भी प्रभावी अभिकरण उपलब्ध नहीं है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इन सह-संबंधों का दायरा इंजीनियरिंग, वास्तुकला, पुरातत्व विज्ञान, पर्यटन प्रबंधन, भौतिक रसायन के साथ बढ़ाया जाना चाहिए, जिससे ये परस्पर संवाद कायम कर पुरातत्व संरक्षण में सहायक सिद्ध हों।

पूर्वोत्तर पर्यटन : अतुल्य भारत का अनन्वेषित स्वर्ग

डॉ. शरद कुमार कुलश्रेष्ठ

पूर्वोत्तर भारत को हम सात बहिनें एवं एक भाई कहते हैं, जिसमें सात राज्य असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, त्रिपुरा, नागालैंड, मिजोरम एवं सिक्किम शामिल हैं । पूर्वोत्तर भारत विभिन्न जैव विविधता एवं सांस्कृतिक विविधता का केंद्र है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र भारतीय महाद्वीप का बहुत महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ के वर्षा वन जो वर्ष भर हरे एवं सदाबहार रहते हैं, वनस्पति, वन्य जीव - जंतु, विभिन्न कृषि फसलें एवं प्राकृतिक संसाधन इत्यादि से युक्त हैं । ब्रह्मपुत्र नद, वराल नदी एवं इनकी सहायक नदियाँ इस क्षेत्र की जीवनदायिनी हैं। सामरिक दृष्टि से पूर्वोत्तर की सीमाएँ कई अंतरराष्ट्रीय सीमाओं से मिलती हैं । 'चिकिन नेक' से प्रख्यात सिलीगुड़ी कोरिडोर 21 से 40 किलोमीटर चौड़ा है । वहाँ समस्त भारत को, पूर्वोत्तर जोड़ता है । इस प्रकार यह क्षेत्र 4500 किलोमीटर की अंतरराष्ट्रीय सीमा से लगा हुआ है । भारत के कुल क्षेत्रफल का यह लगभग 7.8 प्रतिशत है । यह क्षेत्र 70 प्रतिशत पहाड़ी है । पर्यटन के लिहाज से यह पर्यटकों के लिए अतुल्य भारत का अनन्वेषित स्वर्ग है क्योंकि यहाँ की जलवायु वर्ष भर हरे - भरे वर्षा वन, मनोहारी दृश्य एवं विहंगम दृश्य, प्रकृति, झरने, मैदान, पहाड़ियाँ, गुफाएँ, जंगल, वन्य जीव – जंतु, अभ्यारण्य एवं राष्ट्रीय उद्यान जिसमें, काजीरंगा नेशनल पार्क, मानस नेशनल पार्क एवं कंचनजंगा नेशनल पार्क विश्व विरासत सूची में भी शामिल हैं । यहाँ की विभिन्न भाषाएँ, स्वादिष्ट भोजन, क्षेत्रीय वेशभूषा, नृत्य एवं संगीत इत्यादि पर्यटन का आकर्षण हैं।

पूर्वोत्तर भारत पर्यटन की दृष्टि से एक नया गंतव्य है। प्रत्येक राज्य की एक अनोखी छटा है जो अपने प्राकृतिक, सांस्कृतिक अवयवों से परिलक्षित होती है । पिछले कुछ दशकों से पर्यटकों का रुझान पूर्वोत्तर भ्रमण की तरफ बढ़ा है । यहाँ की लोक संस्कृति, पारंपरिक वेशभूषा, भाषा, लोक संगीत, पर्व, क्षेत्रीय पकवान, पर्यटकों को एक नई अनुभूति प्रदान करते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य , शांति, विहंगम दृश्य, स्वच्छता, हरियाली, लोगों के मुस्कराते चेहरे, पर्यटकों को आनंदित करते हैं । आज भागम - भाग की जिंदगी में प्रकृति से संबंध विच्छेद हो रहा है । शहरों का सीमेन्टीकरण होने से प्रकृति, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, फूल पत्तियों का लोप हो रहा है । मनुष्य एक व्यस्त मशीन की तरह अपने जीवन को सींच रहा है। इसका दुष्परिणाम मानसिक उन्माद, अशांति, क्षमता ह्रास, प्रदूषण, अस्वच्छता इत्यादि रूपों में देखा जा सकता है । पर्यटन के विकास में राज्यों की पर्यटन नीति का विशेष योगदान है । प्रत्येक राज्य का अपना एक केंद्र होता है जो पर्यटन के महत्व एवं प्राथमिकता को तय करता है। पूर्वोत्तर का पर्यटन प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक अवयवों का मिश्रण है । जो यहाँ पर वर्ष भर पर्यटन के आकर्षण को जीवंत रखता है

पूर्वोत्तर के राज्यों की पर्यटन झलक

पूर्वोत्तर के आठ राज्य असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैंड, त्रिपुरा एवं सिक्किम पर्यटन की दृष्टि से भारत का 'अनन्वेषित स्वर्ग' है । प्रत्येक राज्य का केंद्र अपने भौगोलिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक दृष्टिकोण से पर्यटन का आकर्षण बन गया है तथा विकास के कारण पर्यटन निरंतर बढ़ रहा है । सड़क एवं राजमार्ग के विकास के कारण पर्यटक कम समय में पूर्वोत्तर के दूरदराज क्षेत्रों में पहुँचने लगे हैं । बिजली, पानी, दूरसंचार, स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक कल्याण की योजनाओं प्राथमिक सुविधाओं आदि को लेकर वहाँ पुरजोर प्रयास किया जा रहा है । सड़क मार्ग के अलावा रेलमार्ग, जलमार्ग एवं वायुमार्ग की संभावनाओं को भी तलाश किया जा रहा है । पर्यटन, इन राज्यों की आर्थिक क्रांति के तौर

सह आचार्य, पर्यटन एवं होटल प्रबंधन विभाग, पूर्वोत्तर विश्वविद्यालय (नेहू), शिलाँग

पर देखा जा रहा है जो नए-नए रोजगार के अवसर पैदा कर रहा है। केंद्र व राज्य सरकारें मिलकर पर्यटन का विकास कर रही हैं।

असम

दिसपुर गुवाहाटी के पास स्थित है तथा इस राज्य की राजधानी है। असम उत्तर पूर्व का शक्तिगृह है। यहाँ प्रचुर मात्रा में समतल भूमि है जो कृषि के लिहाज से बहुत लाभकारी है। इस कारण यहाँ विविध प्रकार की कृषि पैदावार होती है जिसमें धान, चावल, चाय, सुपारी, विभिन्न प्रकार के फल एवं सब्जियाँ प्रमुख हैं। पर्यटन की दृष्टि से असम प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्यटन का केंद्र है। यहाँ के राष्ट्रीय उद्यान विश्व विरासत सूची में दर्ज हैं, जिसमें काजीरंगा नेशनल पार्क एवं मानस नेशनल पार्क हैं। इसके अलावा अन्य नामेरा नेशनल पार्क, राजीव गांधी ओरो नेशनल पार्क हैं। ब्रह्मपुत्र नद यहाँ की मुख्य नदी है।

यहाँ वर्ष भर आयोजित होने वाले त्योहारों में बिहू पर्व जो वर्ष में तीन बार विभिन्न फसलों के काटने पर मनाया जाता है। इनमें रोंगाली बिहू, जो मकर संक्रांति के दिन मनाया जाता है। जैसा कि रोंगाली शब्द से प्रतीत होता है। इसका अर्थ है रंगमंच या उल्लासित होना। इसे वोहाग बिहू के नाम से भी जाना जाता है।

दूसरा भोगला बिहू या माघ बिहू के नाम से विख्यात है जो पौष संक्रांति को मनाया जाता है। इसके अलावा अन्य पर्व जैसे- वैसागु बोडो जनजाति के नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। अंबुवासी मेला, धार्मिक दृष्टिकोण से लाखों तीर्थ यात्रियों को असम भ्रमण करने का मौका प्रदान करता है। यह नीलांचल पर्वत पर देवी कामाख्या शक्तिपीठ पर आयोजित किया जाता है जो हर वर्ष मध्य जून से होता है।

साहसिक पर्यटन के लिहाज से यहाँ रिवर राफ्टिंग, पर्वतारोहण, पैराग्लाइडिंग, पैरा सैलिंग, हैन्ड ग्लाइडिंग, गोल्फ, मोटर राइडिंग, मछली पकड़ना प्रमुख हैं। माजुली आयलैंड विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप है। यह जोरहाट जिले मे स्थित है। यहाँ (द्वीप) के प्राकृतिक मनोरम दृश्य यहाँ की जैव विविधता दर्शाते हैं। यहाँ दुर्लभ एवं प्रवासी पक्षियों का आवागमन वर्ष भर चलता रहता है।

अरुणाचल प्रदेश

इसे उगते सूरज के नाम से भी जाना जाता है। सूर्य की किरणें सबसे पहले इस राज्य को छूती हैं। अरुणाचल प्रदेश पूर्वोत्तर राज्य का सबसे बड़ा राज्य है जिसकी सीमाएँ म्यांमार, भूटान एवं चीन से मिलती हैं। यह लगभग 80 प्रतिशत सदाबहार हरित वनों से आच्छादित है। जनसंख्या घनत्व के लिहाज से 13 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. यहाँ की आबादी है। यहाँ 26 प्रमुख जनजातियाँ हैं जो अन्य वर्गों में विभाजित हैं। अरुणाचल प्रदेश में पर्यटन के लिहाज से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, वास्तुकला, धरोहर इत्यादि बहुत महत्वपूर्ण हैं। ईटानगर यहाँ की राजधानी है। जवाहरलाल नेहरू संग्रहालय, यहाँ की कला एवं संस्कृति को जीवंत करता है। निशी यहाँ की प्रमुख जनजाति है। यहाँ भ्रमण करने के लिए इनर लाइन परमिट की आवश्यकता होती है तथा बंगाल ईस्टर्न फ्रंटीयर विनियम के अंतर्गत जारी किया जाता है।

तवांग शहर समुद्र तल से 3500 मीटर या 10 हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यह जगह सुंदर पर्वतों, झीलों, जलप्रपातों एवं बौद्ध मठों से परिपूर्ण है। यह हिमालय के तराई क्षेत्र में स्थित है, जो प्राकृतिक रूप से बहुत मनोहारी क्षेत्र है। यहाँ एशिया का द्वितीय सबसे बड़ा बौद्ध मठ है जो यहाँ के 17 बौद्ध मंदिरों (मठों) को नियंत्रित करता है। सेला दर्रा (4114 मी.) दुनिया का द्वितीय यातायात गमन दर्रा है। यहाँ के प्रसिद्ध बौद्ध मंदिरों में (गोंपा) तक्सेंग गोंपा, अरर्जिलिंग गोंपा, रिग्यलिंग गोंपा, ग्यानगोंग एनी गोंपा, संगयूर ऐनी गोंपा है।

मेघालय

यह राज्य 'बादलों का घर' 'मेघों का निवास' के नाम से विश्व विख्यात है। कुछ लोग इसे पूर्व का स्कॉटलैंड भी कहते हैं। मेघालय की राजधानी शिलाँग है जो गुवाहाटी से लगभग 100 किमी. की दूरी पर है। यह एक हिल स्टेशन है जो

पर्यटकों से वर्ष भर भरा रहता है। यहाँ की जलवायु ठंडी है। यहाँ प्रति वर्ष औसत 1200 सेमी. वर्षा होती है, जो इस जगह को आकर्षक बनाती है। मावल्यान्नांग एक सुदूर गाँव है। यह बांग्लादेश की सीमा के पास स्थित है। इसे 'एशिया का क्लीनेस्ट विलेज' माना जाता है। इस राज्य में दो राष्ट्रीय उद्यान नोकरेक राष्ट्रीय उद्यान एवं वालपाक्रम राष्ट्रीय उद्यान है। इसके अलावा यहाँ की आदिवासी जनजातियों में खासी, गारो, जयंतिया प्रमुख हैं। ये जनजातियाँ इन पहाड़ी क्षेत्रों के नाम से भी जानी जाती हैं। मेघालय के इस गाँव मावल्यान्नांग को God's own Garden या भगवान का अपना बगीचा भी कहा जाता है। इसके आसपास बहुत से पर्यटक स्पॉट हैं जैसे लिविंग रूट ब्रिज (पेड़ों की जड़ों से बना पुल), एक संतुलित चट्टान (Balancing Rock), जलप्रपात, हरे-भरे वन। शिलाँग शहर में भी पर्यटकों के लिए बहुत आकर्षण हैं जैसे ऐलीफेन्ट फाल (जल प्रपात), शिलाँग पीक, लेड़ी हेड्रीपा बड्र्स लेक, गोल्फ (लिंक) कोर्स, डोनवास्की म्यूजियम, बटर फ्लाई म्यूजियम, बाजार आदि।

मणिपुर

मणिपुर को 'पूरब का स्विटजरलैंड एवं भारत का आभूषण' भी कहा जाता है। यहाँ की राजधानी इंफाल है। यह पर्यटन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। यहाँ प्राकृतिक दृश्यों, बहती नदियों, हरियाली, पेड़-पौधों की प्रचुरता है। पर्यटक स्थल जैसे श्री गोबिंद जी मंदिर, विष्णुपुर का विष्णु मंदिर, द्वितीय विश्व युद्ध से संवित युद्ध कवि, शहीद मीनार, आर. एन. ए. मेमोरियल, कीबुल लामजो राष्ट्रीय उद्यान के समीप है। मणिपुर में प्रवेश के लिए प्रतिबंधित क्षेत्र का परमिट लेना होता है (RAP)। मणिपुर यातायात के लिहाज से काफी सुदृढ़ है। यह सड़क, हवाई एवं रेलमार्ग से जुड़ा हुआ है। मणिपुर खेलों के दृष्टिकोण से पूर्वोत्तर में काफी प्रसिद्ध है। यहाँ मार्शल आर्ट, मुक्केबाजी, तीरंदाजी प्रचलित खेल हैं तथा युदीलकपी यहाँ का एक क्षेत्रीय खेल है जो नारियल से रग्बी की तर्ज पर खेला जाता है। पोलो मणिपुर का एक पुराना खेल है| आरेंज महोत्सव तार्मेगलांग में आयोजित किया जाता है।

मिजोरम

मिजोरम उत्तर पूर्व का एक सुंदर पर्वतीय प्रदेश है, जिसका अर्थ है 'पर्वतीय निवासियों की भूमि'। मिजोरम प्राकृतिक नैसर्गिक दृश्यों से भरा है। यहाँ पर्यटन के अत्यंत रमणीय स्थल हैं। यहाँ की प्राकृतिक छटा, संस्कृति, हस्तशिल्प, संगीत में छलकती है। वर्ष 1987 में इसे पूर्ण राज्य का दर्जा मिला। यह पहले 'लुशाई हिल्स' के नाम से भी जाना जाता था। आइजोल मिजोरम की राजधानी है जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। यह समुद्र तल से लगभग 4000 फुट की ऊँचाई पर स्थित है | यहाँ पर्यटकों की भीड़ से भरी शाम बाजार को जीवंत कर देती है। मिजोरम को उत्तर पूर्व का पक्षी गीत भी कहा जाता है।

चम्फाई एक समतल क्षेत्र है। इसकी दूरी आईजोल से 204 किमी. है। यह म्यांमार की सीमा से भी लगा हुआ है। यहाँ से म्यांमार हिल्स के सुंदर नजारे देखे जा सकते हैं। इसके अलावा सेहा, तामदिल, रीक, हयूईफैग वनताग्यांग, फांगपुई इत्यादि पर्यटन के आकर्षण केंद्र हैं। यहाँ त्योहार फसल एवं कृषि क्रियाओं के अनुरूप मनाए जाते हैं। मिजो त्योहार के लिए 'कुट' शब्द का प्रयोग करते हैं। इनमें प्रमुख त्योहार चपचार कुट, मिम कुट एवं थालफ्वांग कुट है। 'विलोमगांयना' यहाँ की आचरण संहिता के अनुसार मिजो लोग को निस्वार्थ, आदर-सत्कार करने वाले एवं एक - दूसरे की मदद करने वाले होते हैं। वानतांग जल प्रपात मिजोरम का सबसे ऊँचा जल प्रपात है। छंपा वन्य अभयारण्य त्रिपुरा एवं बांग्लादेश की सीमा के पास स्थित है। यहाँ वन्य जीव - जंतुओं में हाथी, चीता, भालू, जंगली साँड़ प्रमुख हैं।

नागालैंड

नागालैंड को पर्व त्योहारों, मेलों की भूमि भी कहा जाता है। इसकी सीमाएँ म्यांमार, असम एवं अरुणाचल से मिलती है। यहाँ की राजधानी कोहिमा है। दीमापुर एवं मलोकचुंग यहाँ के प्रमुख शहर हैं। नागालैंड में 16 जनजातियाँ हैं। यहाँ का क्षेत्रफल 16,597 वर्ग किमी है। पर्यटन के लिहाज से यहाँ द्वितीय विश्व युद्ध स्मारक, राज्य संग्रहालय, कोहिमा युद्ध कब्रिस्तान, कोहिमा गाँव (जिसे बड़ी बस्ती भी कहा जाता है) आदि हैं। होर्निवल उत्सव नागालैंड की संस्कृति को झलकाता है। नागालैंड सरकार पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2000 से प्रत्येक वर्ष इस उत्सव का आयोजन 1-7 दिसंबर को करती है। संगीत, नृत्य, नागा संस्कृति का हिस्सा हैं। इसके अलावा सेकरेन्सी, मोआत्सू, तोक्कू, एन्गोगा, तुलानी भी प्रमुख उत्सव हैं।

त्रिपुरा

त्रिपुरा सांस्कृतिक विविधताओं का राज्य है। इस प्रदेश की राजधानी अगरतला है। यहाँ के महल, मंदिर, झीलें, वन्य जीव अभ्यारण्य इसके पुराने राजशाही वैभव को दर्शाते हैं। उज्यनता महल (पैलेस) का निर्माण वर्ष 1990 में महाराजा राधा किशोर मनिक रायबहादुर ने करवाया था। अपनी वास्तुकला सुंदरता, आकृति, फर्श के टाइल, आंतरिक साज-सज्जा को अद्भुत एवं आकर्षण प्रदान करते हैं। मंदिरों में यहाँ चतुदास देवता का मंदिर, काली माता का मंदिर कमला सागर है जहाँ पर हर वर्ष भाद्र मेले का आयोजन भी किया जाता है। माता बाड़ी मंदिर, भुवेश्वरी मंदिर, आदि प्रसिद्ध धार्मिक स्थल हैं। नीर महल एक झील महल है। यह रुद्रसागर झील पर बसा हुआ है। माता बाड़ी मंदिर को त्रिपुरा सुंदरी के नाम से संबोधित किया जाता है। महामुनि एक बौद्धिस्थ स्तूप है जो त्रिपुरा से 134 किमी. दूर है। इसके अतिरिक्त सेपहिजला वन्य जीव अभयारण्य वेपनिया इको पार्क, तृष्णा वन्य जीव अभयारण्य, काला वैस प्रकृति पार्क, बारामुरा इको पार्क इत्यादि हैं। यहाँ खरची पूजी, पड़िया पूबा दिवला इत्यादि प्रमुख त्योहार हैं। पौष संक्रांति के मेले का तीर्थमुख में वार्षिक आयोजन किया जाता है। अन्य आयोजनों में यहाँ की दुर्गापूजा अशोकाष्टमी उत्सव, ऑरेंज पर्यटन मेला, नाव प्रतियोगिता आदि शामिल हैं।

सिक्किम

सिक्किम राज्य उत्तर-पूर्व में पर्यटन का स्वर्ग है। सिक्किम शब्द का अर्थ 'एक नया घर' है। यहाँ मूल निवासी लेप्चाज़ हैं, जो इसे छिपा स्वर्ग मानते हैं। तीस्ता यहाँ की प्रमुख नदी है जो ब्रह्मपुत्र नद की सहायक नदी है। यह एक सुंदर प्राकृतिक पर्यटन स्थल है। यहाँ बौद्ध मठ, पवित्र झीलों वाला बगीचा, बर्फ से ढकी पर्वत की चोटियाँ, यहाँ के नैसर्गिक स्वर्ग को झलकाती हैं। गंगटोक यहाँ की राजधानी है जो समुद्र तल से लगभग 1676 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ रूमटेक मठ, नाथूला दर्रा, तीस्ता एवं रंगित नदी, घने जंगलों के रास्ते, ट्रैकिंग, पेलिंग एक पुरानी परियों की कहानी याद दिलाता है। इसके अलावा यहाँ हिमालय जीव-जंतु पार्क, कंचनजंगा के दृश्य बहुत अद्भुत हैं। नव निर्मित चारधाम मंदिर धार्मिक पर्यटन का आकर्षण केंद्र है। युकसाम घाटी, कंचनजँगा राष्ट्रीय उद्यान का प्रवेश द्वार है और हिमालयन पर्वतारोहण संस्थान का मुख्य केंद्र भी है। यहाँ के उत्सवों एवं पर्वों में लोसोंग (सिक्किम नव वर्ष) सागा दवा, तेन्सु-छाम आदि पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। याक की सवारी एक अनोखा अनुभव होता है। साहसिक पर्यटन के लिहाज से सिक्किम साहसिक पर्यटकों का स्वर्ग है।

पूर्वोत्तर के पर्यटन का प्रचारप्रसार-

पूर्वोत्तर पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए 'अनन्वेषित स्वर्ग' 'Paradise un explored' के नाम से प्रचार किया जा रहा है। न्यूज चैनल, समाचार पत्रों एफ. एम. चैनलों के माध्यम से यहाँ के पर्यटन का विज्ञापन किया जा रहा है। नेशनल ज्योग्राफिक, डिस्कवरी चैनलों ने पूर्वोत्तर पर डॉक्यूमेंट्री भी प्रसारित की है। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से भी पर्यटन को

प्रचारित किया जा रहा है जिसमें नए सोशल मीडिया नेटवर्क, फेसबुक, ट्विटर, वाट्स ऐप, इन्स्टाग्राम, यू ट्यूब की अहम भूमिका है। इस क्षेत्र में विदेशी पर्यटकों को बढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मार्ट (International Tourism Mart) का आयोजन किया जा रहा है। पर्यटकों की सुरक्षा के लिए निःशुल्क टोल फ्री नं. 1800-1363 या 1363 जैसी सुविधाएँ 12 विदेशी भाषाओं में शुरू की गई हैं।

इस प्रकार पूर्वोत्तर क्षेत्र पर्यटन के दृष्टिकोण से भारत का बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो यहाँ के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। यद्यपि अभी इस क्षेत्र मे पर्यटकों का आवागमन कम है लेकिन सरकारों के प्रयास से यहाँ पर्यटन को एक नई अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित किया जा सकता है। स्वदेश दर्शन स्कीम में भी पूर्वोत्तर पर्यटन पर बल दिया गया है। केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय अपने बजट का 10 प्रतिशत पूर्वोत्तर राज्य को आवंटित कर रही है। लेकिन अभी भी पूर्वोत्तर में पर्यटन के विकास में काफी चुनौतियाँ हैं, जिनमें आधारभूत सुविधाओं का विकास प्रमुख है। पूर्वोत्तर को 'स्वच्छ गंतव्य' के रूप में विकसित करने के लिए पर्यटन सुविधाएँ जैसे शौचालय, पानी, कूड़ा निपटारण, पर्यटन स्थलों की साफ-सफाई एवं उचित रख-रखाव अति आवश्यक है। पर्यटन को 'मेक इन इंडिया' की तर्ज पर 'मेक इन नॉर्थ ईस्ट' के तहत यहाँ पर्यटन में निवेश को बढ़ावा दिया जा सकता है। अतः पूर्वोत्तर भारत के पर्यटन की सकारात्मक संकल्पनाओं को पूर्ण करने के लिए सामुदायिक भागीदारी, निष्ठा, सरकारी एवं निजी क्षेत्र की पहल आवश्यक है। तभी हम पूर्वोत्तर पर्यटन को अतुल्य भारत का 'अनन्वेषित स्वर्ग' कह सकते हैं।

पूर्वोत्तर भारत में पर्यटन का आर्थिक महत्व

पूर्वोत्तर के राज्यों में पर्यटन एक नवीन उद्योग के रूप में उभरकर आ रहा है। ये राज्य पर्यटन संवर्धन की नीतियाँ बनाकर पर्यटन को रोजगार की दिशा में मोड़ रहा है। भारत सरकार की भी पर्यटन एवं पूर्वोत्तर के विकास पर पुरजोर कोशिश है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए यहाँ का आर्थिक संरचनात्मक विकास, आधारभूत सुविधाएँ एवं परियोजना पर बल दिया जा रहा है। पर्यटन को नवाचार के रूप में विकसित किया जा रहा है। पूर्वोत्तर भारत में विशेष रुचि के पर्यटन या एक नव पर्यटन विकल्प को भी विकसित करने पर जोर दिया जा रहा है। पर्यटन यहाँ के युवाओं के रोजगार एवं उद्यमशीलता का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। इसी दिशा में पूर्वोत्तर को एक पर्यटन सर्किट भी घोषित किया गया है। इसमें प्रकृति, वन्यजीव, साहसिक, ग्रामीण, सांस्कृतिक, बौद्ध, खेल, भोजन एवं पाक कला, फिल्म, गोल्फ, व्यापार एवं संगोष्ठी, चाय की खेती, हस्तशिल्प कला इत्यादि प्रकार के पर्यटनों को क्रियान्वित किया जा रहा है। इसके लिए कार्यकुशलता एवं क्षमता निर्माण मानवीय संसाधनों में विकसित करने के उद्देश्य से पर्यटन के क्रियात्मक शिक्षा पाठ्यक्रम, लघु अवधि के पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। इस दिशा में होटल प्रबंधन कैटरिंग संस्थान, फूड क्राफ्ट संस्थान, यात्रा तथा पर्यटन संस्थान एवं केंद्रीय विश्वविद्यालय, सनेको कॉलेज अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

अवधी खाना उत्तर प्रदेश के पर्यटन का ख़जाना संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

महेंद्र सिंह

प्रस्तावना

भारतीय खाना अपने आप में एक खजाने की तरह है जो अपने अंदर विभिन्न प्रकार के व्यंजनों को मोती की तरह पिरोए हुए है | भिन्न-भिन्न प्रांतों और क्षेत्रों के विशेष व्यंजन इस खजाने को रत्नों की तरह सुशोभित करते हैं । पर्यटन अर्थव्यवस्था के विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है क्योंकि यह बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करता है| यह गहने और वस्त्रों के बाद देश में एक बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जक है । पर्यटन में हमारी संस्कृति और आतिथ्य का प्रतिबिंब है । पर्यटन की वजह से भारत ने विदेशी पर्यटकों के दिमाग में ब्रांड छवि हासिल की है । भारत में एक भौगोलिक विविधता है, जिसके परिणामस्वरूप वन, झरने, घाट, पहाड़ियाँ, झील, वन्य जीव, रेगिस्तान, समुद्र तट जैसे विविध प्रकार के प्राकृतिक पर्यटन हैं । भारत का समृद्ध इतिहास और इसकी सांस्कृतिक तथा भौगोलिक विविधता अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को आकर्षित करती है । पर्यटक मनोरंजन, घूमने-फिरने, छुट्टियाँ मनाने और व्यावसायिक उद्देश्यों आदि के लिए यात्रा करते हैं । देश में चिकित्सा, व्यापार, खेल पर्यटन, विरासत और सांस्कृतिक पर्यटन के साथ खान - पान व पाक पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। भारतीय व्यंजन पूरी दुनिया में सबसे लोकप्रिय व्यंजनों में शामिल हैं । यूरोप और उत्तरी अमेरिका के अलावा, दक्षिण पूर्व एशिया में भी भारतीय व्यंजन लोकप्रिय हैं क्योंकि इस क्षेत्र के स्थानीय व्यंजनों पर इसका मजबूत ऐतिहासिक प्रभाव है । भारतीय भोजन का मलेशियाई खाना पकाने की शैली पर काफी प्रभाव पड़ा है और सिंगापुर में भी इसे मजबूत लोकप्रियता हासिल है। एशिया के अन्य भागों में शाकाहार के प्रसार का श्रेय प्राचीन भारतीय बौद्ध प्रथाओं को दिया जाता है। अब व्यंजन पर इसकी समानता और प्रभाव के कारण भारतीय व्यंजन देश व विदेश में भी काफी लोकप्रिय हैं ।

भारत में खान पान व पाक पर्यटन के लिए बाजार बढ़ रहा है क्योंकि देश की पाक परंपराओं ने अंतरराष्ट्रीय ध्यान को अपनी ओर आकर्षित किया है । पाक कला देशी और विदेशी दोनों आगंतुकों के बीच एक पसंदीदा गतिविधि है । भारत की व्यापक खानपान संस्कृति, फ़ारसी, मध्य पूर्वी, मध्य एशियाई और दक्षिण पूर्व एशियाई व्यंजनों के प्रभाव को दर्शाती है । भारत, संस्कृतियों के बहुआयामी और उदार मिश्रण का घर है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न खाद्य परंपराएँ यहाँ पर पाई जाती हैं। भारत में कोई एक पकवान देश का प्रतिनिधित्व नहीं करता है; बल्कि, अलग - अलग क्षेत्रों में भारतीय पाक परंपराएं एक - दूसरे से बहुत भिन्न होती हैं जिसके कारण हर क्षेत्र में कुछ न कुछ अलग विशेषताएँ हैं और वहाँ का कोई न कोई विशेष व्यंजन है जो उस क्षेत्र की पहचान है ।

अवधी खाने की विशिष्टता

अवध जो कि पहले लक्ष्मणपुर के रूप में जाना जाता था सबसे प्राचीन हिंदू राज्यों में से एक माना जाता है । रामायण के अनुसार लोकप्रिय हिंदू भगवान, अयोध्या नायक श्रीरामचंद्र, ने लंका के ऊपर विजय प्राप्त करने और जंगल में निर्वासन की अवधि पूरी करने के बाद, अपने भाई लक्ष्मण को लखनऊ क्षेत्र, उपहार में दिया था । इसलिए लोग कहते हैं कि

सहायक प्राध्यापक, पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

ISSN 2321-0443

लखनऊ का मूल नाम लक्ष्मणपुर था, जिसे लक्ष्मणपुर या लखनपुर नाम से जाना जाता है। अयोध्या इतना बड़ा शहर था कि लक्ष्मणपुर को इसके उपनगर के रूप में वर्णित किया गया था। अवध नाम अयोध्या से लिया गया है| मुगलों के प्रभाव से पहले 16वीं शताब्दी तक, इसका नाम अयोध्या था। अवध का भोजन विश्व स्तर पर प्रसिद्ध भोजन मुग़लाई व्यंजनों से, 18 वीं शताब्दी में, राजधानी लखनऊ में, अवध के नवाबों के रसोई से विकसित हुआ था। अवध के नवाब के रसोइयों ने खाना पकाने के नए तरीकों जैसे दम शैली, धुनर शैली, गैलावत, घी डरस्ट, लोब, बौहर, गिल हिक्मत आदि का आविष्कार और प्रचार किया। अवधी व्यंजनों को दस्तरख्वान (मेज), खानसामा की विशेषज्ञता, रक़ाबदार (मसाला बनाने वाले) और बावर्चीखाना (रसोई) से पहचाना जाता है। दस्तरख्वान, एक फारसी शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है एक सावधानीपूर्वक रखी हुई औपचारिक भोजन प्रसार। अवध में यह प्रथा है कि आस-पास बैठकर दस्तरख्वान को साझा करें। अलग-अलग व्यंजनों के लिए विशेषज्ञ हैं और विभिन्न सहायक भी हैं, जैसे मसालची जो मसाले और मेहरिस जो दस्तरख्वान के लिए ख्वान (ट्रे) लगाते हैं। रईसों के रसोईघर में एक अधिकारी द्वारा देखरेख होती थी जिसे दरोगा-ए-बावर्ची खाना या मोहतमिम कहते हैं। ख्वान पर इस अधिकारी की मुहर लगती थी जोकि गुणवत्ता नियंत्रण की गारंटी होती थी। अवध के रकाबदार और बावर्ची ने दम शैली, ढुंगर शैली, गैलाववत, घी दुरुस्त, लोब, बागार, गिल हिक्मत आदि जैसे खाना पकाने के नए तरीकों का आविष्कार किया।

अवधी भोजन लखनऊ शहर और अवध क्षेत्र की एक विशेषता है, जैसे चिकन और ज़रीदोज़ी कार्य। लखनऊ के शामी कबाब, काकोरी कबाब, टुंडे के कबाब, निमोश/नमाश, बिरयानी, पसंदा कबाब आदि जैसे प्रसिद्ध व्यंजन हैं जो घरेलू और विदेशी बाजारों में व्यापक रूप से विपणन किए जाते हैं। लखनऊ शहर में ही कबाब बेचने वाले हजार से अधिक हैं। इनमें से कुछ उत्पादों को अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है जिन्हें देश और विदेश में अच्छी तरह से जाना जाता है। कई किताबें भी उनके बारे में लिखी गई हैं। अवधी भोजन में कई प्रमुख, अल्प-ज्ञात और दुर्लभ व्यंजन हैं, जिनके लिए उच्च स्तरीय कौशल की आवश्यकता होती है जो कि मास्टर कारीगरों की कमी के कारण तेजी से गायब हो रही है। इस तरह के कुछ व्यंजन अब नवीनीकृत किए जा रहे हैं। डॉ. आर.के. सक्सेना और श्रीमती संगीता भटनागर ने अपनी किताब दस्ते ख्वान-ए-अवध में संपूर्ण शोध के बाद नवाबों के कुछ प्रतिनिधि व्यंजन सूचीबद्ध किए हैं। अवध क्षेत्र के पूर्व शाही परिवारों के संग्रह के दुर्लभ पाक व्यंजनों के दस्तावेज के लिए वेलकम समूह द्वारा भी प्रयास किया गया है।

अनुसंधान क्रियाविधि

उद्देश्य

अनुसंधान विषय के रूप में प्रकट किए गए अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अवधी पाक-कला एवं भोजन को पर्यटन के रूप में विकसित करने और प्रचार प्रसार करने की संभावनाओं और उनसे जुड़ी चुनौतियों को समझना है।

सुविधा के लिए उद्देश्य को निम्नलिखित उप-उद्देश्यों में विभाजित किया जा सकता है।

- भारतीय व्यंजनों में अवधी भोजन की स्थिति का पता लगाना और जांचना।
- पर्यटन उद्योग में अवधी भोजन के पर्यटन संबंधी महत्व का गंभीर रूप से पालन और आकलन करना।

सूचना संग्रहण

अवधी भोजन की महत्ता और पर्यटकों की अवधी खाने में रुचि जानने के लिए अवध क्षेत्र के आगंतुकों पर एक सर्वेक्षण किया गया था। इस अध्ययन हेतु लिए 100 नमूनों में 70 घरेलू और 30 विदेशी पर्यटकों के नमूने शामिल किए गए। प्रश्नावली को अवधी खाने के बारे में जानकारी, रुचि, प्रचार-प्रसार की आवश्यकता, संभावनाओं और चुनौतियों के आधार पर पाँच भागों में बांटा गया है। प्रश्नों को लिकेर्ट पैमाना 1-5 पर बनाया गया है।

सूचना विश्लेषण

अवधी खाने को उत्तरदाताओं में जानकारी, रुचि, प्रचार-प्रसार की आवश्यकता, संभावनाओं और चुनौतियों के आधार पर विश्लेषित किया गया।

उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय वर्गीकरण

लिंग

लिंग एक सामाजिक स्थिति में एक महत्वपूर्ण चर है जो किसी भी सामाजिक या आर्थिक घटना से भिन्नतापूर्वक प्रभावित होता है और वैश्वीकरण इसके अपवाद नहीं है।

तालिका सं 01

क्र.स.	लिंग	संख्या	प्रतिशत
1	पुरुष	59	59
2	महिला	41	41
कुलयोग		100	100

उम्र

उत्तरदाताओं की उम्र विशेष समस्याओं के बारे में अपने विचारों को समझने में सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है; आयु उस व्यक्ति की परिपक्वता के स्तर को इंगित करती है इसलिए प्रतिक्रिया की जांच करने के लिए उम्र अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

तालिका सं 02

क्र.स.	उम्र समूह	संख्या	प्रतिशत
1	18-25	10	10
2	26-35	24	24
3	36-45	37	37
4	46-60	21	21
5	60+	08	08
कुलयोग		100	100

निवास का देश

रुनिवास का देश वह है जहां पर्यटक पिछले तीन सालों से आम तौर पर निवासी रहे हैं 70 उत्तरदाता घरेलू पर्यटक हैं ।

तालिका सं 03

क्र.स.	निवास स्थान	संख्या	%
1	अमेरिका	8	27
2	यूरोप	8	27
3	चीन	4	13
4	ऑस्ट्रेलिया/न्यूजीलैंड	3	10
5	जापान	3	10
6	रूस	4	13
कुलयोग		30	100

निष्कर्ष एवं अनुशंसाएँ

उत्तरदाताओं द्वारा प्रश्नावलियों में दी गई प्रतिक्रियाओं के आधार पर विश्लेषण करने के उपरांत निम्नलिखित प्रमुख जानकारियाँ सामने आईं ।

लेखा-चित्र सं. 01

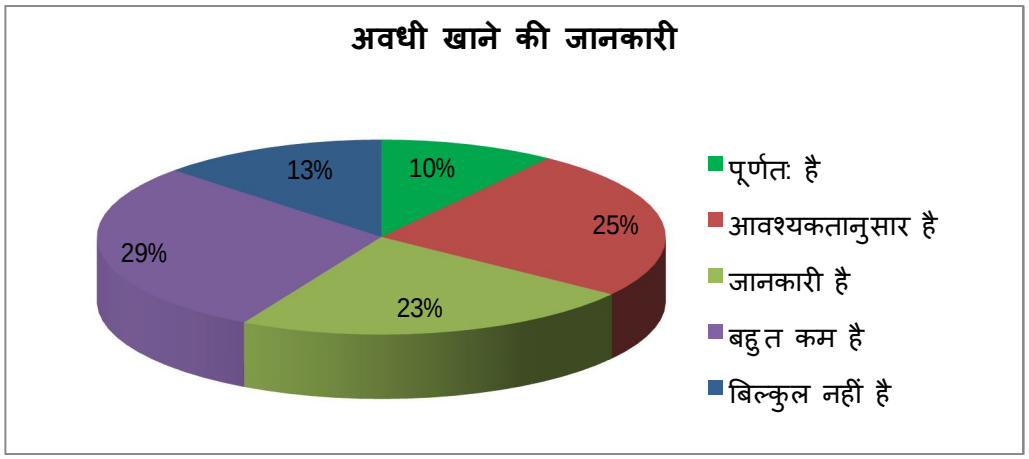

अधिकतर पर्यटक मानते हैं कि उन्हें अवधी खाने के बारे में जानकारी है, साथ ही कई ऐसे भी हैं जिन्होंने अवधी भोजन के बारे में सुना तो है, मगर इसकी विशेषताओं के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं | ऐसे लोगो के लिए

जागरूकता अभियान/समारोह कराए जाने की आवश्यकता है। अवधी खाने को पर्यटन उत्पाद की भांति उपयोग करने के लिए स्थानीय प्रशासन और लोगों को मिलकर इसके बारे में जागरूकता पैदा करनी चाहिए।

लेखा-चित्र सं. 02

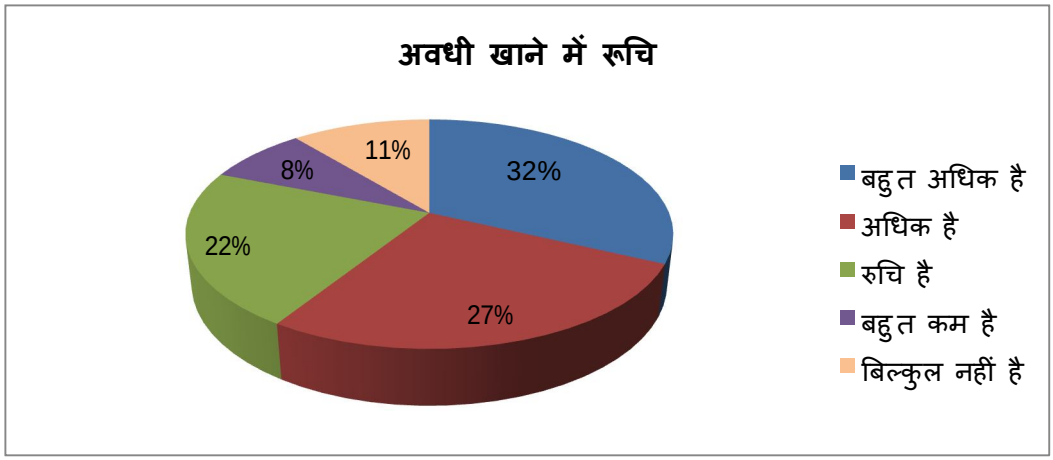

अवधी खाने के प्रति अधिकतर पर्यटकों में रुचि पाई गई। बहुत ही कम ऐसे लोग मिले जो अवध के खाने को नहीं खाना चाहते थे। अर्थात अवधी खाने को पर्यटन उत्पाद की भाँति उपयोग करने की संभावनाएँ बहुत हैं, इसलिए अधिक से अधिक मात्रा में अवधी खाने का व्यावसायिक उत्पादन हो जिससे सभी पर्यटकों को सरलता एवं सुगमता से अवधी भोजन मिल जाए। साथ ही साथ उन स्थानों पर अवधी खाने की सुविधा अधिक से अधिक हो, जहाँ पर्यटकों का आवागमन अधिक होता हो।

लेखा-चित्र सं 03

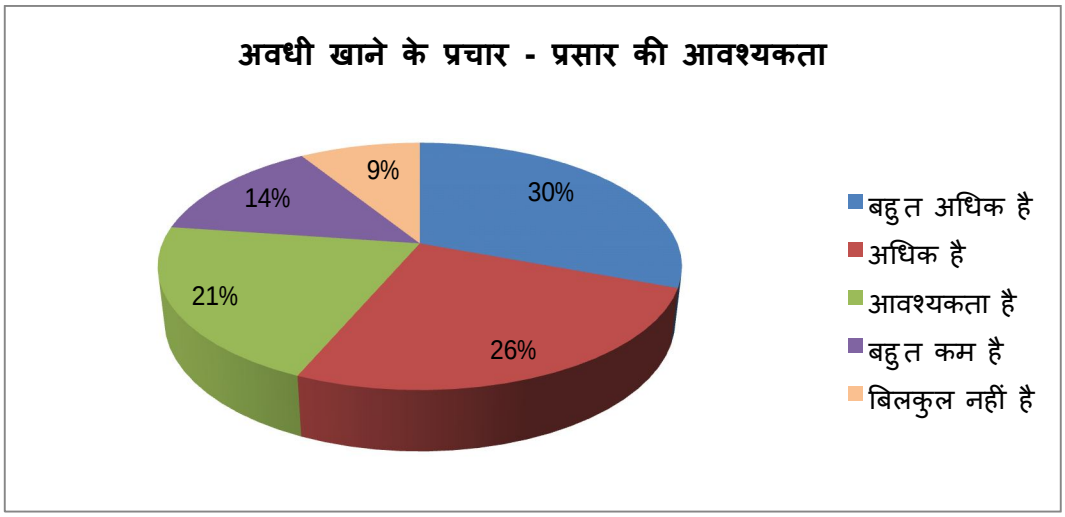

अधिकतर पर्यटकों का यह मानना है कि अवधी खाने और उसकी विशेषताओं के प्रचार-प्रसार की नितांत आवश्यकता है। अत: जागरूकता अभियानों के साथ - साथ विज्ञापन, प्रकाशन और लोक प्रसिद्ध कार्यक्रमों के कराए जाने की भी आवश्यकता है।

लेखा-चित्र सं. 04

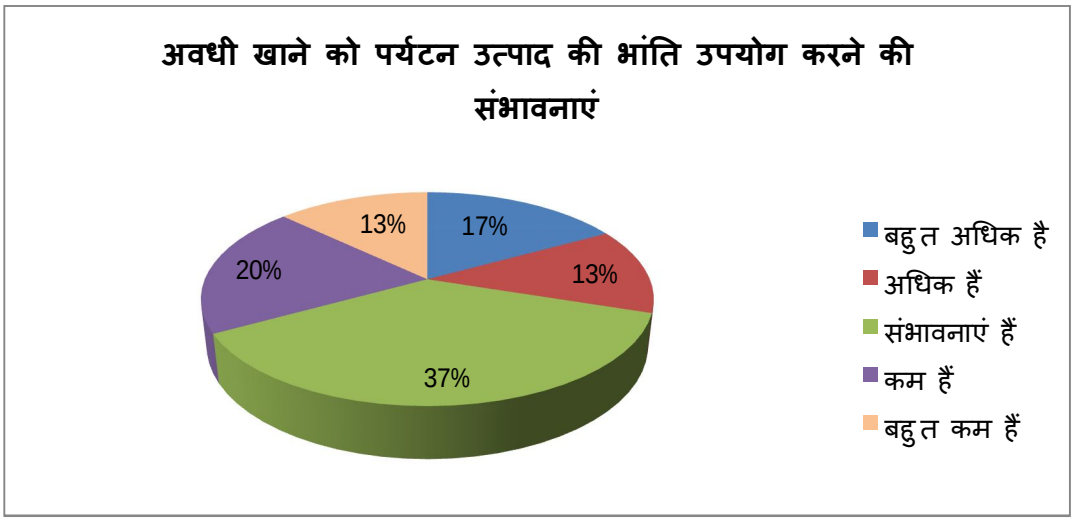

अवधी खाने को पर्यटन उत्पाद की भांति उपयोग करने की संभावनाएँ बहुत हैं, ऐसा अधिकतर पर्यटकों का मानना है | उनका मानना है कि अवधी खाना उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख खाना है, इसके पीछे एक लंबा नवाबी इतिहास है | इसमें भव्यता के साथ मौलिकता भी है । अत: यदि अवधी खाने के ऐतिहासिक महत्व के बारे में पर्यटकों को बताया जाए तो निस्संदेह यह पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करेगा और पर्यटन को बढ़ावा देगा ।

लेखा-चित्र सं. 05

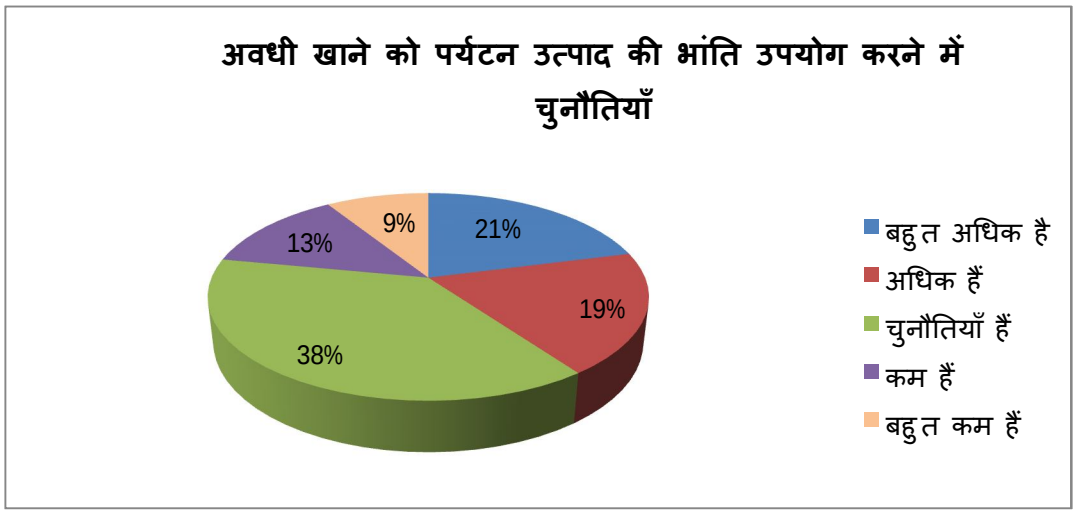

अवधी खाने को पर्यटन उत्पाद की भांति उपयोग करने में बहुत चुनौतियाँ हैं । अधिकतर पर्यटकों की प्रतिक्रियाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि चुनौतियाँ कई प्रकार की हैं जैसे साफ़सफाई और स्वच्छता, प्रामाणिकता, स्थानीय जनता और प्रशासन का सहयोग, मौलिकता को बनाए रखना, सरकार द्वारा नीतियाँ बनाना, वितरण और

व्यापार संबंधी नीतियाँ बनाना, हर छोटे-बड़े होटल में अवधी खाने का उत्पादन एवं परोसा जाना सुनिश्चित किया जाना आदि।

उपसंहार

उत्तर प्रदेश में प्रत्येक वर्ष लाखों देशी - विदेशी पर्यटक आते हैं, यहाँ पर मुख्यतः ऐतिहासिक और धार्मिक दर्शनीय स्थल हैं जो कि विश्व में अद्वतीय पर्यटन स्थल हैं जैसे आगरा का ताजमहल, भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली मथुरा, भगवान् राम का जन्म स्थान अयोध्या, भगवान् शंकर का सिद्ध स्थान काशी आदि। भौगोलिक द्रष्टि से भी उत्तर प्रदेश एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है क्योंकि यहाँ हर मौसम का पूर्ण आनंद मिलता है। अवध क्षेत्र न सिर्फ अयोध्या बल्कि अपने नवाबी खाने के लिए भी प्रसिद्ध है, इसलिए अवधी खाने को पर्यटन उत्पाद की भांति उपयोग किए जाने की संभावनाएं बहुत हैं। अध्ययन से पता चलता है कि संभावनाओं के साथ चुनौतियाँ भी कई हैं, इसलिए दृढ़ इच्छाशक्ति और नीतियों की आवश्यकता है। स्थानीय लोगों के साथ प्रशासन और सरकार के लिए भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाने की आवश्यकता है।

संदर्भ

- **Athma, P., & Nalini, G.** (2013). Tourism in India-An Analysis. International Journal of Management Prudence, 5(1), 25.
- **Mishra, A., Jharkhariya, M. P., & Pathak, P**. An Empirical Study of Tourism in India. JSSGIW Journal of Management, Issue –I, Vol.-I, Oct.-Mar., 2014
- **Saxena R.K. & Bhatnagar Sangeeta**, Dastarkhwan-e-Awadh, Harper Collins (INDIA) Private Limited
- **Shaffer, H.** (2012). Dum Pukht. Curried Cultures: Globalization, Food, and South Asia, 34, 110.
- **Trivedi, M.** (2010). The making of the awadh culture. Primus Books.
- **Yadav S,** (2013), Lucknow's Tourism in Transition: A Stakeholders' Perspective, pp 125-126.
- http://tornosindia.com/blogs/lucknow-cuisine.php
- http://www.grandecuisines.com/category/imtiaz-qureshi,
- http://www.worldfoodtravel.org/our-story/what-is-food-tourism/
- http://www.dnaindia.com/opinion/weekend-views_celeb-chefs-in-hiding_1132592,

आहुतियों के ज्योतिपुंज : अंडमान और निकोबार

राकेश रेणु

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह! बचपन से इसके बारे में न जाने कितनी कथाएं सुन रखी थी- काले पानी का प्रदेश, आदिम जनजातियों का प्रदेश, स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों का प्रदेश, लुटेरों का इलाका, हिमालय पर्वत शृंखला का सुदूर दक्षिणी सिरा, चमकते तटों और आबनूसी लोगों का देस- और न जाने क्या-क्या। इसलिए बचपन से यह द्वीप समूह हमारे कौतुहल का विषय बना रहा है।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में कुल 572 छोटे-बड़े द्वीप और स्वतंत्र चट्टाने हैं जिनका क्षेत्रफल 8,249 किलोमीटर है। ये द्वीप-समूह बंगाल की खाड़ी में उत्तर से दक्षिण की ओर 780 किमी लंबे इलाके में फैले हुए हैं जिनमें से अंडमान समूह के द्वीप 352 किमी क्षेत्र में फैले हैं जबकि अंडमान समूह के सबसे आखिरी यानी दक्षिणी द्वीप लिटिल अंडमान से प्रायः 96 किमी की दूरी पर निकोबार द्वीप समूह का पहला द्वीप कारनिकोबार अवस्थित है। बंगाल की खाड़ी में ये द्वीप दक्षिण से पूर्व की ओर मुड़ते हुए दूज के चांद की आकृति में छोटे-छोटे मनकों की भांति फैले हुए हैं।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के सर्वाधिक नजदीकी द्वीप लैंडफॉल से कोलकाता 1,255 किमी और चेन्नई 1,191 किमी की दूरी पर स्थित है जबकि इंडोनेशिया से इस द्वीप समूह के सबसे नजदीकी द्वीप की दूरी मात्र 147 किमी, म्यामां से 193 किमी और बांग्लादेश से 805 किमी है। माना जाता है कि यह हिमालय पर्वत शृंखला का ही अविच्छिन्न अंग है जो भारत, नेपाल, चीन और भूटान के बाद म्यामांर के अराकान क्षेत्र से बढ़ते हुए आगे समुद्र में डूब जाता है और पुनः अंडमान में प्रकट होता है। अंडमान के द्वीप रचने के बाद दक्षिण की ओर बढ़ते हुए यह शृंखला पुनः समुद्र में डूब जाती है और निकोबार में सर उठाती है। अंडमान और निकोबार के सभी द्वीप इसी पर्वत शृंखला के खूबसूरत उभार हैं। निकोबार के बाद यह पर्वत शृंखला पुनः समुद्र में समा जाती है और इसके बाद जावा और सुमात्रा में प्रकट होती है। इस प्रकार यह बहुप्रचलित मान्यता कि हिमालय भारत की उत्तरी सीमा का प्रहरी है, गलत साबित हो जाती है और अचानक हम इस सुखद अनुभूति से भर उठते हैं कि विश्व की सबसे ऊंची और लंबी पर्वत शृंखला हमें उत्तर के साथ-साथ उत्तर-पूर्व, पूर्व, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण तक रमणीय स्थल, संसाधन और सुरक्षा प्रदान कर रही है। बचपन के अपने कौतुहल को पूरा करने, इस द्वीप समूह को देखने-छूने और वहां की आबोहवा में सांस लेने की हसरत पूरी करने का जब अवसर आया तो इस जातक ने दिसंबर के आखिरी सप्ताह में वहां पहुँचने का मन बनाया। वजह? वजह वर्षांत और वर्षागमन की संधि वेला का अंडमान में साक्षी होना नहीं बल्कि 73 वर्ष पहले घटी घटना का उसी दिन और उसी स्थान पर साक्षी होना था जिसने भारत के गौरवपूर्ण स्वातंत्र्य संघर्ष में एक महत्वपूर्ण कड़ी जोड़ दी थी। इस जातक की जिज्ञासु वृत्ति और हालिया इतिहास के गौरव-बोध ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। अंग्रेजी दासता से मुक्ति का संकल्प लेकर निकले सुभाष चंद्र बोस 29 दिसंबर, 1943 को द्वीप समूह की वर्तमान राजधानी पोर्टब्लेयर पहुंचे और अगले दिन 30 दिसंबर, 1943 के सेलुलर जेल के जिमखाना क्लब मैदान में भारत का भावी राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया था।

दिल्ली से अल्लसुबह एयर इंडिया के विमान से बरास्ता चेन्नई दोपहर साढ़े बारह बजे हम पोर्ट ब्लेयर पहुंचे। पोर्ट ब्लेयर दक्षिण अंडमान द्वीप पर स्थित है। यह अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की राजधानी है। अंडमान द्वीप समूह के उत्तर, मध्य और दक्षिण अंडमान तीन बड़े द्वीप हैं जिन्हें मिलाकर इन्हें ग्रेट अंडमान कहा जाता है। अब कोलकाता के

संपर्क- बी-339, केंद्रीय विहार, सेक्टर-51, नोएडा- 201303

अतिरिक्त भुवनेश्वर और चेन्नई से भी यहाँ पहुँचने के लिए विमान सेवाएँ उपलब्ध हैं। एयर इंडिया के साथ-साथ कई निजी विमान सेवाएँ भी पोर्ट ब्लेयर के लिए हैं। समूचे द्वीप समूह में केवल पोर्ट ब्लेयर से ही यात्रियों और पर्यटकों के आने-जाने के लिए व्यावसायिक विमान सेवाएँ ली जा सकती हैं। इसके अलावा जलमार्ग से भी पानी के जहाज के द्वारा यहाँ पहुंचा जा सकता है। कुछ दशक पहले तक जलमार्ग ही यहाँ से मुख्य भूमि तक आने-जाने का प्रमुख साधन हुआ करता था। विमान सेवाएँ बहुत सीमित थीं और सप्ताह भर में मात्र दो बार कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर के लिए फ्लाइट उपलब्ध थी जो रंगून होते हुए यहाँ पहुँचती थी।

पानी के जहाज की यात्रा में कोलकाता अथवा चेन्नई से यहाँ पहुँचने में चार दिन का समय लगता है। उसके लिए भी अनुकूल समय तथा समुद्र की प्रतीक्षा करनी होती है। अगर खाड़ी अशांत है, लहरें ऊंची उठ रही हैं, हवा का बहाव तेज है, ज्वार-भाटे की स्थिति है तो जहाज को चलाया नहीं जाता। इस प्रकार, समुद्र मार्ग से यात्रा के लिए काफी ज्यादा समय, कम से कम आठ दिन, आने-जाने में ही लग जाते हैं। फिर यह यात्रा बेहद थकाने वाली और चारों तरफ पानी ही पानी नजर आने के कारण ऊबाने वाली होती है। तभी तो यात्रा के क्रम में सबसे पहले दिखाई पड़ने वाले द्वीप को आरंभिक अंग्रेज फौजियों ने उल्लास में भर कर 'लैंडफॉल' नाम दिया।

<u>दर्शनीय स्थल</u>:

मरीना पार्कः पोर्ट ब्लेयर में हमारे स्थानीय गाइड और बाद में मित्र बन गए मणि एयरपोर्ट पर हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह हमें लेकर आटम पहाड़ स्थित निजी गेस्ट हाउस में पहुंचे जहां हमारी पहले से बुकिंग थी और जहां जल्दी-जल्दी तरोताजा होकर और भोजनादि से निवृत्त हो हम सीधे मरीना पार्क स्थित नेताजी की विशाल प्रतिमा के सम्मुख पहुंचे। नेताजी द्वारा अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की 73वीं वर्षगांठ के अवसर पर इस पार्क में सुबह से ही विशेष रौनक थी।

महात्मा गांधी मरीन नेशनल पार्कः महात्मा गांधी मरीन नेशनल पार्क अंडमान निकोबार द्वीप समूह के समुद्री जीव-जंतुओं, मछलियों, सांप, शंखों, शैलों-प्रवालों को समझने का अद्‌भुत केंद्र है। यहाँ मछलियां, अन्य समुद्री जीव-जंतु या तो जीवित रखे गए हैं अथवा उनकी अनुकृति संजोई गई है। साथ में इन सबके बारे में लिखित एवं दृश्यश्रव्य सामग्री ये युक्त वीडियो का प्रसारण निरंतर जारी रहता है जिनसे पर्यटक शीघ्र ही इस द्वीप समूह के जलीय जीवन से अवगत हो जाता है।

सेलुलर जेलः पोर्ट ब्लेयर में हमारे पहले दिन का तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव सेलुलर जेल था। मणि महोदय ने पहले दो स्थानों के लिए समय-सीमा निर्धारित कर दी थी। किंतु यहाँ, सेलुलर जेल आने पर उन्होंने हमें स्वतंत्र छोड़ दिया। कहा - यहाँ से अब आप रात से पहले नहीं लौट पाएंगे। यह जगह देर सांझ ढले तक लौटने नहीं देगी आपको। सेलुलर जेल परिसर में साउंड एंड लाइट प्रोग्राम होता है। मणि ने हमारे लिए टिकट की व्यवस्था भी कर दी थी। मणि ठीक कह रहे थे, यह स्थान आने वाले के मनोमस्तिष्क में करुणा, क्रोध और श्रद्धा का ऐसा मिला-जुला भाव उत्पन्न करता है जिसका आसानी से शब्दों में वर्णन सरल नहीं है।

सेलुलर जेल हमें 1857 में आजादी का बिगुल बजाने वाले महान स्वतंत्रता सेनानियों की याद दिलाता है जिन्होंने अंग्रेजी दासता के विरूद्ध उठ खड़े होने का आह्वान किया। इतिहास में इसका महत्व कम करने के लिए आजादी की पहली लड़ाई को अंग्रेजों ने सिपाही विद्रोह का नाम दिया। क्रांति को दबाने के लिए अंग्रेजी फौज ने भीषण मारकाट मचाई। हजारहां लोग मार डाले गए, आजादी के दीवानों को पेड़ों से लटका कर फांसी दे दी गई, तोप के मुहाने पर बांध कर उनके परखच्चे उड़ा दिए गए, गोलियों से भून डाला गया और तलवारों से टुकड़े कर दिए गए। बड़ी संख्या में लोग गिरफ्तार हुए और उनमें से अनेक को सैनिक अदालतों में ताउम्र कैद की सजा सुनाई गई। जब ऐसे सजायाफ्ता क्रांतिकारियों की तादाद बढ़ने लगी तो अंडमान को बंदी शिविर के रूप में विकसित करने और मुख्य भूमि से राजनीतिक तथा दुर्दांत कैदियों को उनकी मातृभूमि

और परिवार से अलग करने के ख्याल से कालापानी यानी अंडमान भेज दिया गया जहां एकांत में धीरे-धीरे वे मृत्यु का आलिंगन करें।

अंडमान को बंदी शिविर के रूप में प्रयुक्त करने के अंग्रेज सरकार के निर्णय के बाद पहली मर्तबा 10 मार्च, 1858 को सुपरिटेंडेंट जे.बी. वॉकर 200 सेनानियों के जत्थे के साथ यहाँ पहुंचा। दूसरा जत्था इसके करीब 10 साल बाद अप्रैल 1868 से 733 क्रांतिकारियों का था। कुछ स्रोत इस संख्या को 772 बताते हैं। ये सब आजीवन कारावास की सजा पाए राजनीतिक बंदी थे। आरंभ में वे खुले बंदी शिविरों में रहते। उन्हें कठोर यातनाएं दी जातीं। अंडमान में साल में आठ महीने बारिश होती। ऐसे मौसम में कमर में लोहे की सीखचें और पैरों में बेड़ियां पहने जंगल में उन्हें पेड़ों को काटकर सड़क बनाने और इसी तरह के दूसरे कठोर काम करने का कहा जाता। उन बंदियों ने ही अंडमान में पहुँचने के बाद आदिवासियों के सहयोग से जंगलों को काटा और रास्ते बनाए। मार्च 1863 में लगभग 150 से 200 क्रांतिकारी जंगल में भाग गए। इनमें से अधिकांश को जनजातीय लड़ाकों ने तीर-कमान से मार डाला। सिर्फ दो बंदी जीवित बचे जिनमें से एक दोबारा भागने के प्रयास में मारा गया। एक बंदी जो बचा वह बहुत समय तक आदिवासी कबीले की कैद में उनके साथ रहा और धीरे-धीरे उनसे घुल-मिल गया। आगे दूधनाथ तिवारी नामक इस बंदी ने एक आदिवासी महिला से शादी कर ली। मई 1859 में अंडमानी आदिवासियों ने संगठित होकर अंग्रेजों पर आक्रमण करने की योजना बनाई। लेकिन तिवारी ने आदिवासियों से छलकर आक्रमण की योजना की खुफिया खबर पहले ही अंग्रेजों को दे दी। इस कारण आक्रमण के समय अंग्रेजी फौज चौकस थी। 17 मई, 1859 को जब आदिवासी क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी फौज पर आक्रमण किया तो सतर्क फौजियों ने बड़ी संख्या में आदिवासी लड़ाकों को मार गिराया और बड़ी संख्या में आदिवासी क्रांतिकारी बंदी बना लिए गए। अबरडीन की इस लड़ाई में कैदी बनाए गए 87 लोगों को सुपरिटेंडेंट वॉकर के आदेश पर फांसी पर लटका दिया गया। लड़ाई में आखिर में हालांकि अंग्रेज फौजों की जीत हुई लेकिन इस आक्रमण ने अंग्रेजों को अपनी रणनीति पर पुनः विचार करने के लिए मजबूर कर दिया। इस बीच एक और घटना घटी। फरवरी 1872 में वायसराय लॉर्ड मेयो सपरिवार अंडमान-निकोबार के द्वीप घूमने आए। 8 फरवरी को पूरा दिन माउंट हेरियट पर गुजारने के बाद सांझ ढले वह जहाज पर लौट रहे थे। तभी शेर अली नामक एक बंदी ने आक्रमण कर उस्तरे से उसकी हत्या कर दी। इस घटना ने बंद जेल बनाने के अंग्रेजों के इरादे को पुख्ता कर दिया।

इस घटना के बाद सबसे पहले वाइपर द्वीप मे एक छोटी-सी जेल बनाई गई। वहां चार-चार बंदियों को एक जंजीर से बांधकर डाल दिया जाता था। इसी जेल में स्थित फांसीघर में शेर अली को फांसी दे दी गई। बंदियों की बढ़ती हुई संख्या को देख कर 1880 में अंग्रेजी शासकों का ध्यान अंडमान द्वीप में बड़ी जेल बनाने की ओर गया और उचित स्थान का चयन करने के लिए लेल-लिंथब्रिज का एक कमीशन अंडमान गया जिसने कई जगहों का सर्वेक्षण करने के बाद समुद्रतट से लगभग सौ फुट ऊंचाई के एक बड़े टीले का चुनाव किया। यह स्थान बहुत रमणीक व मनमोहक था। उस टीले का एक भाग समुद्र तट को छूता था। कमीशन के सदस्यों ने यहाँ एक विशाल जेल बनाने का फैसला किया। इस संबंध में कमीशन के सदस्यों का विचार था कि इस जेल का निर्माण भारतीय जेलों से भिन्न पेनटोनविले जेल के आधार पर अंग्रेजी जेलखानों के अनुरूप कराया जाए।

उनकी कल्पना के आधार पर जेल का मानचित्र बनाया गया और 1896 में निर्माण-कार्य प्रारंभ हो गया। इस जेल को सेलुलर जेल का रूप दिया गया। जिस प्रकार रथ का पहिया होता है उसी प्रकार पहिये की गोलाई के बीच धुरी के रूप में जेल की केंद्रीय निगरानी मीनार रखी गई और पहिये की तीलियों की भांति सात बैरकें उस मीनार के साथ चारों ओर फैलती हुई जोड़ी गई। पहिये के बड़े चक्के की भांति जेल के बैरकों की चारदीवारी का निर्माण हुआ। प्रत्येक बैरक तीन मंजिली थी और प्रत्येक मंजिल में कोठरियों के सामने एक खुला बरामदा था जिस पर रेलिंग लगी हुई थी। घड़ी की सुइयों की भांति दाईं से बाईं ओर घूमते हुए प्रत्येक बैरक की कोठरियों के दरवाजे खुलते थे। यानी दरवाजों के सामने दूसरी बैरक का पिछवाड़ा होता था ताकि एक बैरक का बंदी दूसरी बैरक के बंदी को न देख सके। बरामदों से बाहर आने या अंदर जाने का मार्ग निगरानी वाली केंद्रीय मीनार से होकर था। इस प्रकार वहां कड़ा नियंत्रण रखा गया। बाहरी गोलाई के साथ बैरकों के मध्य में जो

खाली स्थान था उसमें फैक्टरियों या कोल्हू-खरास का निर्माण किया गया था। एक ओर फांसी घर बनाया गया था जहां बंदियों को लटकाकर हमेशा के लिए उनकी जीवन-लीला समाप्त कर दी जाती थी।

बैरक से थोड़ी दूर पर कोल्हू-खरास का निर्माण किया गया था, जहां दिनभर पशुओं के स्थान पर बंदियों को जोत दिया जाता था और उनसे कड़ी मशक्कत कराई जाती थी। बदन में ताकत हो या न हो, उन्हें निर्धारित समय तक काम करना पड़ता था। दिनभर इतना पसीना निकलता था कि शरीर तो क्या धरती भी नम हो जाती थी। इन यातनाओं का वास्तविक वर्णन या उनका अनुभव वही कर सकता है जिसने इन्हें स्वयं भोगा हो।

आंखों के सामने उस दृश्य के आते ही कठोर-से-कठोर व्यक्ति का हृदय भी दहल जाता है। जो बंदी स्वास्थ्य की कमजोरी के कारण काम करने में सक्षम नहीं होते थे, उन्हें बेतों की मार या जेल की अन्य कठोर यातनाएं सहनी पड़ती थीं।

प्रारंभिक व्यवस्था व यातनाओं का साक्षात वर्णन हमारे सदैव स्मरणीय बलवंत फड़के बालिंद्र कुमार घोष, आशुतोष लाहिरी, सावरकर बंधु, इलाहाबाद से प्रकाशित पत्र 'स्वराज' के तीन वरिष्ठ संपादक होतीलाल वर्मा, चौधरी लड्डाराम व रामहरि आदि ने किया है। इन देशभक्त संपादकों का कथन था कि "हमारे राष्ट्र का जीवन अंग्रेज सरकार चूस रही है। जब हमें एक दिन मरना ही है तो हम चाहे प्लेग की बीमारी से मरें या भूख से या अन्य संक्रामक बीमारी से। क्यों न हम उन अत्याचारियों को समाप्त कर दें जो हमारे राष्ट्र को नेस्तनाबूंद करने पर तुले हैं"। यह संसार तो एक गुंबद की भांति है। यहाँ कोई शब्द भी बोला जाए तो वह गुंबद में गूंजकर वापस सुनाई देता है। अनेक होनहार युवक अकथनीय अत्याचारों का विरोध करते हुए वहीं शहीद हो गए। जुलाई 1912 में प्रमुख क्रांतिकारी इंदुभूषण राय ने जेल में आत्महत्या कर अपने प्राण त्याग दिए।

1932 में जब फिर क्रांतिकारियों की गतिविधियां पंजाब, बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश व देश के अन्य भागों में बढ़ने लगीं तो सरकार ने पुनः सभी ख़तरनाक लंबी सजा पाने वाले बंदियों को अंडमान जेल में भेजने का निर्णय किया। 18 अगस्त, 1932 को 24 क्रांतिबंदियों का पहला जत्था अंडमान पहुँचा और 1932 के अंत तक लगभग 300 बंदी सभी प्रांतों की जेलों से वहां पर स्थानांतरित कर दिए गए। जेल की स्थितियां और यातना असहनीय थीं। इनके विरुद्ध सब में आक्रोश व असंतोष था। इसका प्रतिकार करने के लिए बंदियों में प्रतिक्रिया हुई। उन्होंने पाया कि जब तक कोई बड़ा बलिदान यहाँ के बंदी नहीं करेंगे तब तक भारत की अंग्रेज सरकार का ध्यान उनकी ओर आकर्षित नहीं हो पाएगा। सभी प्रकार के समाचारपत्रों, पत्र-व्यवहार व संबंधियों से उनकी मुलाकातों पर प्रतिबंध था। केवल जो नए साथी भारत की जेलों से आते थे उनके माध्यम से ही वहां नए समाचारों की जानकारी उपलब्ध होती थी। जेल में यातना और नारकीय जीवन स्थितियों के विरोध में सन् 1933 और 1937 में कैदियों ने दो बार आमरण भूख हड़ताल की। 12 मई, 1933 से आरंभ हुई पहली भूख हड़ताल 46 दिन चली। इसमें तीन क्रांतिबंदियों – महावीर सिंह, मोहन किशोर नमो दास तथा मोहित मोइत्रा की मौत हो गई। उनके शव चुपचाप समुद्र में फेंक दिए गए। 46 दिन बाद ब्रिटिश सरकार को आखिरकार झुकना पड़ा और क्रांतिबंदियों की मांगें मानते हुए उनके कमरों में रोशनी और स्वीकार्य भोजन सहित अन्य सहूलियतें उपलब्ध कराई गईं। 25 जुलाई, 1937 से शुरू हुई दूसरी भूख हड़ताल 36 दिन चली। 28 अगस्त, 1937 को महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर सहित कांग्रेस कार्यकारिणी ने तार भेजकर उनसे हड़ताल समाप्त करने की अपील की। इसके बाद बंदियों को वापस भारत लाने की प्रक्रिया शुरू हो गई। आखिरकार 18 जनवरी, 1938 को राजनैतिक बंदियों के लिए अंडमान जेल बंद कर दिया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी

गोलाबारी में इस जेल को काफी नुकसान पहुंचा है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 21 मार्च, 1942 को जापानी नौसेना ने अंडमान पर कब्जा कर लिया। युद्ध समाप्ति के बाद 7 फरवरी, 1946 को जाकर यहाँ की सत्ता अंग्रेजों के हाथ में आ पाई। तब तक भारत की स्वाधीनता का ताना-बाना तैयार हो चुका था और सत्ता संभालने के तुरंत बाद ब्रिटिश शासन ने कालेपानी की सजा और इससे जुड़ा कानून हमेशा के लिए समाप्त कर दिया।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के कुल 38 द्वीपों पर आबादी है, शेष द्वीप गहरी हरीतिमा से आच्छादित निर्जन स्थल हैं। आबादी वाले सभी द्वीप किसी न किसी रूप में, ज्यादातर जलमार्ग के द्वारा राजधानी पोर्ट ब्लेयर से जुड़े हुए हैं। यात्रा के दूसरे दिन हमने पोर्ट ब्लेयर (दक्षिण अंडमान द्वीप) के सन्निकट अवस्थित तीन द्वीपों का भ्रमण किया।

रॉस द्वीपः पोर्टे ब्लेयर से प्रायः दो किमी की दूरी पर स्थित रॉस द्वीप पर्यटकों के लिए दूसरा महत्वपूर्ण स्थान है। छोटा-सा यह द्वीप अंग्रेजों और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंडमान को अंग्रेज फौजी शासकों ने यहाँ खूबसूरत भवन, क्लब आदि बनवाए और अपने ऐशो-आराम की सारी व्यवस्था यहाँ की। लेकिन 1939 में आए एक भूकंप से इन इमारतों को काफी नुकसान पहुंचा। अंग्रेज और उनकी मेमें इतनी घबरा गईं कि उन्होंने इसे खाली कर पोर्ट ब्लेयर जाने का निर्णय कर लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापानी नौसैनिक बेड़े ने फरवरी 1942 में सिंगापुर पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया और उनके विशाल नौबेड़े मलक्का जलसंधि मार्ग से अंडमान की ओर बढ़ चले। अगले ही महीने 21 मार्च, 1942 को जापानी नौ सैनिकों ने भारी बमबारी के बाद अंडमान को अंग्रेजों से छीन लिया और रॉस द्वीप को अपनी राजधानी बनाया। आज इस द्वीप की भूकंप और बमबारी में भग्न हुई ज्यादातर इमारतें विशाल वृक्षों और उनकी जड़ों से आच्छादित हैं।

एक दिन में कई द्वीपों की सैर कराने वाली व्यावसायिक नौकाएँ हरेक द्वीप के लिए पर्यटकों को निर्धारित समय देती हैं जिसके भीतर उन्हें घूम-फिर कर वापस नौका पर लौटना होता है ताकि अगले द्वीप की यात्रा की जा सके। अधिकांश द्वीपों के लिए इस प्रकार निर्धारित समय पर्याप्त सिद्ध हो सकता है किंतु रॉस द्वीप के लिए यह पर्याप्त नहीं होता। इस लेख के लेखक को ले जा रही नौका के प्रबंधकों ने यात्रियों को रॉस द्वीप पर भ्रमण के लिए मात्र एक घंटे का समय निर्धारित किया जो सर्वथा अपर्याप्त साबित हुआ। इस छोटे-से द्वीप पर देखने और घूमने लायक की अनेक चीजें हैं और सभी पर्याप्त समय मांगती हैं। नैसर्गिक सौंदर्य और प्राकृतिक छटा के अलावा यहाँ एक संग्रहालय भी है जिसमें औपनिवेशिक अंडमान की वस्तुएं सहेजी गई हैं। सेलुलर जेल की भांति यहाँ भी संध्या प्रहर साउंड एंड लाइट प्रोग्राम होता है जिसे किसी भी नवांगतुक को जरूर देखना चाहिए। यह साउंड एंड लाइट कार्यक्रम सेलुलर जेल के कार्यक्रम से कतिपय भिन्न और तकनीकी स्तर पर समुन्नत है। लेखक को अपनी पहली यात्रा के दौरान समय सीमा में बंधे होने के कारण एक अन्य दिन दोबारा आना पड़ा ताकि म्यूजियम और साउंड एंड लाइट कार्यक्रम का आनंद लिया जा सकता।

वाइपर द्वीपः जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, माना जाता था कि इस द्वीप पर सांपों की बहुतायत है। किंतु आज ऐसा नहीं है। आरंभ में, जैसा पहले वर्णित किया जा चुका है, इस द्वीप समूह को अंग्रेजों ने खुले बंदी शिविर के रूप में अपनाया था और मुख्य भूमि से दुर्दांत अपराधियों तथा आगे चलकर स्वतंत्रता सेनानियों को यहाँ छोड़ दिया जाता था। दूरदूर तक समुद्री जल से घिरे होने के कारण वे भाग नहीं पाते और उनमें से अधिसंख्य विषम जलवायु तथा रहने-खाने की समुचित व्यवस्था न होने के कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त होते। जो बच जाते वे सजा पूरी होने के बाद मुख्य भूमि पर पहुंचा दिए जाते अथवा स्थानीय जनजातियों और लोगों के साथ इतने घुलमिल चुके होते कि यहीं बस जाते। कालांतर में एक के बाद एक ऐसी घटनाएँ घटीं कि अंग्रेजों ने यहाँ कारागार बनाने का निर्णय लिया। तब सेलुलर जेल बनने से पहले एक छोटा बंदीगृह इसी द्वीप पर बनाया गया। इस जेल में स्थित फांसीघर काफी कुख्यात हुआ। यह जेल आज भी मौजूद है और पर्यटकों की रुचि का केंद्र है।

नार्थ बे द्वीपः पोर्ट ब्लेयर दक्षिण अंडमान द्वीप पर स्थित है और 'नार्थ बे', जैसा कि नाम से ही प्रकट है इसके उत्तर दिशा में स्थित द्वीप है। यहाँ का मुख्य आकर्षण यहाँ स्कूबा डाइविंग और स्नॉर्कलिंग की सुविधा उपलब्ध होना है। तटीय इलाकों से थोड़ा ही आगे पहाड़ी क्षेत्र है किंतु पर्यटकों को ऊपर न जाने का निर्देश दिया जाता है। यानी यहाँ तट पर जलक्रीड़ा के अतिरिक्त आपके पास कोई विकल्प नहीं है। यदि आप स्नॉर्कलिंग अथवा स्कूबा डाइविंग न करना चाहें तो तट पर स्नान कर अपना समय व्यतीत कर सकते हैं। स्नॉर्कलिंग तथा स्कूबा डाइविंग से समुद्री शैवाल क्षतिग्रस्त होते हैं अतः पर्यटक ये जलक्रीड़ाएं न करें, इस आशय के बोर्ड आपको यहाँ मिल जाएंगे लेकिन इन क्रीड़ाओं पर कतई रोक नहीं है। जाहिर है, बड़ी संख्या में ये स्थानीय लोगों की रोजी-रोजगार का आधार हैं क्योंकि इनमें से प्रत्येक क्रीड़ा में प्रत्येक पर्यटक के साथ एक गाइड होता है जो इनकी प्रविधियां बताता है और आपको सुरक्षित तट पर वापस ले आता है। इस गाइडों/प्रशिक्षक गोताखोरों के साथ-साथ सहयोगी कार्यों में भी लोगों को रोज़गार प्राप्त होता है। इसलिए प्रशासन आपको शिक्षित करना चाहता है, रोकना नहीं चाहता।

हैवलॉक द्वीपः यह काफी बड़ा और सुंदर द्वीप है। यह पोर्ट ब्लेयर से पूर्व में 45 किमी की दूरी पर स्थित है। यहाँ पूर्वी बांग्लादेश से आए विस्थापितों को बसाया गया है। इसलिए इस द्वीप की मुख्यभाषा बांग्ला और हिंदी है। यहाँ के समुद्र तट बहुत ही मनोरम, शांत और मोहक हैं।

वस्तुतः अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के अधिकांश द्वीप और उनके तट अति आकर्षक, खूबसूरत और मोहक हैं। इनकी प्राकृतिक छटा में आप खोए रहते हैं और प्रकृति किन आभूषणों से अपना श्रृंगार करती है, इस पर विचारमग्न हो जाते हैं। हैवलॉक तक प्रायः तीन घंटे की समुद्र यात्रा (बोट द्वारा) कर यहाँ पहुंचा जा सकता है। जेट्टी से लगे तटीय क्षेत्र में यहाँ रिसॉर्ट्स और रात्रि विश्राम की व्यवस्था है। हैवलॉक के राधानगर और काला पत्थर सागर तट का सौंदर्य अप्रतिम है।

लिटिल अंडमानः यह अंडमानी जनजातियों का मूल निवास स्थान है। अंडमान द्वीप समूह से 120 किमी दक्षिण में अवस्थित यह द्वीप अंडमान का सबसे बड़ा द्वीप है। इसका क्षेत्रफल 754 किमी है। इसी द्वीप से जरावा, अंडमानी, औंगी और सेंटीनली मूल के आदिवासी अन्य द्वीपों में फैले। हाल तक यहाँ केवल औंगी आदिवासी रहते थे किंतु उनकी जनसंख्या काफी कम हो जाने के कारण अब उन्हें डुंगाँग क्रीक नामक सुरक्षित द्वीप पर बसा दिया गया है। वहां अब पर्यटकों का जाना वर्जित है। केवल शोध अध्ययन के लिए प्रशासन की पूर्व अनुमति लेकर वहां जाया जा सकता है। चाथम, नील, बाराटांग, रटलैंड, नॉर्थ सेंटीनल, साउथ सेंटीनल, ऑटरेम, स्पाइक आदि दक्षिण अंडमान के अन्य कुछ प्रमुख द्वीप हैं।

अंडमान ग्रैंड ट्रंक रोडः 335 किमी लंबे इस सड़क मार्ग का अंडमान के दैनंदिन जीवन के साथ-साथ पर्यटकीय महत्व भी बहुत है। घने जंगलों के बीच से गुजरती यह सड़क एक अलग किस्म के रोमांच और आनंद की अनुभूति कराती है। इस वन के अनेक वृक्ष हजारों साल पुराने हैं। यह ग्रेट अंडमान के तीन बड़े द्वीप– उत्तर अंडमान, मध्य अंडमान तथा दक्षिण अंडमान के साथ-साथ दो अन्य बड़े द्वीपों – रटलैंड और बाराटांग को जोड़ती हुई दक्षिण में पोर्ट ब्लेयर से होकर उत्तर में स्थित डिगलीपुर तक जाती है। इस सड़क मार्ग पर टैक्सियों, पर्यटक वाहनों, ट्रकों के अलावा राज्य प्रशासन द्वारा संचालित बसें भी चलती हैं जिसमें आसपास के गांवों के निवासी अपनी दैनंदिन जरूरतों और खरीद फरोख्त के लिए यात्रा करते हैं। इस सड़क के द्वारा एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर जाने के क्रम में बीच-बीच में आने वाले चैनलों और क्रीकों को बोट से पार करते हैं। बोट पर ही बस और अन्य वाहनों को लाद लिया जाता है। चैनल पार करने के बाद यात्री पुनः अपनी-अपनी सवारियों में बैठ जाते हैं।

इस सड़क मार्ग पर बीच में सुरक्षित आदिवासी क्षेत्र आता है जहां बीच-बीच में जारवा आदिवासियों की बस्ती है। अतः इस क्षेत्र में पर्यटकों तथा सभी प्रकार के वाहनों के प्रवेश को नियंत्रित किया जाता है। टूर ऑपरेटर कई बार इस यात्रा के दौरान जारवा जनजाति के लोगों के दिख जाने का प्रलोभन देते हैं किंतु इस प्रलोभन से बचना चाहिए। प्रशासन ने हाल के समय में उनके शोषण की अशोभनीय घटनाओं के बाद उनकी सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं और रास्ते में जहां-जहां जारवाओं की बस्ती है, इन्हें सड़क पर उतरने से रोकने के लिए ग्रामीण पुलिस बल की तैनाती की है। पर्यटक सीजन के दौरान यह चौकसी बढ़ा दी जाती है।

चूना-पत्थर की गुफा (लाइम स्टोन केव)- अंडमान ट्रंक रोड पर नीलांबुर क्रीक पार करने के बाद हम बाराटांग पहुँचते हैं। बाराटांग से छोटी-छोटी नौकाओं पर घने जलीय वृक्षों से आच्छादित क्रीक की लगभग आधे घंटे की यात्रा तथा उसके बाद लगभग 1-1.5 किमी पैदल यात्रा के बाद लाइम स्टोन केव (चूना पत्थर की गुफा) में पहुँचा जा सकता है। इस गुफा में जलीय वृक्षों की जड़ों से टपकने से बनते ताजा चूना पत्थर को देखा जा सकता है जो स्वमेव विभिन्न रोचक आकृतियां ग्रहण करती जाती हैं। यह गुफा बहुत बड़ी थी किंतु निरंतर चूना पत्थर बनते जाने से सिकुड़ती – संकरी और छोटी होती जा रही है।

अंडमान-निकोबार के आस-पास बंगाल की खाड़ी के जल में कैल्शियम की मात्रा अधिक पाई जाती है जिससे चूना पत्थर का प्राकृतिक रूप से निर्माण होता रहता है। कहते हैं समुद्र में पानी के गहरे नीले रंग की वजह उसमें कैल्शियम की अधिक मात्रा होना ही है जो सूर्य के प्रकाश में गहरा नीला और प्रकाश न होने या कम होने पर काला रंग अख्तियार कर लेता है। इसी वजह से इसे 'काला पानी' की संज्ञा दी गई। गहरे समुद्र से ज्यों-ज्यों तट की ओर बढ़ते हैं और सागर की गहराई क्रमशः कम होती जाती है, पानी का रंग हल्का नीला और फिरोजी हो जाता है। उसके बाद तट का सुनहरा या सफेद विस्तार और फिर पेड़ों की हरीतिमा एक मोहक और अविस्मरणीय रंग-युति रचते हैं मानो प्रकृति ने खूबसूरत कलाकृति तैयार की हो।

डॉलफिन और मगरमच्छों की जलक्रीड़ाः कालीघाट क्रीक की नौका यात्रा में आपको सहज ही मगरमच्छ दिख जाएंगे। इसी प्रकार, इस यात्रा के आखिरी पड़ाव डिगलीपुर से वापसी की यात्रा यदि आप बोट से करना चाहें तो आपको डॉल्फिनों का कलरव और उनकी जलक्रीड़ा देखने का आनंद मिलेगा। यदि आप खुशकिस्मत हुए तो एक साथ नीले जल में तैरते डॉलफिनों का बड़ा समूह नजर आ सकता है। ये डॉल्फिन आपकी नौका के साथ-साथ चलते हैं। डिगलीपुर उत्तर अंडमान का मुख्यालय है और यहाँ से म्यामां और बांग्लादेश करीब हैं। बीच में कालीघाट क्रीक पार कर एक अन्य नगर रंगट आता है जो मध्य अंडमान का जिला मुख्यालय है। रंगट पोर्ट ब्लेयर के बाद अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का दूसरा सबसे बड़ा नगर है।

निकोबार द्वीप समूहः

कार निकोबारः निकोबार द्वीप समूह में कुल 62 द्वीप हैं लेकिन उनमें मात्र 28 द्वीप प्रमुख हैं। यह 1,841 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है। कार निकोबार से अंडमान समूह का आखिरी द्वीप लिटिल अंडमान 96 किमी की दूरी पर और राजधानी पोर्ट ब्लेयर से 241 किमी की दूरी पर अवस्थित है। यह एक समतल, चौरस और उपजाऊ द्वीप है। निकोबार द्वीप समूह का यह सर्वाधिक विकसित द्वीप है। स्थानीय भाषा में इसे 'पु' कहा जाता है। यहाँ निकोबारी जनजातीय लोगों की सघन आबादी है। नारियल के पेड़ों से आच्छादित यह एक खूबसूरत द्वीप है लेकिन यहाँ केवल जलमार्ग से ही पहुंचा जा सकता है। समूचे अंडमान-निकोबार द्वीप समूह में पोर्ट ब्लेयर के अलावा कहीं हवाई पट्टी नहीं है। अलबत्ता कार निकोबार और इससे आगे ग्रेट निकोबार के लिए पोर्ट ब्लेयर से हेलिकॉप्टर सेवा उपलब्ध है।

ग्रेट निकोबारः ग्रेट निकोबार द्वीप के मुख्यालय कैंपबेल बे की दूरी पोर्ट ब्लेयर से 294 किमी है। यह निकोबार द्वीप समूह का सबसे बड़ा द्वीप है। इसके सुदूर दक्षिणी सिरे पर स्थित इंदिरा प्वाइंट बेहद रमणीक स्थान है। यहाँ से गलाथी नामक एक नदी भी बहती है। इंदिरा प्वाइंट पर भारतीय सीमा की निगरानी के लिए नौसेनिक और वायुसैनिक कैंप भी है।

पर्यटन क्षेत्र में कौशल विकास

प्रो. (डॉ.) निमित चौधरी

आज देश में पर्यटन क्षेत्र में लगभग 81 लाख कर्मियों की आवश्यकता आँकी जा रही है। होटल एवं रेस्तरां क्षेत्र में सालाना लगभग 40 से 50 प्रतिशत लोग नौकरियाँ छोड़ रहे हैं। व्यंजन सेवा क्षेत्र में तो यह आँकड़ा 90 प्रतिशत के आसपास पहुँच जाता है। जिन आई एच एम एवं फ़ूड क्राफ्ट संस्थानों के छात्रों की पढाई पर सरकार व्यय कर रही हैं उनमें से भी 40-50 प्रतिशत युवा आतिथ्य क्षेत्र को छोड़ अन्य क्षेत्रों में नौकरी करने चले जाते हैं। आई आई टी टी एम तथा अन्य संस्थानों के पर्यटन स्नातक भी अक्सर कम वेतन की शिकायत करते हैं।

दूसरी ओर नियोक्ता भी सरकारी एवं निजी क्षेत्र के पर्यटन एवं आतिथ्य प्रबंधन संस्थानों से आने वाले स्नातकों की गुणवत्ता से नाखुश हैं। वे अक्सर पर्यटन सेवा उद्योग की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरते। यह भी देखने में आया है कि कई निजी क्षेत्र की कंपनियाँ इस कमी को पूरा करने के लिए अपने खुद के प्रशिक्षण स्कूल चला रही हैं। उदाहरण स्वरूप कुओनी ने कुओनी अकादमी शुरू कर दी है। ओबेरॉय समूह अपना ओसीएलडी (ओबेरॉय सेंटर फॉर लर्निंग एंड डेवलप्मेंट) संचालित करते हैं।

इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र में प्रशिक्षण का न तो कोई मानक पाठ्यक्रम है और न ही सेवा के कोई मानक हैं। एक बहुत बड़ा वर्ग तो बिना प्रशिक्षण के ही काम कर रहा है, और बचे हुए लोग भी आधे-अधूरे प्रशिक्षित हैं। बहुत सारी कंपनियाँ तो भर्ती के बाद स्वयं अपनी ज़रूरतों के हिसाब से छोटी-मोटी ट्रेनिंग करा लेती हैं। इन सब से अलग, एक क्लैश नियोक्ता और नियुक्ति की बेमेल अपेक्षाओं की वजह से है। नित नए प्रशिक्षण संस्थान आ रहे हैं और वे रोज़गार के लिए अयोग्य लोग तैयार कर रहे हैं। सरकारें भी बहुत पैसा इस कौशल अंतर को पूरा करने के लिए खर्च कर रही हैं।

बदलता परिवेश

दूसरी तरफ दुनिया बदल रही है। पोर्टल "मल्टीपल जनरेशन्स एट वर्क" के अनुसार 91 प्रतिशत मिल्लेनिअल्स (जो 1977 और 1997 के मध्य पैदा हुए हैं) तीन साल से अधिक किसी नौकरी में नहीं रहना चाहते। फोर्ब्स पत्रिका के अनुसार आज का युवा कॉलेज स्नातक यह मानता है कि जल्दी-जल्दी नौकरियाँ बदलने से वह जल्दी तरक्की पाएँगे । नेट इम्पैक्ट के सर्वे के अनुसार, जहाँ बेबी बूमर (जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पैदा हुए लोग हैं) की प्राथमिकता जीवन में स्थिरता, परिवार का पालन करते हुए एक जगह बसना था, वहींआज की पीढ़ी के लिए यह सब बेमानी है। अपने पूर्ववर्तियों से भिन्न जीवन में खुशियाँ एवं पूर्णता प्राप्त करना उनका ध्येय है।

पोर्टल द बैलेंस के अनुसार आज एक व्यक्ति 12 की औसत से अपने जीवन काल में 10 से 15 नौकरियाँ बदलता है। ज्यादातर कर्मी किसी नौकरी में 5 साल से कम ही समय टिकते हैं। बहुत समय और प्रयास से वे एक नौकरी से दूसरी में परिवर्तन में लगाते हैं, स्वयं के पुनः कौशलीकरण में लगते हैं। फ़ास्ट कंपनी का तो यहाँ तक मानना है कि ऐसे जल्दी-जल्दी नौकरी बदलने वाले लोगों की सीखने की क्षमता अधिक होती है तथा वे ज़िम्मेदारी के बेहतर निष्पादक होते हैं। वे अधिक निष्ठावान भी होते हैं। अतः उनका तो यह मशवरा है कि अपनी आने वाली जिंदगी में हर तीन साल में नौकरी बदल लेनी चाहिए।

आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, पर्यटन, होटल, आतिथ्य एवं विरासत अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

नई रणनीति

आज के समय में आजीविका काल में कोई 12 से 15 नौकरियाँ बदलेगा। इसी काल खंड में वह कम से कम 7 बार तो व्यवसाय बदल लेगा जिसके लिए उसे नए कौशल को प्राप्त करना होगा। एक प्रकार के कौशल से एक व्यक्ति 3 से 6 साल तक ही नौकरी करेगा। 'सामान्य पेशों' की जगह अब कौशल की छोटी-छोटी खुराक की मांग हुआ करेगी। एक व्यक्ति किसी कौशल की एक छोटी ख़ुराक लेगा और उसके सहारे तीन-चार साल जीवन यापन कर लेगा। इसके बाद, साधारणतया उसके पास दो विकल्प होंगे, या तो वह उसी व्यवसाय में और हुनर लेकर आगे बढ़ जाए या फिर कोई असंबंधित कौशल हासिल कर किसी और व्यवसाय में चला जाए। आज के लंबे परंपरागत बी.एससी, बी.बी.ए. अथवा एम.बी.ए. पाठ्यक्रम अवांछित हो जाएंगे। तीन-चार साल का कोर्स करके तीन-चार साल की नौकरी का तो कोई मतलब ही नहीं रह जाएगा। तीन महीने, छह महीने या ज्यादा से ज्यादा एक साल का कोर्स करके तीन-चार साल के जीवन यापन की व्यवस्था अधिक तार्किक है। फिर एक और छोटा-सा कौशल कार्यक्रम और फिर तीन-चार साल की व्यवस्था हो जाएगी। आज पर्यटन के क्षेत्र में यह बात समझने की बहुत आवश्यकता है। दो–तीन-चार साल के लंबे पाठ्यक्रम की जगह आवश्यकता के अनुसार छोटे कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम (स्किल ट्रेनिंग) अधिक अर्थपूर्ण हैं। कोई व्यक्ति एक कौशल के साथ दो चार साल कहीं काम करेगा और यह समझ पाएगा कि उसे आगे बढ़ने के लिए किस और कौशल की आवश्यकता है? या फिर अगर उसका मन इस काम से भर गया है तो वह कोई और काम के लिए एक नया कौशल प्राप्त कर ले। यहाँ आवश्यकता इस बात की है की हम एक लंबे करियर की जगह नौकरी को छोटे-छोटे कार्यों का संयोजन मानें। एक बार में एक जॉब-रोल के लिए कौशल प्राप्त करें।

अगर चाहें तो होटल में एक बैल बॉय थोड़े अनुभव और कुछ कौशल हासिल कर टेलीफोन ऑपरेटर की भूमिका में प्रोन्नति प्राप्त कर सकता है। फिर कुछ साल का अनुभव और यदि चाहे तो कुछ और कौशल के साथ स्वागती (रिसेप्शनिस्ट) बन सकता है। फिर फ्रंट ऑफिस सुपरवाइजर और उसके बाद फ्रंट ऑफिस मैनेजर बन सकता है। हर प्रोन्नति में, उसका कार्यस्थल का अनुभव और हर पड़ाव पर एक छोटे कौशल का निवेश, उसकी मदद करेगा। उसे अपने जीवन में कब आगे बढ़ना है, किस गति से बढ़ना है, अपनी परिस्थिति के अनुसार बढ़ना है, यह सब उसकी इच्छानुसार होगा। उसे किस बिंदु पर अपने व्यवसाय की दिशा बदलनी है और कितनी बदलनी है इसका भी वरण वह अपने हिसाब से करता है। बैल बॉय से टेलीफोन ऑपरेटर न बनकर, वह चाहे तो थोड़ी-सी ट्रेनिंग के साथ वेटर बन सकता है, फिर बारटेंडर, फिर प्रमुख वेटर और फिर एफ एंड बी मैनेजर बन सकता है।

उपरोक्त सोच के साथ ही एनएसडीसी और सेक्टर स्किल कौंसिलों ने व्यवसायगत मानचित्र (ऑक्यूपेशनल मैप) की परिकल्पना की है। पर्यटन और आतिथ्य कौशल परिषद (टीएचएससी) ने भी कई प्रकार के पर्यटन क्षेत्रों से जुड़े व्यवसायों के लिए व्यवसायगत मानचित्र बनाए हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ मैप यहाँ दिखा रहा हूँ।

होटल में जॉब (THSC के सोजन्य से Occupational Map)

Hotels (Core Job roles)														
	Front Office Management						Food Production / Kitchen			Food & Beverage Service		Housekeeping		Guesthouse / Dharam-shala / Lodge / Hostel Operations
Level 8	Front Office Manager						Executive Chef			F&B – Mgr.		Executive Housekeeper		
Level 7	Duty Manager / Executive Floor Manager	Concierge	Reservation Revenue Mgr.				Sous Chef			Banquet Mgr. / Outlet Mgr.		Housekeeping Manager		
Level 6	Guest Relations Manager				Travel Desk Manager		Chef-de-partie			Captain	Bar Mgr.	Housekeeping Supervisor		
Level 5	Front Office Executive	Bell Captain	Business Centre Manager	Telephone Dept Manager	Airport Service Manager		Commi 1	Kitchen Stewar-ding Super-visor	Food Safety & Hygiene Exec.		Bar-tender	Housekeeping Executive	Laundry Manager	Guest House Caretaker
Level 4	Front Office Associate	Bell Boy	Reservation Desk Exec.	Telephone Operator		Chau-ffeur	Commis Chef			F&B Steward		Room Attendant	Laundry Machine Operator / Tailor (Same as Sampling Tailor in Apparel SSC) / Pressman (Same as Apparel SSC)	Guest House Cook
Level 3	Front Office Trainee					Parking Valet Driver	Tandoor Cook / Trainee Chef / Chef-de-Communard	Kitchen Steward		F&B Trainee / Host/ Hostess		Housekeeping Attendant	Laundry Valet	Guest House Assistant
Level 2						Door-man						Housekeeping Trainee		

रेस्तरां में जॉब (THSC के सौजन्य से Occupational Map)

Restaurant (Core)							
	Material Management	Food Production / Kitchen		Quality Control	Customer Service	Roadside Eatery	Stock taking
Level 8		Restaurant Manager / Executive Chef					
Level 7		Sous Chef		Food Technologist		Owner-cum-Cashier	F&B Controller
Level 6	Procurement Manager	Chef-de-partie		Quality Control Manager	Captain		Night Auditor
Level 5	Inventory In-charge		Kitchen Stewarding Supervisor		Bartender / QSR Coordinator	Street Food Vendor	
Level 4	Storekeeper	Commis Chef / Pastry Chef		Quality Control Executive	F&B Steward / Front Desk Officer / Counter Sale Executive / Order Taker-Home Delivery	Multi-cuisine Cook	
Level 3		Trainee Chef / Chef-de-Communard	Kitchen Steward		Home Delivery Boy	Tandoor Cook / Food Server	
Level 2						Kitchen Helper	
Level 1			Dishwasher			Cleaner-Roadside Eatery	

टूर एंड ट्रेवल में जॉब (THSC के सौजन्य से Occupational Map)

Tours & Travel (Core)															
	Procure-ment & Tariff	Transportation		Travel Agency Operations	Tour Packaging	Tourism Services									
Level 8				General Manager											
Level 7		Transport Duty Manager				Mountainee-ring Instructor	Heli Ski Guide								
Level 6		Transport Duty Officer		Team Leader	Tour Manager	Base Camp Manager	Heli Ski Pilot	Parasailing Guide		Para-gliding Coach					
Level 5	Tariff Procure-ment Head	Transport Coordinator		Ticketing Consultant	Meeting, Conference and Event Planner	Trek Coach / Mountainee-ring Guide	Ski Rep	Parasailing driver	Bungee Jump Guide	Para-gliding Tandem Pilot	Scuba Diving Coach	River Sport Vehicle Operator	River Raft-ing Guide	Hot-air Balloon Guide	
Level 4	Tariff Procure-ment Executive	Meet & Greet Officer	Tour Vehicle Driver (ASDC-Comm. vehicle driver level 3)	Visa Assistance Consultant	Travel Consultant / Tour Escort / Adventure Sports Organiser	Mountainee-ring Camp Cook		Animal Driver and Keeper	Ranger		Marine Biolo-gist-Touris m	Natura-list			Tour Guide / Heritage Tour Guide
Level 3				Travel Insurance Executive		Mountain Porter									
Level 2			Vehicle Cleaner												

कार्य के बेहतर संपादन के लिए कौशलीकरण

यहाँ यह समझना भी जरूरी है की कौशलीकरण सिर्फ नए लोगों को रोजगार के लिए तैयार करने की लिए नहीं होता है। कंपनियों और आगंतुकों की यह सतत शिकायत रही है कि मौजूदा सेवाकर्मी भी अपने कार्य के निष्पादन में दक्ष नहीं हैं। एक तरफ वर्तमान में कार्य निष्पादन करने वाले लोग समुचित तौर पर दक्ष नहीं हैं। उन्हें और कौशल की आवश्यकता है। दूसरी तरफ परिपेक्ष्य बदल रहा है। आगंतुकों की और मेहमानों की जरूरतें और अपेक्षाएँ बदल रही हैं। नए दौर में नए तरह से कार्य का निष्पादन होगा अतः नए कार्य कौशल की जरूरत होगी।

हर कार्य के निष्पादन के लिए कुछ कौशल विशेष की आवश्यकता होती है। अक्सर बहुत से कर्मी बिना प्रशिक्षण के सिर्फ अनुभव के आधार पर कार्य करते रहते हैं पर कुछ आवश्यक कौशल न होने से सेवा में कमियाँ रह जाती है। उदहारण के तौर पर-:

उदाहरण 1

कार्य	स्तर	आवश्यक कोशल	कौशल में अंतर
टूर संचालन	ट्रांसफर सहायक	एयरपोर्ट एवं टिकट स्टाफ से बातचीत करना तथा यात्रा का समन्वय करना उच्च ऊर्जा का प्रदर्शन उच्च कोटि का संप्रेषण कौशल	मेहमानों से बात चीत में लचरता (निम्न ऊर्जा स्तर)

अथवा

कार्य	स्तर	आवश्यक कौशल	कौशल अंतर
होटल फ्रंट ऑफिस	फ्रंट ऑफिस प्रबंधक	सुनिश्चित करना ताकि विभाग सुचारु रूप से चले। समस्या हल करने के लिए पर्याप्त कौशल। अच्छा संप्रेषण । मेहमानों का हिसाब रखना तथा अच्छे संबंध बनाए रखना। कक्षों की उपलब्धता की समीक्षा करना तथा बिक्री संवर्धन का ध्यान रखना। हाउस कीपिंग एवं खान-पान सेवा के साथ समन्वय रखना। जन प्रबंधन कौशल।	मेहमानों से अच्छे से बातचीत न कर पाना। कक्ष सेवाओं का ठीक से समन्वय न कर पाना तथा बिक्री संवर्धन न कर पाना। ठीक से टीम प्रबंधन न कर पाना।

ऐसे में लगातार कौशल अंतर का आकलन करते रहना चाहिए और इस अंतर को कम करने के लिए उचित कौशल प्रशिक्षण होना चाहिए ।

कुछ महत्वपूर्ण सुझाव

- कौशल अंतर समझने के लिए निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए। यह अंतर मात्रात्मक हो सकता है यानी कितने प्रशिक्षित लोगों की ज़रूरत है और कितने लोग उपलब्ध हैं? यह अंतर गुणात्मक भी हो सकता है यानी किस कौशल की आवश्यकता है और किसकी कमी है? भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय को इस पर नज़र बनाए रखना चाहिए।
- मंत्रालय को पर्यटन से संबंधित कौशल प्रशिक्षण की ज़रूरतों पर शोध का समर्थन करना चाहिए। उन्हें ऐसी शोध को नैतिक और वित्तीय प्रोत्साहन देना चाहिए।
- कौशल प्रशिक्षण इंडस्ट्री की ज़रूरतों के हिसाब से होना चाहिए न कि मंत्रालय की कल्पना और अनुमान के अनुरूप। अभी तक यही होता आया है। कुछ लोगों से पूछकर अवैज्ञानिक तरीके से कौशल अंतर निर्धारित किया जाता है और उसके उपरांत प्रशिक्षण की रूपरेखा तैयार कर ली जाती है। इसकी जगह कौशल अंतर का वैज्ञानिक आकलन होना चाहिए।

- मंत्रालय को दो प्रकार के कौशल विकास कार्यक्रम करने चाहिए। सबसे पहले बेरोजगार युवाओं को पर्यटन से जुड़े किसी कौशल में प्रवीण किया जाए और दूसरे वे कार्यक्रम जो मौजूदा कर्मियों के कौशल का संवर्धन करें ।
- यह समझना होगा कि पारंपरिक स्नातक एवं स्नातकोत्तर लंबे पाठ्यक्रमों की जगह अब कम अवधि के कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों की मांग हो रही है । चूंकि हमारी मानसिकता में अब भी पारंपरिक डिग्रियां हैं अतएव नई संरचना में निर्धारित क्रेडिट के कई छोटे कौशल विकास कार्यक्रम करके हमें उन्हें समतुल्य डिग्री मानना होगा ।
- और उपरोक्त के लिए मंत्रालय को पर्यटन और आतिथ्य कौशल परिषद के साथ मिलकर इन कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करनी होगी तथा उन्हें इसके अनुसार संचालित करना चाहिए।
- कौशल के इन छोटे-छोटे बंडलों का प्रशिक्षण प्राप्त करके कैसे कोई व्यक्ति अपने व्यवसाय में आगे बढेगा इसको व्यवसायगत मानचित्र पर आलेखित करना होगा । इस प्रकार के कुछ आलेख्यपत्र टीएचएससी ने तैयार किए हैं, पर जैसे-जैसे नए कौशलों के प्रशिक्षण की मांग उठेगी, हर नए प्रशिक्षण का ख़ाका तैयार किया जाएगा तथा उन्हें अलेख पत्र पर स्थान देना होगा । मंत्रालय को अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए यह सुनिश्चित करना होगा।
- मंत्रालय को यदि कौशलांतर की मांग को पूरा करना है तो उससे आई. एच. एम. तथा आई. आई. टी. टी. एम. से आगे बढ़कर अन्य विश्वविद्यालय, पॉलिटेक्निक तथा आई टी आई को भी अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल करना होगा।
- मंत्रालय यह भी कर सकता है कि वह एक ऐसा पोर्टल या ऐप तैयार करें जहाँ बड़े से लेकर छोटे तक सभी पर्यटन क्षेत्र से जुड़े व्यवसाय अपनी श्रम-शक्ति ज़रूरतों को पोस्ट कर सकें ताकि प्रशिक्षण संस्थान अपने पंजीकृत प्रशिक्षणार्थियों को वहां संस्तुत कर सकें । कौशलांतर के अतिरिक्त समस्या यह भी है कि एक ओर प्रशिक्षित लोग हैं वहीं सूचना के अभाव में व्यवसायों को उचित लोग नहीं मिल रहे हैं । कम से कम इस दिक्कत को तो दूर करना चाहिए ।

भारत में वन पारिस्थितिकी पर्यटन एवं वन संरक्षण

प्रो. देवेश निगम[1]
डॉ. विनय कुमार नरूला[2]

वन का तात्पर्य उचित ढंग से प्रबंध हुई वनस्पति आच्छादित भूमि अर्थात् पेड़-पौधों के समूह से है जो समस्त जीवों की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। वन का वितरण किसी भी क्षेत्र की स्थिति, जलवायु एवं धरातलीय दशाओं पर निर्भर रहता है। वन प्राकृतिक संसाधन है तथा विभिन्न संसाधनों का संरक्षक होता है, जिससे पारिस्थितिकी संतुलन बना रहता है अर्थात जीवों का वातावरण के साथ परस्पर अंतर्संबंध संतुलित रहता है। वन शब्द का अंग्रेजी पर्याय फारेस्ट है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के फाँरिस शब्द से हुई है, जिसका अर्थ सीमा से बाहर होता है। इसका तात्पर्य यह है कि वन आबादी से दूर का क्षेत्र होता है, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

वृक्षों के समूह का अर्थ वन है। वन पौधों का वह समूह है जिसमें वृक्ष तथा अन्य काष्ठीय वनस्पति प्रधान रूप से हो और साधारणतया वितान बंद हो, जबकि पारिस्थितिकी में विभिन्न जीवों का पर्यावरण के संबंध में किया गया अध्ययन है। पारिस्थितिकी में जीवों के सभी वर्ग को शामिल किया जाता है, किंतु मुख्य भूमिका मानव की होती है। मानव ही एक ऐसा वर्ग है, जिसके हस्तक्षेप से ही वन पारिस्थितिकी असंतुलित अथवा संतुलित होता है। पारिस्थितिकी में सभी जीव वर्ग एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। किसी भी वर्ग के कार्यों में हस्तक्षेप से दूसरे वर्गों पर स्थायी प्रतिक्रिया होती है। पारिस्थितिकी शब्द अंगे्रजी भाषा में परिलॉजी कहलाता है। इसका उद्भव ग्रीक भाषा के शब्द परि का अर्थ घर तथा लोगस का अर्थ अध्ययन से हुआ। परिलॉजी शब्द का प्रारंभिक प्रयोग अर्नस्ट हेकल ने 1869 में किया था। कुछ विद्वानों का मत है कि परिलॉजी शब्द का प्रारंभिक प्रयोग जर्मनी के रिटर ने 1868 में किया था।

पारिस्थितिकी को वनस्पति एवं प्राणियों के संबंध के आधार पर स्व-पारिस्थितिकी तथा सह-पारिस्थितिकी के दो वर्गों में रखा जाता है। स्व-पारिस्थितिकी के अंतर्गत किसी एक जीव या जाति के जीवों तथा वनस्पति का अध्ययन किया जाता है, जबकि सह-पारिस्थितिकी के अंतर्गत जैव समुदाय या किसी विशेष प्रकार के पादप एवं प्राणी का अध्ययन किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र पारिस्थितिकी को जीव वर्गीकरण के आधार पर पांच भागों में विभाजित किया गया है - वन पारिस्थितिकी, कीट पारिस्थितिकी, मत्स्य पारिस्थितिकी, सूक्ष्म जीवीय पारिस्थितिकी तथा शैवाल पारिस्थितिकी।

वन पारिस्थितिकी के अंतर्गत वनों की स्थिति, विस्तार, जीवों का वितरण, अनुकूलन, संख्या, व्यवहार तथा समुदाय का ज्ञान होता है, जो संतुलित पारिस्थितिकी पयर्टन को प्रदर्शित करता है। वन पारिस्थितिकी की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए मानवीय क्रियाकलापों का नियमन और भौतिक तत्वों की मौलिकता को बनाए रखना पारिस्थितिकी विकास कहलाता है। इसमें जीव के जीवन चक्र का अध्ययन किया जाता है, जिसे पारिस्थितिकी तंत्र कहते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र में वनस्पति, उत्पादक सूर्य से ऊर्जा प्राप्त कर प्रकाश संश्लेषण क्रिया से भोज्य श्रृंखला बनाते हैं | इनमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्तर के जीव निर्भर रहते हैं | इसे पारिस्थितिकी तंत्र की गत्यात्मकता कहा जाता है। तात्पर्य पारिस्थितिकी तंत्र में एक समय

[1]. प्रोफेसर, पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी
[2]. पूर्व शोध छात्र, पर्यटन एवं होटल प्रबंधन संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

जो भी जैव एवं अजैव तत्व उपस्थित होते हैं वे अपनी अंतःप्रक्रिया से एक ऐसी कार्यप्रणाली क्रियान्वित करते हैं, जो प्रकृति की जीवंतता को बनाए रखती है।

वन क्षेत्र पर पाए जाने वाले समस्त जीव-जंतु अर्थात् सूक्ष्म से वृहत जीव अपने जीवन-यापन के लिए प्रकृति पर आश्रित होते हैं। जीवों का प्राकृतिक तत्वों के साथ घनिष्ट संबंध होता है। ये एक - दूसरे के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। जीवों के समूह के साथ परस्पर क्रियाशील संघटकों के सकल समुच्चय को पारिस्थितिकी तंत्र कहते हैं। पारिस्थितिकी तंत्र दो शब्दों पारिस्थितिकी और तंत्र के योग से बना है। पारिस्थितिकी का तात्पर्य जैविक एवं अजैविक घटकों का अध्ययन पर्यावरण से है, जबकि तंत्र वस्तुओं तथा जीवों की प्रवृत्ति या विचारों का एक गठित समुच्चय है, जिसमें एक वस्तु का दूसरी वस्तु से अंतःक्रियात्मक, अतः निर्भर संबंधों का अध्ययन है। पारिस्थितिकी तंत्र शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग टेंसले (1935) ने किया । पारिस्थितिकी तंत्र भौतिक तंत्रों का एक विशेष प्रकार होता है इसकी रचना जैव तथा अजैव संघटकों से होती है। यह अपेक्षाकृत स्थिर समस्थिति में होती है। यह खुला तंत्र होता है तथा विभिन्न आकारों एवं प्रकारों का होता है (टेंसले,1935)। पारिस्थितिकी तंत्र का विश्लेषण समय एवं स्थान के संदर्भ में महत्व रखता है। इस तंत्र या व्यवस्था को बनाए रखने के लिए प्रकृति ने ऊर्जा की व्यवस्था की है। यह व्यवस्था चक्रीय रूप से चलती है, जिसमें ऊर्जा एवं पदार्थो का आदान-प्रदान स्वचालित ढंग से बना रहता है।

वन पारिस्थितिकी एवं पर्यटन

भारत वन पारिस्थितिकी की दृष्टि से विश्व का संपन्न देश है। देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 23.47 प्रतिशत भाग वन से आच्छादित है, जो एक संतुलित पारिस्थितिकी का निर्माण करता है। भारत को संतुलित पारिस्थितिकी क्षेत्र के लिए प्रमुख पर्यटन स्थलों में सम्मिलित किया गया है। यहाँ की विभिन्न प्रजातियों के घने तथा ऊँचे-ऊँचे वृक्ष, रंग-बिरंगी लताएँ प्राकृतिक सौंदर्य को निखारते हैं। जिससे प्रति वर्ष हजारों की संख्या में स्थानीय/बाहरी पर्यटक मनोरंजन, शिक्षा के लिए शैक्षणिक, पारिवारिक, संस्थागत भ्रमण करने आते हैं। जिसका प्रभाव वन क्षेत्र के अंतर्गत पाँच किमी. सीमा में रहने वाले लोगों के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर पर पड़ता है।

वन प्रबंधन, वन संरक्षण एवं विकास

प्रबंधन का तात्पर्य विभिन्न वैकल्पिक प्रस्तावों में से उपयुक्त प्रस्ताव का विवेकपूर्ण चयन करना, जिससे अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक उद्देश्यों की पूर्ति कर सकने से है। जबकि वन प्रबंधन का तात्पर्य जनता की सहभागिता एवं सरकारी योजनाओं के अंतर्गत वन क्षेत्रों को सुरक्षित एवं विकसित करने से है। वन की क्षति को नियंत्रित करना ही वन प्रबंधन कहलाता है, जिसे परिभाषित करना अत्यंत जटिल है।

वन का पर्यावरण के साथ अत्यंत घनिष्ठ संबंध होता है। वन ही पर्यावरण का एक ऐसा तत्व है, जो पर्यावरण की गुणवत्ता को बनाकर रखता है, जिसके लिए वन की सुरक्षा, संरक्षण तथा विकास के लिए मुख्यतः निम्नलिखित उपाय आवश्यक हैं -

- वनों का आरक्षित वन, संरक्षित वन, वर्गीकृत वन के रूप में वर्गीकरण किया गया है, जिनमें से संरक्षित वन क्षेत्र पर उचित ध्यान दिया जाता है। जबकि अन्य वर्गो का भी उचित विकास करने के लिए नियंत्रण आवश्यक है।
- राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार प्रत्येक राज्य में वनों का न्यूनतम 33 प्रतिशत क्षेत्र माना जाता है।
- वनों की देखभाल के लिए प्रशिक्षित कर्मचारी होने चाहिए।
- वन शोषण, वनरोपण तथा वन रक्षण के लिए वैज्ञानिक साधन अपनाने चाहिए। इसके लिए वानिकी शिक्षा की आवश्यकता है।

- वन संबंधी अनुसंधान कार्य होने चाहिए।
- वनों को राष्ट्रीय संपत्ति मानते हुए वनों के प्रति नया दृष्टिकोण अपेक्षित हैं। वनों के समन्वित तथा संतुलित विकास के लिए अधिकतम वनोपज, पशुचारण एवं परिवहन व्यवस्था बढ़ाएँ, मरूभूमि नियंत्रण, वन संरक्षण आदि कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने की भी आवश्यकता है।

भारतीय वन अधिनियम 1927

वन अधिनियम का उद्देश्य वन सुरक्षा एवं संरक्षण है। यह अधिनियम भारत के समस्त राज्यों पर अधिकार प्रदान करता है। भारत में वन सुरक्षा के तहत 1927 में अधिनियम बनाया गया, जिसके प्रमुख उद्देश्य में वन संसाधन को सुरक्षित रखना, प्रदूषण से बचाना है, जिससे मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति लंबे समय तक की जा सके।

वन्य जीवों का ह्रास

जब किसी वन क्षेत्र में जीवों की संख्या निरंतर कम होती जाती है उसे जीवों का ह्रास कहा जाता है। जीवों के ह्रास के लिए दो प्रमुख कारक होते हैं :-

1. प्राकृतिक कारक 2. सांस्कृतिक कारक

प्राकृतिक कारक में जलवायु का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है, जिसमें वर्षा, तापमान एवं शीत का आनुपातिक स्तर ही 193 जीवों को विकसित करता है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आवास क्षेत्र भी जीवों के विकास को अनुकूलित रखता है जिससे इनकी संख्या निरंतर बनी रहती है।

इसके अंतर्गत मानव की स्वयं की इच्छानुसार किए गए कार्यों का प्रभाव पड़ता है जिसमें जनसंख्या की वृद्धि तथा मानव की आवश्यकताएँ बढ़ने से वन क्षेत्रों को काटकर कृषि क्षेत्र, परिवहन मार्ग, आवासीय क्षेत्रों का विकास किया गया है। खनिजों का उत्खनन भी कुछ क्षेत्रों से किया जा रहा है जिसका प्रभाव वन्य जीवों पर पड़ रहा है। वर्तमान में वन्य जीवों के खाल, दाँत, हड्डी, बाल, सींग का व्यापार वृहत पैमाने पर किया जाता है जिससे जीवों को अधिक लाभ के लिए मारा जा रहा है। वन ग्रामीणों द्वारा दिनचर्या में भोजन के लिए वन्य जीवों का शिकार करना। केन्द्र सरकार के द्वारा बनाए गए अधिनियमों एवं नियमों का पूर्ण पालन न होने से वन्य प्राणियों को कोई विशेष संरक्षण प्राप्त नहीं हो रहा है।

वन्य जीव संरक्षण एवं प्रबंधन

वन्य जीव संरक्षण यानी दुर्लभ या विलुप्तप्रायः जीव प्रजातियों को प्राकृतिक रहवास, कृत्रिम रहवास को सुरक्षा प्रदान कर उनके अस्तित्व को बचाए रखना है जिससे न सिर्फ जैव विविधता संरक्षण होता है, बल्कि पारिस्थितिक तंत्र का संतुलन बना रहता है, जबकि प्रबंधन तकनीक के चुनाव से पूर्व लक्ष्य प्रजातियों की संख्या के संरक्षण, संवर्धन के लिए प्राकृतिक दशाओं को पहचान कर पूर्ति करना है।

संरक्षण के लिए मुख्यतया निम्नलिखित तथ्यों का अनुसरण आवश्यक है -

- दुर्लभ एवं विलुप्त प्रजातियों के जीवों के शिकार को रोकना तथा उनके वंश की वृद्धि (संवर्धन) करना।
- प्राकृतिक रहवास स्थलों को सुरक्षित रखना।
- प्रत्येक आयु वर्ग के नागरिकों, पर्यटकों के हृदय में वन एवं वन्य प्राणी को प्रतिस्थापित करने के लिए इनके आवास, व्यवहार, विचरण को सहज - सुलभ तरीके से प्रदर्शित किया जाना।

वन्य जीव संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु भारत में राष्ट्रीय उद्यानों तथा अभ्यारण्यों की व्यवस्था की गई है।

राष्ट्रीय उद्यान

प्राकृतिक प्रारक्षण की व्यवस्था के अंतर्गत वन्य प्राणी, वनस्पतियों तथा पक्षियों के संरक्षण एवं विकास के लिए स्थापित वन क्षेत्र राष्ट्रीय उद्यान कहलाता है । राष्ट्रीय उद्यान एक ऐसा वन क्षेत्र होता है, जहाँ पर प्राकृतिक आवासों एवं संसाधनों को संरक्षित रखा जाता है । वन्य प्राणियों की सुरक्षा एवं परिरक्षण अर्थात संकटापन्न प्रजातियों को विलुप्त होने से बचाने का शासन का उचित प्रयास होता है । यहाँ पशुओं को चराने तथा वन्य प्राणी शिकार, वनोपज संग्रहण के लिए पूर्ण पाबंदी होती है । राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना विश्व में सर्वप्रथम संयुक्त राज्य अमेरिका में 1872 में येलोस्टोन नामक राष्ट्रीय उद्यान में की गई है । भारत में सर्वप्रथम 1936 में उत्तर प्रदेश हिमालय के पातलीदून में हैली नेशनल पार्क की स्थापना की गई । इसके बाद 1954 में रामगंगा नेशनल पार्क के नाम से तथा 1957 में जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क के नाम से स्थापित किया गया । भारत में वर्तमान में 88 राष्ट्रीय उद्यान स्थापित किए गए हैं । राष्ट्रीय उद्यान स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य वन्य जीव संरक्षण तथा पारिस्थितिकी पर्यटन के रूप में विकसित करना है ।

अभ्यारण्य या पशुविहार

अभ्यारण्य वह क्षेत्र है, जहाँ पर वन्यप्राणी बिना किसी भय के अपने प्राकृतिक रहवास में विचरण करते हैं । यहाँ शासन द्वारा दी गई पशु चराई एवं वनोपज प्राप्त करने की नियंत्रित अनुमति रहती है । जिसमें सूखी, मरी हुई, पड़ी हुई, गिरी हुई वनोपज के संग्रहण की अनुमति 218 रहवासियों को रहती है । अभ्यारण्य में वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास का संरक्षण प्रमुख उद्देश्य होता है । वन्यजीवों (प्राणी एवं वनस्पति) को सुरक्षा प्रदान करना तथा लुप्त होने वाले जीवों की प्रजाति को बचाना प्रमुख उद्देश्य है । भारत में सर्वप्रथम 1934 में प्राणी एवं वनस्पतियों को संरक्षण देने के लिए अभ्यारण्य या पशुविहार की वैधानिक व्यवस्था की गई । वर्तमान में भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 4.27 प्रतिशत भाग पर 490 अभ्यारण्य की स्थापना की गई है । अभ्यारण्य दो शब्दों (अभय+अरण्य) से मिलकर बना है । अभय का अर्थ भय रहित और अरण्य का अर्थ वन से है । इसलिए अभ्यारण्य का शाब्दिक अर्थ वन्य जीवों की प्राकृतिक एवं सुरक्षित शरण स्थली से है, दूसरे शब्दों में ऐसा वन क्षेत्र जहाँ प्राणी बिना किसी भय के स्वच्छंद विचरण और निवास कर सकते हैं । जहाँ जीवों की संख्या में वृद्धि के प्रयास भी किए जाते हैं ।

संदर्भ

- उपाध्याय, जयजय राम, 2000 पर्यावरण विधि, सेंट्रल लॉ एजेंसी, इलाहाबाद,
- खेलवार, कृष्ण कुमार, 2005 प्रबंध आयोजन, तमोर पिंगला अभ्यारण
- तिवारी, डी. एस., 1989 वन आदिवासी एवं पर्यावरण , शांति प्रकाशन, इलाहाबाद
- तिवारी, विजय कुमार, 2001 पर्यावरण और पारिस्थितिकी, हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, गिरगाँव, मुंबई
- नेगी, पी. एस., 1994 पारिस्थितिकी विकास एवं पर्यावरण भूगोल, केदार नाथ राम नाथ, मेरठ
- Ecotourism for Forest Conservation and Community Development, 1997: FAO. Proceedings of an International Seminar, RECOFTC Report No. 15
- Dwivedi, A.P. 1968 'Forestry in India' Dehradun
- Sharma, P.D., 2003 Ecology and Environment, Rastogi Publications, Meerut, p.17
- Shukla,R.S. and Chandel, P.S., 1972: 'Plant Ecology' S. Chand and Company, New Delhi,
- Raina, A.K. and R.C. Lodha, 2004: 'Fundamentals of Tourism System' Kanishka Publishers, NewDelhi, p.209

पारि-पर्यटन : एक विवेचन

प्रो. बी. आर. बामनिया[1]
डॉ. धर्मेंद्र कुमार[2]

भारत दक्षिण एशिया में एक ऐसा देश है जो विश्व पटल पर पर्यटन के क्षेत्र में शीर्षस्थ 50 देशों की श्रेणी में आता है। भारत में पर्यटन एक बड़ा सेवा उद्योग है तथा राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 6.23 प्रतिशत हिस्सा तथा भारत के कुल रोजगार में 8.78 प्रतिशत योगदान पर्यटन क्षेत्र का है। भारत में वर्ष में लगभग 5 मिलियन विदेशी पर्यटक तथा 562 मिलियन घरेलू पर्यटक भ्रमण करते हैं। पर्यटन सेक्टर, देश के 10 शीर्ष स्थानों में से एक है, जहाँ पर सीधा विदेशी निवेश होता है। पर्यटन आर्थिक, सामाजिक तथा भौतिक विकास का मुख्य भाग बन गया है।

भारत में प्राचीनकाल से ही अतिथियों का सम्मान करने की संस्कृति रही है। अतिथि दे वो भव: इसी के अंतर्गत आता है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, गौरवमयी इतिहास, प्राकृतिक व जैव विविधताएँ, आदि प्रमुख हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

भारत में देश में भौगोलिक विविधता, समृद्ध सभ्यता तथा संस्कृति रही है। यहाँ पर विविधताओं से परिपूर्ण सुंदर समुद्री तट, हिल पर्यटन केंद्र, किले, स्मारक, मेले, त्योहार, कला एवं संस्कृति, वन, वन्यजीव, तथा धार्मिक आस्था के केंद्र है। भारत विश्व में पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध प्राकृतिक धरोहर है, जहाँ पर 65,000 प्राणि प्रजातियाँ (विश्व का 7.6 प्रतिशत) तथा 15000 वनस्पत्तिया (विश्व का 6 प्रतिशत) पाई जाती है। यहाँ पर कान्हा राष्ट्रीय उद्यान (म. प्र.) जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान (उ. प्र.) गिर वन (गुजरात) रणथंभौर (राजस्थान) काजीरंगा (असम) एक सींग वाले गेंडा के लिए तथा बांदीपुर (कर्नाटक) आदि मुख्य वन एवं परि-पर्यटन केंद्र है।

पर्यटन यात्रा में व्यक्ति आत्म आनंद, ज्ञान, संस्कृति एवं कला की जानकारी को लेकर विदेशों में या देश के किसी भाग की ओर गमन करता है। पर्यटक स्वदेश अथवा विदेश के विभिन्न ऐतिहासिक, रमणीक, प्राकृतिक सौंदर्य या सामाजिक परिवेश को जानने तथा आत्मसात करने के लिए पर्यटन करता है।

पारि-पर्यटन

इको पर्यटन, एक पारिस्थितिकी एवं पर्यटन का एक जोड़ है जिसमें पर्यटक प्राकृतिक व जैव विविधापूर्ण वातावरण में आनंद की अनुभूति करता है।

इसमें पर्यटन प्रबंध को प्रकृति संरक्षण के संदर्भ में देखा जाता है। जिसमें पर्यटक की आवश्यकताएँ तथा परिस्थिति के मध्य संतुलन को प्राथमिकता दी जाती है। इसमें स्थानीय समुदाय को रोजगार भी प्राप्त होता है तथा आय का नया स्रोत भी उत्पन्न होता है। पारि-पर्यटन के वैश्विक स्तर पर दो उद्देश्य हैं जो कि जैव विविधता संरक्षण तथा संधारणीय विकास हैं।

[1]. विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
[2]. सहायक निदेशक, तकनीकी एवं शब्दावली आयोग, मानव संसाधन मंत्रालय, नई दिल्ली

पर्यटन क्षेत्र के विकास में पर्यावरण की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति आकर्षण, पर्यटक के भ्रमण के लिए आवश्यक है। प्राकृतिक विविधता तथा सौंदर्य और पर्यटन एक-दूसरे से जुड़े हैं क्योंकि इसी के कारण अनेक देशों के पर्यटक भ्रमण करते हैं। विश्व में इन्हीं प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विरासतों को देखने के लिए पर्यटन की दर में वृद्धि हो रही है।

पारि-पर्यटन स्थानीय समुदाय का जीवन यापन के लिए एक वैकल्पिक साधन है जिसमें मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण विशेष तौर से जैव विविधता आदि है। पर्यटक को पारिस्थितिकी पर्यावरण तथा उसके संरक्षण का लाभ भी प्राप्त होता है। परि-पर्यटन से पर्यटन उद्योग, मध्य व लघु पर्यटन, एन्टरप्राइजेज आदि को लाभ प्राप्त होता है।

भारत की प्राचीन एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रही है। विश्व के विभिन्न देशों के पर्यटक बड़ी संख्या में देश की इसी सांस्कृतिक विरासत को देखने भारत भ्रमण को आते है। देशभर में फैले मठ, मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारे, हिमाच्छादित पर्वत शिखर, गुफाएँ, झरने पर्यटकों का मन मोह लेते हैं तथा विदेशी पर्यटक प्रतिवर्ष प्रकृति के इन अद्‌भुत नजारों को देखने आते हैं। पूर्व में भारत को मात्र एक प्राचीन संस्कृति के धरोहर वाला देश ही माना जाता रहा है, परंतु अब भारत में ऐसे पर्यटन स्थलों के प्रति विदेशी पर्यटकों की रुचि बढ़ रही है।

इसके अतिरिक्त भारत विश्व के उन सात देशों में सम्मिलित है, जिनमें प्रकृति ने सर्वाधिक जैव विविधता प्रदान की है। प्राकृतिक रूप से उपलब्ध भारतीय वन्यजीवों तथा वनस्पतियों की यह अति समृद्ध संपत्ति देश में उपलब्ध है। भारत में वन्यजीव और जंगल की विशालता दुनिया में अद्वितीय है। यह भारत में वन्यजीव पर्यटन के लिए अन्य देशों की अपेक्षा एक बेहतर अवसर उपलब्ध करवाती है। उत्तर भारत में पारि-पर्यटन विकास ने एक रोमांचक चरण में प्रवेश किया है। हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी एक बहुत बड़ा समुद्र तट प्रदान करते हैं। इसकी पारिस्थितिकी को पर्यटन हेतु उपलब्ध करवाने के साथ-साथ पर्यावरण के संरक्षण और स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ लेने के लिए, उपयोग करने की आवश्यकता है। भारत में परि-पर्यटन हाल ही में विकसित हुआ है। भारत स्थलाकृति, प्राकृतिक संसाधनों और जलवायु में भारी विविधता से युक्त है। देश के विभिन्न भागों में स्थित हिमाच्छादित पर्वत शिखर, गुफाएँ, झरने, मैदानी इलाके, सफेद रेतीले समुद्र तट और द्वीप पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। मध्य भारत में कई वन्यजीव अभ्यारण्य हैं जिनमें अनगिनत किस्मों की वनस्पति और जीव हैं। भारत में परि-पर्यटन उद्योग की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता, विशेषकर दूरस्थ और अविकसित क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा करने की अपनी क्षमता है। लोगों के लाभ के लिए प्राकृतिक संसाधनों जैसे प्राकृतिक परिदृश्य, पहाड़ों, जैव-विविधता क्षेत्रों, नदियाँ आदि जैसे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है।

भारत में पारि-पर्यटन एक प्रमुख उद्योग है जो कि पिछले कुछ वर्षों में मुख्य रूप से विकसित हुआ है। पारि-पर्यटन काफी हद तक टिकाऊ पर्यटन या पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन की अवधारणा पर आधारित है। यह अक्सर भारत के पर्यटन स्थलों के मामले में होता है जहाँ पर्यटन के दबाव के चलते नाजुक क्षेत्र के पारिस्थितिकी संतुलन में काफी कमी आई है। इसलिए, देश इस क्षेत्र में नाजुक पर्यावरण-प्रणाली में रुकावट डाले बिना पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए काफी राजस्व उत्पन्न करने की कोशिश कर रहा है। भारत के लिए इस प्रकार का पर्यटन बेहद जरूरी है क्योंकि यह दुनिया के सबसे धनी जैव विविधताओं वाले देशों में से एक है। भारत में दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियाँ हैं। कई वन्यजीव क्षेत्रों और राष्ट्रीय उद्यानों की घोषणा ने वन्यजीव संसाधनों के विकास को प्रोत्साहित किया है। आज, भारत में कई वन्यजीव अभयारण्य और संरक्षण कानून हैं। भारत में कई वनस्पति और प्राणी उद्यान हैं, जो पारिस्थितिक तंत्र की वृद्धि के लिए काम कर रहे हैं। शिकारियों और अवैध व्यापारियों के लिए जानवरों और पेड़ों के संबंध में गंभीर दंड हैं। पालतू तथा वन्य जीवों और वनस्पतियों के संरक्षण एवं अधिकारों के लिए संघर्ष करने हेतु कई गैर सरकारी तथा सरकारी संगठन कार्यरत हैं और कई संगठन और गैर सरकारी संगठन इस क्षेत्र में आगे आ रहे हैं ताकि आम लोगों को पर्यावरण संबंधी शिक्षा प्रदान की जा सके। वास्तव में पारि-पर्यटन टिकाऊ पारिस्थितिकीय विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास है। भारत, अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विविधताओं की भूमि होने के कारण परि-पर्यटन के लिए उत्कृष्ट विकल्प प्रदान करता है।

पर्यटकों के हितों को पूरा करने के लिए भारत की पारिस्थितिकी के क्षेत्र में पर्याप्त क्षमता है। पारि-पर्यटन उद्योग भारत के प्रमुख रोजगार सृजन क्षेत्रों में से एक है और भारत में प्रति वर्ष कुल रोजगार संधारण में से सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से लगभग 3.8 प्रतिशत रोजगार उत्पन्न करता है।

भारत में पारि-पर्यटन उद्योग की संभावना के लिए इन कारकों पर विचार किया जा सकता है :-

विदेशी मुद्रा बढ़ाने के लिए - परि-पर्यटन महत्वपूर्ण उद्योगों में से एक है, इसकी सहायता से हमारा देश विदेशी मुद्रा कमा सकता है। विश्व के कई देशों के निर्यात की तुलना में परि-पर्यटन से आय में उच्च दर से वृद्धि हुई है।

बुनियादी ढांचा सुविधाओं के विकास में सहायता के लिए पारि-पर्यटन उद्योग द्वारा बुनियादी सुविधाओं के विकास और सुधार करके महत्वपूर्ण लाभ प्रदान किया जा सकता है।

संतुलित क्षेत्रीय विकास में मदद करने के लिए - पर्यटन विकास एक देश के अविकसित क्षेत्रों को बहुत लाभ देता है। ये आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में जहाँ प्राकृतिक सुंदरता एवं संसाधन है, जहाँ पर्यटन को उद्योग के रूप में विकसित किया जा सकता है। पारि-पर्यटन, स्थानीय लोगों के लिए बहुत समृद्धि लाने में मदद कर सकता है।

रोजगार सृजन करने में सहायता करने के लिए - पर्यटन उद्योग अत्यधिक श्रमिक गहन सेवा उद्योग है जो होटलों, रेस्तरां, ट्रैवल एजेंसियों, पर्यटन कार्यालयों, दुकानों आदि जैसे क्षेत्रों में अत्यधिक कुशल, अर्द्धकुशल और अकुशल श्रमिकों के लिए रोजगार प्रदान करता है।

पर्यटन के सकारात्मक पहलू

- **राष्ट्रीय आय में वृद्धि-** पर्यटन के कारण राष्ट्रीय आय में विशेषतौर से विकासशील देशों आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। अभी हाल ही के वर्षों में विकासशील देशों की निर्भरता पर्यटन पर बढ़ी है जिसमें भारत, थाइलैंड, मलेशिया, हांगकांग, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार आदि प्रमुख देश शामिल हैं।

- **रोजगार के साधन-** पर्यटन क्षेत्र में सकारात्मक वृद्धि से स्थानीय लोगों की आय का एक मुख्य स्रोत बना है। होटल, स्थानीय यातायात, रेस्टोरेंट, बार गाइड इत्यादि व्यवसाय में पर्यटन से स्थानीय निवासियों को फायदा मिलता है। पर्यटन से देश के किसी स्थान का विकास होता है। वैश्विक स्तर पर अपनी बेहतर पहचान में भी पर्यटन की अहम भूमिका है। सड़कों के निर्माण, रेल विकास, स्थानीय यातायात विकास, मेडिकल सुविधाओं आदि में वृद्धि होती है।

पर्यटन के नकारात्मक पहलू

- **जल प्रदूषण-** पर्यटन में जल से संबंधित गतिविधियों का महत्वपूर्ण स्थान है। पर्यटक गतिविधियों से झीलों, झरनों तथा समुद्री तटों पर ठोस कचरे व प्रदूषित जल से पर्यावरण प्रभावित होता है।

- **वन्यजीव-** पर्यटन से वन्य जीवों के प्राकृतिक आवास नष्ट होते जा रहे हैं। विशेषतौर से पक्षियों तथा बड़े स्तनधारी वन्य जीव ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

- **ठोस कचरा-** अत्यधिक पर्यटक गतिविधि क्षेत्रों में विशेषतौर से नदियाँ, प्राकृतिक सौंदर्य क्षेत्र तथा सड़क के किनारों, झीलों को पर्यटक ठोस कचरा निस्तारित कर पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं।

पारि पर्यटन की महत्ता

- किसी देश के लिए पारि-पर्यटन विदेशी मुद्रा कमाने का एक साधन है।
- पर्यटन से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार उत्पन्न होता है जिसमें होटल व्यवसाय, ट्रैवल एजेंसी, पर्यटन ऑफिस, रेस्टोरेंट्स इत्यादि शामिल हैं।
- पर्यटन से किसी अल्प विकसित देश या उसमें किसी क्षेत्र में विकास की पूरी संभावनाएँ होती है। जिसमें स्थानीय लोगों को उसका पूरा लाभ प्राप्त होता है।
- पर्यटन से अंतरराष्ट्रीय संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ती है तथा किसी देश की कला एवं संस्कृति, प्राकृतिक स्थलों को जानने व समझने का प्रयास होता है।

निष्कर्ष

- व्यापक भौगोलिक और जैविक विविधता को ध्यान में रखते हुए, भारत में पारिस्थितिकी के अवसर बहुत अधिक हैं। यदि उपलब्ध संसाधनों का सफलतापूर्वक उपयोग किया जाए तो हम भारत में पारिस्थितिकी उद्योग का चेहरा बदल सकते हैं। भारत में पारि-पर्यटन विशाल जैव-विविधता की वजह से विकसित हुआ है जो दुनिया में कहीं और मौजूद नहीं है।
- जैव विविधता के लिए अच्छी तरह से प्रबंधित पारिस्थितिकी तंत्र अत्यधिक लाभदायक हो सकता है। कुछ ऐसे कारक हैं जिन्होंने भारत में बहुत अधिक समय तक पारि-पर्यटन को बढ़ावा दिया है हालाँकि, भारत की पूर्ण संसाधन क्षमता का अभी तक सही उपयोग नहीं हो पाया है। अपनी प्रबल क्षमता को देखते हुए परि-पर्यटन उद्योग अपने रोजगार सृजन और विदेशी मुद्रा की कमाई के क्षेत्र में एक विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार को परि-पर्यटन उद्योग की जरूरतों पर तत्काल ध्यान देना चाहिए।

पर्यटन में आवासीय सुविधाएँ

गिरीश नंदानी

एक दोस्ताना अभिवादन, कमरों में रहने का आश्रय, खाने का प्रबंध तथा थके हुए यात्रियों को घर से दूर घर देना ही पर्यटकीय आवासीय सुविधा केंद्रों का प्रमुख उद्देश्य है। पर्यटन, उद्योग का एक विस्तृत रूप है। पर्यटन उद्योग में होटल, परिवहन तथा टूर एवं ट्रैवल एजेंसी सम्मिलित हैं। पर्यटकों द्वारा उपयोग किए आवास को विभिन्न प्रकार से बहुत-सी श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। आवासीय सुविधाओं के स्रोतों का उचित विकास किए बिना राष्ट्र का संपूर्ण सौंदर्य, जलवायु, संपदा एवं मनोविनोद की सुविधाएँ पर्यटक को आकर्षित करने में पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाती हैं। आवासीय सुविधा केंद्रों का उस क्षेत्र के पर्यावरण पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है। ये भवन निर्माण करने, क्षेत्रीय संपदा को प्रदर्शित करने, रोजगार में वृद्धि करने तथा स्थानीय वस्तुओं की खरीदारी में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। आवासीय सुविधा केंद्र समाज के सामुदायिक जीवन में एक महत्वपूर्ण केंद्र भी है।

आतिथ्य उद्योग : पर्यटन-आवास एक ऐसी जगह है जहाँ यात्री अपने घरों से बाहर आकर ठहरते हैं जैसे-होटल, मोटल, पर्यटक बंगले, धर्मशाला, अवकाशकालीन कैंप, नौका गृह आदि। इनमें से कुछ आवासों में तो सिर्फ ठहरने की सुविधा होती है परंतु कई जगहों पर ठहरने के साथ-साथ भोजन, नाश्ता एवं खान-पान की व्यवस्था तथा मनोरंजन की सुविधाएँ भी होती हैं। ये समस्त इकाइयाँ चाहे वे किसी भी नाम से प्रचलित हों या प्रकृति की हों, इनका मुख्य उद्देश्य आवास सुविधाएँ प्रदान करके धन की प्राप्ति करना है। पर्यटन के विकास में होटल उद्योग एक महत्वपूर्ण अंग है। पर्यटक स्थलों पर आवासीय सुविधाएँ होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि दिनभर की यात्रा के पश्चात् शाम को किसी सराय या होटल में आराम करने तथा खान-पान से दिनभर की थकान दूर हो जाती है। औद्योगीकरण की इस दुनिया में आजकल लोगों को व्यापार, व्यवसाय, शिक्षा तथा आनंद प्राप्ति के लिए अत्यधिक यात्रा करनी पड़ती है। अपने घरों से बाहर ठहरने वाले व्यक्तियों की प्राथमिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए जगह-जगह पर आवास की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। पर्यटन को और आगे बढ़ाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि नए-नए होटल खोलने की योजनाएँ आरंभ की जाएँ तथा यात्रियों को हर किस्म की सुविधाएँ प्रदान की जाएँ।

भारत में पौराणिक काल से आतिथ्य सत्कार का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। तैत्तिरीय उपनिषद् से 'अतिथि देवो भवः' उद्धृत है।

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भवः।
पितृदेवो भवः। आचार्यदेवो भवः। अतिथिदेवो भवः।
यान्यनवद्यानि कर्माणि। तानि सेवितव्यानि।
नो इतराणि। यान्यस्मांक सुचरितानि।
तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि।।

अध्यापक, स्कूल ऑफ होटल मैनेजमेंट, बाबू बनारसी दास विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

ISSN 2321-0443

भारत वर्ष में हम अपने अतिथियों को देवतुल्य मानते हैं और अपने सामर्थ्य के अनुसार उनका स्वागत-सत्कार करते हैं। प्राचीन काल में खच्चर, घोड़ा और ऊँट परिवहन के मुख्य साधन थे| यात्रा के दौरान यात्री विभिन्न स्थानों पर धर्मशाला, सराय, चौपाल में आराम करने के लिए रुकते थे। इन आवासीय स्थलों का निर्माण राजाओं, जमींदारों तथा धनाढ्य व्यक्तियों द्वारा कराया जाता था। आतिथ्य उद्योग विश्व की सर्वाधिक पुरानी व्यावसायिक गातिविधियों में से एक है। आतिथ्य उद्योग यात्रा एवं पर्यटन उद्योग का द्वारा अभिन्न अंग है। आधुनिक युग में यात्रा एवं पर्यटन उद्योग द्वारा यात्रियों को परिवहन, आवास, भोजन एवं पेय पदार्थों, मनोरंजक गातिविधियों में शामिल किया जाता है| आतिथ्य उद्योग उन लोगों के लिए सेवाएँ प्रदान करता है जो कि अपने निवास से दूर हैं। सेवाएँ उपयोगकर्ता की आवश्यकता के अनुसार अलग-अलग होती हैं। किसी व्यावसायिक व्यक्ति की जरूरतों की तुलना में पर्यटकों की आवश्यकता भिन्न-भिन्न है। अतः सेवाएँ प्रदान करने से पूर्व प्रदाता को उपभोक्ता की आवश्यकताओं को समझना चाहिए।

"होटल को एक ऐसे स्थान के रूप में परिभाषित किया जाता है जहाँ पर एक प्रामाणिक यात्री भोजन और आश्रय जैसी सुविधा को प्राप्त करने तथा उन सेवाओं के बदले भुगतान करने की स्थिति में हो"। होटल उद्योग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में अस्तित्व में आया था। पुराने समय में 'इनमें' (यात्रियों के रुकने का स्थान) सिर्फ बड़े हॉल होते थे, जहाँ पर यात्री सवारी के लिए प्रयुक्त अपने जानवरों के साथ ही जमीन पर रात्रि में विश्राम किया करते थे। इस प्रकार की स्थितियाँ कई सौ वर्षो तक प्रचलित रहीं| जब तक कि यात्रा के माध्यम में कोई बदलाव नहीं हुआ। सड़कों तथा गाड़ियों के निर्माण में सुधार के कारण यात्रा करने के लिए लोगों की संख्या में वृद्धि होने लगी। यात्रियों की बढ़ती संख्या के लिए आवास और भोजन उपलब्ध कराने के लिए सड़कों के किनारे कई प्रकार के 'इन' स्थापित होने लगे। इस प्रकार जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया 'इन' प्रसिद्ध होने लगे। पूर्व में 'इन' सामान्यतः पति-पत्नी द्वारा चलाए जाते थे, जिसमें वहाँ रहने के साथ-साथ खाने की भी व्यवस्था करते थे। होटल चलाने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि यूरोप के कई देशों, विशेष रूप से फ्रांस और स्विट्जरलैंड में हो रही थी।

'शैले'-छोटी झोपड़ी रूपी होटल स्विस पर्वत पर पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान करते थे। इनको उस क्षेत्र के रईस वर्ग के व्यक्तियों का संरक्षण प्राप्त था। 1760 ई0 के दौरान 'होटल गार्नी' अस्तित्व में आया जो पेरिस में बहुत अधिक प्रचलित हुआ था। यह एक विशाल घर था जो दिन, सप्ताह तथा महीने के आधार पर कमरे उपलब्ध कराता था। इसके आगमन ने उस अवधि में 'इन' द्वारा दी जाने वाली मूलभूत सुविधाओं से अलग आवास प्रदान करने का अधिक विलासितापूर्ण तथा संगठित तरीका दिखाया। 1765 ई0 में ए0 बोउलेगेस द्वारा फ्रांस में प्रथम रेस्टोरेंट खोला गया, जहाँ पर 'मेन्यू' (व्यंजन सूची) के आधार पर भोजन का चयन किया जाता था। 'सिटी होटल' होटल के रूप में विकसित की गई प्रथम इमारत थी, जिसका निर्माण 1749 ई0 में हुआ था। इस प्रकार के कई रेस्टोरेंट प्रचलित हो गए, जहाँ पर लोग सुंदर सजावट वाले कमरों में भोजन के साथ आपसी मेल मिलाप को बढ़ावा देने लगे। 1827 ई0 में स्विट्जरलैंड के प्रवासी 'डेल्मोनिको' भाइयों ने न्यूयार्क शहर में पेस्ट्री शॉप और कैफे खोला था। होटल उद्योग में तेजी 1920 ई0 में आई, जब होटलों की श्रृंखला खोलने की अवधारणा का जन्म 'एल्सवर्थ मिल्टन स्टेटलर' के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ था। वह 'आधी शताब्दी के होटल मैन' के रूप में प्रचलित हुए। उन्होनें "सेवा ही जीवन है" तथा "अतिथि सदैव सही होता है" वक्तव्य दिए थे। यद्यपि 1930 ई0 के दशक में गिरावट के दौरान व्यापार में काफी कमी आई जिसके कारण होटल उद्योग का विकास बहुत अधिक प्रभावित हुआ

था। द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत पश्चात् होटल उद्योग में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई थी। 1950 ई0 के दशक में, मोटल तथा अंतरराष्ट्रीय होटल श्रृंखलाओं वाले होटलों ने कई स्थानों पर स्थित एकल स्वामित्व वाले होटल खरीदे, जिससे कई होटलों का इन अंतरराष्ट्रीय होटलों में विलय हो गया था। इससे बढ़ती प्रतिस्पर्धा से निपटने की उनकी क्षमता में वृद्धि हुई थी।

भारत में होटल व्यवसाय : भारत का ऐतिहासिक अतीत, इसकी सांस्कृतिक विरासत और विविध प्राकृतिक छटा और भूखंड अति प्राचीन काल से यात्रियों को आकर्षित करते रहे हैं। पूर्व में यह किसी उद्योग के तौर पर विकसित नहीं हुआ था, गाँवों में व्यक्तिगत रूप से आतिथ्य की सुविधा उपलब्ध थी। बौद्ध मठों में यात्रियों के रहने तथा खाने की व्यवस्था की जाती थी। चंद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में अतिथि गृहों की स्थापना हुई थी। उस समय के कुछ विश्वविद्यालयों में जैसे तक्षशिला में बौद्ध भिक्षुओं के रहने की व्यवस्था की जाती थी। भारत में सराय, चौपाल, मंदिरों, धर्मशाला तथा चॉल्ट्री जैसी संस्थाओं में यात्रियों को शरण दी जाती रही है। मध्यकालीन युग के दौरान राज्य के अधिकारियों को मार्ग के किनारे स्थित विश्रामालयों में भोजन तथा आश्रय प्रदान करना अनिवार्य था। मोहम्मद तुगलक तथा फिरोजशाह तुगलक ने भारत के उत्तर में कई स्थानों पर मुसाफ़िर खाना तथा सराय खुलवाई थीं। शेरशाह सूरी, अकबर, जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने बहुत – सी सरायों का निर्माण अपने शासनकाल में करवाया था, जिनमें से कुछ प्रमुख सरायें जैसे कि कुतुब सराय, लाडो सराय, सरबन सराय, सराय काले खाँ, अरब की सराय, शेख सराय आदि थीं। भारत में ब्रिटिश हुकुमत का आधिपत्य होने के बाद सराय 'इन' तथा आधुनिक पाश्चात्य शैली के होटल में विकसित होने लगे थे। जिन स्थानों में इनका निर्माण होने लगा उनमें से प्रमुख शहर कोलकाता एवं मुंबई थे। उन प्रमुख होटलों के नाम विक्टरी होटल, अलबियन होटल, होप होटल, मैक फारलेंस होटल आदि थे। पालानजी पैसतोनजी ने 1840 ई0 में मुंबई में पहला विलासितापूर्ण होटल खोला था। ब्रिटिश सरकार ने अपने अफसरों के ठहरने के लिए जगह-जगह डाक बंगलों का निर्माण करवाया था। जे0आर0डी0 टाटा ने 1903 ई0 में 'ताजमहल होटल' का निर्माण मुंबई में किया था। मोहन सिंह ओबराय ने 1949 ई0 में ईस्ट इंडिया होटल लिमिटेड कंपनी की स्थापना की तथा देश-विदेश में अपने कई होटलों का निर्माण कराया था। भारत सरकार ने 1966 ई0 में इंडिया टूरिज्म डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड की स्थापना की जिसने भारत के कई महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों पर होटल खुलवाए थे। आजादी के पश्चात् वैलकम ग्रुप, लीला ग्रुप ऑफ होटल जैसी प्रमुख भारतीय होटल श्रृंखलाएँ होटल व्यवसाय में शामिल होने लगीं।

होटलों का वर्गीकरण : होटलों में अतिथियों की आवश्यकतानुसार रहने का प्रबंध किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह जो होटल में ठहरना चाहता है, उनकी भिन्न-भिन्न माँगें और आवश्यकताएँ होती हैं। कुछ लोग विलासितापूर्ण सुविधा वाले होटलों को प्राथमिकता देते हैं और इसके विपरीत कुछ लोग सस्ते एवं सादगी संजोए होटलों में रहना पसंद करते हैं। किसी को अपने व्यवसाय या किसी विशेष आयोजन हेतु बड़े सुसज्जित हॉल की आवश्यकता होती है। अतिथियों की विभिन्नता को ध्यान में रखते हुए, होटलों के मालिक सभी प्रकार की आवश्यकता एक ही स्थान पर उपलब्ध नहीं करा सकते हैं। होटलों के वर्गीकरण की आवश्यकता एक ही प्रकार के होटलों में अतिथि सेवा की गुणवत्ता तथा समानता बरकरार रहे, जिससे कि उनका संचालन सुगमता से हो सके। अतः होटलों को अतिथियों की आवश्यकतानुसार निम्न श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।

कमरों की संख्या के आधार पर भारत के परिप्रेक्ष्य में होटल में उपलब्ध कमरों की संख्या छोटा - सा उद्यम या एक बड़ी उद्यम इकाई माना जाता है। एक से पच्चीस कमरों से कम संख्या वाले होटल को छोटा-सा उद्यम, छब्बीस से सौ कमरों वाले होटल को मध्यम आकार का उद्यम तथा एक सौ एक से तीन सौ कमरों वाले होटल को बड़ी उद्यम इकाई माना जाता है।

हेरिटेज होटलों का वर्गीकरण : इतिहास में भारतीय विरासत का महत्वपूर्ण योगदान है। हेरिटेज होटल ने महलों और हवेलियों के राजसी गौरव के आकर्षण को संरक्षित रखा है। राजा, महाराजा तथा निजाम के इन शानदार घरों ने लोगों के लिए विलासिता में रहने के लिए अपने दरवाजे खोल दिए हैं। वर्ष 1950 से पूर्व बने हुए महलों/दुर्गों/हवेलियों/शिकार-गृहों को होटलों के रूप में विकसित किया जाए तो उन्हें 'हेरिटेज होटलों' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। पूर्व शाही और कुलीन परिवारों के मकानों को भी इसमें सम्मिलित किया जा सकता है। हेरिटेज होटलों ने सांस्कृतिक पर्यटन के नए आयाम जोड़े हैं। इन होटलों में रुकने वाले पर्यटकों को उस स्थान की सांस्कृतिक विरासत एवं भव्यता का अहसास होता है। हेरिटेज होटलों का निम्नलिखित श्रेणियों में उप-वर्गीकरण किया जाता है : -

हेरिटेज : इस श्रेणी में 1950 ई0 से पहले निवासों/हवेलियों/शिकार-गृहों/दुर्गों/किलों/महलों में चल रहे होटल शामिल होंगे। होटल में कम से कम 5 कमरे (10 शय्या) होने चाहिए। होटल की सामान्य विशेषताएँ और परिवेश, हेरिटेज और वास्तुकला संबंधी विशिष्टताओं की समग्र संकल्पना के अनुरूप होनी चाहिए। होटल को अपने क्षेत्र का पारंपरिक व्यंजन प्रदान करना चाहिए।

हेरिटेज क्लासिक : इस श्रेणी में 1935 ई0 से पहले बने निवासों/हवेलियों/शिकार-गृहों/दुर्गों/ किलों/महलों में चल रहे होटल शामिल होंगे। इस प्रकार के होटल में कम से कम 15 कमरे (30 शय्या) होने चाहिए। होटल की सामान्य विशेषताएँ और परिवेश, हेरिटेज और वास्तुकला संबंधी विशिष्टताओं की समग्र संकल्पना के अनुरूप होनी चाहिए। होटल में स्विमिंग पूल, हेल्थ क्लब, लॉन टेनिस, स्कवेश, राइडिंग, गोल्फ कोर्स आदि खेल सुविधाओं में से कम से कम एक खेल सुविधा होनी चाहिए। होटल में परंपरागत व्यंजन परोसे जाने चाहिए, परंतु उसमें चार से पाँच कांटीनेन्टल व्यंजन अवश्य होने चाहिए।

हेरिटेज ग्रान्ड : इस श्रेणी में 1920 ई0 से पहले बने निवासों/हवेलियों/शिकार-गृहों/दुर्गों/ किलों/महलों में चल रहे होटल शामिल होंगे। इस प्रकार के होटल में कम से कम 15 कमरे (30 शय्या) होने चाहिए। होटल की सामान्य विशेषताएँ और परिवेश, हेरिटेज और वास्तुकला संबंधी विशिष्टताओं की समग्र संकल्पना के अनुरूप होनी चाहिए। तथापि, कमरों सहित सभी सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों की छवि और सजावट उच्च कोटि की होनी चाहिए। कम से कम पचास प्रतिशत कमरे वातानुकूलित होने चाहिए। (पहाड़ी इलाकों को छोड़कर, जहाँ कमरे गर्म करने की सुविधा होनी चाहिए)। होटल में स्विमिंग पूल, हेल्थ क्लब, लॉन टेनिस, स्क्वेश, राइडिंग, गोल्फ कोर्स आदि खेल सुविधा में से कम से कम दो खेल सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए। होटल में परंपरागत और कांटीनेन्टल व्यंजन परोसे जाने चाहिए।

सितारा स्टार श्रेणी के आधार पर होटलों का वर्गीकरण : महानगरों एवं महत्वपूर्ण पर्यटन शहरों के केंद्र में एक सितारा से पाँच सितारा डीलक्स होटल स्थित होते हैं। ये होटल पाश्चात्य पद्धति पर आधारित आधुनिकतम बनावट से बने होते हैं। इस प्रकार के होटलों का वर्गीकरण करने का मुख्य आधार अतिथियों को दी जाने वाली सुविधाएँ तथा सेवाएँ हैं। भारत में होटलों का वर्गीकरण करने का अधिकार केंद्र सरकार द्वारा नामित होटल और रेस्टोरेंट अनुमोदन एवं वर्गीकरण समिति (एचआरएसीसी) को है। इस समिति द्वारा गठित निरीक्षकों की एक टीम होटल का सत्यापन करने के लिए भेजी जाती है जो कि सरकार द्वारा विशेष स्टार श्रेणी के निर्धारित मापदंड के आधार पर पाँच वर्षो के लिए अधिकृत करती है। भारत में वर्तमान होटल वर्गीकरण योजना स्वैच्छिक है।

एक सितारा होटल : एक सितारा होटल, स्वच्छ तथा बिना किसी विलासिता के दिखावे से दूर आवास की सुविधा प्रदान करता है। इस प्रकार की होटल संपत्ति सामान्यतः स्वतंत्र रूप से स्वामित्व वाली होती हैं। एक सितारा होटल सातों दिन पूर्णकालिक संचालित होते हैं। होटल को वस्तु एवं सेवा कर के अंतर्गत आवश्यक व्यापारिक लाइसेंस लेना होता है। होटल में दो मंजिला तल होने पर 24 घंटे लिफ्ट की व्यवस्था होनी चाहिए। एक सितारा होटल में न्यूनतम 10 हवादार कमरे, कुल कमरों के 25 प्रतिशत कमरों में वातानुकूलित या गरम करने की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक कमरे का आकार 120 वर्ग फुट होना चाहिए। एकल अधिग्रहण की स्थिति में कमरे का आकार 20 फुट कम हो सकता है। बैड लिनन में दो चादर, तकिया, तकिया की खोली, कंबल, गद्दे के ऊपर बिछाने वाला कपड़ा आदि होते हैं। कमरे में शय्या (पलंग) के समीप रखी जाने वाली मेज, कुर्सी, खिड़कियों पर पर्दे, तीन फुट लंबाई का शीशा तथा बिजली की बचत करने वाली बत्तियाँ लगी होनी चाहिए। कमरों में 'डू नॉट डिस्टर्ब' नोट का डोर नॉब होना वांछनीय है।

बाथरूम कमरे से जुड़ा होता है, जिसकी नाप 30 वर्ग फुट होती है। एक सितारा होटल में कुल बाथरूम के 25 प्रतिशत बाथरूम में पश्चिमी ढंग का शौचघर, बाथरूम में ठंडा-गरम पानी, टॉयलेट पेपर की सुविधा अवश्य होनी चाहिए। बाथरूम में पानी की बचत करने वाले नल तथा शॉवर लगे होने चाहिए। होटल में अतिथियों के आगमन पर रिसेप्शन की सुविधा, लॉबी में बैठने की सुविधा, लॉबी के निकट पुरुषों एवं महिलाओं के लिए अलग-अलग सार्वजनिक शौचालय की व्यवस्था होनी चाहिए। एक सितारा होटल में एक भोजनालय (रेस्टोरेंट) जहाँ पर सब तरह का भोजन अतिथियों के लिए परोसा जाए। रूम सर्विस की व्यवस्था एक सितारा होटल के लिए बाध्य नहीं है। भोजनालय में क्रॉकरी एवं कटलरी (स्टेनलेस स्टील) का ही प्रयोग करना चाहिए। होटल द्वारा वेक-अप-कॉल की सेवा, डॉक्टर ऑन कॉल की सुविधा, ट्रेवल डेस्क की सुविधा, क्लोज सर्किट टेलीविजन, स्मोक डिटेक्टर, फायर एवं आपात्कालीन अलार्म तथा फायर एक्जिट साइन का होना आवश्यक है। सभी कमरों, बाथरूम तथा होटल में स्थित सार्वजनिक क्षेत्र की प्रतिदिन सफाई होना वांछनीय है। लगेज (अतिथि का सामान) को लॉबी से कमरे तक पहुँचाने एवं लाने की सुविधा अवश्य होनी चाहिए।

दो सितारा होटल : दो सितारा होटल के कमरे में स्थित सिंगल बैड की चौड़ाई 90 सेंटीमीटर तथा डबल बैड की चौड़ाई 180 सेंटीमीटर होनी चाहिए। कमरे से फोन कॉल करने व आने के लिए टेलीफोन की व्यवस्था होनी चाहिए। दो सितारा होटल में उपलब्ध अन्य सभी सुविधाएँ एक सितारा होटल के समान ही होती हैं।

तीन सितारा होटल : होटल में न्यूनतम 10 हवादार कमरे, कुल कमरों का 50 प्रतिशत कमरे वातानुकूलित या गरम करने की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक कमरे का आकार 130 वर्ग फुट होना चाहिए। एकल अधिग्रहण की स्थिति में कमरे का आकार 20 फुट कम हो सकता है। प्रत्येक कमरे में टेलीविज़न, मिनी बार, पढ़ने-लिखने के लिए मेज, स्टेशनरी (पेन, पेंसिल एवं राइटिंग पैड) की सुविधा होनी चाहिए। बाथरूम का नाप 36 वर्ग फुट हो तथा सभी बाथरूम में पूर्णतः पश्चिमी शैली का शौचघर होना चाहिए।

तीन सितारा होटल में बहु - पाकशाला रेस्टोरेंट सह कॉफी शॉप (प्रातः 7 बजे से रात्रि 10 बजे तक) खुला होना चाहिए तथा 24 घंटे रूम सर्विस की व्यवस्था होनी चाहिए। यहाँ अतिथियों की आवश्यकता के अनुसार परिवहन की सुविधा

उपलब्ध कराई जाती है। होटल में वाहनों की पार्किंग सुविधा होना वांछनीय है। होटल द्वारा लैफ्ट लगेज़ की सुविधा उपलब्ध कराना अनिवार्य है। तीन सितारा होटल में उपलब्ध अन्य सभी सुविधाएँ दो सितारा होटल के समान ही होती हैं।

चार सितारा होटल : चार सितारा होटल में न्यूनतम 10 हवादार कमरे, सभी कमरों में वातानुकूलित या गरम करने की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक कमरे का आकार 140 वर्ग फुट होना चाहिए, एकल अधिग्रहण की स्थिति में कमरे का आकार 20 फुट कम हो सकता है। कमरे के अंदर अतिथियों का कीमती सामान रखने के लिए लॉकर की सुविधा वांछनीय है। चार सितारा होटल के कुल कमरों के 10 प्रतिशत कमरों के बाथरूम में बाथटब होना वांछनीय है। बाथरूम में शौचघर की सीट के निकट भी फोन की सुविधा होनी चाहिए। इन होटलों में एक बहु-पाकशाला रेस्टोरेंट, एक स्पेशलिटी रेस्टोरेंट (जो कि शराब परोसे या शराब न परोसे), एक बार (मधुशाला) तथा 24 घंटे रूम सर्विस की व्यवस्था होना अनिवार्य है। सुरक्षा की दृष्टि से होटलों में मेटल डिटेक्टर, चार पहिया वाहनों के नीचे देखने वाले स्कैनर्स होटल के प्रवेश के निकट स्थापित होने चाहिए। चार सितारा होटल में बिजनेस सेंटर होने चाहिए। चार सितारा होटल में उपलब्ध अन्य सभी सुविधाएँ तीन सितारा होटल के समान ही होती हैं।

पाँच सितारा/पाँच सितारा डीलक्स होटल : पाँच सितारा होटल में कुल कमरों का 25 प्रतिशत कमरों के बाथरूम में बाथटब होना वांछनीय है। होटल में स्वीमिंग पूल तथा सभाकक्ष की सुविधा होनी जरूरी है। अतिथि के सामानों को जाँचने के लिए एक्स-रे मशीन की व्यवस्था होनी चाहिए। पाँच सितारा डीलक्स होटल में कुल कमरों के 50 प्रतिशत कमरों के बाथरूम में बाथटब होना अनिवार्य है। सभी एक सितारा से पाँच सितारा डीलक्स होटलों में पर्यावरण अनुकूल कार्यप्रणाली, मलजल (सीवेज) उपचार संयंत्र, वर्षा जल संचयन तंत्र, कचरा प्रबंधन तथा हवा, जल एवं बिजली के लिए प्रदूषण नियंत्रण प्रणाली का होना अनिवार्य किया गया है।

होटल में भिन्न रूप से सक्षम अतिथियों के लिए कुल कमरों में से एक कमरा अवश्य होना चाहिए, उस कमरे का दरवाजा एक मीटर चौड़ा हो जिससे कि कमरे में व्हीलचेयर प्रवेश कर सके, कमरे में कम ऊँचाई का फर्नीचर, अलमारी, अलार्म सिस्टम तथा दरवाजे में घंटी अवश्य होनी चाहिए। बाथरूम के दरवाजे की न्यूनतम चौड़ाई 90 सेंटीमीटर हो जिससे कि बाथरूम में व्हीलचेयर प्रवेश कर सके। होटल में अलग से भिन्न रूप से सक्षम व्यक्तियों के लिए सार्वजनिक शौचालय की व्यवस्था हो। होटल के प्रवेश द्वार तक पहुँचने के लिए ढ़ाल की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक होटल में व्हीलचेयर की व्यवस्था होना अनिवार्य है। **प्रत्येक सितारा होटल को सुरक्षित एवं मान्य पर्यटन के लिए आचार संहिता तथा उसके संकल्प का प्रदर्शन करना 01 जुलाई 2010 से अनिवार्य किया गया है।**

अन्य प्रकार के होटल : यात्रियों द्वारा प्रयोग किए गए आवासों को विभिन्न प्रकार से बाँटा जा सकता है:-

रिसॉर्ट होटल : अतिथि द्वारा होटल का चुनाव करने में उस होटल की भौगोलिक स्थिति का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह होटल प्रकृति के समीप आकर्षित स्थलों जैसे हिल स्टेशन, समुद्र-तट, द्वीप पर स्थित होते हैं। यहाँ पर लोग दिन-प्रतिदिन की भाग दौड़ से दूर प्रकृति की छटा का आनंद लेने के लिए आते हैं। रिसॉर्ट में लोगों की संख्या छुट्टियों के समय तथा सप्ताहांत बिताने के समय अधिक होती है। रिसॉर्ट में कमरे का किराया अत्यधिक मांग के सीजन तथा छूट के

सीजन के आधार पर निर्धारित होता है। रिसॉर्ट में रहने के दौरान अतिथि ग्रीष्म तथा शीतकालीन खेलों, गोल्फ, स्पा, आयुर्वेद संबंधी उपचार की सुविधा प्राप्त कर सकते हैं।

विमानपत्तन होटल : यह होटल विमानपत्तन की सीमा के निकट स्थित होते हैं। इन होटलों में अधिकतर विमान यात्री ही रुकते हैं जिन्हें अपनी यात्रा के दौरान दूसरे हवाई जहाज में जाने के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इन होटलों में यात्री कम समय के लिए रुकते हैं इसलिए उन्हें ऐसे आरामदायक वातावरण वाले कमरे दिए जाते हैं जहाँ पर वह अपनी यात्रा की थकान को दूर कर सकें। होटल द्वारा विमानपत्तन से होटल तथा होटल से विमानपत्तन जाने की सुविधा प्रदान की जाती है। इन होटलों में 24 घंटे कॉफ़ी शॉप तथा खाने की व्यवस्था उपलब्ध होती है।

मोटल : मोटल, मोटर होटल का निर्माण मोटर चालकों की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। ऑटोमोबाइल उद्योग के विकास के कारण विकसित देशों में लंबी दूरी की यात्रा करने वाले लोगों को मार्गो के समीप रहने की सुविधा प्रदान की जाती थी जिसमें निःशुल्क पार्किंग, गैरेज तथा फिलिंग स्टेशन आदि सुविधाएँ सम्मिलित थी। मोटल शब्द 'मोटर' व 'होटल' से मिलकर बना है। 1900 ई0 में, 'टूरिस्ट केबिन' नामित प्रथम मोटल संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी राज्य में ड्राइवरों के लिए स्थापित किया गया था। व्यापक सड़क नेटवर्क ने लोगों को अपने स्वयं के वाहनों में यात्रा करने के लिए प्रेरित किया। मोटल में सस्ती दरों में सड़कों द्वारा यात्रा करने वाले यात्रियों को आवास की सुविधा उपलब्ध कराई जाती थी।

भारत में होटल और रेस्टोरेंट अनुमोदन एवं वर्गीकरण समिति (एचआरएसीसी) द्वारा मोटल परियोजना की स्वीकृति पाँच वर्षों के लिए मान्य होती है। सर्वप्रथम मोटल संस्था को वस्तु एवं सेवा कर के अंतर्गत व्यापारिक लाइसेंस प्राप्त करना होता है। मोटल के लिए न्यूनतम एक हेक्टेयर का भूखंड, भूखंड में प्रवेश और निकास के लिए उपयोग किए जाने वाले मार्ग की न्यूनतम चौड़ाई नौ मीटर होनी चाहिए। मोटल में 24 घंटे रिसेप्शन, रूम सर्विस, एक मल्टी-व्यंजन रेस्टोरेंट सह कॉफ़ी शॉप, बार (मधुशाला), शॉपिंग सेंटर, बैंकवट हॉल, हेल्थ क्लब तथा स्विमिंग पूल, कमरे के सम्मुख कार एंव बस कोच को खड़ा करने का स्थान या भूमिगत पार्किंग की व्यवस्था होनी चाहिए। मोटल में पर्यावरण के अनुकूल कार्यों का निष्पादन, मलजल उपचार संयंत्र, कचरा प्रबंधन तथा वर्षा के जल का संचयन होना चाहिए। मोटल सप्ताह में सातों दिन (24x7) पूर्णकालिक संचालित होना चाहिए। दो मंजिलों से अधिक ऊँची इमारतों में चौबीस घंटे लिफ्ट की सुविधा होनी चाहिए।

मोटल में न्यूनतम 10 हवादार कमरे, प्रत्येक का आकार 120 वर्ग फुट, 36 वर्ग फुट का बाथरूम, 50 प्रतिशत कमरे वातानुकूलित होने चाहिए। मोटल में कमरों की कुल संख्या में से कम से कम एक कमरा भिन्न रूप से सक्षम अतिथि के लिए अवश्य होना चाहिए। इस कमरे में दरवाजे की चौड़ाई न्यूनतम एक मीटर हो जिससे कि व्हीलचेयर आसानी से प्रवेश कर सके। प्रवेश द्वार के समीप रैंप (ढाल) अवश्य हो, जिससे कि मोटल में व्हीलचेयर प्रवेश कर सके। मोटल में ड्राइवरों के विश्राम करने के लिए न्यूनतम छह शय्या की डोरमैटरी होनी चाहिए।

डाउनटाऊन होटल : इस प्रकार के होटल शहर के सरकारी एवं निजी कार्यालयों, शॉपिंग काम्प्लेक्स, सिनेमा हॉल, मनोरंजन के केंद्रों तथा वाणिज्य संस्थानों के निकट स्थित होते हैं। इन होटलों का किराया अन्य होटलों की अपेक्षा अधिक होता है। होटलों में समागम हॉल, रेस्टोरेंट तथा बार (मधुशाला) की सुविधा होती है। कंपनियों के कार्यकारी अधिकारी, व्यापारिक पेशेवर तथा संस्थाओं के प्रतिनिधि इन होटलों में ज्यादातर रुकते हैं। आजकल इन होटलों में अतिथियों की सुविधा को ध्यान में रखकर फूड कोर्ट, सिनेमा हॉल तथा शॉपिंग कॉम्प्लेक्स एक छत के नीचे उपलब्ध कराए जाते हैं।

कैसिनो होटल : इस प्रकार के होटल ऐश्वर्य, खर्चीले शौक और जुआ खेलने वाले अतिथियों/ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए स्थापित किए जाते हैं। विभिन्न प्रकार की शराब के दौर दिन-रात चलते रहते हैं और अतिथि खाते - पीते नशे में नाच-गाना करते दिखाई देते है। कैसिनो होटल में अन्य लक्जरी होटल के समान ही सारी सुविधाएँ होती हैं। इन होटलों में बैठकें, प्रोत्साहन, सम्मेलन और प्रदर्शनियाँ (एमआईसीई) आयोजित की जाती है। गोवा में कुछ होटल कैसिनो होटल के तौर पर प्रसिद्धि हैं।

वाणिज्यिक होटल : इस प्रकार के होटल शहरों के बीचों-बीच स्थित होते हैं, जहाँ पर व्यावसायिक गतिविधियों में सम्मिलित अतिथियों की आवाजाही अत्यधिक रहती है। यहाँ उनकी सुविधानुसार कमरे, स्वीमिंग पूल, हेल्थ सेंटर, बिजनेस सेंटर तथा मीटिंग के आयोजन की व्यवस्था होती है। इन होटलों में अन्य होटलों के मुकाबले अधिक सुविधाएँ अतिथियों को उपलब्ध कराई जाती हैं। कार्य दिवसों के दौरान अतिथि इन होटलों में रुकते हैं क्योंकि उन्हें सरकारी अधिकारियों, व्यापारियों तथा उच्च पदाधिकारियों से मंत्रणा करनी होती है।

बेड एंड ब्रेकफास्ट/होम स्टे इकाईयाँ : 'बेड एंड ब्रेकफास्ट' एक यूरोपियन सोच है जहाँ पर लोग अपने घर के कुछ कमरे अतिथियों के लिए आरक्षित रखते थे और उनके लिए रात गुजारने एवं सुबह का नाश्ता उपलब्ध कराने का प्रबंध करते थे। भारत में विदेशी एवं घरेलू पर्यटकों को घर जैसे वातावरण में रहने, विशुद्ध भारतीय व्यंजनों का स्वाद लेने तथा भारतीय रिवाजों एवं परंपराओं का अनुभव लेने के लिए भारतीय परिवार के साथ रहने का अवसर बेड एंड ब्रेकफ़ास्ट/होम स्टे (बीएंडबी) इकाईयों के रूप में दिया जा रहा है। सुविधाओं तथा सेवाओं की गुणवत्ता के आधार पर सिल्वर एवं गोल्ड बेड एंड ब्रेकफास्ट/होम स्टे इकाईयों का वर्गीकरण किया जाता है। किराए पर देने के लिए न्यूनतम एक कमरा और अधिकतम छह कमरे (12 शय्या) हों। सभी कमरे स्वच्छ, हवादार, कीटरहित, बिना सीलन और वेन्टीलेशन के साथ होने चाहिए।

युवा होस्टल : युवा होस्टलों में शिक्षा, साहसिक कार्यों तथा मनोरंजन के लिए यात्रा करने वाले युवाओं को कम दाम पर आवास की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। युवाओं के लिए विशाल शयनागार, नहाने की व्यवस्था तथा जलपान की सुविधा होती है। इन होस्टलों में अधिक-से-अधिक युवा समूहों का स्वागत किया जाता रहा है जो कि शरदकालीन क्रीड़ाएँ, पर्वतारोहण, तैराकी, अनुसंधान आदि उद्देश्यों के लिए भ्रमण करते हैं। युवा होस्टल का आगमन सर्वप्रथम जर्मनी में 1900 ई0 में हुआ। शिक्षा के सिद्धांत पर आधारित यहाँ एक आंदोलन प्रारंभ हुआ जिनमें कि युवाओं को देश के शहरों की पदयात्रा की आवश्यकता पर बल दिया। यंग मैन क्रिश्यिन एसोसिएशन (वाईएमसीए) तथा यंग वूमेन क्रिश्यिन एसोसिएशन (वाईडब्लूसीए) संस्थाओं के द्वारा युवा होस्टल संचालित किए जाते हैं। भारतीय यंग मैन क्रिश्यिन एसोसिएशन (वाईएमसीए) की राष्ट्रीय परिषद द्वारा संपूर्ण भारत में वर्ष 2016 तक छप्पन होस्टलों को संचालित किया जा रहा है।

धर्मशाला : प्राचीन काल से मानव की यात्रा का मुख्य उद्देश्य धार्मिक स्थलों में जाकर भगवान की पूजा अर्चना करना था। धर्मशाला दो शब्दों से मिलकर बना है 'धर्म' तथा 'शाला' जिसका अर्थ है धर्म का निवास स्थान। धार्मिक स्थलों जैसे वाराणसी, मदुरै, हरिद्वार, ऋषिकेश, अमरकंटक एवं उज्जैन में आज भी तीर्थयात्री अधिक से अधिक उपलब्ध धर्मशालाओं में ही रुकते हैं। इन धर्मशालाओं में अनेक संख्या में यात्रियों के ठहरने, निःशुल्क सात्विक भोजन एवं शुद्ध जल की व्यवस्था उपलब्ध होती है। ये संस्थाएँ चैरिटेबल ट्रस्ट के अंतर्गत पंजीकृत एवं संचालित होती है जिनमें कई धनाढ्य व्यक्ति चंदा देते हैं। इन धर्मशालाओं में विशाल शयनागार, कमरे तथा रसोईघर स्थापित होते हैं। इन धर्मशालाओं के परिसर में

मंदिर होता है, जहाँ पर नित्य पूजा-अर्चना का संचालन किया जाता है। भारतवर्ष में कई स्थलों पर धर्मशाला द्वारा ही अतिथियों को आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, जहाँ पर अन्य कोई आवासीय सुविधा ही उपलब्ध नहीं है।

राजकीय निवास गृह : ब्रिटिश शासनकाल के दौरान ब्रिटिश अधिकारियों एवं प्रशासकों के रुकने के लिए निर्जन स्थानों पर डाक बंगले, सर्किट हाऊस, वन विश्रामगृह एवं लोक निर्माण विभाग के निरीक्षण गृह स्थापित किए गए थे। आज के समय में यह राजकीय निवास गृह राज्य सरकारों के अधीन संचालित होते हैं, जहाँ पर रुकने का अधिकार यात्रियों को समुचित अनुमति के बाद ही दिया जाता है। इन राजकीय गृहों में बड़े हवादार आरामदायक कमरे, पाकशाला, भोजन कक्ष तथा बाग बगीचे होते हैं। इन राजकीय गृहों में अधीक्षक तथ खानसामा अतिथियों की सेवा के लिए नियुक्त होते हैं।

मानव सभ्यता की यात्रा के इतिहास में पर्यटन उद्योग एक महान मील का पत्थर साबित हुआ है। यात्रा, मानव जाति के ही समान पौराणिक है। प्राचीन काल से मानव जाति आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक कारणों से यात्रा करती रही। यात्रा के दौरान आवासीय सुविधाओं की आवश्यकताओं ने आतिथ्य उद्योग की नींव डाली। आवासीय सुविधाओं के बिना पर्यटन उद्योग का विकास संभव नहीं हैं। होटल, पर्यटन उत्पाद का एक महत्वपूर्ण घटक है। होटलों द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं और सेवाओं के मानकों के आधार पर अतिथि अपने ठहरने को सुखद या दुखद घोषित करता है। आवासीय सुविधाएँ अनेक प्रकार की हैं जो कि आकार, स्थान, अतिथि की आवश्यकताओं के अनुरूप तथा सेवाओं के स्तर के आधार पर निर्धारित की जाती हैं। भारतवर्ष में हेरिटेज एवं स्टार श्रेणी के होटलों का निर्धारण सरकार द्वारा किया जाता है, जिससे विदेशों से आने वाले पर्यटकों को उचित तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर की आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकें। भारतीय पर्यटन आँकड़े, 2015 प्रदर्शित करते हैं कि भारत में कुल स्वीकृत होटलों की संख्या 1394 तथा 81,011 कमरों की उपलब्धता 31 दिसंबर, 2015 तक थी। विश्व पर्यटक आगमन में भारत का चालीसवाँ स्थान है। जिस प्रकार से पर्यटन का स्वरूप बदला है, आवासीय सुविधाओं को दिन-प्रतिदिन अंतरराष्ट्रीय मानकों और स्पर्धाओं का सामना करना पड़ता रहा है। हेरिटेज होटल विदेशी पर्यटकों को भारतीय विरासत को खोजने, उसे जानने तथा उसमें मंत्रमुग्ध हो जाने का अवसर प्रदान करता है। विस्तृत अर्थ में आवासीय सुविधाओं का पर्यटन उद्योग में एक महत्वपूर्ण स्थान है।

संदर्भ

- तिवारी, जे. आर., 2016: 'होटल फ्रंट ऑफिस : ऑपरेशन एण्ड मैनेजमेंट', द्वितीय संस्करण, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
- एन्ड्रयू, एस., 2013: ' होटल फ्रंट ऑफिस- ए ट्रेनिंग मैन्युल', मैकग्रा हिल एजुकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
- भटनागर, एस. के., 2002: 'फ्रंट ऑफिस मैनेजमेंट', फ्रेंक ब्रदर्स एंड कंपनी, नई दिल्ली।
- सर्वानंदा, एस., 1921: 'तैत्तिरीयोपनिषद', द रामकृष्ण मठ, मद्रास।
- नेगी, जे. , 1992: 'पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
- पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार : 'भारतीय पर्यटन आँकड़े एक झलक' 2015, नई दिल्ली।

आध्यात्मिक पर्यटन से ग्रामीण विकास में मीडिया का योगदान

राघवेंद्र दीक्षित

कभी अमेरिका के विश्व प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार मार्क ट्वेन ने कहा था कि "स्वर्ग भी थोड़े समय बाद उबाऊ बन जाता है। स्तरीय जिंदगी बिताने के लिए बदलाव बेहद जरूरी है और पर्यटन इसका साधन है।" जबकि डा. जेभिडिड्न पर्यटन को व्यक्ति के विश्राम से जोड़ते हुए उसकी ज्ञान संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम बताते हैं। टूरिज्म सोसाइटी ऑफ ब्रिटेन के अनुसार पर्यटन की परिभाषा – "अपने निवास-स्थान से दूरस्थ स्थानों की अस्थायी और अल्पकालिक यात्रा है, जहाँ लोग तरह-तरह के क्रियाकलापों द्वारा मनोरंजन करते हैं।" इस संबंध में विश्व पर्यटन संगठन की परिभाषा पर्यटन का मानकीकरण करते हुए बताती है कि "पर्यटन 'व्यक्तियों की सावकाश, कारोबार या अन्य प्रायोजनों से एक वर्ष से कम अवधि के लिए उनके सामान्य परिवेश से अलग किसी स्थान की यात्रा या ठहराव से संबंधित क्रियाकलाप है।"

आध्यात्मिक पर्यटन स्थल से तात्पर्य किसी धर्म या धार्मिक व्यक्ति से संबंधित स्थल नही होता बल्कि ऐसा स्थल जहाँ व्यक्ति अपनी आंतरिक चेतना के विकास की प्राप्ति करता है और इसका अनुसरण करने वालों को किसी विशेष धर्म से जुड़ा होना जरूरी नहीं है। इस दृष्टि से गौर करने पर पता चलेगा कि विश्व में अनेक ऐसे पर्यटन स्थल हैं जहाँ कुछ समय गुजारने पर व्यक्ति की चेतना का परिष्कार होने लगता है और उसमें लोक कल्याण के भाव की तरंगें जाग्रत होने लगती हैं। ऐसी भाव तंरगों का मानस पटल पर प्रभाव डालने का रहस्य है उस क्षेत्र में महापुरूषों, संतों या फकीरों द्वारा की गई तप - साधना एवं लोकमंगल की कामना से छोड़ी गई घनीभूत तरंगें ।

विकास एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी देश के उपलब्ध संसाधनों की उत्पादकता और उपयोग की दर में सुधार किया जाता है, जिससे उस देश की राष्ट्रीय आय तथा समुदाय के आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है।

परिभाषा के रूप मे विकास वह परिवर्तन है, जिससे कोई समाज सामाजिक प्रगति को प्राप्त करने में सफल होता है। संक्षेप में विकास सामाजिक प्रगति का एक साधन है।

इन्वर्ट के अनुसार "विकास का वास्तविक अर्थ तकनीकी या राष्ट्रीय उत्पादकता में वृद्धि नहीं है बल्कि ज्ञान एवं चेतना के उस विकास से है, जिसके द्वारा वह सहभागी बनता हैः मैन, मशीन, मनी और मीडिया ये चार आधारभूत तत्व हैं जिन पर विकास निर्भर रहता है।

ग्रामीण विकास प्रक्रिया के साथ-साथ एक अम्ब्रेला टर्म है जिसके अंतर्गत कृषि विकास, आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति की बुनियादी रूपरेखा, भूमिहीनों के लिए उचित मजबूती, आवास के लिए भूमि, जन स्वास्थ्य, शिक्षा तथा साक्षरता आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। भारत जैसे अन्य विकासशील देशों के लिए देश को आगे बढ़ाने के लिए मुख्य एजेंडा ग्रामीण विकास होना चाहिए, क्योंकि इन देशों की अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। इसी कारण आज़ादी के बाद भारत ने ग्रामीण विकास को अपने सरकारी विकास कार्यक्रमों में बहुत महत्व दिया है।

जी पार्थसारथी ने ग्रामीण विकास का तात्पर्य "निर्धनों के प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधनों के अनुकूलतम प्रयोग से उनके जीवन स्तर में सुधार" से माना है। इस हेतु पूंजी एवं तकनीक का अच्छा उपयोग व गरीबों की सक्रिय भागीदारी

शोधार्थी, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म.प्र.)

आवश्यक है।'' जबकि अंतरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (आईबीआरडी) अर्थात् विश्व बैंक के अनुसार ग्रामीण विकास लोगों के एक विशिष्ट समूह के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन में सुधार लाने के लिए अपनाई गई व्यूह-रचना है। इस व्यूह-रचना में लघु कृषकों, काश्तकारों और भूमिहीन कृषकों के समूह को शामिल किया जाता है।

आज जब चारों ओर समावेशी विकास की बात की जा रही है तो ऐसे में ज्यादा उत्पादन, ज्यादा निर्यात की संकल्पना से विकास की परिभाषा गढ़ने वालों ने अब मान लिया है कि समावेशी विकास और सतत् विकास से ही विश्व आगे बढ़ेगा। 21 वीं सदी ज्यों - ज्यों आगे बढ़ेगी, पावर अर्थात् ऊर्जा, पर्यावरण, पर्यटन और इससे तीसरी पी अर्थात प्रोग्रेस हासिल की जा सकेगी।

संचार समस्त प्रक्रियाओं का आधार है चाहे वह आधुनिक हो या विकसित समाज हो अथवा जनजातीय समाज। संचार का तकनीकी विकास जनमाध्यमों की सेवाओं के जरिए संरचनात्मक एवं क्रियात्मक परिवर्तन लाता है। इसका अस्तित्व आधुनिक समाज का अति विशिष्ट गुण है। समाज के सदस्यों में सूचनाओं का वितरण परिवर्तन, आधुनिकीकरण और राष्ट्र विकास हेतु जनमत तैयार करने में सहयोग करता है। विकास और संचार एक- दूसरे के पूरक हैं।

आज जब संचार साधनों के कारण पूरा विश्व ग्राम 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित हो गया है तो ऐसे में 'इन्वर्ट' ने विकास के लिए चार जरूरी बातों का उल्लेख किया अर्थात मैन, मशीन, मनी और मीडिया। यह तथ्य निकलकर सामने आता है कि किसी देश के विकास के लिए वहाँ का मानव संसाधन, तकनीक, पूँजी और उस देश में संचार माध्यमों की स्थिति महत्वपूर्ण है । यहाँ संचार माध्यमों से आशय समाचारपत्र, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट पर आधारित मीडिया, सोशल मीडिया हैं।

आध्यात्मिक पर्यटन : एक वैश्विक गतिविधि

इतिहास गवाह है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था ग्लोबल विलेज बनने से पूर्व पर्यटन का प्रोटोटाईप रूप यात्रा का रहा है। वास्कोडिगामा, कोलम्बस सहित कितने ही नाविकों द्वारा कई देशों की खोज इस बात की साक्षी है। जब से मानव ने समाज में रहना सीखा उससे भी पहले से उसने प्राकृतिक शक्तियों से भयभीत रहने के कारण उनकी उपासना करना शुरू दिया। जिससे उन शक्तियों का वरदान उसके आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध हो। किंतु समय ज्यों-ज्यों बीता, विज्ञान और महापुरुषों ने मानव को उसके जीवन की उपयोगिता से परिचित कराया। इससे समाज में जागरूकता आई, नवजागरण - प्रक्रिया शुरू हुई। इस प्रकार हम कह सकते हैं एक ओर मानव था जो जंगलों में खानाबदोशों का जीवन जीता था किंतु बाद में पत्थरों के हथियार, अग्नि, पहिए, लोहे आदि से परिचित होने के बाद उसका जागरण शुरू हुआ। नवजागरण महापुरुषों और विज्ञान के आने के बाद शुरू हुआ।

वर्तमान में पर्यटन एक ऐसी आर्थिक गतिविधि का यथार्थ है, जिसने सुदूर छोटे ग्रामीण कस्बों से लेकर बड़े शहरों, राजधानियों, तटीय स्थलों, पर्वतों सहित पूरे विश्व तक अपनी पहुँच बना ली है। पर्यटन विश्व के बड़े उद्योगों में से एक है। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था में न केवल हर वर्ष खरबों डॉलर का योगदान देता है बल्कि बड़ी संख्या में रोजगार, धन, निर्यात्, कर संग्रह तथा पूँजी का निवेश भी करता है। पूरे विश्व में 25 करोड़ से ज्यादा रोजगार सृजन का कार्य सिर्फ पर्यटन और उससे जुड़े सेक्टर करते हैं और यह रोजगार न केवल पर्यटन से जुड़े लोगों के जीवन में खुशहाली और उन्नति लाते हैं बल्कि उनके परिवारों, बड़े समुदायों को भी मुस्कराने का मौका देते हैं। आज ज्यादातर लोगों ने यात्रा खर्चों के माध्यम से पर्यटन उद्योग में वृद्धि (ग्रोथ) का योगदान दिया है। जब इस उद्योग की देखभाल नैतिक रूप से जिम्मेदारी पूर्वक निभाई जाएगी तो पर्यटन उद्योग सामाजिक और आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत पिछड़े और निर्धन समुदायों का रूपांतरण उनको सशक्त करने में एक उत्प्रेरक की तरह अपनी भूमिका निभा सकता है। ऐसे कई छोटे टापुओं में स्थित देश हैं जिनके स्थानीय लोगों की कमाई का प्रमुख स्रोत पर्यटन ही है। मॉलदीव, मारीशस, वेस्टइंडीज इसके उदाहरण हैं। नई वैश्विक राजनीतिक व्यवस्था में पर्यटन

अंतरराष्ट्रीय संबंधों, व्यवसायों और सांस्कृतिक विचार, आदान – प्रदान, सहमति और सहयोग का जरिया बन रहा है। पर्यटन देशों की जी.डी.पी में वृद्धि का कारक बन रहा है। पिछले डेढ़ दशक से लोगों के रहन - सहन, जीवन स्तर की उन्नति ने यात्रा और पर्यटन की मांग में तेजी से इज़ाफा किया है और इससे हुई समृद्धि ने हवाई यात्रा को वहनीय बना दिया है। विश्व पर्यटन संगठन (यू.एन.डब्लू.टी.ओ) के अनुसार 1990 के बाद से वैश्विक आवाजाही लगभग दुगनी हो गई है। 90 के पहले जहाँ ये आँकड़ा 435 मिलियन था, वहीं सन् 2000 में यह 675 मिलियन हो गया जो 2010 तक 935 मिलियन से ज्यादा हो गया।

ग्रामीण विकास और आध्यात्मिक पर्यटन

भारत को गाँवों का देश कहा जाता है। महात्मा गाँधी के शब्दों में कहें तो "देश के विकास की कुंजी ग्रामीण भारत में है। देश का तभी विकास हो सकेगा जब गाँवों को आत्मनिर्भर बनाया जाएगा।" भारत जैसे धार्मिक देश में आध्यात्मिक पर्यटन से ग्रामीण विकास की परिकल्पना काफी वास्तविक है। आज जब कृषि करना काफी महंगा हो गया है और यह मुनाफे का सौदा नहीं रहा है तो पर्यटन उस ग्रामीण अर्थव्यस्था को मजबूत करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

पर्यटन से अर्थव्यस्था को मिलने वाले लाभ

रोजगार

अध्ययन बताता है कि वैश्विक स्तर पर पर्यटन से 2000 से 2010 तक लगभग 8 प्रतिशत रोजगार बढ़ा और यदि इस आँकड़े को नौकरियों में बदलें तो यह संख्या 70 लाख के करीब बैठेगी। विश्व में इस उद्योग में होने वाली वृद्धि का दो-तिहाई से ज्यादा हिस्सा एशिया महाद्वीप से आता है। इस उद्योग में जिन जगहों पर यह तेजी से ग्रोथ हो रही है वे स्थान हैं मिडिल ईस्ट, उत्तरी अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देश। इनमें यूनाईटेड अरब अमीरात के दुबई, अबूधाबी जैसे बड़े पर्यटन स्थलों को लिया जा सकता है।

विमानन उद्योग

पर्यटन को विकसित करने से देश में विमानन उद्योग में काफी मजबूती मिल सकती है। अभी भारत में ज्यादातर लोग रेलगाड़ी और बस से या़त्रा करते हैं। क्योंकि उसके कारण हैं। देश में परिवहन के लिए बुनियादी ढ़ांचा बन रहा है और केंद्रीय उड्डयन मंत्रालय तथा केंद्रीय परिवहन मंत्रालय जिस गंभीरता से कार्य कर रहे हैं। उससे लगता है कि आने वाले कुछ वर्षों में ही ये समस्याएँ बीते कल की बातें होंगी। पर्यटन के विकास से पहले अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उड़ानों को व्यवस्थित और सुविधाजनक बनाने से विदेशी इस ओर आकृष्ट होंगे। रोजगार और क्रय क्षमता बढ़ने से नागरिक घरेलू स्तर पर हवाई यात्रा करना पसंद करेंगे। हवाई यात्रा अभी मंहगी है लेकिन आने वाले वर्षों में जैसे-जैसे विमानन उद्योग का विस्तार होगा, हवाई सफ़र लोगों की जेब पर भारी नहीं पड़ेगा।

भूतल परिवहन

सौभाग्य से देश में सड़कों का जाल बिछा है और इस दिशा में कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है कि सुदूरवर्ती इलाकों और देव स्थलों को न केवल राष्ट्रीय राजमार्गों से जोड़ा जाए बल्कि आध्यात्मिक पर्यटन स्थलों तक सड़कें सीधे दर्शनार्थियों को पहुँचा सकें । सरकार जितना भूतल परिवहन को उन्नत बनाती जाएगी, रोजगार के साधन बढ़ते जाएंगे। यह कार्य प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनो रूपों में होता है।

होटल उद्योग

पर्यटन अतिथि सत्कार से शुरू होता है, जनसंपर्क के आपसी सद्विश्वास पर टिकता है तथा खुशनुमा यादों को वापस ले जाने के बाद खत्म नहीं, जारी रहता है। भारत में रेस्तरां और होटल उद्योग कई वर्गों में बंटा है। एक होटल वे हैं जो प्रीमियर कैटेगरी अर्थात पाँच या सात सितारा में आते हैं, दूसरे जो नामचीन हैं लेकिन वे ब्रांड की अवधारणा के करीब नहीं हैं

और तीसरे ठेठ देहाती ढाबे। भारत में खान-पान और भोजन की सेवा असंगठित है। इस क्षेत्र में काफी संभावनाएँ हैं। यदि क्षेत्र विशेष की रणनीति को ध्यान में रखकर कुशल रसोइये तैयार किए जाएँ तो वह अलग देशों से आए पर्यटकों को केवल अपने देश की माटी का अहसास करा सकेंगे बल्कि कॉन्टिनेन्टल नेल्टल और इंटर कॉन्टिनेन्टल व्यंजनों से उन्हें लुभा भी सकेंगे।

भारत में आध्यात्मिक पर्यटन

भारत विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों का एक गुलदस्ता है। देश में हिंदू, बौद्ध, जैन, सिक्ख़, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी रहते हैं । यह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि सनातम धर्म सबसे प्राचीन है, बल्कि सनातन का अर्थ ही है शाश्वत अर्थात हमेशा बना रहने वाला।

भारत प्राचीन काल से समृद्ध संस्कृति एवं विरासत को अपने में समेटे रहा है। यहाँ अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं । भारत की इसी धरती पर भगवान राम, भगवान कृष्ण, महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध सहित अनगिनत ऋषि - महात्माओं, मुनियों, संतों और महापुरुषों का जन्म हुआ।

पहले ऋषि - मुनि एक स्थान पर रहकर हर जगह ज्ञान पाने और उसे दूसरों तक पहुँचाने के लिए भ्रमण करते रहते थे। महर्षि वेद व्यास, नारद मुनि, परशुराम जी का जीवन उदाहरण है। इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन 'वसुधैव कुटंबकम्' के लिए समर्पित किया। हमारे भगवान श्री राम जी ने अपने चौदह वर्षों के वनवास में यात्राएँ कीं और भगवान कृष्ण का पूरा जीवन ही यात्रामय रहा। महात्मा बुद्ध ने भिक्षुक रूप भ्रमण करके पूरे विश्व में अपने विचारों को पहुँचाया । सम्राट अशोक का काल, भ्रमण करके धर्म के प्रचार के लिए जाना जाता है। उसी समय से धर्मयात्रा शुरू हुईं। लुंबिनी, बोधगया, कुशीनगर स्थान इसके साक्षी रहे। बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर कई यात्रियों ने भारत की यात्राएँ कीं ।

भारत में अरब आक्रमण से देश की धार्मिक आस्था को चोट पहुँचाई गई थी। बाद में बर्बर मुगल आक्रमणकारियों और अंग्रेजों ने जन-जन की धार्मिक भावना को खंडित करने का कार्य किया। किंतु 11वीं सदी में भारत में आचार्य शंकराचार्य ने पूरे भारत का भ्रमण करके धार्मिक आस्था को चार पीठों की स्थापना करके देश को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य किया। शायद आधुनिक काल में केदारनाथ, बद्रीनाथ, पुरी और श्रंगेरी में शंकराचार्य द्वारा स्थापित पीठों को भारत में आध्यात्मिक पर्यटन स्थल कह सकते हैं। फिर कबीर, नानक, सूरदास, तुलसीदास के भक्ति आंदोलन से पूरे भारत की आस्था सशक्त हुई। हिंदू धर्म में व्याप्त कुरीतियों और रूढ़िवादी परंपराओं को कुंद करने के लिए हमारे मनीषियों ने धार्मिक जटिलताओं के प्रतिरूपों को सरल रूप में रखने के लिए सुधारवादी आंदोलन छेड़ा। इसके प्रचार-प्रसार के लिए वह विदेशों में भी गए। स्वामी विवेकानंद, परमहंस योगानंद जी, स्वामी रामतीर्थ ने धर्म की व्याख्या नए सरल रूप में की जिससे धर्म और आम इंसान के बीच की दूरी खत्म हुई।

भारत ने हमेशा विश्व के दूसरे धर्मों में होने वाले प्रयोगों से कुछ न कुछ सीखा, वहाँ से आए यात्रियों के अनुभवों को अपनाया जिससे हमने अपने धर्म को कट्टरता और अंधविश्वास की बजाय एकता, विश्व बंधुत्व, भ्रातृत्व की सोच के साथ गले लगाया।

भारत में आध्यात्मिक पर्यटन की श्रेणियाँ

भारत में धार्मिक पर्यटन की तीन श्रेणियाँ हैं ।

- भारत के वे लोग जो अनिवासी भारतीय हैं। जिनके पूर्वज भारत में रहते थे और वे अपनी जड़ों को सींचने के लिए अपने धर्मस्थलों की यात्रा करते हैं और अपनी माटी से जुड़ाव के कारण पूर्वजों के स्थल भी जाते हैं ।
- बौद्ध धर्म अनुयायी जब एशिया में प्रचार कर रहे थे तो उस समय वहाँ के कई लोगों ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। दक्षिण पूर्वी एशिया के बौद्धानुयायी अपने धर्मगुरु के दर्शन करने के लिए आते हैं।

- ऐसे अमेरिकी और यूरोपीय जिनमें ब्रिटेन, फ़्रांस, जर्मनी, इटली के लोग हैं जो या तो भारतीय दर्शन, अध्यात्म से प्रभावित हैं या उनकी रुचि बौ़द्ध, सिक्ख धर्मों में है, वे अध्ययन के लिए जाते हैं।

अध्यात्म और मीडिया से पर्यटन को बढ़ावा

- सोशल मीडिया की अति सक्रियता ने आपसी संबंधों की दीवारें तोड़ी हैं और संवादों के पुल से सहमति और समझदारी के स्तरों पर लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। मीडिया के प्रचार-प्रसार ने नए समाज बनाए हैं और उन्हें जागरूक किया है। लोग सिर्फ अपने धर्म से ही नहीं बल्कि अन्य धर्मों के बारे में मीडिया से अवगत हो रहे हैं। लिहाजा दिलचस्पी बढ़ने से वे उन धर्मस्थलों को भी देखना, जानना चाहते हैं जिनसे वे जुड़े नहीं हैं।
- मीडिया के द्वारा दुनिया जेब में आ गई है। अर्थात अपने मोबाईल से पल भर में व्यक्ति सुदूर देश की जानकारी को कहीं पर कभी भी हासिल कर सकता है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में कहीं घूमने जाने से पहले ही वहाँ के भोगोलिक क्षेत्रफल, यात्रा में खर्च की जानकारी, होटल, स्थानीय परिवहन आदि समस्त सुविधाओं की जानकारियाँ पल भर में पाई जा सकती हैं।
- अध्यात्म और योग लोगों को जोड़ने का काम करते हैं। इस दर्शन को मीडिया प्रचारित करता है और उस प्रचार के धरातली रूप से लोगों को रू–ब-रू कराने का कार्य पर्यटन करता है।
- विदेशों में रहने वाले अनिवासी लोगों को अपने धर्म से संबंधित सभी महापुरुषों और धर्म गुरुओं के चित्र और प्रतीकों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।
- पर्यटन संस्थाएँ अपने टूर ऑपरेटर्स से प्रचार-प्रसार सामग्रियों को उपलब्ध कराएँ जिससे उनका प्रचार सुदूरवर्ती इलाकों में हो सके।
- मानसरोवर यात्रा, अमरनाथ यात्रा, माँ वैष्णों देवी की यात्रा, काँवड़ियों की यात्रा, बद्रीनाथ - केदारनाथ चारधाम यात्रा आदि ऐसी अनेक यात्राएँ हैं जिनके बारे में अनिवासी भारतीय और विदेशियों को उसके आध्यात्मिक और वैज्ञानिक पहलुओं की जानकारी देकर उन्हें भी इसके लिए तैयार किया जा सकता है। प्रेरणा देने का काम मीडिया भी कर सकता है।

भारत के आध्यात्मिक पर्यटन स्थल

(1.) काशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, (2.) हरिद्वार, उत्तराचंल, (3.) तिरुपति बालाजी मंदिर, आंध्र प्रदेश, (4.) अक्षर धाम मंदिर, गांधीनगर, गुजरात, (5.) अमरनाथ गुफा, पहलगाम, जम्मू-कश्मीर, (6.) सोमनाथ मंदिर, गुजरात, (7.) वैष्णों देवी मंदिर, जम्मू, जम्मू-कश्मीर, (8.) कैलाश मंदिर, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, (9.) सूर्य मंदिर, कोणार्क, ओड़िसा, (10.) चिदंबरम मंदिर, चिदंबरम, तमिलनाडु, (11.) महाबलीपुरम् मंदिर, तमिलनाडु, (12.) रामेश्वरम मंदिर, तमिलनाडु, (13.) मीनाक्षी मंदिर, तमिलनाडु, (14.) बैद्यनाथ मंदिर, उत्तरांचल, (15.) बद्रीनाथ का मंदिर, केदारनाथ का मंदिर, उत्तरांचल, (16.) नैना देवी मंदिर बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश, (17.) सबरीमाला मंदिर, केरल, (18.) पद्मनाभ स्वामी मंदिर, त्रिवेंद्रम, केरल, (19.) जगन्नाथ पुरी मंदिर, पुरी, ओडिसा, (20.) कालीघाट मंदिर, कोलकाता, पं. बंगाल, (21.) स्वर्ण मंदिर, अमृतसर, पंजाब और (22.) सारनाथ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

पर्यटन को बढ़ावा देने में सरकारी प्रयास

पूर्व पर्यटन मंत्री महेश शर्मा कहते हैं कि अध्यात्म भी पर्यटन की एक ताकत है। वे कहते हैं कि धर्म और पर्यटन का साथ खिचड़ी और घी जैसा है। वेटिकन सिटी और हज के लिए मक्का-मदीना से प्रभावित होकर धार्मिक स्थलों पर सफाई और मूलभूत सुविधाएँ देने की हामी वर्तमान सरकार ने भरी है।

पर्यटन विभाग ने धार्मिक स्मारकों में सफ़ाई और आम सुविधाओं के लिए 'स्वच्छ स्मारक' 'स्वच्छ पर्यटक' नाम से एक मुहिम शुरू की है जिसके अंतर्गत 25 प्रसिद्ध स्मारक चुने गए हैं। भारत का हिस्सा विश्व पर्यटन में एक प्रतिशत से भी कम है तो ऐसे में पर्यटन में सरकारी प्रयास के साथ-साथ आम जनभागीदारी से भी रास्ता निकल सकता है।

- देश को हर वर्ष पर्यटन से लगभग एक लाख 23 हजार करोड़ की विदेशी मुद्रा मिलती है, जो देश के 6.8 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का हिस्सा है।
- विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए सरकार ने 150 देशों में ई-वीज़ा शुरू करने का फैसला लिया है। इन्क्रेडिबल इंडिया हेल्पलाइन भी सरकार ने शुरू की है।

प्रमुख बिंदु

- सरकार ने जिन क्षेत्रों को आध्यात्मिक पर्यटन के लिए चुना है उनमें कृष्णा सर्किट, रामायण सर्किट, सूफी सर्किट और जैन सर्किट शामिल हैं।
- सरकार पर्यटन मंत्रालय द्वारा 5 विशेष पर्यटन क्षेत्रों, जिन्हें विशेष प्रयोजन वाहन के रूप में प्रस्तुत किया गया है को राज्यों के साथ भागीदारी करके स्थापित किया जाएगा।
- अंतरराष्ट्रीय यात्रा बाज़ार में भारत की छवि को निखारने के लिए आने वाले वित्तीय वर्षों में विश्व भर में **अतुल्य भारत अभियान** चलाया जाएगा।
- सरकार ने 100 करोड़ रुपये का आवंटन तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्धन ड्राइव (Pilgrimage Rejuvenation and Spiritual Augmentation- PRSAD) हेतु किया है।
- 13 शहरों को पर्यटन मंत्रालय के अंतर्गत विकास के लिए चिन्हित किया गया है। इन शहरों में अजमेर, अमृतसर, अमरावती, द्वारिका, गया, कामाख्या, कांचीपुरम, केदारनाथ, मथुरा, पटना, पुरी, वाराणसी और वेलान्कानी हैं।
- इसके अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण कदमों में जैव शौचालयों की शुरुआत करके सुरक्षा और स्वच्छता पर जोर देना शामिल है, जिससे यात्रियों की सुविधाओं में वृद्धि होगी।

आध्यामिक पर्यटन की चुनौतियाँ

- वर्तमान में आतंकवाद पर्यटन के लिए सबसे बड़ी चुनौती है जिससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। शायद इसीलिए सुरक्षा सरकार के एजेंडे में सबसे प्रमुखता में है।
- कुशल कामगार और कुशल मानव संसाधन पर्यटन को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इसलिए अकुशल और असंगठित लोग पर्यटन उद्योग के लिए चुनौती हैं ।
- अंतरराष्ट्रीय अंशाति और अस्थिर राजनीतिक व्यवस्था इस उद्योग की बड़ी चुनौतियों में से एक है। पड़ोसियों से दोस्ताना व्यवहार और संतुलित विदेश नीति इस समस्या का निराकरण हो सकता है।
- पर्यटन से होने वाली कमाई मौसमी होती है। इससे जुड़ा मानव संसाधन खाली समय निराशा में गुजारता है।
- जून 2016 में केदारनाथ बारिश ने तबाही मचाई जिससे लोगों की कमाई का एक मात्र जरिया आध्यात्मिक पर्यटन कुछ समय के लिए बंद हो गया। जिससे स्थानीय लोगों को भारी विपत्ति का सामना करना पड़ा।
- स्थानीय स्तर पर विदेशियों के साथ होने वाले अपराधों की समस्या से निबटने के लिए सरकार को पर्यटन टास्क फोर्स का गठन करना चाहिए, जिससे विदेशियों और देशी पर्यटकों को सुरक्षा का अहसास दिलाया जा सके।

संदर्भ

- सहाय, शिवस्वरूप (2005) ; पर्यटन सिद्धांत और प्रबंधन तथा भारत में पर्यटन ; पृ. सं. 120
- व्यास, राजेश कुमार, (2009) ; भारत में पर्यटन ; पृ. सं. 12
- श्राम, विल्बर (1961) ; मास मीडिया एंड नेशनल डेवलपमेंट ;; पृ. सं. 59
- तिवारी, रूपसी सिंह (कुरूक्षेत्र, अक्टूबर 2003); परंपरागत संचार माध्यम : ग्रामीण विकास में भूमिका और प्रासंगिकता ; पृ. सं. 24
- जैन, एस. सी एवं अग्रवाल, अनुपम (1999) ; विकास का अर्थशास्त्र एवं नियोजन ; पृ. सं. 02
- http://www.drishtiias.com/hindi/current-affairs/five-special-zones-to-boost-tourism-travel-in-country
- http://tourism.gov.in/hi/स्थलों.और.सर्किट.के.लिए.उत्पाद.इंफ्रास्ट्रक्चर.डेवलपमेंट.
- Blog http://navneetkumar.jagranjunction.com/2016/11/05/देश.की.प्रकृति.को.
- http://www.bbc.com/hindi/india/2015/09/150922_spiritual_tourism_mahesh_sharma_sr
- https://incredibleindia.org/

भारतीय सांस्कृतिक पर्यटन की शिक्षा

डॉ. राजेश कुमार व्यास

बगैर किसी उत्पादन के आय देने वाला और बड़ी संख्या मे रोजगार प्रदान करने में सक्षम पर्यटन आज विश्व का तीव्र गति से आगे बढने वाला प्रमुख उद्योग है। अधिकांश विकसित राष्ट्रों ने इंटरनेट को टूरनेट के रूप में परिवर्तित करके पर्यटन के इस बढते महत्व को ध्यान में रखते हुए ही अपनी अर्थव्यवस्था की प्राथमिकता में इस उद्योग को सम्मिलित किया है। यह विडंबना ही है कि विश्व पर्यटन के बढ़ते कारोबार के बावजूद हमारे देश में पर्यटक आगमन 0.68 प्रतिशत ही है। प्रभावी प्रबंधन के तहत देश के अल्प ज्ञात परंतु असीमित संभावनाओ वाले पर्यटन स्थलों की पहचान कर वहाँ पर्यटन की शुरूआत करने, समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के प्रभावी विपणन, यहाँ आने वाले पर्यटकों को सम्मानजनक वातावरण प्रदान करने आदि के साथ ही जरूरत इस बात की भी है कि पर्यटन शिक्षा का जो ढाँचा हमारे यहाँ बना हुआ है, उसमें आमूलचूल परिवर्तन के प्रयास किए जाएँ।

कुछ समय पहले पर्यटन शिक्षा पर केंद्रित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में जाना हुआ था। पर भाग लेकर घोर अचरज और मन कुछ खिन्न हुआ, जब वहाँ आए पर्यटन विशेषज्ञों से संवाद में पर्यटन की हमारी संस्कृति को नदारद पाया। सभी इस बात के लिए तो चिंतित थे कि पर्यटन में भारत का हिस्सा कैसे बढ़े परंतु इस बात के लिए वहाँ कहीं कोई चिंता नहीं थी कि पर्यटन की हमारी जड़ों से नई पीढ़ी धीरे-धीरे विलग होती जा रही है। संगोष्ठी में होटल और क्राफ्ट इन्स्टीट्यूट्स के जरिए रोजगार जनन, पर्यटन विकास के केरल मॉडल और पर्यटन उद्योग से जुड़ी समस्याओं पर तो बहुत से सत्रों में चर्चाएँ हुईं परंतु पर्यटन की संस्कृति पर तमाम जन मौन थे। संगोष्ठी मे पढ़े गए शोध पत्रों की गुणवत्ता पर न भी जाऊँ तो यह कहने में कोई संकोच नहीं हो रहा है कि देशभर में पर्यटन की शिक्षा देने वाले संस्थानों से जुड़े शिक्षक और शोधार्थियों ने वहाँ अपने जो विचार रखे, उनमें पर्यटन से जुड़ा नवीनतम शोध, विचार और चिंतन कहीं नहीं था। सब कुछ एक बंधी-बंधाई परंपरा और ढर्रे पर था। कंप्यूटर पर आँकड़ों का बेहतरीन साज-सज्जा से प्रदर्शन किया गया परंतु वही सब कुछ जो पहले किया जा चुका है या फिर जिससे कोई निष्कर्ष निकलकर सामने नहीं आ सकता था। वह क्षण और भी दुखद था जब महापंडित राहुल सांकृत्यायन, इब्ने बतूता, कृष्णनाथ का नाम इन पंक्तियों के लेखक ने लिए तो जिज्ञासा इस बात को लेकर व्यक्त की गई कि इनके बारे में भी कुछ बताया जाएँ स्वाभाविक ही था कि मेरे पास अब कहने को और कुछ बाकी नहीं रह गया था। पर्यटन शिक्षा से जुड़े विश्वविद्यालयी शिक्षकों का यह हाल है तो समझा जा सकता है, बाकी का तो क्या हाल होगा! यह सच है, हमारे यहाँ पर्यटन शिक्षा का तो पिछले कुछ वर्षों में तेजी से विकास हुआ है परंतु उस शिक्षा में पर्यटन की संस्कृति को दरकिनार किया गया है।

बहरहाल, यह किसी एक विश्वविद्यालय का सच नहीं है। देशभर में पर्यटन शिक्षण संस्थानों में जाना होता है, कमोबेस सभी जगह यही हाल है। और इसका कारण पर्यटन की हमारी शिक्षा के मूल सरोकार हैं। वहाँ पर अभी भी जो कुछ पढ़ाया जाता है, वह पश्चिमी आवश्यकताओं आधारित है। इसका भी बड़ा कारण यह है कि जो कुछ पुस्तकें उपलब्ध हैं, वे अधिकतर विदेशी लेखकों की पुस्तकों की नकल सरीखी हैं। इसीलिए वहाँ भारतीय परिवेश और संस्कृति का हिस्सा या तो नदारद है या फिर है भी तो उसमें गहराई नहीं है। पर्यटन की शिक्षा इसीलिए हमारे यहाँ पुल और पुस फेक्टर से आगे नहीं बढ पाई है।

3/39, गांधी नगर, न्याय पथ, जयपुर, राजस्थान-302015

अभी बहुत समय नहीं हुआ, खजुराहो डांस फेस्टिवल में कलाओं के अंतर्संबंधों पर व्याख्यान के लिए मध्यप्रदेश सरकार के संस्कृति मंत्रालय के आमंत्रण पर जाना हुआ था। व्याख्यान के दौरान वहीं पर जब स्थानीय लोगों से चर्चा हुई तो एक बड़ा सच यह भी सामने आया कि खजुराहो विश्वभर से पर्यटकों का पसंदीदा केंद्र है परंतु इसके साथ ही अब यह सेक्स पर्यटन का भी बड़ा केंद्र बनता जा रहा है। एक एनजीओ के अधिकारी ने तो बाकायदा एक पुस्तक तक इस सर्वे की भेंट की कि पिछले कुछ समय के दौरान बच्चों के यौन उत्पीड़न में खजुराहो विश्वभर में तेजी से उभरा है। खजुराहो ही क्यों, जैसलमेर, पुष्कर और ऐसे ही दूसरे स्थानों पर भी पर्यटन का प्रदूषण तेजी से फैला है। पर्यटन शोध पत्रों में क्या इसका कहीं कोई स्थान आता है? सांस्कृतिक दृष्टि से भी विचारें तो पर्यटन में शोध के बहुत से आधार हैं। आजादी के बाद पर्यटन संस्कृति में जो बदलाव आए हैं। घरेलू पर्यटन के साथ धार्मिक पर्यटन के जो आंकड़े हैं उन पर जांएगे तो यह भी पाएँगे कि विश्वभर में सर्वाधिक धार्मिक पर्यटक हिंदुस्तान में होता है। वह भी पूर्ण व्यवस्थित और स्वंयप्रेरित। महाकुंभ बड़ा इसका और उदाहरण क्या होगा! और भी विषय है, उन पर यहाँ लिखना प्रारंभ करूंगा तो अंत का कोई सिरा पकड़ में नहीं आएगा। इसलिए इसे यहीं विराम देता हूं।

यह सच है, विश्वभर में पर्यटन विदेशी मुद्रा प्राप्ति और रोजगार जनन का बड़ा आधार है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में बात करें तो यह भी कहा जा सकता है कि जितनी विविधता पर्यटन की हमारे यहाँ है उतनी और कहीं नही। पर विडंबना यह भी है कि विश्व पर्यटन में भारतीय पर्यटन का हिस्सा बढ़ाने पर तो हर ओर जोर है परंतु पर्यटन शिक्षा में तीर्थाटन से हुए पर्यटन विकास की हमारी संस्कृति गौण है। और गौण वह अतीत का सच भी है, जिससे नई पीढ़ी लगभग महरूम है। पिछले महीने ही ग्वालियर स्थित भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान में आयोजित पर्यटन लेखन की एक कार्यशाला में बोलने के लिए जाना हुआ था। वहाँ के निदेशक मित्र संदीप कुलश्रेष्ठ ने तभी ग्वालियर से कोई 40-50 किलोमीटर दूर मितावली, गढ़ी पढ़ावली और बटेश्वर मंदिर समूह के बारे में बताया। वहाँ गया तो पता चला हम जिसे भारतीय संसद को वास्तुकार लुटियन्स की रचना मान रहे हैं मूलतः वह मितालवी के चौंसठ योगिनी शिव मंदिर का हूबहू प्रतिरूप है जबकि इसे पुर्तगाली वास्तु से जोड़ा जा रहा है। हालांकि पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार ने इस पर ध्यान दिया है परंतु विडंबना यह भी है कि मितालवी आम पर्यटकों की पहुँच से अभी भी बहुत दूर है।

मितालवी से थोड़ी ही दूर बटेश्वर मंदिर समूह भी हैं। बटेश्वर मंदिर समूह कभी जमींदोज थे। पुरातत्व विज्ञानी के.के. मुहम्मद ने इन मंदिरों के अतीत को ढूँढा। पता चला, डाकुओं से घिरे उस क्षेत्र में अव्वल तो कोई वहाँ पहुँच नहीं सकता था और यदि पहुँच जाए तो जमीन के अंदर मंदिरों के अवशेषों के सहारे उन्हें तलाशना आसान नहीं था। पर मुहम्मद के जुनून ने यह संभव कर दिखाया। गुर्जर प्रतिहार राजाओं द्वारा 8 वीं से 10 वीं शताब्दी में बने शिल्प समृद्ध इन मंदिरों के पुरा-पर्यटन महत्व को भी पर्यटन शिक्षा में सम्मिलित किया जाए और इस दृष्टि से पर्यटन विकास के लिए कार्य किया जाए तो क्या बहुत कुछ बेहतरीन पर्यटन विकास में नहीं हो सकता?

बहरहाल, मितावली और बटेश्वर मंदिर समूह तो उदाहरण मात्र है। ऐसे बहुत से और संस्कृति से जुड़े स्थल है, जिनके बारे में बहुत अधिक जानकारियाँ नहीं हैं। राजस्थान में कांकवाड़ी दुर्ग, सिंहगढ़, मांडलगढ़, सिवाना, बयाना के किलों, झालावाड़ की बौद्ध गुफाएं, खजुराहो की मानिंद बने नीलकंठ मंदिर और वहाँ की पुरासंपदा, जालौर की परमारकालीन वास्तु समृद्ध संस्कृत पाठशाला, धौलपुर, बांसवाड़ा के मंदिर शिल्प और प्राकृतिक परिवेश आदि पर भी आम पर्यटक कहां पहुँच पाता है! पर्यटकीय दीठ से ऐसे और भी बहुत से अनछुए स्थलों पर विचारा जाए तो बहुत कुछ पर्यटन का नया राजस्थान उभरकर सामने आएगा। पर इसके लिए सांस्कृतिक सोच से कार्य करने की भी जरूरत है। मेरी चिंता यह भी है कि

हम पर्यटन विकास का नारा तो देते हैं परंतु सांस्कृतिक दृष्टि से पर्यटन को संपन्न करने का काम नहीं के बराबर कर रहे हैं। इसीलिए बहुत से अल्पज्ञात स्थानों के इतिहास, वहाँ की संस्कृति से हम निरंतर महरूम भी हो रहे हैं। पर्यटन शिक्षा में इस संदर्भ में ध्यान देते हुए कार्य किया जाए तो बहुत कुछ महत्वपूर्ण हासिल किया जा सकता है।

मेरा यह व्यक्तिगत मानना है कि आज भी विश्वभर में भारतीय पर्यटन का कहीं कोई मुकाबला नहीं है। भारतीय संस्कृति पर्यटन से ओतप्रोत रही है। कभी आदि शंकराचार्य ने चार अलग-अलग दिशाओं में चार धामों की स्थापना इसीलिए तो की थी कि लोग अपने घर से बाहर निकले और बाहर की दुनिया को जानें। तीर्थाटन से प्रारंभ पर्यटन की परंपरा को आजादी से पहले राजे-रजवाड़ों ने भी परवान चढ़ाया। बाद में राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत ने एक नायाब तरीका किले-महलों के संरक्षण का 'हेरिटेज होटल' विचार से निकाला। आज बहुत से किले-महल होटलों में तब्दील हो गए और करोड़ों कमा रहे हैं।

पर्यटन विकास के अंतर्गत देशभर में पर्यटन शिक्षा संस्थानों का प्रसार भी तेजी से हुआ है परंतु वहाँ पर्यटन में डिग्री प्राप्त युवा भी पूरी तरह से पर्यटन क्षेत्र में कहाँ जा पाते हैं। बड़ा कारण यह है कि येन-केन प्रकारेण रोजगार प्राप्ति ही हमारे यहाँ लक्ष्य है। यह सुखद है कि केंद्र सरकार के स्तर पर राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2015 के मसौदे जारी किया गया है और इसमें पर्यटन क्षेत्र के विस्तार के साथ ही पर्यटन व आतिथ्य शिक्षा के लिए समर्पित विश्वविद्यालय की स्थापना को भी संमिलित किया गया है। पृथक से पर्यटन व आतिथ्य विश्वविद्यालय की स्थापना अच्छा कदम होगा परंतु इसमें दी जाने वाली शिक्षा पर भी भारतीय परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाता है, तभी उसकी सार्थकता है। अन्यथा इतने पर्यटन शिक्षण संस्थाओं के साथ इसका भी लाभ कोई खास पर्यटन उद्योग को मिल सकेगा, इसमे संदेह है।

यह सच है, इस समय की सबसे बड़ी जरूरत पर्यटन शिक्षा के ढांचे को सुदृढ करने की ही है। इसलिए कि पर्यटन की जो शिक्षा हमारे यहाँ दी जा रही है, उसके मूल में संस्कृति और परंपराओं की हमारी थाती गौण है। उद्योग के रूप में पर्यटन कैसे संचालित हो, इस पर तो वर्तमान पर्यटन शिक्षा में जोर है परंतु तीर्थाटन से पर्यटन की हमारी विरासत वहाँ नदारद है। घुम्मकड़ी से जुड़ा भारतीय दर्शन वहाँ बहुत से स्तरों पर नहीं है। यह होगा तभी हम संस्कृति के संरक्षण के साथ पर्यटन का प्रभावी विकास कर पाएँगे। अन्यथा होगा यह भी कि आने वाले समय में नई पीढ़ी घुम्मकड़शास्त्र लिखने वाले महापंडित राहुल सांकृत्यायन को सदा के लिए बिसरा देगी। गुलजार का गीत 'इब्न बतूता पहन के जूता' तो सभी ने सुना हे परंतु यह बहुत कम जानते होंगे कि यह वही इब्न बतूता है जिसकी घुम्मकड़ी को पहले पहल शब्दों में पिरोया गया। पर्यटन शिक्षा से जुड़े लोग यदि यायावरीय संस्कृति को नहीं जानेंगे तो पर्यटन विकास की बात कहां तक सार्थक होगी!

पर्यटन जन उद्योग है, इसका संचालन अन्य उद्योगों की भांति नहीं किया जा सकता। इसके लिए आम जन को जोड़ना अधिक जरूरी है। और यह कोई मुश्किल नहीं है। यदि पर्यटन के महत्व का प्रसार प्रभावी रूप में हो-संस्कृति के मूल्यों से जोड़ने की कवायद हो, तो इसमें बहुत अधिक काम किया जा सकता है।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रतिष्ठित 'राहुल सांकृत्यायन' अवार्ड, राजस्थानी भाषा अकादेमी द्वारा 'गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' पद्य पुरस्कार, राजस्थान सरकार द्वारा विशिष्ठ लेखक सम्मान, राजस्थान युवा संस्थान द्वारा 'कला लेखक', पत्रकारिता का प्रतिष्ठित 'माणक अलंकरण', ध्रुवपद धाम सोसायटी द्वारा 'सर्वोत्कृष्ट कला लेखक', श्रीगोपाल पुरोहित स्मृति संस्थान आदि द्वारा निंरतर उन्हें उनके लेखन के लिए सम्मानित किया जाता रहा है। देशभर के सांस्कृतिक संस्थानों, उच्च अध्ययन संस्थानों के वह अतिथि व्याख्याता हैं।

पूर्व सैनिकों की पर्यटन में संभाव्य भूमिका

प्रो. डॉ मोनिका प्रकाश[1]
डॉ शैलजा शर्मा[2]

विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद् के (WTTC) अनुसार सकल घरेलु उत्पाद में पर्यटन के योगदान के हिसाब से भारत का दुनिया में सातवां स्थान है। इसके अलावा 2016 में इस क्षेत्र में लगभग 403 लाख नौकरियों का सृजन हुआ तथा ऐसा करने में हम दुनिया में दूसरी पायदान पर रहे। यह कुल नौकरियों का 9%. था।

जहाँ भारतीय पर्यटन में विकास की संभावनाएं आपार है ,वहां ये भी आवश्यक है की पर्यटकों के लिए श्रेष्ठतर अनुभवों के सृजन के साथ साथ हम उनकी कुशल क्षेम एवं सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें। पिछले कई वर्षों में भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने काफी प्रयास किए हैं कि जहाँ जहाँ एक पर्यटक किसी सेवाकर्मी के संपर्क में आता है वहां उसे अच्छा अनुभव हो। इसके लिए पर्याप्त संसाधन मुहैया कराकर सेवा कर्मियों की क्षमता उन्यन के प्रयास किए गए हैं। लक्ष्य साफ़ है की हर संपर्क में पर्यटक को अच्छा अनुभव हो।

दो श्रेणी के सेवाकर्मियों की भूमिका विशेष तौर पर महत्त्वपूर्ण है– टूरिस्ट गाइड और टैक्सी/ कैब ड्राइवर। इन दो लोगों का पर्यटकों से संपर्क बार बार होता है तथा पर्यटक लंबा समय इनके साथ गुजारतें हैं। पर्यटक का अनुभव काफी हद तक इन दो लोगों के बर्ताव पर निर्भर करता है। अतः इसकी महती आवश्यकता है की इन दो किरदारों में अनुशासित और विश्वसनीय व्यक्ति हो। इनके प्रशिक्षण की लागत भी एक मसलाहै। व्यवसाइयों और पर्यटकों केफीडबैक (प्रतिपुष्टि) से पता चलता है की शिकायत और परिवाद का मुख्य कारण सेवाकर्मियों का अव्यवसायिक व्यवहार और ख़राब प्रशिक्षण है।

दूसरी तरफरक्षा मंत्रालय के पुनर्वास निदेशालय (DGR) के आंकड़ो के अनुसार लगभग 13 लाख के हमारे सशस्त्र बल में से करीब 60,000 सैन्य कर्मी हर साल सेवानिवृत्त होते हैं। इनमे से अधिकांश 32 से 46 वर्ष की आयु वर्ग में होते हैं। अतः सैनिक कम उम्र में सेवानिवृत हो जाते हैं, जब कि वे स्वस्थ होते हैं तथा देश के श्रमबल में योगदान दे सकते हैं। अक्सर कम उम्र में सेवानिवृत हुए इन लोगों की क्षमता व्यर्थ चली जाती है।मानव संसाधन की अच्छी बात यह है की समय और उपयोग के साथ उसका मूल्य ह्रास नहीं होता अपितु अनुभव और अभ्यास के साथ उसके पुनर्जनन एवं आपूर्ति की संभावना रहती है। सैनिक वैसे भी सेवा, देशभक्ति, त्याग अनुशासन ,औरदेश की से मिश्रित संस्कृति की मिसाल हैं। सेना में भर्ती से पूर्व वे एक कठिन लिखित परीक्षा एवं शारीरिक परिक्षण से गुजरतें हैं तदुपरांत एक कठोर प्रशिक्षण पूरा कर सेना में शामिल किये जाते हैं। भारतीय सेना भी यह सुनिश्चत करती है सैनिकों का प्रशिक्षण विश्वस्तरीय हो। यह ध्यान रखा जाता है यह प्रशिक्षण समसामयिक हो, आवश्यकतानुसार हो। समय समय पर इस प्रशिक्षण का आंकलन किया जाता है वह अधुनातन भी हो। ऐसा प्रखर प्रशिक्षण सैनिकों को ऐसे गुणों और कौशल से लैस कर देता है जो सेवा निवृत्ति के बाद भी उपयोगी होते हैं।

एक तरफ पर्यटन क्षेत्र में व्याप्त कौशलांतर की समस्या वहीं, दूसरी ओर प्रशिक्षित सेवानिवृत सैनिकों की उपलब्धता यह सुझाती है क्यों न इन भूतपूर्व सैनिको का उपयोग पर्यटन क्षेत्र की गुणवत्ता उन्नयन के लिए किया जाए। इसकी शुरुआत उनको कैब ड्राइवर और टूरिस्ट गाइड बनने का प्रशिक्षण देकर की जा सकती है।

---

1. आचार्य एवं प्रधान अधिकारी भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान नॉएडा परिसर में हैं।
2. सहायक आचार्य एवं बीबीए प्रोग्रामकी अध्यक्ष भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान नॉएडा।

भूतपूर्व सैनिक ही क्यों?

पर्यटन से संबंधित गतिविधियों में भूतपूर्व सैनिक को इस्तेमाल करने के कुछ फायदे इस प्रकार हो सकते हैं-

1. बेहतर प्रशिक्षण और अनुशासित
2. सैनिक देश के अलग अलग हिस्सों में तैनात रहते हैं तथा अलग अलग हिस्सों से आए साथियों के साथ काम कर चुके होते हैं अतः सांस्कृतिक विविधिता को समझते हैं तथा सुग्राहित होते हैं।
3. वे देश के कोने कोने से आते हैं तथा निवृत्ति के बाद वापिस अपने मूल स्थान के आसपास बसना चाहते हैं। इस प्रकार वे पर्यटन को सुदूर तक पहुंचा सकते हैं।
4. उन्हें स्थानीय आकर्षण, स्थानीय तौर तरीके, स्थानीय लोग, उनकी कहानियां आदि की खूब समझ होती है अतः उन्हें पर्यटन से जुड़ने में अनेक फायदें हैं।
5. बहुत सारे भूतपूर्व सैनिक ग्रामीण परिवेश से होते हैं और वे वापिस वहाँ जा कर ग्रामीण पर्यटन उद्यम शुरू कर सकते हैं जिससे वहां पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।
6. चूँकि पूर्व सैनिक अनुशासन, शालीनता आदि के लिए पहले से प्रशिक्षित है, उनको पर्यटन के लिए तैयार करने के लिए कम समय और धन व्यय होगा।
7. पूर्व सैनिकों को सजग रहने का भी प्रशिक्षण मिलता है, अतः वे साधारणतया अपराध और आतंक आदि के प्रति चौकन्ने रहेंगे। वे किसी आपदा से निबटने के लिए भी प्रशिक्षित हैं।
8. उनके क्षेत्र में आने वाला हर अजनबी उनके लिए संभाव्य ग्राहक है अतः वे उसे संज्ञान में लेंगे तथा अगर उसकी कोई गतिविधि संदिग्ध है तो वे यह समझने के लिए भी बेहतर प्रशिक्षित हैं। उन्हें पता है कि इस स्थिति में क्या करना है तथा किस से संपर्क करना है।
   इस प्रकार एक अनौपचारिक ख़ुफ़िया तंत्र सृजित किया जा सकता है जो अपराध और आतंक से निबटने में सहायक हो सकता है तथा स्थानीय पर्यटन को सुरक्षित बना सकने में अहम् भूमिका निभा सकता है।
9. पूर्व सैनिक का स्वास्थय, उसकी शारीरिक क्षमता एवं योग्यता, मानसिक दृढ़ता बाह्य पर्यटन गतिविधियों के लिए विशेष रूप से अपेक्षित है। वे अधिक उत्पादक सिद्ध होंगे।
10. उन्हें सूचना तंत्र का संचालन ठीक से आता है अतः वे पर्यटन से जुडी गतिविधियों में अधिक उपयोगी सिद्ध होंगे तथा ऐसे में लागत भी कम हो जाएगी।
11. जीवन में अनुशासन का संबंध वितीय अनुशासन से भी है। पूर्व सैनिकों को यदि बैंक व अन्य वित्तीय संस्थान पर्यटन से संबंधित को उद्यम लगाने के लिए कोई लोन आदि देते हैं तो समय पर अदायगी की संभावना भी आधिक है।

ट्रेनिंग में क्या क्या शामिल हो?

पूर्व सैनिकों को पर्यटन में इस्तेमाल करने का पहला लाभ तो यह है कि कम लागत पर गुणी मानव संसाधन उपलब्ध हो जाएगा। पूर्वसैनिक वैसे ही काफी प्रशिक्षित होते हैं ,बस पहले चरण में उनका पर्यटन हेतु थोड़ा सा उन्मुखीकरण ही पर्याप्त है। इस के उपरांत, जिस उप क्षेत्र में वें काम करना चाहें उस विधा का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

ISSN 2321-0443

पूर्व सैनिकों के उन्मुखीकरण कार्यक्रम में निम्न को सम्मिलित किया जा सकता है-

- पर्यटन का महत्त्व
- पर्यटकों की अपेक्षाएं
- कार्यस्थल प्रबंध
- पर्यटन उत्पादों की जानकारी
- पर्यटन क्षेत्र के तौर तरीके और नवाचार
- समयनिष्ठा
- मेहमानों की सलामती एवं सुरक्षा
- प्राथामिक चिकित्सा
- निजी स्वच्छता
- सम्प्रेषण और शिष्टाचार
- व्यक्तित्व विकास
- प्राथमिक/ प्रारंभिक अंग्रेजी भाषा दक्षता
- योग/ तनावप्रबंध
- पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता
- राष्ट्रीय गर्व
- सरकार के अभियान- अतिथि देवो भव, स्वच्छ भारत अभियान, सुरक्षित और सम्मानजनक पर्यटन आदि।

पर्यटन में पूर्व सैनिक कहाँ समयोजीय हो सकते हैं?

सेना से निवृत्त होने वाले पूर्व सैनिक देश के कौने-कोने से आते हैं, तथा सेवा समाप्ति पर वे अपने परिवार व मित्रों के पास वापिस जा कर बसना चाहते हैं। उनका मूल स्थान कोई दूर-दराज का गाँव या कोई सीमावर्ती शहर हो सकता है। सेवा निवृत्ति के बाद पूर्व सैनिक भी अपने आप को व्यस्त रखना चाहते है, और सोने पे सुहागा ये होगा कि वो स्वयं के लिए कोई आय का अतिरिक्त स्रोत बना सकें। ये दूसरी उपजीविका और अधिक आकर्षक होगी अगर वहां उनकी क्षमता एवं उनका कौशल, उनका पूर्व प्रशिक्षण और उनकी जीवन शैली मेल खा जाए। अच्छी बात यह है स्थानीय होने के नाते उन्हें स्थानीय लोग, उनकी परंपरा, उनकी जीवन शैली, वहां का जिओग्राफिया (भूगोल), इतिहास, आदि की जानकारी तो होती ही है, उनका वहाँ का स्थानीय संपर्क भी अच्छा होता है। इसके अतरिक्त सेवा काल में उनका साथ देश के विभिन्न हिस्सों से आए सैन्य कर्मियों से भी होता है और इस नाते उनको देश के अलग अलग भागो की जानकारी होती है तथा सुदूर तक परिचित साथी होते हैं। ये सब उनके लिए विशेष फायदे की बातें हैं यदि वे पर्यटन क्षेत्र में काम करने का मन बनाते हैं, यदि वे उद्यमिता का मन बनाते हैं, तो भी स्थिति उनके लिए अनुकूल है। स्वयं का उद्यम उनको पर्याप्त स्वतंत्रता उपलब्ध कराएगा। वे अपने मूल स्थल के आसपास बस सकते हैं, परिवार और आसपास के लोगों के लिए नौकरियां उपलब्ध करा सकते हैं जबकि वे अपनी सैनिक जीवन शैली का निर्वाह करते रह सकते है। वस्तुतः यह ही उनकी अनुकूल स्पर्धात्मकता होगी ।

कुछ पर्यटन संबधित व्यवसाय जहाँ पूर्व सैनिक अपनी दूसरी उपजीविका तलाश सकते हैं –

तालिका१: पर्यटन से सम्बंधित कुछ व्यवसाय

अ. पर्यटन से संबधित परंपरागत व्यवसाय

टूर ऑपरेटर	ट्रांसपोर्टर
होटल	घुड़ सवारी, ऊंट सवारी, हाथी सवारी,
मोटेल	कैंप साईट, गोट स्थल,
बेकपैकर छात्रावास	हाउस बोट , ट्री हाउस
गेस्ट हाउस, लॉज, बी एंड बी	किराए कि कैंपिंग सामग्री/ सांभर
गाइड सेवाएँ	नौकास्टेशन
सांस्कृतिक केंद्र	परंपरागत मदिरालय
परंपरागत व्यंजन – रेस्तरां, कैफ़े, भोजनालय, आदि	नाच व नौटंकी समूह

(ख) *ग़ैर– परंपरागत व्यवसाय*

फ़ोटोसफारी	गरम हवा के गुब्बारों में सैर
पैदल सैर	पैराशूट के एडवेंचर
पंछी-प्रेक्षण	रेगिस्तान में सफारी
रांच, खेत- खलियान,	रेगिस्तान/ जंगल उत्तरजीविता कोर्स
फ़िल्मी शूटिंग के लिए सामग्री सप्लायर	मछली पकड़ना
परंपरागत कहानीकार	शास्त्रीय संगीत
एडवेंचर क्लब	राफ्टिंग, कयाकिंग, जल-क्रीडा,
कलाकृति/ शिल्प शाला	संग्रहालय
कलाकृति/ शिल्प हाट	जंतुआलय, पक्षीशाला, बटरफ्लाईफार्म
शिकार (जहाँ अनुमति हो)	वनस्पति उद्यान
वन भ्रमण, आदि	

(ग) *स. सहायक गतिविधियाँ*

पेट्रोल पंप, सुविधा पड़ाव	बॉटलिंग और जल-स्रोत, जल वितरण
कैंपों/ होटलों को लकड़ी इत्यादि सप्लाई	परंपरागत खाद्य पदार्थ की सप्लाई
कैंपों/ होटलों से कचरा संग्रह	सजावटी पौधों की सप्लाई
छप्पर बनाना/ डालना	बागवानी
प्राकृतिक खनिज उपलब्ध करना	भूनिर्माण(लैंडस्केपिंग)
पर्यटन और वन्य जीवन परामर्शदाता	प्रशिक्षण एवं मानव संसाधन विकास

निष्कर्षतः

जहाँ एक ओर पर्यटन कौशलांतर और पेशेवर सेवाकर्मियों की कमी से जूझ रहा है, और दूसरी तरफ रक्षामंत्रालय का पुनर्वासः निदेशालय प्रशिक्षित पूर्व सैनिकों के पुनर्वास के लिए प्रयासरत है, पूर्व सैनिकों को पर्यटन और उससे जुड़े व्यवसायों में काम करने के लिए प्रेरित करना तर्कसंगत लगता है। पुनर्वास निदेशालय, भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के साथ आकर एक रण नीतिबन सकता है जिसके तहत पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र कौशल परिषद् (THSC) के सानिध्य में सैनिकों के लिए प्रासंगिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सके। पर्यटन क्षेत्र में सैनिकों में उद्यमिताकी जागरूकता भी बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। विभिन्न विश्वविद्यालयों के उद्यमिता केंद्र व्यवसाय योजना बनाने में मदद कर सकते हैं। पर्यटन व् होटल विभाग प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व ले सकते हैं। उधर दूसरे और पुनर्वास निदेशालय वित्तीय संसथानों और बैंकों से बात कर सकते हैं की उद्यमी बनने के इच्छुक इन पूर्व सैनिकों को आसान शर्तों पर ऋण मिल जाए। निदेशालय एक प्रकार से प्रत्याभूतिदाता की भूमिका निभा सकता है।

इस पर भी विचार किया जा सकता है की सेना अपने पुराने उपकरण जैसे पुरानी गाड़ियाँ और सामग्री जैसे पुराने टेंट, रस्सियाँ, आदि पर्यटन से सम्बंधित कैंपिंग, एडवेंचर, क्रीडा गतिविधियों के लिए सस्ती दरों पर उपलब्ध करा दे। इस से नए उद्यम की शुरूआती लागत और कम हो जाएगी और व्यवसाय से जुड़े वित्तीय जोख़िम कम हो जाएँगे।

एक समर्पित पर्यटन इनक्यूबेटर स्थापित करने पर भी विचार करना चाहिए।

पर्यटन की मूलभूत शब्दावली

aborigine	आदिवासी
aboyeur	आपूर्ति व्यवस्थापक
access code	अभिगम कूट
accessible tourism	अभिगम्य पर्यटन, सुगम्य पर्यटन
actual departures report	वास्तविक प्रस्थान रिपोर्ट
actual flying time	वास्तविक उड़ान अवधि
actual food cost	वास्तविक आहार मूल्य
ad hoc interpreting	तदर्थ व्याख्या
add-on fare	अभिवर्धिति किराया
adiabatic rate	रुद्धोष्म (ह्रास) दर
adjacent seat	बगल वाली सीट
adjoining room	बगल वाला कमरा
admission charge	प्रवेश शुल्क
advance booking	अग्रिम आरक्षण
adventure	साहसिक गतिविधि
adventure holiday	रोमांच अवकाश, एडवेंचर अवकाश
adventure tourism	रोमांच पर्यटन, साहसिक पर्यटन
adventure tourist	रोमांच पर्यटक, साहसिक पर्यटक
aerial courier	उड़ान कूरियर
aerobridge	विमान सेतु
affiliated hotel	संबद्ध होटल
afters	भोजनोपरांत मिष्ठान
agency agreement	एजेंसी समझौता
agency commission	एजेंसी-कमीशन
agoraphobia	विवृत स्थान भीति
agri tourism	कृषि पर्यटन

ISSN 2321-0443

agritainment	कृषिरंजन
agro tourism	कृषि पर्यटन
air ambulance	रोगी वाहक यान
air congestion	हवाई संकुलन
air mile	हवाई दूरी मात्रक
air miles	हवाई लाभांक
air miss	आकाशीय दुर्घटना चूक
air pocket	हवाई गर्त
air steward (flight steward)	विमान परिचर (फ्लाइट स्टीवर्ड)
air terminal	विमान टर्मिनल, एयर टर्मिनल
air transport	हवाई परिवहन, विमान परिवहन
air travel card	हवाई यात्रा कार्ड
aircrew	हवाई कर्मीदल, विमान कर्मीदल
airdash	अनायास हवाई यात्रा,आकस्मिक हवाई यात्रा
air-dry	वायु-शुष्क
airfare	हवाई किराया,विमान किराया
airfield	हवाई क्षेत्र,विमान क्षेत्र
airlift	वायुवहन
airline fare	एयरलाइन किराया
airline plate	विमान कंपनी प्लेट
airliner	विमान जहाज
airlink	हवाई-संपर्क यात्रा
airpass	एयर पास
airport lounge	हवाई अड्डा विश्रांतिका
airsickness	विमानी रुग्णता
airside	उड़ान पूर्व विश्रांतिका
airspace	आकाशीय क्षेत्र
airspeed	विमान गति
airstrip	हवाई पट्टी,विमान पट्टी

ISSN 2321-0443

airworthiness certificates	उड़ान क्षम प्रमाण-पत्र
aisle seat	पार्श्ववीथी सीट
alcohol-free	मद्य मुक्त
alleyway	पोत गलियारा
allocentric tourist	अल्पचर्चित गंतव्यगामी
all-suite hotel	सर्व परिसरीय होटल
alternate restaurant	वैकल्पिक रेस्त्रां
altimeter	तुंगतामापी
altiport	तुंग विमानपत्तन
Amadeus	अमेडियस
ambience	परिवेश
ambient air temperature	परिवेशी वायुताप
American breakfast	अमरीकी नाश्ता
amphitheatre	रंग भूमि
amusement park	मनोरंजन पार्क
ancient monument	प्राचीन स्मारक
ancillary services	अनुषंगी सेवा
animal safari	पशु सफारी
anteroom	बैठक, उपकक्ष
apartment	अपार्टमेन्ट
apartment hotel	अपार्टमेन्ट होटल
aperitif	क्षुधावर्धक मदिरा, एपर्टिफ
APEX fare	अग्रिम क्रय किराया
aquaplaning	वैमानिक फिसलन
arboretum	पादप-तरु वाटिका
archeological survey of India (ASI)	भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण
arctic tourism	उत्तर ध्रुवीय पर्यटन
ATC (Air Traffic Control)	ए टी सी (हवाई यातायात नियंत्रण)
audio guide	श्रव्य गाइड, ऑडियो गाइड

augmented reality	संवर्धित वास्तविकता
available room nights	आवधिक कक्ष उपलब्धती
available seat miles	उपलब्ध सीट मील
avalanche	हिमस्खलन
average daily rate	औसत दैनिकदर
average room rate	औसत कक्ष दर
back office operation	पश्च कार्यालय प्रचालन
back to back ticketing	आगे-पीछे की टिकट
back track	पश्च पदांक
baggage allowance	सामान-भार-सीमा, अनुभूत सामान भार
baggage lockers	सामान लॉकर
baggage tag	सामान टैग
bagsmasher	यात्री सामान संचालक
bareboat charter	मात्र नौका प्राधिकार
barmaid	बार परिचारिका
barman	बार परिचर
bed scarf	बिस्तर पट्टी
bell boy(attendant)	परिचर, सेवक
berth	शायिका, बर्थ
bill of fare	व्यंजन सूची
birth trouism	जन्म-पर्यटन
bistro	छोटा शराबघर
black tourism	दुःस्मृति पर्यटन
black water rafting	जलगुहा रैफ्टिंग
bleisure travel	व्यवसाय-आमोद यात्रा,ब्लीजर यात्रा
boarding pass	उड़ान पत्रक
boatel	नौका होटल
bonfire	उत्सवाग्नि, अलाव
booking agency	आरक्षण अभिकरण, आरक्षण एजेंसी

booking form	आरक्षण प्रपत्र
boutique hotel	बुटीक होटल
boutique ship	बुटीक लघुपोत
BPA (Blanket Purchase Agreement)	बी पी ए (व्यापक क्रय करार)
brace position	आपात अवस्थिति
break-even point	संतुलन स्तर बिंदु
broad gauge	बड़ी लाइन
BSP (Billing Settlement Plan)	बी एस पी (बिल भुगतान व्यवस्था)
Buck's fizz	कॉकटेल
buddymoon	समित्र नवदंपत्ति भ्रमण, बडीमून
buffet service	बुफे सेवा
bulk booking	थोक आरक्षण
bullet train	बुलेट ट्रेन
business traveller	व्यावसायिक यात्री
buying forward	अग्रिम मुद्रा क्रय / विनिमय
buying rate	क्रय दर
cabana	कुटिया, स्नानगृह
cabaret	कैबरे नृत्य, कैबरे घर
cabin crew	केबिन कर्मीदल
cabin steward	केबिन परिचर, केबिन स्टीवर्ड
call brand(call drink)	ऐच्छिक ब्रांड(ऐच्छिक पेय)
camel safari	ऊँट-सफारी
camp fire	शिविर समारोह, कैंप फायर
camp site	शिविर स्थल, कैंप स्थल
camping	शिविरण, कैंपिंग
cancellation charges	निरसन प्रभार
cancellation hour	निरसन समय
candlelight dinner	अल्प प्रकाश रात्रिभोज, कैंडल लाइट डिनर
capsule hotel	संपुट होटल

ISSN 2321-0443

captain (food production)	कप्तान (खाद्य उत्पादन)
caravan tourism	कारवां पर्यटन
caravenette/camper van	कारवां यात्रा
carbon footprints	कार्बन पदचिह्न
cargo	नौभार, जहाजी माल, कार्गो
cargo liner	नौभार पोत
carnival	आनंदोत्सव, कार्नीवल
carry on baggage	अनुमत सामान
carrying capacity	वहन क्षमता
cartography	मानचित्रकारी
cashless cruising	नकदी रहित पोत विहार
casino hotel	जुआघर होटल, केसीनो होटल
cave tourism	गुहा पर्यटन, गुफा पर्यटन
cemetourism	समाधि पर्यटन
chafing dish	आतिशदान
chambermaid	महिला सफाईकर्मी
chamberperson	सफाईकर्मी
changing room	प्रसाधन कक्ष
charter plane	चार्टरित विमान
chauffeur	शोफर
checked-in baggage	जाँचा हुआ सामान
check-in	प्रवेश करना
check-out	होटल छोड़ना, काउंटर अदायगी
checkpoint bag	जाँच अनुकूल बैग
checkpoint friendly	जाँच अनुकूल
children’s menu	बाल व्यंजन सूची
chopper	1. हेलीकॉप्टर 2.छुरा
Christian name	वैकल्पिक नाम, अंग्रेजी नाम
circle trip	वर्तुल यात्रा

circular tour	वर्तुल दौरा
circular tour ticket	वर्तुल यात्रा टिकट
city guide	नगर गाइड, शहर गाइड
city ticket office	शहरी टिकिटघर
city tour	नगर भ्रमण, शहर भ्रमण
city walk	नगरीय सैर
Clean India Campaign	स्वच्छ भारत अभियान
cloakroom	अमानती सामान गृह
club class	क्लब श्रेणी
clubbing tourism	क्लब पर्यटन
coaching inn	बग्घी -यात्री सराय
coatroom	कोट कक्ष
coffee shop	कॉफी की दुकान
collect call	ग्रहीत कॉल
commercial hotel	व्यापारिक होटल
commercial rate	व्यापारिक दर
commis waiter	प्रशिक्षु परिचर
commissary	कॉमिसरी
compartment	1. रेल डिब्बा 2.कक्ष 3.खाना
computerized reservation system (CRS)	कंप्यूटरीकृत आरक्षण तंत्र (सी आर एस)
concierge	कंसीयज सेवक
concierge floor	विशेष सेवा तल
condo vacation	सहस्वामित्व होटल अवकाश
condominium hotel	सहस्वामित्व होटल
condotel	सहस्वामित्व होटल
conducted tour	संचालित दौरा
conductor	परिचालक
conference and convention center	सम्मेलन केंद्र

connecting bus	संयोजी बस
connecting flight	संयोजी उड़ान
connecting time	संयोजी समय
connecting train	संयोजी ट्रेन
connection time	संयोजी समय
consolidator	समेकनकर्ता
consulate	वाणिज्य दूतावास, कांसुलेट
continental breakfast	कॉन्टिनेन्टल नाश्ता
continental plan	कॉन्टिनेन्टल व्यवस्था
convened meeting	आहूत बैठक
convention visitor bureau (CVB)	सम्मेलन आगंतुक ब्यूरो (सीवीबी)
conversion rate	रूपांतरण दर
cookie pricing	कुकी निर्धारित दर
co-pilot	सह विमान चालक, सह पायलट
copy cat tourism	अनुकृति पर्यटन
corkage	कॉर्क शुल्क, कॉर्केज़
corporate rate	निगमित दर
corporate retreat	निगमित कर्मी ऊर्जा वर्धन
cost-plus pricing	लागतोपरि कीमत निर्धारण
cottage	कुटीर
couch surfing	काउच सर्फिंग
couchette	परिवर्तनीय शायिका
counter staff	पटलकर्मी
country side	देहात
coupe	द्विशायिका, कूपा
cover charge	नियत प्रभार
cradle seat	आरामदेह सेट
creative tourism	सृजनात्मक पर्यटन
croak fare	शोकावस्था किराया

ISSN 2321-0443

cross-country	क्रॉस कंट्री
cross-culture	अंतः सांस्कृतिक
cruise	पोत-विहार
cruise line	क्रूज कंपनी
cruise tour	जल थल विहार
cruising altitude	उड़ान ऊँचाई
culinary tourism	खाद्य-स्वाद पर्यटन
cultural shock	सांस्कृतिक घात
cultural tourism	सांस्कृतिक पर्यटन
cultural tourist	सांस्कृतिक पर्यटक
curative tourism	आरोग्यकर पर्यटन
curator	संग्रहाध्यक्ष
custom clearance	सीमा शुल्क निकासी
customized tour	समायोजित दौरा
cycle menu	चक्रीय व्यंजन-सूची
dabble agent	अंशकालीन एजेंट
daily flight	दैनिक उड़ान
daily rate	दैनिक दर
dark tourism	तम पर्यटन, विषाद पर्यटन
day excursion	दिवसीय भ्रमण
day light saving time	ग्रीष्मकालीन समय समायोजन
day return	उसी दिन वापसी
day tour	एक दिवसीय दौरा
day trip	एक दिवसीय भ्रमण
day tripper	आमोदार्थ भ्रमणकारी
de tour	विभाग गमन
deadend booking	मिथ्या बुकिंग
deadhead	1. निःशुल्क टि कटधारी 2. रिक्त वाहन चालन

ISSN 2321-0443

deadlock	गतिरोध
debauchery tourism	विलास-पर्यटन
deckchair	डैक कुर्सी
Declared Value for Carriage (DVC)	वहन का घोषित मूल्य (डी वी सी)
deferred demand	आस्थगित मांग
Delhi belly	यात्राजन्य अपच, पर्यटक अपच
deluxe room	डीलक्स कक्ष
demeurrage	विलंब शुल्क
demi-pension	डेमी पेंशन
demitasse	काफी प्याली, डैमितासे
demonstration effect	प्रदर्शन प्रभाव
departmental store	बहुविभागी भंडार
departure gate	प्रस्थान द्वार
departure lounge	प्रस्थान विश्रांतिका
departure time	प्रस्थान समय
dependency theory	निर्भरता सिद्धांत
desalination	विलवणीकरण
desert tourism	मरुस्थल पर्यटन
designated carrier	निर्दिष्ट विमान सेवा
destination	गंतव्य
destination branding	गंतव्य ब्रांडिंग
destination choice	गंतव्य चयन
destination competitiveness	गंतव्य प्रतिस्पर्धात्मकता
destination life cycle	गंतव्य जीवन चक्र
destination management company (DMC)	गंतव्य प्रबंधन कंपनी
destination management system (DMS)	गंतव्य प्रबंधन संस्था
destination voyage	गंतव्य समुद्री यात्रा

ISSN 2321-0443

destination wedding planner	गंतव्य विवाह आयोजक
detrain	ट्रेन से उतरना या उतारना
dine-out	बाहर रात्रि भोज
dinghy	डोंगी या छोटी नाव
dining car	भोजनयान
diplomatic passport	राजनयिक पारपत्र
direct access system	प्रत्यक्ष अभिगम प्रणाली
direct booking	सीधी बुकिंग
direct connect	प्रत्यक्ष योजी
dirt bike	डर्ट बाइक
disabled passenger	विकलांग यात्री
disaster tourism	आपदा पर्यटन
discount fare	छूट किराया
dive shop	गोता सामग्री दुकान
diversionary tourist	परिवर्तन अपेक्षी पर्यटक
domestic excursionist	देशीय पर्यटक
domestic tourism	देशीय पर्यटन
domestic traveller	देशीय यात्री
doomsday tourism	विलुप्तप्राय गंतव्य पर्यटन
dormette	शयनयोग्य सीट
dormitory	शयनागार
double booking	दोहरी बुकिंग
double decker bus	दुमंजिला बस, डबल डेकर बस
double occupancy	द्विअधिभोगी
drifter	घुमक्कड़
drug tourism	ड्रग पर्यटन
dual branded hotel	द्विब्रान्ड होटल
dual designated carrier	कोड सहभागी वाहक
dual jet bridges	दोहरे जेट पुल

ISSN 2321-0443

dumbwaiter	भोजन उत्थापक
duty free allowance	शुल्क मुक्त भत्ता
duty free shop	शुल्क मुक्त दुकान
dwell time	प्रतीक्षा काल
dynamic dining	बहुव्यंजन विकल्प
dynamic package	ग्राहक अनुकूल पैकेज
early arrival	समयपूर्व आगमन
early bird air fare	शुरूआती विमान किराया
early check-in	समय पूर्व प्रवेश
eco cruise	पारि आमोद पोत
eco park	पारि उद्यान
eco tourist	पारि पर्यटक
economic class(Y class)	इकोनोमिक श्रेणी (Y- श्रेणी)
ecotel	पर्यनुकूल होटल
ecotourism	पारि पर्यटन
eduventurer	शैक्षिक रोमांचकर्ता
elapsed flying time	वास्तविक उड़ान समय
elder hostel	वरिष्ठ नागरिक होस्टल
electronic travel authorization (ETA)	इलेक्ट्रॉनिक यात्रा प्राधिकार (ईटीए)
embassy	दूतावास
embossed work	उभरी कृति
emigrate	प्रवास करना
en pension	आहारयुक्त आवास
enclave tourism	अंतःक्षेत्र पर्यटन / एंक्लेव पर्यटन
endogenous tourism	अंतर्जात पर्यटन
English breakfast	अंग्रेजी नाश्ता
entry requirements	प्रवेश शर्तें
equivalent fare paid	समतुल्य किराया प्रदत्त
ergonomics	श्रमदक्षता विज्ञान

ISSN 2321-0443

errand card	सूचना कार्ड
escrow account	लेखा निलंब
essential air service	अनिवार्य वायुसेवा
estimated expected time of arrival (ETA)	संभावित आगमन समय
estimated time of departure (ETD)	संभावित प्रस्थान समय
ethnic menu	स्थानीय मेन्यु
ethnic restaurant	स्थानीय भोजनालय
ethnic tourism	स्थानीय पर्यटन
ethnocentric tourist	संजातिकेंद्रित पर्यटक
ethnocentrism	संजातिकेंद्रवाद
e-ticket	ई-टिकट
e-tourism	ई-पर्यटन
e-travel portal	ई-यात्रा पोर्टल
e-visa	ई-वीजा
excavation site	उत्खनन स्थल
exclusion clause	अपवर्जन धारा
excursion	भ्रमण, सैर
excursion fare	सीमित भ्रमण किराया
excursionist	भ्रमणकर्ता
executive card	इक्जिक्युटिव कार्ड
executive class	इक्जिक्युटिव श्रेणी
executive lounge	इक्जिक्युटिव विश्रांतिका
executive order	कार्यपालक आदेश
exit visa	निकास वीजा
expatriate (expat)	अप्रवासी
expidition	अभियान
exposition	प्रदर्शनी
express way (motorways)	एक्सप्रेस वे

ISSN 2321-0443

expressway	द्रुतगामी राजमार्ग
extension tour	विस्तारित टूर
face towel	छोटा तौलिया
false balcony	दिखावटी छज्जा, आभासी बालकनी
false booking	दिखावटी बुकिंग
familiarization trip	परिचयात्मक टूर
family far plan	परिवार किराया योजना
family holiday house	परिवार अवकाश आवास
familymoon	संतति सहित नवदंपत्ती भ्रमण, फैमिलीमून
fare break point	किराया निर्धारण बिंदु
farm tourism	फार्म पर्यटन
farmhouse	फार्म हाउस
fat finger fare	त्रुटिपूर्ण किराया
faux pas	अशिष्टता
fee-based pricing	शुल्क-आधारित मूल्य
film tourism	फिल्म पर्यटन
fire wood	काष्ठ ईंधन
flame broiler	यांत्रिक पाक ग्रिल
flat rate	समान दर
flat rate free	समान दर रहित
flat-bed seat	शयन सीट
flesh and feathers show	अंग-पंख प्रदर्शन
flexible dining	सुविधानुसार भोजन
flexible ticket	तिथिमुक्त टिकट
flight crew	उड़ान कर्मीदल
flight deck	जहाजी हवाई पट्टी
flight number	उडान संख्या
float plane	जलविमान
floor manager	तल प्रबंधक

ISSN 2321-0443

floor show	मनोरंजक प्रदर्शन, फ्लोर शो
flop house	निम्नस्तरीय होटल
flotilla	पोत बेड़ा
fluid pricing	परिवर्ती कीमत
flying board	फ्लाइंग बोर्ड
foodcation	खानपान पर्यटन
foot over bridge	पैदल पार सेतु
footloose attraction	स्वच्छंद आकर्षण
foreigners regional registration office (FRRO)	क्षेत्रीय विदेशी पंजीयन कार्यालय
forestry	वानिकी
formal night	औपचारिक संध्या
foyer	प्रकोष्ठ
free house	अप्रतिबंधित मदिरालय
free individual traveller (FIT)	स्वतंत्र यात्री (एफआईटी)
free on board (FOB)	नि:शुल्क सुविधा
free phone	नि:शुल्क फोन सेवा
free port	मुक्त पत्तन
free pour	अपरिमेय भरण
free trade	मुक्त व्यापार
freebie	निशुल्क
freedom of the air	विमान सेवा अधिकार
freestanding	स्वतंत्र संगठन
freestyle cruising	उन्मुक्त पोत विहार
freight plane	मालवाहक वायुयान
frequent flyer	प्रायिक हवाई यात्री,फ्रीक्वेंट फ्लायर
frequent flyer programme	प्रायिक हवाई कार्यक्रम, फ्रीक्वेंट फ्लायर योजना
front line agent	अग्रिम पंक्ति अभिकर्ता

funnel flight	संभरक उड़ान
gala event	भव्य समारोह
gangway	मार्गिका
garden side room	उद्यानपार्श्व कक्ष
garden view room	उद्यानमुखी कक्ष
gastronaut	आस्वादी यात्रा
gastronomy	उदर सेवा
gate lice	प्रवेशद्वार जमघट, गेट लाईस
gateway city	गेटवे सिटी
gateway fare	गेटवे किराया
gay friendly	समलैंगी अनुकूल
geo tourism	भूपर्यटन
geographical segmentation	भौगोलिक खंडीकरण
geography of tourism	पर्यटन-भूगोल
geotourism	भूपर्यटन
ghetto tourism	घेटो पर्यटन, पृथकित बस्ती पर्यटन
ghost tourism	भूत-प्रेत पर्यटन
glamping	मोहक बहिर्वास
global distribution system	वैश्विक वितरण तंत्र, जी डी एस
global indicator	भूमंडलीय सूचक, जीआई
Global positioning systen(GPS)	वैश्विक स्थिति निर्धारण प्रणाली (जीपीएस)
goodies bag	उपहार बैग
gourmand	खान-पान शौकीन
gourmet	खाद्य पारखी
graffiti	भित्ति चित्रण
grand tour	शानदार टूर, ग्रैंड टूर
graveyard tourism	कब्रगाह पर्यटन
green belt	हरित पट्टी
green card	ग्रीन कार्ड

ISSN 2321-0443

green key	ग्रीन की
green tourism	हरित पर्यटन
green vacation	हरित अवकाश
Greenwich Mean Time(GMT)	जीएमटी, ग्रीनिच मध्य समय
greeter	अभिवादक
grey tourism	वरिष्ठजन पर्यटन
grey water	गंदला पानी, ग्रे वाटर
ground arrangements	स्थलीय व्यवस्था
ground handling	स्थलीय संचालन
group (tourist)	पर्यटक समूह
group booking pace	समूह बुकिंग गति
group inclusive tour (GIT)	समूह सुविधा टूर(जीआईटी)
group travel specialist	समूह यात्रा विशेषज्ञ
guaranteed reservation	गारंटित आरक्षण
guest comment card	अतिथि अभिमत कार्ड
guest information service	अतिथि सूचना सेवा
guest name record	अतिथि नाम अभिलेख
guide book	निर्देश पुस्तिका
guided tour	निर्देशित टूर
guided vacation	निर्देशित अवकाश
gullet	काष्ठपोत,गुलेट
gunwale	ऊपरी किनारा
gymnasium	व्यायामशाला
halal	हलाल
halal tourism	हलाल पर्यटन
half round trip	अर्ध परिक्रम फेरा
half-day tour	अर्धदिवसीय टूर
hall porter	होटल सेवक परिचर
hamlet	उपग्राम

hand baggage	हैंड बैगेज
hand book	हैंडबुक, पुस्तिका
handicraft	हस्तकला
hangar (plane)	हैंगर, विमानघर
happy hour	छूट अवधि
harried traveller	उत्सुक पर्यटक
head chef	प्रधान रसोइया
head count	यात्री गणना
health tourism	आरोग्य पर्यटन
heat exhaustion	तापीय थकावट
Heating ventilation and air conditioning(HVAC)	तापनसंवातनऔरवातानुकूलन (एचवीएसी)
heliocentric	सूर्यकेंद्री
heli-skiing	हेलि स्कीइंग
heritage	धरोहर
heritage coast	धरोहर तट
heritage tourism	धरोहर पर्यटन
heritage volunteer	धरोहर मित्र, विरसा साथी
heritage walk	धरोहर विचरण
hitch-hiking	मददयोजित यात्रा
hobby tourism	समरुचि पर्यटन
holding table	भोजन तापन साधित्र
holiday camp	अवकाश शिविर
holocaust	1.स्मारक 2.महाविनाश
home stay	गृह वास
honeymoon	मधुयामिनी, हनीमून
hoping flight	विरामी उड़ान
hospitality	आतिथ्य सत्कार
house brand	देसी ब्रांड

ISSN 2321-0443

house limit	सेवा सीमा
house plan	तल मानचित्र
houseboat	वास नौका, हाउस बोट
hovercraft	होवर क्राफ्ट
hub and spoke system	केंद्र-अर तंत्र
hydrofoil	हाइड्रोफॉइल
hydroplane	जलविमान
hypoxia	अवऑक्सीयता
iconography	प्रतिमा विज्ञान
immersive travel	निमग्न यात्रा
implant agency	प्रतिरोपित एजेंसी
import license	आयात अनुज्ञप्ति, आयात लाइसेन्स
import substitution	आयात प्रतिस्थापन
in transit	पारवहन,पारगमन
inbound	आगमनी
incentive house	प्रोत्साहन संस्था
incentive tour	प्रोत्साहन टूर
incentive tourist	प्रोत्साहन प्राप्त पर्यटक
incredible India	अतुल्य भारत
indirect tourism	अप्रत्यक्ष पर्यटन
indrail pass	इंडरेल पास
industrial tourism	औद्योगिक पर्यटन
in-flight	उड़ान के दौरान
information bureau	सूचना ब्यूरो
in-house	अंतःपरिसर
inn	सराय
institutionalized tourist	संस्थागत पर्यटक
intellectual tourism	बौद्धिक पर्यटन
intensity of toruism	पर्यटन गहनता

ISSN 2321-0443

interactive video	अंतःसक्रिय वीडियो
intercontinental	अंतर्महाद्वीपीय
international air safety	अंतरराष्ट्रीय वायु संरक्षा
international air transport	अंतरराष्ट्रीय वायु परिवहन
international bilateral aviation	अंतरराष्ट्रीय द्विपक्षी विमानन
international date line	अंतरराष्ट्रीय दिनांक रेखा
interpret	व्याख्या करना, निर्वचन करना
inventory	माल,सूची
involuntary denied boarding	अनैच्छिक अस्वीकृत आरोहण
IRCTC	इंडियन रेलवे केटरिंग एंड टूरिज्म कॉर्पोरेशन
Irish coffee	आयरिश कॉफी
island tourism	द्वीप पर्यटन
itinerary	यात्राक्रम
Jacuzzi	जकूजी
jaunting car	घोड़ा गाड़ी, तांगा
jaywalk	मनमाने चलना, मनमर्जी
jet aircraft	जेट वायुयान
jet bridge(jet way)	विमान यात्री सेतु
jet loader	विमान भारक
jet skiing	जेट स्कीइंग
jetlag	हवाई थकान
jet-propelled aircraft	जेट चालित वायुयान
jokulhlaup	हिमनद त्रोट, जोकुललौप
jump up	ससंगीत पार्टी
June gloom	ग्रीष्म विषाद
jungle tourism	जंगल पर्यटन
junket reps	जुआघर प्रतिनिधि
Karachi crouch	कराची दबक
Karaoke bar	कारिऔके बार

ISSN 2321-0443

king post	प्रमुख स्तंभ
king size bed	बड़ा पलंग
kitchenette	छोटी रसोई
labour tourist	श्रमिक पर्यटक
lagoon	लैगून, पश्चजल
land arrangements	गंतव्य स्थल व्यवस्था
land fall	प्रथम भू दर्शन
land lubber	अनुभवहीन नाविक
land only	स्थलीय, स्थल यात्रा
landing fee	अवतरण शुल्क
landing strip	लघु हवाईपट्टी
landlocked country	स्थलरूद्ध देश
large cabin	वृहद् केबिन
lavatory	शौचालय
layby	पार्श्ववीथिका
layover	प्रतीक्षाकाल
leeward	प्रतिपवन
leisure travel	आमोद यात्रा
lesbian gay bisexual tourism (LGBT)	स्त्रीसमलिंगी पुरुषसमलिंगी द्विलिंगी पर्यटन
lido	सार्वजनिक तरणताल, सार्वजनिक स्नानतट
life refreshment voucher	अल्पाहार वाउचर
life vest	रक्षा उत्प्लावक
light and sound show	प्रकाश और ध्वनि प्रदर्शन
lighthouse	प्रकाश स्तंभ
limited service hotel	रेस्त्रां रहित होटल
liqueur (liquor)	मदिरा
locator code	स्थान निर्धारक कोड
locator map	स्थान निर्धारक मानचित्र
lodging	अस्थायी आवास

long haul travels	लंबी हवाई यात्रा सेवा
look to book ratio	देखा-खरीदा अनुपात
lost ticket	खोया टिकिट
lounge	विश्रांतिका, विश्राम कक्ष
lowest available fare (LAF)	न्यूनतम उपलब्ध किराया
lowest logical fare	न्यूनतम युक्तिसंगत किराया
lozenge	औषधि युक्त टॉफी
luggage allowance	अनुमत भार
luggage assistant	सामान सहायक
lunch hour	मध्याह्न भोजन काल
luxury sports tourism	विलासपूर्ण खेल पर्यटन
machine readable passport	मशीनपठनीय पारपत्र
machine readable visa	मशीनपठनीय वीजा
maglev (magnetic levitation)	मैग्लेव (चुंबकीय उत्तोलन)
maiden voyage	प्रथम पोत यात्रा
mal de mar	समुद्री रूग्णता
managed inclusion	संदिग्धता जाँच तकनीक
management contract	प्रबंधन ठेका
management report	प्रबंधन रिपोर्ट
mancation	पुरुष आमोद यात्रा, पुरुष प्रावकाश यात्रा
marijuana trourism	मारिजुआना पर्यटन, हशीश पर्यटन
marine park	समुद्री पार्क
markup pricing	अभिवृद्ध मूल्य
mass tourism	जन पर्यटन
materialization rate	उपभुक्त दर
maximum permitted mileage	अधिकतम अनुमत मील दूरी
maximum stay	अधिकतम ठहराव
maximum take-off weight (MTOW)	अधिकतम उठान भार
meal plan	भोजन योजना

ISSN 2321-0443

meal sitting	निर्दिष्ट भोजन समय (क्रूज पर)
medieval	मध्यकालीन
medium haul flights	मध्य अवधि उड़ान
megaship	विशालकाय जहाज
MICE (Meetiangs, incentives, congerrences and events)	माइस, आयोज्य कार्यक्रम
mid air passenger exchange	हवाई टक्कर
midcentric tourist	लोकप्रिय गंतव्य गामी
migratory birds	प्रवासी पक्षी
mileage allowance	मील- दुरी भत्ता
Million passenger per annum(MPPA)	प्रतिवर्ष दस लाख यात्री
minimoon	अल्पावधि मधुयामिनी, मिनीमून
minimum connect time (MCT)	न्यनूतम संयोजी अंतराल, न्यूनतम योजक अवधि(एमसीटी)
minimum land package	न्यूनतम स्थलीय पैकेज
minimum length of stay	न्यूनतम ठहराव अवधि
Ministery of Tourism(MoT)	पर्यटन मंत्रालय
miscellaneous charges order (MCO)	विविध प्रभार आदेश
mobile lounge	चल विश्रांतिका
Modified American Plan(MAP)	संशोधित अमरीकी विकल्प
money changer	मुद्रा परिवर्तक
money exchange point	मुद्रा विनिमय केंद्र
monsoon tourism	मानसून पर्यटन
motions sickness	वाहन रूग्णता
motor coach	सुविधा बस, मोटर कोच
multi access system	बहुअभिगम प्रणाली
multilateral interline traffic agreements (MITA)	बहुपक्षीय अंतरसेवा यातायात समझौता (एमआईटीए)

multiple entry visa	बहुल प्रवेश वीसा
narrow guage	छोटी लाइन
national carrier	राष्ट्रीय विमानवाहक
National highway authority of India(NHAI)	भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण
national park	राष्ट्रीय उद्यान
national tourism	राष्ट्रीय पर्यटन
national tourism authority	राष्ट्रीय पर्यटन प्राधिकरण
national tourism awards	राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार
national tourism organization	राष्ट्रीय पर्यटन संगठन
national wildlife refuge	राष्ट्रीय वन्यप्राणी आश्रय
natural attraction	प्राकृतिक आकर्षण
natural disaster	प्राकृतिक आपदा
natural resources	प्राकृतिक संसाधन
nature based tourism	प्रकृति आधारित पर्यटन
nature cruise	प्राकृतिक पोत विहार
nature tourism	प्रकृति आधारित पर्यटन
naturism	1. नग्नतावाद 2. प्रकृतिदेववाद
nautical mile	समुद्री मील
nautical mile	समुद्री मील
navigation	नौ संचालन, विमान संचालन
netiquette	ईमेल शिष्टाचार
neutral unit currency	तटस्थ मुद्रा इकाई
neutral unit of construction(NUC)	तटस्थ निर्धारण इकाई
new age tourist	नवागत युगीन पर्यटक
niche tourism	विलक्षण पर्यटन
night club	रात्रि क्लब
night safari	रात्रि सफारी, रात्रि कारवां
no fly list	प्रतिबंधित यात्री सूची

ISSN 2321-0443

no name	बेनामी आरक्षण
non discretionary income	विवित्त आय, असतत आय
normal fare	सामान्य किराया
observation car	प्रेक्षण कार
occupancy rate	अधिभोग दर
on-airport location	विमानपत्तन पर
on-line travel	ऑनलाइन यात्रा
open boarding	मुक्त आरोहण
open booking	खुली बुकिंग
open jaw with side trip	अतरिक्त यात्रा सहित अदिनांकित टिकट
open pay	प्रतिपूर्ति वेतन
optional tour	वैकल्पिक यात्रा
organic food	जैविक खाद्य पदार्थ
orientation tour	अभिमुखी भ्रमण
origin countries	उद्गम देश
out bound operator	निर्गामी प्रचालक
out bound tourism	निर्गामी पर्यटन
out plant operation	बाह्य संक्रिया
overhead bin	शिरोपरि सामान पेटिका
override commission	अधिभावी कमीशन
overseas office	विदेश कार्यालय
Pacific Asia Tourism Association (PATA)	पैसिफिक एशिया पर्यटन संघ
packaged tour	पैकेज पर्यटन
packed food	पैक खाद्य सामग्री
paddle steamer	पदचलित वाष्प नौका
panoramic tour	परिदर्शी पर्यटन
parasailing	खुला पैराशूट उड़ान
parbuckling	डोल-फंदा, पारबक्लिंग

ISSN 2321-0443

parkway	उद्यान मार्ग
parlour car	सुविधा संपन्न रेलयान
part charter	अंशतः किराए पर लेना, अंशतः किराए पर देना
party tourism	पार्टी पर्यटन
passenger boarding bridge	यात्री विमान सेतु
passenger of size	अतिस्थूल यात्री
passenger sales agent	यात्री बिक्री अभिकर्ता
passenger service agent	यात्री सेवा अभिकर्ता
passenger traffic manager	यात्री यातायात प्रबंधक
passenger(personal) name record (PNR)	यात्री (व्यक्तिगत) नाम अभिलेख
passenger/ service terminal indicator	यात्री सेवा टर्मिनल संकेतक
passive booking/segment	निष्क्रिय बुकिंग/खंड
passport free zone	पारपत्र मुक्त क्षेत्र
pax	यात्री, पैक्स
penalty fare	दंड सहित किराया
people movers(travellator)	जन परिवाहक, समतल चलिय
perpetual tourism	निरंतर पर्यटन
person of Indian origin (PIO)	भारतीय मूल का व्यक्ति
personal light jet	निजी हल्का जेट
pet passport	पालतू प्राणी पारपत्र
pilgrimage	तीर्थयात्रा
pillowslip	तकिए का गिलाफ
place setting	छुरी-कांटा व्यवस्था
plane load	विमान भारण
plat du jour	आज का व्यंजन
pleasure crafts	आमोद नौका

pleasure periphery	आमोद परिस्थल
PM	अपराह्न
pocket flight guide	जेबी उड़ान निर्देशिका
point to point airfare	एक से दूसरे शहर का विमानभाड़ा
point to point service	एक से दूसरे शहर की सेवा
pool table	पूल टेबल
porno scanner	पूर्णदेह क्रमवीक्षण
pornography	अश्लील साहित्य
porter's five forces model	पोर्टर पाँचकारकमॉडल,पोर्टरपाँच बल मॉडल
positioning flight	स्थानन उड़ान
post convention tour	समागम-पश्च दौरा
post free	प्रभार मुक्त डाक
potholer	गर्तिका अन्वेषक
pow wow	अमरीका देशज आनंदोत्सव
power port	विद्युत उपयोजक
pre and post convention tour	समागम पूर्व एवं पश्च दौरा
pre arrival	आगमन पूर्व
pre arrival checks	आगमन पूर्व जाँच
pre-booked	अग्रिम बुक किया हुआ
premium cabin	अधिमूल्य केबिन, विशिष्ट केबिन
premium class	अधिमूल्य श्रेणी, विशिष्ट केबिन
presidential suite	प्रेजिडेन्शल स्वीट
pre-theatre menu	प्रस्तुति-पूर्व मेन्यू
pre-trip audit	यात्रा पूर्व लेखा-परीक्षा
priority check-in	प्राथमिकता आगमन-जाँच
pro poor tourism	निर्धनापेक्षी पर्यटन
procreation vacation	प्रजनन अवकाश
product experience program (PEP)	उत्पाद अनुसार कार्यक्रम किराया

ISSN 2321-0443

fares	
promenade	1.चहलकदमी स्थान 2. पोत डेक
Property Management System(PMS)	संपदा प्रबंधन तंत्र(पीएमएस)
pseudo city	छद्म शहर
pseudo event	आभासी कार्यक्रम
pseudo reservation	आभासी आरक्षण
psycho centric	मनोकेंद्रिक
public excursion	सार्वजनिक सैरसपाटा
public relations desk (PRD)	जन संपर्क डेस्क
puddle jumper	छोटा विमान
pullmen car	पुलमेन यात्री कोच
putt	पटेला (नौका)
queen room	क्वीन कक्ष
queen size bed	क्वीन साइज़ शय्या
rack rate	प्रदर्शित दर
ramp	1. ढलवाँ मार्ग, रैंप 2. विमान पार्किंग स्थल
ranch holidays	उल्लासपूर्ण अवकाश
range of mountains	पर्वत माला, पर्वत श्रेणी
rate hike	दर वृद्धि
rate of exchange	विनिमय- दर
real time	तत्समय
receive rampers	वैमानिक सामान भारिक
recreational experience	मनोरंजक अनुभव
recreational value	मनोरंजक क्षमता
red channel	चुंगी लेन
red eye flight	देर रात्रि उड़ान
red-light area	वेश्यावृत्ति क्षेत्र
redress number	निवारण संख्या, रिड्रेस नंबर

reduced fare	न्यूनीकृत भाड़ा
referral system	अभिनिर्देश प्रणाली
regional carrier registered	पंजीकृत क्षेत्रीय वाहक
registered baggage	पंजीकृत सामान
registered port	पंजीकृत पोर्ट
regulatory agency	नियामक अभिकरण
relationship marketing	संबंध विपणन
reliever airport	वैकल्पिक विमानपत्तन
religious tourist	धार्मिक पर्यटन
rendezvous	मिलन स्थल
repeater perks	आवर्तक अनुलब्धि
report period	प्रतिवेदन अवधि
reportable accident	सूचनापेक्षी दुर्घटना
requirements	अपेक्षाएँ
re-route	मार्ग परिवर्तन
rescue fare	समाधान किराया
reservation system	आरक्षण प्रणाली
resident rate	स्थानिक दर
resort fee	रिजॉर्ट शुल्क
resource based amenities	संसाधन आधारित सुविधाएं
responsibility clause	उत्तरदायित्व खंड
responsible tourism	सकारात्मक पर्यटन
rest area	उच्चमार्ग पार्किंग क्षेत्र
restaurant car	रेस्तराँ कार
restocking fee	पुनर्भरण शुल्क
restoration	पुनःस्थापन
restricted area	प्रतिबंधित क्षेत्र
restricted articles	प्रतिबंधित वस्तुएँ
restricted fare	प्रतिबंधित भाड़ा

ISSN 2321-0443

retail travel agent	सीमित भाड़ा एजेंट, खुदरा यात्रा एजेंट
retained profit	प्रतिधारित लाभ
retrocommissioning	प्रतिवर्तनन
return journey	वापसी यात्रा
return on investment	निवेश प्रति लाभ
return ticket	वापसी यात्रा टिकट
return travel(R/T)	वापसी यात्रा
revenue passenger	सशुल्क यात्री
reverie	दिवास्वप्न
reverse auction	उत्क्रम नीलामी
reverse pyramid system	उल्टा पिरामिड तंत्र
reviews website	समीक्षा वेब साइट
revolving door	परिक्रमी द्वार
revolving restaurant	परिक्रमी रेस्तरां
right of search	तलाशी अधिकार
right of way	मार्गाधिकार
ritual inversion	अनुष्ठानिक प्रतीपन
road average density	सड़क औसत घनत्व
road regulations	सड़क विनियमन
rock sculpture	शैल मूर्तिकला
roll on-roll off	फेरी में वाहन चढ़ाना-उतारना
rollaway bed	पहियेदार पलंग
roof topping	दृश्यावलोकन
room block	कक्ष रोक
room boy	कक्ष परिचर
room inventory	कक्ष सामान सूची
room key	कक्ष चाबी
room night	प्रति रात्रि कक्षअधिभोग
room rate	कक्ष दर

ISSN 2321-0443

room service	कक्ष सेवा
rooming house	किराया हेतु आवास
rooming list	अतिथि आतिथ्य सूची
rooming list	कक्ष व्यवस्था सूची
rope way	रज्जू पथ, रोप वे
rostrum	मंचिका
rotation dinning	क्रमानुसार भोजन
round trip (RT)	परिक्रमा यात्रा
rucksack	पिट्ठू बैग
run of the house	1.छूट रहित दर 2.उपलब्धतानुसार आवास
runcation	यात्रावधि
safari park	सफारी उद्यान
safe and honorable	सुरक्षित और सम्मानपूर्ण पर्यटन
safe-keeping	सुरक्षित देख-रेख
saloon bar	मदिरालय
salvage	निस्तारण आय
same day visitor	दिवा आगंतुक
scanty baggage	अल्पसामान अतिथि
scenic route	सुरम्य दृश्य मार्ग
schedule carrier	अनुसूचित वाहक
sculpture	मूर्ति, मूर्तिकला
scuttle of clinkers	बर्फ, डोलची
sea sickness	समुद्री रूग्णता
sea sickness	समुद्री रुग्णता
sea tourism	समुद्री पर्यटन
seamless service	निर्बाध सेवा
seaplane	जल विमान
seaport	समुद्री पत्तन, समुद्री बंदरगाह
seashore	समुद्र तट

ISSN 2321-0443

seat belt	कुर्सीपेटी, सीट बेल्ट
seat rotation	सीटक्रमावर्तन
seaworthy	समुद्रक्षम
second tier airport	छोटे विमानपत्तन
section waiter	प्रक्षेत्र बेयरा
self guided tour	स्व-निर्देशित भ्रमण, स्व-निर्देशित दौरा
self packaging	स्व-व्यवस्थित दौरा
sex tourism	यौन पर्यटन
sex-pat	कामुक प्रवासी
sharing basis	दो सहभाजन आधार
shipboard	पोत पृष्ठ
shoe cleaner	जूता मार्जक
shop lifting	दुकान से उठाईगीरी
shopping tourism	शापिंग पर्यटन, खरीदारी पर्यटन
shore excursion	तटीय सैर
Short take off and landing(STOL) aircraft	लघु पट्टी आरोहण-अवरोहण एयरक्राफ्ट
shortest operated mileage	अल्पतम प्रचालित दूरी
shoulder season	मध्य व्यस्त पर्यटन काल
sightseeing	दर्शनीय-स्थल भ्रमण
sightseeing tour	दर्शनीय स्थल टूर
skiing	रूकीयन, स्की करना
skipper	कप्तान
skybridge	आकाश सेतु
sleep concierge	बिस्तर सेवा प्रभारी
sleeper seat	शयनयान सीट
sleeperette	शयन सीट
slimline seats	हल्की सीट
slipstream	धारा प्रतिकूल

ISSN 2321-0443

slum tourism	झुग्गी पर्यटन, मलीन बस्ती पर्यटन
snooze	झपकी
snooze button (snooze control)	स्नूज बटन (स्नूज नियंत्रण)
snorkeling	निमज्जित जल क्रीड़ा
snow board	हिम पटरा, स्नो बोर्ड
snow boat	हिम नौका (स्नो बोट)
snow lake	हिम झील
snow plough	हिम अपसारक
snow walk	हिम सैर
snowfall	हिमपात
snowstorm	हिम तूफान
social media tourism	सामाजिक मीडिया पर्यटन
socio-cultural-historical	सामाजिक-सांस्कृतिक-ऐतिहासिक
soft adventure	हलकी साहसिक गतिविधि
soft opening	सादा शुभारंभ
soft tourism	निर्मल पर्यटन
solarium	सौर गृह, सोलैरियम
sommelier	मदिरा परिचारक
soupcon	पुट,जरा-सा,लेशमात्र
souvenir	स्मारिका
spa food	स्पा आहार
spa treatment	स्पा उपचार
space tourism	अंतरिक्ष पर्यटन
special event tourism	विशेष आयोजन पर्यटन
special fare	विशेष भाड़ा
special interest tours	विशेष रूचि पर्यटन
special need tourism	विशेष आवश्यकता पर्यटन
special services	विशेष सेवाएँ
special tourism zones	विशेष पर्यटन अंचल

spoiled seat	अप्रयुक्त सीट
sports event tourism	खेल आयोजन पर्यटन
sports participation tourism	खेल भागीदारी पर्यटन
sports tourism	खेल पर्यटन
spritzer	सोड़ा मिश्रित मदिरा
stack	चट्टा
stair carpet	सीढ़ी गलीचा
standard operating procedure	मानक प्रचालन प्रक्रिया
standby passenger	अनुपूरक यात्री
standby ticket	अनुपूरक टिकट
Star Alliance	स्टार एलाइंस
starting date	आरंभिक दिनांक
station head waiter	स्टेशन प्रमुख परिचर
station master	स्टेशन मास्टर
status match	प्रस्थिति सुमेलन
staycation	निकटवर्ती सीनिक अवकाश
stereophonic	त्रिविम ध्वनि
stillroom	भंडार कक्ष
strip	निर्वस्त्रण
strip-joint	निर्वस्त्र लीला स्थल, कैबरे स्थल
strong tea/coffee	कड़क चाय/कॉफी
stuffing	भरण
sun bake	सौर तापित
sun bath	धूपस्नान
sun lounge	धूप कक्ष, धूप विश्रांतिका
sun lust	धूप लालसा
supersonic	पराध्वनिक
supersonic aircraft	पराध्वनिक विमान
supersonic transport	पराध्वनिक परिवहन

ISSN 2321-0443

supplementary accommodation	अनुपूरक आवास
supply chain	संभरण शृंखला
support service providers	सह सेवा प्रदाता
surface transfer	स्थलीय अंतरण
sustainable development	संधारणीय विकास
sustainable tourism	संधारणीय पर्यटन
swimming costume	तरण परिधान
table d'hote	विनिश्चित भोजन
taboo	निषेध, टेबू
take off	उड़ना, उड़ान
talking cargo	सजीव नौभार
tandem bicycle	द्विचालक साइकिल
tanning	चर्म शोधन
tarmac	तारकोली हवाईपट्टी, डामरीकृत सड़क
taxable	कर-देय
taxi driver	टैक्सी चालक
tea party	चाय पार्टी
tea time	चाय का समय
tea tourism	चाय पर्यटन
tearoom	चाय घर
technology butler	प्रौद्योगिकी सहायक
telepresencing	टेली उपस्थिति
terminate	अंत करना/होना
terminus	टर्मिनल
terrorist screening center	आतंकी छानबीन केंद्र
theme park tourism	कथ्याधारित पार्क पर्यटन
theme restaurant	विसंकल्पित रेस्तरां
theme tour	विसंकल्पित टूर
theming	विसंकल्पना

ISSN 2321-0443

thermal bath	उष्ण स्नान
thermal resort	उष्ण जलस्थल सैरगाह
thermal spa	उष्ण स्पा
thermal tourism	उष्ण जलस्थल पर्यटन
thin route	अल्प (हवाई) यातायात पथ
third world	तृतीय विश्व
ticket booth	टिकट बूथ
ticket counter	टिकट पटल
ticketless travel	टिकटरहित यात्रा
tidewater glacier	ज्वारजलीय हिमनद
tie-in	संबद्ध (सेवाएँ)
tiger prawn	टाइगर झींगा, व्याघ्र झींगा
T-junction	टी-संधि
toboggan	बर्फगाड़ी, टॅबॉगॅन
toilet paper	टॉयलेट पेपर
toilet seat	शौच सीट
toiletries	प्रसाधन-सामग्री
toll	पथकार
toll car	सुशुल्कगत कॉर
toll transponder	पथकर पेक्षानुकर, ट्रांसपॉन्डर
toll-free	शुल्कमुक्त
toll-free number	शुल्कमुक्त नंबर
tollway	शुल्क देय (राज) मार्ग
toothsome	जायकेदार
tornado	टारनैडो
touchdown	विमान का उतरना
tour base fare	टूर का मूल किराया
tour broker	टूर दलाल
tour catalogue	यात्रा सूचीपत्र

ISSN 2321-0443

tour consultant	टूर परामर्शदाता
tour departure	टूर प्रस्थान
tour escort	टूर अनुरक्षक
tour guide	टूर परिदर्शक / गाइड
tour leader	टूर प्रमुख
tour manager	टूर प्रबन्धक
tour manual	टूर नियमावली
tour operator	टूर प्रचालक
tour order	यात्रा आदेश
tour organizer	टूर संयोजक
tour plan	टूर योजना
tour wholesaler	टूर थोक विक्रेता
tourism	पर्यटन
tourism board	पर्यटन मंडल
tourism card	पर्यटन कार्ड
tourism circuit	पर्यटन परिपथ
tourism development authority	पर्यटन विकास प्राधिकरण, पर्यटन विकास प्राधिकारी
tourism emergency response network (TERN)	पर्यटन आपाती अनुक्रिया जालक्रम
tourism enclave	पर्यटन अंतःक्षेत्र
tourism fair	पर्यटन मेला
tourism financial corporation of India Ltd(TFCI)	भारतीय पर्यटन वित्त निगम लिमिटेड
tourism flows	पर्यटन प्रवाह
tourism generating country	पर्यटन जनन देश
tourism illitracy	पर्यटन समझ अभाव
tourism income multiplier (TIM)	पर्यटन आय गुणक
tourism industry	पर्यटन उद्योग

ISSN 2321-0443

tourism information center	पर्यटन सूचना केंद्र
tourism intensity	पर्यटन सघनता
tourism policy	पर्यटन नीति
tourism product	पर्यटन उत्पाद
tourism satellite account (TSA)	पर्यटन उपग्रह लेखा (टीएसए)
tourism statistics	पर्यटन आंकड़े
tourism volatility	पर्यटन अनिश्चितता
tourism with sports content	खेल युक्त पर्यटन
tourist	पर्यटक
tourist attractions	पर्यटक आकर्षण
tourist board	पर्यटक मंडल
tourist class hotel	पर्यटक श्रेणी होटल
tourist coach	पर्यटक कोच
tourist enclave	पर्यटक अंतः क्षेत्र
tourist generating country	पर्यटक जनन देश
tourist guide	पर्यटक गाइड
tourist penetration index (TPI)	पर्यटक आवक सूचकांक
tourist region	पर्यटक क्षेत्र
tourist spot	पर्यटक स्थल
tourist track	पर्यटक पथ
tourist trap	पर्यटक पाश
tourist typology	पर्यटक प्ररूप विज्ञान, पर्यटक प्ररूपता
tourist village	पर्यटक ग्राम
town guide	नगर गाइड
town hall	टाउन हॉल
tracking	1. अनुवर्तन 2. ट्रेकिंग
traditional	पारंपरिक, परंपरागत
traffic conference area	यातायात समागम क्षेत्र
trail bike	ट्रेल बाइक

train	रेल गाड़ी,ट्रेन
transfer	स्थानांतरण, अंतरण
transit	पारवहन
transit hotels	पारवहन होटल
transit visa	पारगमन वीजा
transport operator	परिवहन प्रचालक
transport security administration	परिवहन सुरक्षा प्रशासन
trash-can	कचरा पेटी
travel agent	यात्रा अभिकर्ता
travel apparels	यात्रा परिधान
travel blogs	यात्रा ब्लॉग
travel brochure	यात्रा विवरणिका
travel consultant	यात्रा परामर्शदाता
travel desk	यात्रा पटल
travel document	यात्रा दस्तावेज, यात्रा प्रलेख
travel industry	यात्रा उद्योग
travel insurance	यात्रा बीमा
travel news	यात्रा समाचार
travel propensity	यात्रा रुझान
travel statistics	यात्रा आंकड़े, यात्रा सांख्यिकी
travel trade manual	यात्रा व्यवसाय दीपिका
travelator	चालित्र
travellers cheque	यात्री चेक, ट्रैवलर्स चेक
travelling	यात्रा करना
tree house	वृक्ष-गृह
triple occupancy	तीन का अधिवास
tripper	भ्रमणकर्ता
trolley bus	ट्रॉली बस
tropic of Capricorn	मकर रेखा

trundle bed	पहिएदार नीचा पलंग
trusted traveler	विश्वस्त यात्री
tuck shop	छोटी दुकान
tunnel	सुरंग
turbojet	टर्बोजेट
turn away	लौटाना, अस्वीकार करना, निकाल देना
turn down	अस्वीकार करना, इंकार करना
turndown service	पुनर्व्यवस्था सेवा
turnkey operations	संपूर्ण कार्य प्रचालन
turnout	उपस्थिति, संख्या
turnpike	वाहन
twin beds	युग्म शायिका
umbrella drinks	छत्र सज्जित पेय
unappetizing	अरुचिकर
unchecked	अनजाँचा
underground railways	भूमिगत रेलवे
underground train	भूमिगत रेलगाड़ी
underpass	भूमिगत पारपथ
unfamiliarity	अपरिचितता
unguaranteed	अगारंटित
uninterrupted international air transportation	निर्बाध अंतरराष्ट्रीय वायु परिवहन
unit of currency	मुद्रा इकाई
UNWTO	संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन
upgradable coach	उन्नयनी टिकट
upgrade room	उन्नत कक्ष
urban area	शहरी क्षेत्र
urban destination	शहरी गंतव्य
urban tourism	शहरी पर्यटन

ISSN 2321-0443

use-by-date	अंतिम प्रयोग तिथि
user friendly	प्रयोक्ता अनुकूल
USP	विशेष विक्रय प्रतिज्ञप्ति
UTC (Coordinative Univsersal Time)	समुचित वैश्विक समय
vacation hangover	अवकाश खुमारी
vacuum packed	निर्वात पैक
vagabondage	घुमक्कड़पन
valet parking	अनुचर पार्किंग
value added services	मूल्य संवर्धित सेवाएँ
value added tax	मूल्य संवर्धित कर
vanity van	शृंगार वैन
vending machine	वैंडिंग मशीन
vernacular	देशी बोली
VFS (visa facilitation service)	वीजा सुगमीकरण सेवा
viewing area	दृष्टिगम क्षेत्र
vintage	पुरानी
VIP lounge	विशिष्ट जन विश्रांतिका
virtual organization	आभासी संगठन
virtual reality	आभासिक वास्तविकता
virtual tours	आभासी भ्रमण
VISA	वीजा
visa on arrival	आगम वीजा
visa waiver program	वीजा छूट योजना
visiting friends and relatives (VFR)	मित्र परिजन भेंट यात्री
visitor center	आगंतुक केंद्र
visitor facilitation centre	आगंतुक सुगमता केंद्र
volunteer tourism	स्वयं सेवा पर्यटन
voyager	समुद्री यात्री
vulnerable destination	संवेदनशील गंतव्य

water park	जल-उद्यान
water scooter	जल-स्कूटर
water sports	जल-क्रीड़ा
water surfing	जल-तरंगण
waterskier	जल स्कीइंग
way station	छोटा स्टेशन
weather tourism	मौसम पर्यटन
weekend trip	सप्ताहंत भ्रमण
wellness tourism	सुस्वस्थता पर्यटन
wet landing	आर्द्र अवतरण
whistle stop	छोटा भ्रमण-रेलट्रेक/स्टेशन
white cap	श्वेत लहर कैप
whitewater rafting	नदी में पटेला (राफ्ट) चलाना
whole meal	चोकर-सहित आटा, संपूर्ण
wild land recreation	वन्य भूमि मनोविनोद
wildlife	वन्य जीवन
windjammer	बड़ा जलपोत
window seat	खिड़कीवाली सीट
wine bar	मदिरालय
wine cellar	मदिरा आगार
winter sports	शीतकालीन खेलकूद
winter tourism	शीतकालीन पर्यटन
world heritage site	विश्व विरासत स्थल
world travel market	विश्व यात्रा बाजार, वर्ल्ड ट्रेवल मार्केट
worldwide hotel industry (WHI)	वर्ल्ड वाइड होटल इंडस्ट्री, विश्वव्यापी होटल उद्योग
worldwide tourism	विश्वव्यापी पर्यटन
wrapper	नव प्रचालक
WTTC (World Travel and Tourism	विश्व यात्रा तथा पर्यटन परिषद, वर्ल्ड ट्रेवल

Council)	एंड टूरिज्म काउंसिल
Y discount fare	वाई श्रेणी रियायती किराया
yacht broker	जहाजी दलाल
yachting	नौका विहार
yield management	मांगपूर्ति प्रबंधन
youth hostel association (YHA)	युवा आवास
zombie hotel	मृतप्राय होटल
zoological garden(zoo)	प्राणि उद्यान (चिड़ियाघर)

ग्राहक फार्म

सेवा में:

अध्यक्ष

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,

पश्चिमी खंड.7, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110066

महोदय,

कृपया मुझे "ज्ञान गरिमा सिंधु" (त्रैमासिक पत्रिका) का एक वर्ष के लिए ..... से ग्राहक बना लीजिए। मैं पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क ..... रुपये, अध्यक्ष वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली के पक्ष में, नई दिल्ली स्थित अनुसूचित बैंक में देय डिमांड ड्राफ्ट सं. ..... दिनांक ..... द्वारा भेज रहा/रही हूं। कृपया पावती भिजवाएं।

नाम .....

पूरा पता .....

भवदीय

(हस्ताक्षर)

नाम .....

पूरा पता .....

भवदीय

(हस्ताक्षर)

ISSN 2321-0443

	सामान्य ग्राहकों / संस्थाओं के लिए	विद्यार्थियों के लिए
प्रति अंक	` 14.00	` 8.00
वार्षिक चंदा	` 50.00	` 30.00
पाँच वर्ष	` 250.00	` 150.00
दस वर्ष	` 500.00	` 300.00
बीस वर्ष	` 1000.00	` 600.00

डिमांड ड्राफ्ट "अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, के पक्ष में नई दिल्ली स्थित अनुसूचित बैंक में देय होना चाहिए। कृपया ड्राफ्ट के पीछे अपना नाम पूरा पता भी लिखें। ड्राफ्ट 'एकांउट पेई' होना चाहिए। यदि ग्राहक विद्यार्थी है तो कृपया निम्न प्रमाण-पत्र भी संलग्न करेः

कृपया डिमांड ड्राफ्ट के पीछे अपना नाम और पता लिखें।

विद्यार्थी-ग्राहक प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कुमारी/श्रीमती/ श्री.....

इस विद्यालय/ महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय के ..... विभाग का छात्र/ की छात्रा है।

(हस्ताक्षर)

(प्राचार्य/विभागाध्यक्ष)

प्रकाशन विभाग के बिक्री केंद्र @

Sales Counters of Department of Publication

1	किताब महल प्रकाशन विभाग बाबा खड़ग सिंह मार्ग स्टेट एम्पोरियम बिल्डिंग यूनिट नं .21 नई दिल्ली-110001	**Kitab Mahal** Department of Publication, Baba Kharag Sigh Marg, State Emporia Building, Unit No.-21, New Delhi-110001
2	बिक्री पटल प्रकाशन विभाग उद्योग भवन, गेट नं-3, नई दिल्ली-110001	**Sale Counter** Department of Publication, Udyog Bhawan, Gate No.-3, New Delhi-110001
3	बिक्री पटल प्रकाशन विभाग, लॉयर चैंबर, दिल्ली उच्च न्यायालय, नई दिल्ली-110003	**Sale Counter** Department of Publication, Lawyers Chambber, Delhi Hight Court, New Delhi-110003
4	बिक्री पटल प्रकाशन विभाग, संघ लोक सेवा आयोग, धौलपुर हाउस, नई दिल्ली-110001	**Sale Counter** Department of Publication, Union Public Service Commissions, Dholpur House, New Delhi-110001
5	बिक्री पटल प्रकाशन विभाग ,सी जी ओ काम्प्लेक्स न्यू मेरीन लाइन्स, मुंबई-400020	**Sale Counter** Department of Publication, C.G.O. Complex, New Marine Lines, Mumbai-400020
6	पुस्तक डिपो प्रकाशन विभाग, के एस रॉय मार्ग कोलकाता-700001	**Pustak Depot,** Department of Publication**,** K. S. Roy Marg, Kolkata-700001s

आयोग का बिक्री केंद्र @

Sales Counter of CSTT

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग मानव संसाधन विकास मंत्रालय पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066	Commission for Scientific and Technical Terminology Ministry of Human Resource Development West Block-VII, R. K. Puram, New Delhi-110066

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें/

For detailed information please contact:

प्रभारी अधिकारी (बिक्री) वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग मानव संसाधन विकास मंत्रालय पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-110066 फोन नं-.011-26105211/विस्तार-246	The Officer-in-Charge (Sales) Commission for Scientific and Technical Terminology Ministry of Human Resource Development West Block-VII, R. K. Puram, New Delhi-110066 Ph. No.-011-26105211/ Extn.-246

© भारत सरकार
प्रकाशन नियंत्रक

अंक 57 पी.सी.एस.टी.टी. 2 (जनवरी-मार्च) वर्ष 2018 (1-3)

Mobile App of Administrative Terms Glossary is now available in Google Play Store.

Step-1: Search CSTT • Step-2: Download • Step-3: Open to use

वैतश आयोग द्वारा प्रकाशित शब्दावलियाँ, परिभाषा-कोश मोबाईल ऐप तथा ई-पुस्तक के रूप में उपलब्ध होंगे।

प्रोफेसर अवनीश कुमार
अध्यक्ष

Glossaries and Definitional Dictionaries published by CSTT shall now be available in mobile apps and e-books format.

Professor Avanish Kumar
Chairman

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग)
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली - 110066.
फोन नं. 011-26105211 • वेबसाइट : www.cstt.mhrd.gov.in

Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
West Block-7, R.K. Puram, New Delhi - 110066.
Phone: 011-26105211 • Website: www.cstt.mhrd.gov.in

मुद्रण निदेशालय द्वारा, भारत सरकार मुद्रणालय में मुद्रित एवं
प्रकाशन नियंत्रक, सिविललाइन्स, दिल्ली-110054 द्वारा प्रकाशित, 2018